प्रकाशक
नागरीप्रचारिणी सभा,
वाराणसी

प्रथम संस्करण
सं० २०३१
११०० प्रतियाँ

मूल्य—७५.००



मुद्रक
शंभुनाथ वाजपेयी
नागरी मुद्रण, वाराणसी

प्रकाशकीय

नागरीप्रचारिणी सभा ने अपनी स्थापना के साथ ही न केवल हिंदी साहित्य एव देवनागरी लिपि के प्रचार प्रसार के लिये उद्योग आरभ किया, अपितु ऐसे गुरु गभीर आयोजन भी आरभ किए जिनके कारण हिंदी साहित्य का अभ्युदय और विकास मात्र ही नहीं हुआ प्रत्युत उसके विकास की वह दृढ वैज्ञानिक भित्ति निर्मित हुई जिसके बल पर हिंदी का साहित्य दिनोत्तर समृद्ध होता चला आ रहा है। देश की परपरा से प्राप्त हिंदी साहित्य की अतुल सपदा अनिश्चित राजनीति की स्थिति के कारण या तो नष्टभ्रष्ट हो चुकी थी या वेठनों मे पडी पडी एकात धरती म गड धन की भाँति निरर्थक कालोन्मुख हो रही थी। सन् १८९४ ई० म हिंदी पुस्तको की खोज की दिशा मे सभा ने सक्रिय चरण उठाए। तब से आज तक सभा यह कार्य करती चली आ रही है। सभा के इस यज्ञ मे विभिन्न अवसरों पर प्रातीय एव केंद्रीय सरकारो ने समयोचित सहायता देकर सभा के कार्य को आगे बढाया है।

इतनी लबी अवधि के बीच हिंदी ग्रथो की खोज करते समय सभा को बहुत से अलभ्य सस्कृत ग्रथो की भी उपलब्धि होती रही। सस्कृत के ये हस्तलिखित ग्रथ अत्यत ही उपादेय एव साहित्यान्वेषण के लिये अत्यन्त आवश्यक हैं। सभा बहुत दिनो से इनकी सूची प्रकाशित करना चाहती थी किंतु धनाभाव के कारण सभा का सकल्प बहुत दिनो तक अधूरा पडा रहा। अत्यत हर्ष का विषय है कि इस कार्य के लिये केंद्रीय सरकार ने अनुदान देकर सभा के सकल्प को मूर्त रूप दिया है। एतदर्थ सभा सरकार के प्रति आभार प्रकट करती है एव भविष्य के लिये और सहयोग की आकाक्षा रखती है। सस्कृत ग्रथो की सूची का यह प्रथम खड प्रकाशित करते हुए हम अत्यत प्रसन्नता हो रही है और आशा है, हम शीघ्र ही इसका द्वितीय खड भी प्रकाशित कर सकेंगे।

रथयात्रा,
स० २०३१ वि०

करुणापति त्रिपाठी
प्रकाशन मत्री,
ना० प्र० सभा, काशी

भूमिका

नागरीप्रचारिणी सभा ने हिंदी के प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों की खोज का काम सन् १९०० से आरंभ किया और तब से लेकर अद्यावधि यह कार्य होता रहा तथा समय समय पर उनके विवरण प्रकाशित होते रहे है। इन विवरणों के प्रकाशन से अनेक अज्ञात लेखकों और ज्ञात लेखकों के अज्ञात ग्रंथों का परिचय हिंदी जगत् को प्राप्त हो सका जिससे अनवरत प्रवहमान साहित्यधारा की विस्तृति और उसकी गंभीरता एवं अतलस्पर्शिता का आकलन करने मे अकल्पनीय सहायता हुई है। किसी भी भाषा और साहित्य की परंपरा एवं इतिहास के ज्ञान के क्षेत्र मे प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों की खोज और उनके विवरणों का प्रकाशन कितना महत्वपूर्ण है, यह सभी जानते हैं।

आज देश के विभिन्न भागों मे जो भाषाएँ प्रचलित हैं, वे संस्कृत से जायमान हैं अतः यह सर्वमान्य है कि संस्कृत सभी भारतीय भाषाओं की जननी है। प्रचुरतम एवं विशाल ज्ञाननिधि का संचय, जो समयसीमा की दृष्टि को लाँघ गया है, किसी भी भाषा या उसके साहित्य के विभिन्न क्षेत्रों मे उपजीव्य एवं मूलाधार के रूप मे प्रतिष्ठित है। व्याकरण, दर्शन, ज्योतिष, योग, निरुक्त कोशग्रंथ आदि तथा साहित्य के विविध अंग--छंद, अलंकार, लक्षण ग्रंथ, रूपक आदि सभी क्षेत्रों मे संस्कृत की यह प्रतिष्ठा अक्षुण्ण रूप से प्रथित है। संस्कृत भाषा मे निबद्ध इस ज्ञानराशि के प्रति यूरोपियन विद्वान् पहले से ही अभिमुख थे। परंपरा से प्राप्त यह संपदा राजनीतिक अस्थिरता एवं काल के प्रवाह मे पड़कर व्यर्थ ही धरित्री मे गड़ी हुई संपत्ति की तरह वेष्टन मे लिपटी हुई शनैः शनैः नष्ट होती जा रही थी और उसके प्रसार की ओर से जनवर्ग, खासकर शिक्षित वर्ग, आँख मूँदे पड़ा था। अंग्रेजी शासन इस ओर १९वीं शती से ही प्रयत्नशील था। देश मे अंग्रेजी शासन की पूर्ण स्थापना के अनंतर सन् १८६८ ई० से तत्कालीन सरकार द्वारा संस्कृत साहित्य के ग्रंथों की व्यापक पैमाने पर देशव्यापी खोज आरंभ हुई। रायल एशियाटिक सोसायटी, बंगाल और बंबई तथा मद्रास की प्रेसीडेंसी सरकारों ने इस कार्य मे अग्रणीयता प्राप्त की। अनेक शोध संस्थाओं और विद्वानों द्वारा भी खोज मे उपलब्ध ग्रंथों के संरक्षण तथा प्रकाशन की स्थायी व्यवस्था की गई। इस प्रकार के प्रयत्नों से प्राप्त ग्रंथों के विवरण के प्रकाशन से संस्कृत साहित्य के अनेक अज्ञात लेखकों और उनकी रचनाओं की तथा ज्ञात लेखकों के अनेक अज्ञात ग्रंथों की जानकारी जिज्ञासुओं और शोधकर्ताओं को प्राप्त हुई तथा अनेक अज्ञात ग्रंथों के प्रकाशन से संस्कृत साहित्य की श्रीवृद्धि हुई। इस संबंध मे रायल एशियाटिक सोसायटी की तत्कालीन सेवाएँ अभिनंदनीय हैं।

हिंदी के क्षेत्र मे कार्यरत होते हुए भी नागरीप्रचारिणी सभा का ध्यान इस ओर पहले से ही था। सभा से हिंदी ग्रंथों के प्रकाशन के क्रम मे प्रकाशित संस्कृत साहित्य का इतिहास और अन्य ग्रंथों का प्रकाशन भी इसी दृष्टि से किया गया। सभा के आग्रह से

ही संस्कृत ग्रंथों की खोज में प्राप्त होनेवाले हिंदी के ग्रंथों की सूची और विवरण का सर्वप्रथम प्रकाशन एशियाटिक सोसायटी, बंगाल ने किया जिसमें सन् १८९५ की खोज में प्राप्त ६०० हिंदी ग्रंथों की सूची और विवरण संकलित है। इसके अनंतर सोसायटी ने यह कार्य (हिंदी ग्रंथों की सूची का प्रकाशन) समाप्त कर दिया।

हिंदी के हस्तलिखित ग्रंथों की खोज में देश के विभिन्न अंचलों में कार्यरत सभा के कार्यकर्ताओं को संस्कृत के भी ग्रंथ उसी प्रकार प्राप्त होते रहे जिस प्रकार एशियाटिक सोसायटी, बंगाल को संस्कृत ग्रंथों की खोज में हिंदी के ग्रंथ प्राप्त हुए थे। इस प्रकार संस्कृत के प्राचीन हस्तलेखों का सभा के पास एक अच्छा और अनेक विषय के ग्रंथों का संकलन हो गया। इनकी सुरक्षा और जानकारी के लिये हिंदी के हस्तलेखों के विवरण की तरह इनका भी संपादन और प्रकाशन आवश्यक था। सभा की प्रार्थना पर केंद्रीय सरकार ने विचार किया और इसके संपादन और प्रकाशन के लिये अनुदान देने की स्वीकृति दी। सरकार द्वारा प्राप्त इस अनुदान से नागरीप्रचारिणी सभा इसके संपादन और प्रकाशन की ओर अभिमुख हुई तथा उसके कर्मठ कार्यकर्ताओं ने सरकार द्वारा प्राप्त निर्देश के अनुसार इसका विवरण तैयार किया। इन ग्रंथों की कुल संख्या लगभग नौ हजार है, जिन्हें १८ विषयश्रेणियों में रखा गया है। इनमें साहित्य एवं साहित्यशास्त्र की सभी विधाओं के अतिरिक्त संगीत, नीतिशास्त्र, आयुर्वेद, धनुर्विद्या, आचार, धर्मशास्त्र, ज्योतिष, व्याकरण, उपनिषद्, कोश ग्रंथ, पाकशास्त्र, पशुचिकित्सा, कामशास्त्र, तंत्र, मंत्र, यंत्र, रसायन, इतिहास, पुराण, रत्नपरीक्षा, वास्तुविद्या आदि विषयों के भी महत्वपूर्ण प्राचीन ग्रंथों के विवरण उपलब्ध हो सके हैं। सरकार द्वारा प्राप्त विवरण निर्देशिका के अनुसार इनके विवरण कार्डों पर तैयार किए गए, जिनमें (१) विषय एवं क्रमसंख्या, (२) पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या, (३) ग्रंथनाम, (४) ग्रंथकार, (५) टीकाकार, (६) ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है, (७) लिपि, (८) पत्रों या पृष्ठों का आकार, (९) पत्रसंख्या, (१०) प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और (११) प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या, (१२) क्या ग्रंथ पूर्ण है, अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण, (१३) अवस्था और प्राचीनता, तथा (१४) अन्य आवश्यक विवरण शीर्षक से संकलन किया गया है। इस कार्य के करने में सभा के निम्नांकित कार्यकर्ताओं सर्वश्री शिवशंकर मिश्र, डा० प्रेमीराम मिश्र, मयाशंकर मिश्र, पारसनाथ पांडेय, कुंजकुमार मिश्र, माधवप्रसाद शुक्ल, महानंद तिवारी, प्रेमनारायण पांडेय, आदि का तत्पर सहयोग और श्रम प्रशंसनीय रहा है अतः ये सभी धन्यवाद के पात्र हैं। अपने काम के प्रति इन लोगों की निष्ठापूर्ण लगन प्रशस्य है।

कार्डों के तैयार हो जाने पर इसके संयोजन और संपादन के निमित्त श्रीधीरजि त्रिपाठी जी से सहयोगार्थ अनुरोध किया गया। उन्होंने इसे स्वीकार किया और दो चार दिन आए भी पर अंत में वे इससे एकदम विरत हो गए।

संस्कृत के प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों के विवरणों का यह प्रथम खंड है जिसमें विभिन्न विषयों के लगभग २,१०० ग्रंथों का विवरण दिया गया है जो पूर्वोक्त विधि से संकलित है।

इसमे आयुर्वेद के १८८, उपनिषद् के १५८, कर्मकाड के १,१७१, कोश के ११३, गीता के २०४, तथा ज्योतिष के ४८६ ग्रथो का विवरण प्रकाशित है। इसका द्वितीय खड भी प्रकाशन के क्रम मे है। अतिम खड मे परिशिष्ट मे उन ग्रथो का विशिष्ट विवरण दिया जायगा जो सपादनक्रम मे विशेष महत्वपूर्ण सिद्ध हुए हैं। ऐसे ग्रथ पुष्पचिह्नाकित (*) हैं।

सस्कृत के प्राचीन हस्तलिखित ग्रथो का विवरण तैयार करते समय प्राकृत और अपभ्रश के भी अनेक ग्रथ प्राप्त हुए हैं। इस प्रकार के ग्रथ हिंदी के प्राचीन हस्तलिखित ग्रथो का विवरण तैयार करते हुए भी पाए जा रहे हैं। इन प्राकृत और अपभ्रश के ग्रथो का भी विवरण तैयार कराए जाने पर अनेक महत्व के ग्रथ प्रकाश मे आ सकेंगे।

सुधाकर पाडेय
प्रधान मत्री,
नागरीप्रचारिणी सभा, काशी

—०—

विषयनिर्देश

—०—

संस्कृत-ग्रंथ-सूची

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या प्रतिलिपि की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
आयुर्वेद						
✓ १	७२४१	अंजन	अग्निवेश		दे० का०	दे०
✓ २	३८१३	अजीर्ण मंजरी	श्री—?		दे० का०	दे०
३	३९६	अपामार्जन			दे० का०	दे०
✓ ४	६५१७	अर्क चिकित्सा	रावण (लंकानाथ)		दे० का०	दे०
✓ ५	३७२४	अश्वचिकित्सा	नकुल		दे० का०	दे०
✓ ६	३३६६	अश्वचिकित्सा	नकुल		दे० का०	दे०
✓ ७	६५६७	अष्टांग हृदय	वाग्भट्ट		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२७×९२ सें० मी०	१३ (१-१३)	१०	३२	पू०	प्राचीन	इति श्री मदजन समाप्तम् ॥ शुभमस्तु ॥
१९४×८७ सें० मी०	८ (१-८)	७	२७	पू०	संवत्—१८४०	इति श्री काशिराज परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री विरचित अजीर्णमंजरी समाप्त ॥ शुभमस्तु । संवत् १८४० भाद्रपदकृष्ण एकादश्यां शनिदिने ॥ लिखितं मगलसेन ॥
२१×१० सें० मी०	१२ (१-१२)	९	२४	अपू०	प्राचीन	
२५६×१११ सें०मी०	१८ (१-१८)	११	४३	अपू०	प्राचीन	इति लक्ष्मणथ वृन्दार्के चिकित्सा नानौषधविधान चतुर्थशतकं × × ॥
२५७×१२२ सें०मी०	१२ (१-१२)	९	२७	अपू०	प्राचीन	इति नकुलकृते अश्वचिकित्सित लक्षण नामाध्याय षष्ठ ॥ (पत्र संख्या ६) × × ×
२४५×११८ सें० मी०	११ (१३ २३)	९	२६	अपू०	संवत—१८२७	इति श्री नकुलकृते अश्वचिकित्सितविषाध्यायश्चतुर्दश समाप्त ॥ शुभमस्तु ॥ श्रीरस्तु ॥ लिखितमजीवणवाक रानी मध्ये'''मिति चैत्र शुक्ल ५ संवत् १८२७ शाके १६९२ ''
२३३×९८ सें० मी०	४३ (१-४३)	१०	३३	अपू०	प्राचीन	इति श्री वाग्भट्ट विरचितायामष्टांगहृदय संहितायां तृतीयेनिदानस्थाने वातव्याधि निदानाध्याय पंचदश ॥ (पत्र सं ४१)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८	४३८	* अष्टांग हृदय	वाग्भट्ट		दे० का०	दे०
९	२१	अष्टांग हृदय संहिता			दे० का०	दे०
✓ १०	८८१	अष्टांग हृदय संहिता (संस्कृतटीका) { (१) तृतीयस्थान (२) चतुर्थस्थान (३) चतुर्थस्थान (४) षष्ठस्थान (५)औषधिप्रकरण (६)क्षाराग्निकर्म (७)क्षाराग्निकर्म }	वाग्भट्ट	अरुणदत्त	दे० का०	दे०
✓ ११	४१३५	आतंक दर्पण	वाचस्पति वैद्य	वैद्यवाचस्पति	दे० का०	दे०
१२	५५६५	आतंक दर्पण	वैद्य वाचस्पति		दे० का०	दे०
✓ १३	७३२२	आतंकदर्पण (निदान व्याख्या)			दे० का०	दे०
✓ १४	१२६७	आतंकदर्पणनिदान (संस्कृत टीका सहित)	वाचस्पति मिश्र		दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठा का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति सख्या और प्रति पक्ति मे अक्षर सख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५.५ × १०.७ से० मी०	३८३ (१-११५, ११७-२४०, २४३ ३४१, ३४५-३८९)	११	३५	अपू०	प्राचीन सवत्— १७६७	मुनिरसऋषिचन्द्रे १७६७ वत्सरे शुक्ले शितदशमिशशाके नाथनाम्नाद्विजेन॥ सपदिचपठनार्थं वाग्भटोल्लेखिरम्यलवण पुरमुषित्वा श्री हरे सूनुनाय॥ नालाकित यत्प्रत्तिपत्रमध्ये वुद्धेविरोधादथवान्य दापात् ॥ सद्भिविशोध्यक्षपयात्तनाथे प्रायण दृग्भ्रानिमतिल्निलिक्षा ॥
३२ × १५ से० मी०	१९(२–२१)	१४	५१	अपू०	प्राचीन	
३१ × १५ से० मी०	१४८७ (६५,३४२ ६४,२२३, ४६१,१५१, १२१ प्रति अध्याय क्रमश)	६	३४	अपू०	प्राचीन	इति श्री वैद्यपति सिहगुप्तसूनो वाग्भट कृतावष्टागहृदय सहिताया सूत्रस्याने-क्षाराग्निकर्मविधिर्नाम त्रिशाध्याय श्री विश्वेश्वरार्पणमस्तु ॥ शुभ ॥ भवतु ॥
२४.७ × १०.७ से० मी०	३६ (२४–३६, ४३, ८१— १००)	१३	३७	अपू०	प्राचीन	इति वैद्य वाचस्पति कृते आतकदर्पणे गृहिणीनिदानव्याख्यान ॥ (पत्र सख्या ३७)
३४.६ × १८ से० मी०	७१(१–७१)	१३	५८	अपू०	प्राचीन	इति माधवनिदाने कृतौ वैद्य वाचस्पति कृते आतकदर्पणे अतिसारे द्वितीय (पृ० १८)
२६.१ × १०.८ से० मी०	६६ (१–६६)	६	३४	पू०	प्राचीन स०१९१४ (शाके १७७८	इत्यातकदर्पणे निदान व्याख्याया विष निदान सपूणसमाप्ता ॥ सवत् १९१४ शके १७७८ मासोत्तमे मासे भाद्रमासे शुभे शुक्ल पक्षे तिथौ चतुर्थ्यां भानु-वासरे हस्त नक्षत्रे तद्दिन गोविंदात्मज चीरजीव × × × × × ×
२४.५ × १०.५ से० मी०	४४ (१–४४)	१४	४२	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१५	३७६१	आतंकदर्पणनिदान	माधवाचार्य ?		दे० का०	दे०
१६	७८६६	आतंकदर्पणनिदान-सटीक			दे० का०	दे०
१७	३८३				दे० का०	दे०
✓ १८	७०	आयुर्वेदप्रकाश	माधव उपाध्याय		दे० का०	दे०
✓ १९	६५८७	आयुर्वेदमहोदधि	सुषेण		दे० का०	दे०
२०	५६४	आयुर्वेदशतश्लोक्यानिघंट	श्री विमल्ल		दे० का०	दे०
✓ २१	१३६४	औषधिकल्प			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्र संख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४.५×१२.६ से० मी०	२४ (१–२४)	१३	३८	अपू०	प्राचीन	
२६.६×११.४ से० मी०	११२ (१—११२)	१४	३६	अपू०	प्राचीन	इत्यातङ्कदर्पणे निदानव्याख्यामश्मरी निदानम ॥ (पृ० १११)
२४.५×१०.५ से० मी०	८(२–७, ९–१०)	८	२६	अपू०	प्राचीन	
२३.८×१४.४ से० मी०	प० सं० १६ (१–१६)	१३	३५	पू०	प्राचीन सं० १८४२	इति सौराष्ट्रादेशोद्भवसारस्वतकुलावतम उपाध्याय माधव विरचिते आयुर्वेदप्रकाशे पाकावली नामाध्याय सपूर्णम ॥ समाप्तम् ॥ शुभमवतु ॥ सवत १८४२ शके १७०७ पौषकृतम् मदवासरे ॥ समाप्तम् ॥
२०.३×९.७ से० मी०	४२ (१–४२)	१३	२८	अपू०	प्राचीन	इति आयुर्वेदमहोदधौ सुखेण कृते पानीय वर्ग ॥ (पत्रसंख्या—६)
२५.१×१०.४ से० मी०	प० सं० १२ (१–१२)	१०	३२	पू०	प्राचीन सं० १७३५	इति श्री त्रिमल्ल कवि विरचिते आयुर्वेदशतश्लोक्या निघट समाप्त ॥··· सवत १७३५··· वैशाषमासे वुद्धवासरे सप्तम्या ग्रंथ समाप्त ··· ॥
२३.८×१०.२ से० मी०	८० (२–६८, ७०–८२)	७	३१	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रापण संख्या या ग्रन्थविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
✓ २२	७५३६	योगाधिकार			दे० का०	दे०
✓ २३	७०३५	कालज्ञान			दे० का०	दे०
✓ २४	६५६५	कालज्ञान पंचक			दे० का०	दे०
२५	४०६	घण्टावली	रुद्र		दे० का०	दे०
२६	४४०	* गुणरत्नमाला	भावमिश्र		दे० का०	दे०
२७	५३८७	चतुर्थक			दे० का०	दे०
✓ २८	६२१५	चिकित्साप्रणयनम्			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्र संख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३ ६ × ८.७ से० मी०	८	८	३५	अपू०	प्राचीन	
२६ ७ × १० ५ से० मी०	७ (१–७)	८	२८	अपू०	प्राचीन	
२४ ३ × ९.४ से० मी०	२० (१–२०)	८	३८	पू०	स०१९२४	इति अभिन्यास कालज्ञान वैद्यके नाम ग्रंथ समाप्त ॥ श्री भैरव योगेश्वरी प्रसन्नास्तु ॥ समत् १९२४ ॥ पौष कृष्ण ३० ॥ गुरु वासरे ॥ वाराणस्या ॥ इद पुस्तक रामचद्र विन्न गणेश भट्ट हर्डीकर इत्युपनामक ॥
२७ ५ × १२ ५ से० मी०	३	११	३२	अपू०	प्राचीन	इतिश्रीश्री श्रीरुद्र कृतकष्टावलीसपूर्ण ॥ करे कर पीटके चैव आयते रौताम्र भाजनें अस्वस्थेवट पत्रेच भूक्ता चद्रा यणमाचरेत ॥१॥ श्री ल ल ढ ट
२३ २ × ९ ५ से० मी०	७४ (८३-८५, ८८-८९, ९१-११०, ११२-१४३, १४६-१६२, १६४)	९	३१	अपू०	प्राचीन स०१६४६	इति श्रीमन्मिश्रलटकनतनय श्री मिश्रभाव विरचिता गुणरत्नमाला सपूर्णा ॥ सवत् १६४६ समये चैत्रसुदि चतुर्थीरवौ ॥
१९ १ × ११ ८ से० मी०	२ (१–२)	१३	३०	पू०	प्राचीन	अर्थ चतुष्क ॥ (प्रारम)
१९ ६ × ११ से० मी०	७ (१—७)	८	२७	पू०	प्राचीन	इति ब्रह्म वैवर्तपुराणे ब्रह्मखडे मालवीविष्णुसवादे चिकित्सा प्रणयण पचदशोध्याय: ॥

क्रमाक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या या सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२६	३५८१	चिकित्सासार सग्रह	वंगसेन		दे० का०	दे०
✓ ३०	१६३०	चूर्णविधि ?			दे० का०	दे०
✓ ३१	१८३७	ज्वरनिदान चिकित्सा	गोविंद प्रकाश		दे० का०	दे०
३२	७७३०	द्रव्यगुण शतश्लोकी	त्रिमल्ल भट्ट		दे० का०	दे०
३३	५१४६	द्रव्यतत्व चद्रिका	लक्ष्मण पडित		दे० का०	दे०
३४	५४४३	द्विशतश्लोकी	ठाकुर		दे० का०	दे०
३५	२२३०	द्विशति			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३१ ६ × १७ सें०	प० स० ५१ (२–५१)	१७	४७	अपू०	प्राचीन	इति श्री वगसेन कृते चिकित्सा सार सग्रहे द्रव्यस्य भावाभावी समाप्त ॥ (पृ० ४३)
२५ × ६.५ सें० मी०	प० स० १७	८	३१	अपू०	प्राचीन	
१४ ३ × १० २ सें० मी०	११ (५–१५)	६	१७	अपू०	प्राचीन	इति गोविंद प्रकाश ज्वरनिदान चिकित्सा सपूर्णं ॥ देवीसहाय ।
२४ ८ × १० ७ सें० मी०	११ (१–११)	६	४०	पू०	प्राचीन	इति श्री विमल्लभट्ट विरचिताया द्रव्य गुण शतश्लोकी समाप्ता ॥शुभमस्तु॥
२३ ७ × ११ सें०मी०	३२ (१–३२)	१३	४६	पू०	प्राचीन	इति श्री मद्ब्रह्मज्ञानि वशावतस दत्तसुरिसुत लक्ष्मणपडित विरचिता द्रव्यतत्व चद्रिका समाप्तिमगमत् ॥ शुभ भूयात् ॥
२५ ५ × १० ८ सें० मी०	१४ (१–१४)	१०	३३	पू०	प्राचीन सवत– १८६८	गुणग्रामाभिरामैश्च पूजितेन मनस्विना श्री ठाकुरेण रचिता द्विशतीपूर्णतामियात् ? इति श्री द्विशती समाप्ता सवत १८६८
२७ × ११ सें० मी०	२१	६	३०	पू०	सवत– १६५०	इति द्वीसनि सपूर्ण • सम्मत् १६५० फाल्गुण सुदि १२ वार आदित्यवार पठितवपरा शुभ भूयात् ।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३६	३३५७	द्विशती	ठाकुर		दे० पा०	दे०
✓ ३७	६५८२	धन्वंतरि निघंटु			दे० का०	दे०
✓ ३८	७५२१	नाडीपरीक्षा			दे० का०	दे०
✓ ३९	७५२६	नाडीपरीक्षा			दे० का०	दे०
✓ ४०	७८५५	नाडीविज्ञान			दे० का०	दे०
✓ ४१	२७२	निघंटु			दे० का०	दे०
४२	४१८७	निघंटु			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति सख्या और प्रति पक्ति म अक्षर सख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३१ × ११ सें० मी०	१२ (१–१२)	१०	४३	पू०	सवत् १९२९	श्रीठाकुरेणरचिता द्विशत्ती पूर्णतामियात ॥ ग्रहयुग्मनवेंदौ च फाल्गुने कृष्ण पक्षके षष्ठचाभौमेयुते साध्ये स्यामलालेन लेखितम् ॥
२१ × ८ ५ सें० मी०	१६ (१–१६)	७	३१	अपू०	प्राचीन	इति धन्वतरीये निघटौ द्रव्यगण समुच्चय ॥ (पत्र स० ८)
२७ १ × ११ १ सें० मी०	२ १–२	६	३०	पू०	प्राचीन (जीर्ण शीर्ण)	इति नाडी परीक्षा समाप्ता ॥
३६ १ × १० २ सें० मी०	१	७	२३	पू०	प्राचीन (जीर्ण शीर्ण)	इति नाडी परीक्षा ॥
२७ २ × ११ १ सें० मी०	११६ २–११७	१७	३८	अपू०	प्राचीन	
२७ × ११ १ सें० मी०	१३ (९६, ९६–१०२, १०४–१०५, १०७-१०९)	७	३५	अपू०	प्राचीन (जीर्ण)	
२७ ६ × ११ ८ सें० मी०	८ (१–८)	५	३१	अपू०	प्राचीन	

क्रमाव और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या या सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
✓ ४३	१३२२	निघटु (ज्वर निदान)			दे० का०	दे०
४४	४६४४	निदान			दे० का०	दे०
४५	२७५४	निदानप्रदीप	नागनाथ		दे० का०	दे०
४६	२०	निदानमाला	वाचस्पति		दे० का०	दे०
✓ ४७	३७६०	निदानांजन	अग्निवेश		दे० का०	दे०
✓ ४८	६५६६	नेत्रप्रसादन कर्म			दे० का०	दे०
✓ ४९	५३०६	पाकावली			मि० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति सख्या और प्रति पक्ति में अक्षर सख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८-अ	८	स द		९	१०	११
२७ १×११४ सें० मी०	४ (१—४)	१३	४०	अपू०	प्राचीन	
३० ५×११ १ सें० मी०	५० (८–५७)	१२	४२	अपू०	प्राचीन	
२५.५×११ ७ सें० मी०	२४ (१–२४)	१२	३५	अपू०	प्राचीन	
२६×१५.५ सें० मी०	२६ (१-३, ५–२७	१२	३२	अपू०	प्राचीन।	
२५ ६×१२ ४ सें० मी०	११ (३–१३)	११	३८	अपू०	प्राचीन	इतिश्रीमदग्निवेशविरचित निदानाजनं सपूरणम् श्रीराधाकृष्णाभ्या नम ॥
१३.१×६ ३ सें० मी०	६ (१–६)	६	३५	पू०	प्राचीन	इत्यत्कर्पूर सयुक्त स्मृत नेत्रप्रसादन ॥ नेत्र प्रसादिनी रस क्रिया ॥
२०.५×१० ६ सें० मी०	४० (२–४१)	६	२६	अपू०	स० १८८१	इति पावावली समाप्त जेष्ठ वदि ११ सवत् १८८१ शाके १७४६ मन्मथ नाम सवत्सरे लिखित प० श्रीभट्ट प्यारेलालेन

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५०	६५६६	पाकावली			दे० का०	दे०
५१	६७४३	पाकावली			दे० का०	दे०
५२	२१३१	पाकावलि			दे० का०	दे०
५३	३००० / ३	पिप्पली वर्धमान			दे० का०	दे०
५४	४२७६	पूतनाविधान			दे० का०	दे०
५५	४०१५	पूतनाविधान			दे० का०	दे०
५६	४७४७	पूतनाविधान	कमलाकर भट्ट		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२१ ५ × ६ ८ सें० मी०	१३ (१–४, ६–१४)	८	२४	अपू०	प्राचीन	अथ पाकाद्विकारः ॥ (आरंभ)
३३ १ × ११ ५ सें० मी०	५ ६–८, १०–११	८	४४	अपू०	प्राचीन	
२७ + ११ ५ सें० मी०	७ (१–७)	६	३६	पू०	प्राचीन	इति पाकावलि संपूर्ण ॥
१७ २ × ११ ८ सें० मी०	३	१२	२४	अपू०	प्राचीन	
१६ ८ × १२ ४ सें० मी०	१४	११	३३	अपू०	सं० १६३७	इति श्री पुतलाविधान माली स्कंद पुराणोक्त भामिनी पीडासमन विधान संपूर्ण ॥ लिखित मिश्र सागरदत्त हरलीऽर्य सम्हलमाध्य ग्रामे मिति वैशाष शुदि १० बुधवार १६३७ शुभ श्रीकृष्णा नम शुभ ॥
२३ ५ × १५ ४ सें० मी०	प० सं० ११ (१–११)	१०	२६	पू०	प्राचीन सं० १६१४)	इति श्री पुतनाविधान समाप्तं संवत् १६१४ चैत्र वदि तृतीयायां धनौराग्य नगरे छदम्मामान वैद्य स्थान द्विज-दास ·· ··॥
२४ ३ × १२ ७ सें० मी०	८ १–८	११	३६	पू०	प्राचीन	इति कममाकर भट कृते शांति रत्नाकरे पुतनाविधान समाप्त ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या सग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ जिस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
✓ ५७	१३१२	पूतनाविधान (बालचिकित्सा)			दे० का०	दे०
५८	७०६५	प्रकाशचक्र निघटु	द्विज वोपदेव		दे० का०	दे०
५९	१३३४	बाल चिकित्सा			दे० का०	दे०
६०	१३६५	बाल चिकित्सा			दे० का०	दे०
६१	३६००	बालचिकित्सा पूतनाविधान	राजसिंह		दे० का०	दे०
६२	६५६५	बाल तंत्र	कल्याण		दे० का०	दे०
✓ ६३	८३४	बालरोग चिकित्सा	भीवदिमिश्र		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
२१२× १०८ से० मी०	६ (१–६)	१०	२८	अपू०	प्राचीन	
३२४×१३ से० मी०	६ १–६	६	४५	पू०	प्राचीन	वाग्भट्कृते प्रमृते प्रवाश चक्रे निघटु-मम्न द्विजवापदेव १७६ श्रीमा रामानुजाय नम × × × ॥
१६×१३.५ से० मी०	६	१६	१६	पू०	सवत्–१६२५	इति श्री त्वाग्त्या शाने पट् स्वामी कार्तिक्य उमासवाद बाल चिकित्सा पुस्तक द्वादश वर्ष पर्यन्त बनि उपाय समाप्तम् ॥ शा० श्रु० द्वि० २ सवत् १६२५ ॥
२४१× ११२ से० मी०	६(१–६)	६	३५	अपू०	प्राचीन	
१२४×७६ से० मी०	२४ (१–२४)	८	१६	पू०	सवत्— १६३०	इति श्री महाराजाधिराज श्रीराजसिंह बृतो स्वर्णामिया नाम्नि ग्रंथेन बाल चिकित्सा पूतनाविधान समाप्त ··· – स० १६३० लिपत प० श्रीराठर हजारीलाल वासिन मरहृनी श्री कृष्णाय नम ॥
२२×१०.६ से० मी०	३ (१–३)	१६	४६	अपू०	प्राचीन	इति कल्याणेन कृते बाल तत्रे साधारण कल्पौषध कथा नाम द्वितीय पत्र ॥ (पत्र-संख्या २)
•२२७× १०.६ से० मी०	३१ (१,६–२२ २४–२६)	८	३४	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६४	३५	भावप्रकाश	भावमिश्र		दे० का०	दे०
६५	५८२०	भावप्रकाश (माध्यम खंड)			दे० का०	दे०
६६	५८३६	भावप्रकाशनिघंटु			दे० का०	दे०
✗ ६७	८	भिषक् चक्र चित्तोत्सव	हंसराज		दे० का०	दे०
✓ ६८	१४५०	भिषक चक्र चित्तोत्सव	हंसराज		दे० का०	दे०
६९	३९२४	भिषक् चक्र चित्तोत्सव	हंसराज		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२८.७ × १३.१ सें० मी०	प० सं० १२८ (३-११, २५-२६, २८, ३२-३३, ३८, ४०-४१, ४४, ४६, ४७-५७, ५९-६०, ६५-७४, ७७, ७८, ८१-८२, ८४, ८५, ८६-९७, ९९-१०५, ११६-१२४, १२७-१३१, १३४-१३६, १३८, १४३, १४७, १५०, १५२-१५३, १५७-१५८, १६६, १६८-१७०, १७२, १७४-१८६, १९७-२१०, २१२-२१३, २२८-२२६)	१२	३४	अपू०	प्राचीन	
३३.६ × १३.१ सें० मी०	१९ (१-१९)	९	३३	अपू०	प्राचीन	
२७.६ × ११.६ सें० मी०	१९ (१-२, ३-९, ११-१७, १९)	८	२९	अपू०	प्राचीन	
२०.५ × १३.५ सें० मी०	६३	२१	१६	पू०	वि० सं० १९०९	
२८.५ × १६.१ सें० मी०	४ (२-५)	१२	३३	अपू०	प्राचीन	
२३.४ × १०.३ सें० मी०	५९ (१-५९)	१०	३५	पू०	संवत्-१९००	इति श्रीभिषकचक्र चित्तोत्सवेहंसराज कृते वैद्यशास्त्रे सप्तदशोध्याय १७ समाप्त । लिपितमिदंपुस्तकं संवत् १९०० भाद्रशुक्ल ११ चंद्रवासरे ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७०	१०६३	मदनविनोद निघटु	मदनपाल		दे० का०	दे०
७१	७२६	मदनविनोद निघटु	मदनपाल		दे० का०	दे०
७२	४७६७	मदनविनोद निघटु	मदनपाल		दे० का०	दे०
७३	४८८४	मदनविनोद निघटु	मदनपाल		दे० का०	दे०
७४	६७४४	मदनविनोद निघटु	मदनपाल		दे० का०	दे०
७५	७०५६/३	मदन विनोद निघटु	मदनपाल		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३१×१६३ सें० मी०	८१ (१-८५–८५	१३	२८	अपू०	संवत् १९४७	इति श्री मदनपाल विरचिते मदनविनोदे निघंटौ प्रशस्ति वर्गश्चतुर्दश १४ ॥ चैत्रे मासेशिते पक्षेमध्याह्ने शुक्र वासरे चतुदश्या लिखित फकीरीचंद्रेण पुस्तक शुभदायक सं० ११४७ वि० चैं० सु० १४ दीन शुक्रवार वहेडिमध्ये सेवग रामात्मज श्री लक्ष्मणाय नम ॥
२७८× १०८ सें० मी०	५६(११ १२, ३२ ६२, ८२-८५, ८७-९७)	९	३४	अपू०	प्राचीन	
२८८× ११२ सें० मी०	७ (१–२४, २६–७१)	१०	३८	अपू०	प्राचीन	इति श्री मदनपाल विरचिते मदनविनोदे निघंटौ कृती नवर्ग एकदश ११ ॥ (पत्र, संख्या–६२)
२६८×११ सें० मी०	५२ (७, ६–१७ २६ ६७)	१०	४२	अपू०	प्राचीन	इति श्री मदनपाल विरचिते मदनविनोदे निघंटौ प्रशस्तिवर्गश्चतुर्दश समाप्त ॥१४॥ वाचस्पति पितुरुदार सुविद्या वाचस्पतेश्चरणपंकज''' इति मदन विनोद समाप्त ॥
३२१× १२६ सें० मी०	४२ ४०–८१, ८३	९	३७	अपू०	प्राचीन संवत– १८९०	इति श्री मदनपाल विरचिते मदनविनोदे निघंटौ प्रशस्ति वर्ग श्चतुर्दशम समाप्त श्री शुभमस्तु फाल्गुणमासि कृष्णपक्षे पंचम्या भृगुवासरे सं० १८९० के साल श्रीकृष्णचंद्रम्मद्म्भजामि ॥
१२४×१६ सें० मी०	८६	१२	२३	अपू०	प्राचीन	इति श्री मदनपाल विरचिते मदनविनोदे निघंटौ मिश्र वर्गस्त्रयोदश समाप्त २३ रिति निघंटसंपूर्ण ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७६	२२३२	मदवविनोद निघंटु	मदनपाल		दे० का०	दे०
७७	७७३७	मदनविनोद निघंटु	मदनपाल		दे० का०	दे०
७८	५२३१	मधुकोश (माधवनिदान की टीका) मू० ग्रंथ माधव मिश्र	विजयरक्षित		दे० का०	दे०
७९	५७३२	मधुकोश	विजयरक्षित		दे० का०	दे०
८०	६३३०	माधवनिदान	माधव मिश्र		दे० का०	दे०
८१	६०३१	माधवनिदान	माधव मिश्र		दे० का०	दे०
८२	६६८३	माधवनिदान (ज्वर प्रकरण) ('मधुकोश बंध' संस्कृतटीका)	माधव मिश्र		दे० का०	दे०

पत्ना या पृष्ठों का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति सख्या और प्रति पक्ति मे अक्षर सख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण हे तो वर्तमान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	१०
२७ ५ X १४ सें० मी०	१३	१६	३६	अपू०	प्राचीन	इति श्री मदनपाल विरचिते मदनविनोद निघटौ मिश्रा वर्गास्त्रयोदश ॥ शुभ भूयात ॥
२६ ४ X १० सें० मी०	१९ ३८–५७	१०	३८	अपू०	प्राचीन	इति मदनपालविरचिते मदनविनोदे निघटौ कृतान्नवर्ग एकादश X X ॥ (पृ० ५७)
२८ X १३ ५ सें० मी०	४ (१–४)	१३	३८	अपू०	प्राचीन	ततदग्रथ तरुभ्यो व्याख्या कुसुम रसलेश माहृत्य भ्रमरेणेव मया य व्याख्या मधुकोप आरब्ध ॥ उपयुक्तमिहानुक्तनिदानमाधवेन यत् ॥ अथ व्याख्या प्रसगेन मया तदपि लिख्यते ॥ (पत्र सख्या–१ पक्ति स०–६)
२५ ६ X १० ८ सें० मी०	३४	६	३२	अपू०	(जीर्ण) प्राचीन	आरोग्य सालीय वैद्यक महोपाध्याय श्री विजय रक्षित कृते मधवापे ज्वर निदान समाप्तिमगमत ॥ (पृ० ६३)
२४ ७ X १० २ सें० मी०	४८ (१–४८)	८	२७	अपू०	प्राचीन	
२६ X ११ ८ सें० मी०	७ (१–७)	१०	४०	अपू०	प्राचीन	
२४ X १० ४ सें० मी०	१६ (१–१६)	१२	४१	पू०	प्राचीन	तेनोज्वलाविवृति रत्पधियां हिताय सबध्यते विबुध माधव सग्रहस्य । विज्ञाय तार्किक वरेंकविचार वैद्य वैवस्य गु पनवशान्मिधुलेश वद्य ॥ ८ ॥··· (पत्रसख्या–२)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८३	६६८६	माधवनिदान	माधव		दे० का०	दे०
८४	६६५	माधवनिदान	माधवाचार्य		दे० का०	दे०
८५	३७५६	माधवनिदान	माधव		दे० का०	दे०
८६	३७६०	माधवनिदान (आतंकदर्पणनिदान व्याख्या)	माधवाचार्य	वाचस्पति	दे० का०	दे०
८७	३१८१	माधवनिदान	माधव		दे० का०	दे०
८८	१०४६	माधवनिदान	माधवाचार्य		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८ ब	स	द	९	१०	११
२५×१० सें० मी०	९२ (१-९२)	८	२६	अपू०	प्राचीन	
३३.३× १३.५ सें० मी०	११४	१०	४०	पू०	संवत्— १९४२	इति श्री माधवाचार्य विरचितो रुग्विनिश्चय समाप्तम् ॥ संवत् १९४२ शाके शालिवाहनस्य १८०७ मास १३ पक्ष २६ मिती अश्विन वदि प्रतपदा १ शुक्रवासरान्विताया इद पुस्तक लिखित फकीरचंद सेवकरामात्मज वहेडि-मध्य शुक्ल सुच्चशोकेशोचनिती शुकनस्वाय परोपकार्थ । शुभ मगलमस्तु ॥ मगल ददातु ॥
२४×१०.५ सें० मी०	१२२ (१-४१, ४३-११२ ११५-१२५)	८	३२	अपू०	संवत्— १८७४	इति श्री वैद्यराजकवि माधवविरचिते रुग्विनिश्चय सपूर्ण इतिमाधवनिदान समाप्त ग्रंथपरिमाण २२०० संवत् १८७४ वशाख कृष्ण १२ खौ वाच्य-कर्त्तायदाव्यस्तेलेखकोगणनायक ।
२३.८× ११.१ सें० मी०	६६	१३	३८	अपू०	प्राचीन	इत्यातकदर्पणे वाचस्पति कृताया माधवे निदान व्याख्याया भग्नव्रण निदान (पत्रसंख्या ११५)
२२.७× १०.२ सें० मी०	४६ (१-४६)	११	३३	पू०	प्राचीन	माधव कविनारचित स्मुखहेतोस्समस्त "इति श्री माधवाभिधान द्रव्यगुण समाप्तम् ॥ शुभमस्तु ॥ सिद्धेश्वर्यैनम ॥" ....
३६.१× १४.५ सें० मी०	प०स०४४ ४ ६-४० ४३, ४६, ४८-५०, ५३-५५)	११	४६	अपू०	प्राचीन संवत्— १९१२	इति श्री माधवकृत निदान स्थान समाप्त ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८९	१८०४	माधवनिदान			दे० का०	दे०
९०	१४७	मालावति संवाद	गंगाधरभट्ट		दे० का०	दे०
✓ ९१	७२७७	मुद्गरकूटविवरण	माधव	नागेश	दे० का०	दे०
✓ ९२	६५९३	मूत्र परीक्षा			दे० का०	दे०
९३	६५९४	मूत्रपरीक्षादि			दे० का०	दे०
९४	६५८	मूत्रपरीक्षा			दे० का०	दे०

पत्ना या पृष्ठों का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति सख्या	और प्रति पक्ति मे अक्षर सख्या	क्या ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वत मान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३२८× १२४ सें० मी०	१०स०६० (१–६०)	६	३४	अपू०	प्राचीन	
१६१× १०२ सें० मी०	६ (१ ६)	१०	२१	पू० सं० १६३६	प्राचीन	इति मालावति विष्णु सवादे समाप्तो य ॥ सवत १६३६ शके १८०१ वैशाख वद्य २ गुरौ तद्दिने पुस्तक समाप्त ॥ नाखरेत्युपनामक नारायणभट्टात्मज गगाधर भट्टन लिखित मूख हस्त न दातव्य एव वदति पुस्तक ॥
२१८× १०७ सें० मी०	३ १—३	१६	५०	पू०	प्राचीन	इति श्री माधवविरचिता मुदगरकूटस्स माप्तिमगमत ॥ इति श्रीमदभिषग कृष्ण पडितात्मज भिषड नागश पडित विरचित मुदगरकूट विवरणम ॥
१६६× १०६ सें० मी०	३ (१ –३)	११	२८	पू०	प्राचीन सं० १७८८	इति श्री मूत्र परीक्षा समाप्ता ॥ सवत १७८८ वर्षे शाके १६५३ प्रवत्तमाने आश्विन शुद्ध १ भौम वासरे रावल–शीवदत्त पुत्र शभू रामण पुस्तक परोपकारे अपन करु छथी ॥ व्यास उदे कृष्णस्य अवरगाबादे प्राप्तमिद ।
१४×१०४ सें० मी०	४ (१–२ ४–५)	१५	१२	अपू०	प्राचीन सं० १८८८	इति मत्र परीक्षा समाप्त सवत १८८८ श्रा० ६ शा १७५५३ श्रावण वदी ८ भौम लि०
३४×१३ सें० मी०	२	१२	४०	पू०	सवत— १६४०	मूत्र परिक्षासमाप्तम् स० १६४० मिती चत सुदि १

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
९५	७९२	मूत्रपरीक्षा	सरजीतसिंह		दे० का०	दे०
९६	७६४	योग तरंगिणी			दे० का०	दे०
९७	५०१२	योग चिंतामणि			दे० का०	दे०
९८	४५६४	योग चिंतामणि			दे० का०	दे०
९९	३९५६	योग चिंतामणि	हर्षकीर्ति सूरि		दे० का०	दे०
१००	७१९२	योगरत्नमालाविवृत्ति	नागार्जुन		दे० का०	दे०
१०१	२४८	योगशत (टी०)			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८ ब	स	द	९	१०	११
२७ ३ × १२ १ सें० मी०	२ (१, ५)	८	२६	अपू०	प्राचीन	इति मूत्र परीक्षा लक्षणानि शुभम् लिखित सरजीत सिंह ब्राह्मणेन शुभम् ।
२५ + १० ५ सें० मी०	४८ (२–३, ५–६, ८–१५, १७–१८, २०–५०, ७१–७३)	६	३५	अपू०	प्राचीन	
३०·५ + १२ ३ सें० मी०	२ (१०७–१०८)	८	३३	अपू०	प्राचीन	
३०·७ + १२ ६ सें० मी०	२२ (८५–१०६)	८	३०	अपू०	प्राचीन	
३१ + १२ ४ सें० मी०	५५ (१–१४, १६–४७, ७५–८३)	८	३५	अपू०	प्राचीन	इति श्रीमत्तपागच्छीयत योगक्षीय श्री हर्ष कीर्तिसूरि सकलिते श्री योग चिंतामणौ वैद्यक संग्रहे गुटिकाधिकारो नाम तृतीयोध्याय । पृ० ४७
२३ ५ + १० ६ सें० मी०	२४ १–२४	११	३३	अपू०	प्राचीन	
२१५ + ९ ५ सें० मी०	१८ (१–१८)	१३	२७	पू०	प्राचीन सं० १८२३	इति श्री योगशत समाप्तम् । सं० १८२३ वर्षे भाद्रमासे शुक्ल पक्षेतिथौ ५ पचम्यां शुभदिने लेख कथा चक्रयोजयत्ति ।

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३०×११.५ से० मी०	९ (१–९)	१२	४५	अपू०	प्राचीन	
२६.५×९.९ से० मी०	७ (१–७)	७		पू०	प्राचीन	इति योग शतक समाप्त ॥……… ………
२२×१० से० मी०	८ (१–८)	८	२६	पू०	प्राचीन सवत्— १८७०	इति श्री जगदीशात्मज वदिमिश्र विरचितं जोग सुधा निधौ प्रथमादि दिवस मास वर्ष समुदाय कृतभेदन भिन्नाना पूतना ग्रहणचिकित्सा नामपंचकलास समाप्त''' ॥ संवत् १८७०
२७×१२ से० मी०	९५ (१–९२, ९४–९६)	९	६३	अपू०	प्राचीन	विदु नामय सुभिषजामुदेरसं पद्धति सपष्यते · पृ १)
२२.४×९.४ से० मी०	७ १–७	८	३०	अपू०	प्राचीन	
२५.७× १०.८ से० मी०	२४ ३०–३४, ३६–५५	७	३२	अपू०	प्राचीन	इति श्री शालिनाथ विरचिता रसमजरी वाल ज्ञान कथन नाम दशमोध्याय समाप्तोया ग्रंथ ।
२४.४+९.६ से० मी०	४ १–४	९	३३	अपू०	प्राचीन	
२६.६+ ११.४ से० मी०	१४ (११–२५)	८	३८	अपू०	प्राचीन	इति श्री पडित वैद्यनाथ पुत्र शालिनाथ विरचित रसमजरी उरी उपरसशोधन मारण सत्वापातनमणि मारण कथननाम तृतीयोध्याय ॥ पृ० १२)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
आयुर्वेद						
११०	७१०७	रसमंजरी	शालिनाथ		दे० का०	दे०
१११	१०४२	रसमजरी	शालिनाथ		दे० का०	दे०
११२	४२८८	रस रत्न समुच्चय			दे० का०	दे०
११३	६५१८	रसरत्नाकर	नित्यनाथ सिद्ध		दे० का०	दे०
११४	७५१२	रसरत्नाकर	नित्यनाथ		दे० का०	दे०
११५	५२	रसरत्नाकर	नित्यनाथ सिद्ध		दे० का०	दे०
११६	११६२	रसतधारा			दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठो का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति सख्या और प्रति पक्ति मे अक्षर सख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८ ब	स	द	६	१०	१०
२४ ५ × ११ सें० मी०	८ (१–२, ४–७, ९–१०)	८	३२	अपू०	प्राचीन	इति श्री रसमजर्या रस जारण मारणादि कथन नाम द्वितीयोध्याय ·· (पत्रसख्या ७)
२५ ५ × १२ ५ सें० मी०	४२ (१–७, १०–११, १३–४५)	७	२८	अपू०	प्राचीन	
२६ ४ × ११ १ सें० मी०	३१ (१–१३, १६–३३)	१२	३६	अपू०	प्राचीन	इति रसरत्न समुच्चये षोडशोध्याय ॥ (पत्र स० ३०) × × ×
२६ ७ × ११ ६ सें०मी०	११२ (१–११२)	११	४८	अपू०	प्राचीन	इति श्री पार्वती पुत्र श्री नित्यनाथसिद्ध विरचिते रसरत्नाकरे रसायनखडे वीर्यस्तभनादिस्त्री द्रावणा तन्त्रामनव मोपदेश ॥६॥
१२ ८ × १० ८ सें०मी०	४७ (१–४७)	८	१६	अपू०	प्राचीन	इति श्री पार्वती पुत्र श्री नित्यनाथ विरचिते रस रत्नाकरे सिद्ध खडे दशो दशो पदेश × × । (पत्रसख्या ३६)
३५ × १८ से० मी०	४६	१५	५२	पू०	सवत— १७२८	रसरत्नाकरमत्र खड पूर्ण
२७ × १२ ५ स० मी०	६	६	२२	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११७	७१०३	रसायनकल्प			दे० का०	दे०
११८	६६८२	रसायन क्रिया (काकचंडीश्वर मते)			दे० का०	दे०
११९	४२६५	*रसिकविनोद	गोपालदास		दे० का०	दे०
१२०	७५२३	रोगचिकित्सा-औषधिप्रकरण			दे० का०	दे०
१२१	६६२२	रोगचिकित्सा ?			दे० का०	दे०
१२२	४१६१	रोगावली (हिंदी सटीक)			दे० का०	दे०
१२३	४२६२	*वीरसिंहावलोक (कर्मविपाक)	वीरसिंह देव		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति सख्या और प्रति पक्ति मे अक्षर सख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२०.७ × १०.५ से० मी०	११ (१–११)	८	२०	अपू०	प्राचीन	
१६ ५ × ८ ५ से० मी०	४१ (१–४१)	७	१७	अपू०	प्राचीन	
२७ ८ × ११ २ से० मी०	प०स० ४५ (१-२, ७-८, १४-२३, २५-२८, ३४-३८, ४३, ५१, ५३, ५६-६१, ६८, ७४,७६, ८२, ८६-८७, ९० ९२, ९५, ९८, १०६, १०९, ११२, १५५, १५८)	१०	३४	अपू०	प्राचीन सवत्— १७६७	इति श्री मेहरा वशावतस श्री स्वामिदासात्मज गोपालदास विरचितोरसिक विनोद नाम्नाप्रथोय परिसमाप्तः ॥ श्री शुभमस्तु मागल्य ददातु। सवत् १७५८ वरषे पौष वदि पचमी ५ गुरुवासरे × × × × ॥
२८ १ × १० १ से० मी०	१३	१०	३५	अपू०	प्राचीन	
२५·१ × ९·८ से० मी०	३ (१, ४–५)	१४	४०	अपू०	प्राचीन	
२६ २ × १२ से० मी०	५ (१–५)	९	४२	पू०	प्राचीन	दशिताश्चवशकित इत्युक्त तदन्तर इत्यमाह १ इति महार्णवे ॥
२४ ६ × १० से० मी०	६५	८	२९	अपू०	प्राचीन स०१५४४	इति श्री तोमरवशायतम—॥ वीरसिहदेव विरचिते प्रयो वीरसिहावलोके ज्योतिशास्त्र कर्मविपाकायुर्वेदोक्त प्रयोगे ······ . ··· ···सवत् १५४४ समय भाद्रसुदि २ चद्रवासरे। मदीहवालपीननगेमुलुतान बहलोम शाहिराज्ये। मीमूरमहिवादेमादमपान राज्य प्रवर्तते।·········॥

क्रमाक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१२४	६५८६	वैद्यक			दे० का०	दे०
१२५	३५७६	वैद्यक ?			दे० का०	दे०
✓ १२६	६११	वैद्यकग्रंथ			दे० का०	दे०
१२७	३३०३	वैद्यकशास्त्र	हंसराज		दे० का०	दे०
१२८	७५३३	वैद्यकसंदोह			दे० का०	दे०
१२९	६६८४	वैद्यकसंदोह			दे० का०	दे०
✓ १३०	७०६१	वैद्यकसार	शंकर		दे० का०	दे०

पत्ता या पृष्ठो का आकार	पत्र सख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति सख्या और प्रति पक्ति मे अक्षर सख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२०८×९४ से० मी०	१९ (१–१९)	८	३४	अपू०	प्राचीन	॥ अथ वैद्यक ॥ (प्रारभ)
२५५×१२५ से० मी०	५(१–५	६	१९	पू०	प्राचीन	
१९९×११२ से० मी०	प० स० ३९ (१,३–११, ४५–६२, ६४–७५)	९	२७	अपू०	प्राचीन	
२३°५×१०९ से० मी०	प० स० १७ (१–१७)	७	२२	अपू०	प्राचीन	
२४९×९९ से० मी०	७	७	३०	अपू०	प्राचीन	
१७२×८८ से० मी०	७ (१–७)	८	१७	अपू०	प्राचीन	
१५७×८३ से० मी०	२० (१–२०)	७	१७	पू०	प्राचीन स०१८६१	इनि वैद्यसारे गणराद्ये पचमोध्याय ग्रथ सख्या ६५० हस्ताक्षरमोउविठल ब्रह्माण पुरकर कुलकर्णि प्रगण जाहानाबादमौजे गोरा समत १८६१ कार्तिक शुध्य १२—

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१३१	३२९३	वैद्यचन्द्रोदय	वाग्भट		दे० का०	दे०
१३२	४२३६	वैद्यकसारसंग्रह	हर्षकीर्ति		दे० का०	दे०
१३३	४३९३	वैद्यजीवन	लोलिंबराज		दे० का०	दे०
१३४	१३५८	वैद्यजीवन (सटीक)	लोलिंबराज	गोस्वामी-हरिनाथ	दे० का०	दे०
✓ १३५	१६०७	वैद्यजीवन (संस्कृत टीका सहित)	लोलिंबराज	हरिनाथ शर्मा	दे० का०	दे०
१३६	११२६	वैद्यजीवन	लोलिंबराज		दे० का०	दे०
१३७	३४००	वैद्यजीवन (सटीक)	लोलिम्बराज	भगीरथ	दे० का०	दे०

पत्ना या पृष्ठों का आकार	पत्नसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूरा है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२.५ × ११.१ सें० मी०	प० सं० ११ (१–३, ५–१२)	९	२९	अपू०	प्राचीन सं० १८६८	इनि श्री वैद्य वाग्भटोक्त विरिचिताया वैद्य चद्रोदय नाम ग्रथो षाडशाध्याय ॥ सवतु १८६८ साके १७३३ ॥
२५.८ × १६.६ सें० मी०	३६ (३६–६१)	२३	२४	अपू०	प्राचीन	इति श्री योगचितामणौ वैद्यक सारसग्रहे तैलाधिकार षष्टोध्याय समाप्त ॥ ६ (पत्नसंख्या–४३)
२३.१ × १०.५ सें० मी०	प० सं० २३ १–२३	९	३०	पू०	प्राचीन सं० १९२३	इति श्रीमद्दिवाकर सूनुना लोलिंबराज कवि विरचिते वैंद्य-जीवन समाप्त । × × × समत १९२३ ॥ शाके १७८८ ॥ बहुधाय नाम सवत्सरे उत्तरायणे ···· ॥
२३.८ × १०.९ सें० मी०	३० (१–२ ४–३१)	१३	४९	पू०	सं० १८९१	इति श्रीमद्दिवाकर सूनु लोलिम्बराज विरचिते सकलरोग प्रतीकारो नाम पचमो विलास ॥ ० ॥ सम्वत १८९१ मिति फालगुन शुक्ल पक्ष नवम्या रविवासर अहिछत्र नगर रघुवरमिश्रण लिपिनमित्म शुभभूयात ।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१३८	३७९६	वैद्यजीवन	लोलिंबराज		दे० का०	दे०
१३९	६५८४	वैद्यजीवन	लोलिंबराज		दे० का०	दे०
१४०	७१८६	वैद्यजीवन (सटीक)	लोलिंबराज		दे० का०	दे०
१४१	५७४१/२	वैद्यजीवन	लोलिंबराज		दे० का०	दे०
१४२	७७७३	वैद्यजीवन	लोलिंबराज		दे० का०	दे०
१४३	७२६४	वैद्यजीवन	लोलिंबराज		दे० का०	दे०
१४४	७१२८	वैद्यजीवन दीपिका	लोलिंबराज	रुद्रभट्ट	दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६ १ × १२ २ से० मी०	प० स० १६ (१–१६)	६	१७	अपू०	प्राचीन	इति श्री वैद्यजीवने ज्वर प्रतिकारोनाम प्रथमो विलास: । (पत्र सं० ६)
१५ ८ × ६ २ से० मी०	३१ (३–३४)	६	२२	अपू०	प्राचीन	इति महिवाकर सूनु लोलिमराज विरचिते वैद्य जीवने ज्वर प्रकरणनाम प्रथमोल्लास ॥ १ ॥ (पत्र सं० १३)
३४ ८ × १३ २ से० मी०	३३ (१–३३)	११	४५	पू०	प्राचीन स०१६२२	इति श्री वैद्य लोलिमराज विरचिते वैद्यजीवनेरसविधिर्नाम पचमोविलास ५ सवत् १६२२ कार्तिके शुक्ल पक्षे पचम्या भौमवासरे तददीने रामभक्तेन लोलिमराज लिख्यते समाप्न शुभ भूयात् ॥ × ×
१८ १ × १३ ६ से० मी०	२३	१७	१८	अपू०	प्राचीन सं०१८५८	इति श्री श्रीमद्दिवाकर पडित सूनु लाल लोलिवराज विरचिते वैद्यजीवण समाप्त सुभमस्तु मिद पुस्तक लिपा श्री त्रिपाठीनदलालेन पहरौधी ग्रामे सवत् १८५८ रामचद्रायनम ।
२० × १५ से० मी०	३२ (१–३२)	१४	१३	पू०	प्राचीन स०१८६७	इति श्री लोलिंवराजविरचिते वैद्य जीवने सकलरोग प्रतिकारो नाम पचमो विलास । इति वैद्य जीवन समाप्तम् ॥ शुभमभूयात् सवत् ॥ १८६७ ॥
२३ ६ × ६ ५ से० मी०	२६ (१–२६)	७	३०	पू०	प्राचीन सं०१७२६	इति श्री श्रीमदिवाकर पडित सूनु लाल लालिबराज विरचिते वैद्यजीवन समाप्त ॥ सवत् १७२६ समय जेठ वदि १२ मगल + + +
१६ २ × १० २ से० मी०	८ (१–८)	१८	१३	पू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
✓ १४५	६८८७	वैद्य दर्पण (हिंदी टीका)			दे० का०	दे०
✓ १४६	६३६२	वैद्यभास्करोदय सटीक	धन्वंतरि	विष्णुगिरि	दे० का०	दे०
१४७	२०८६	वैद्यमनोत्सव	वंशीधर मिश्र		दे० का०	दे०
१४८	२६	वैद्यमनोत्सव	वंशीधर		दे० का०	दे०
✓ १४९	३२४२	वैद्यरत्न	शिवानंद भट्ट		दे० का०	दे०
१५०	४५३६/२	वैद्यामृत	मोरेश्वर भट्ट		दे० का०	दे०
१५१	६५१६	वैद्यामृत	मोरेश्वर		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
३१.६ × १५.५ सें० मी०	२५ (१–१२, १४–२६)	११	३८	अपू०	प्राचीन	श्रीमते रामानुजाय नमः नमस्कृत्य गणेशान महेशानं महेश्वरी वैद्यदर्पण-माचष्टे वैद्यानांहितकाम्यया । (प्रारंभ)
२०.४ × ८.३ सें० मी०	१५८ (३–१६०)	७	३०	अपू०	प्राचीन	इति श्री वैद्यभास्करादये धन्वंतरिकृत विरचित भाष्य विरचितायां नामरोग व्याधिजन्य उत्पत्तिज्ञान अनुक्रमणिका नाम कथनं चतुर्विंशति परिछेद २४ शुभमस्तु ॥
२६.५ × १४ सें० मी०	१७ (३,५, ७,६,१०, १४,१६, १७,२०, २२,२३, ३३ (३७, ३८)	१०	२८	अपू०	प्राचीन	इति श्रीमन्मिश्र यशोधर विरचिते वैद्यमनोत्सवे नाडापरीक्षा मूत्रपरिक्षा पित्त कफवातकाय निदान साध्यासा ।
३० × १३ सें० मी०	म०सं०३०	६	३४	पू०	प्राचीन सं०१६१६	संवत् १६१६ वैशाषमासे कृष्णपक्षे प्रतिपदा भौमवासरे लिपि कृत ·· ···श्रीमस्तु शुभमस्तु दासरथे रामकृष्ण ।
२३ × १०.३ सें० मी०	४१ (३–४३)	११	४४	अपू०	प्राचीन	इति श्री गोस्वामि शिवानंदभट्ट विरचिते वैद्यरत्ने समाप्त शुभभूयात् ॥
२७ × ११.५ सें० मी०	१२ (१–१२)	११	४१	पू०	संवत्–१८४२	इति श्रीमदहम्मदानगरस्थितमाणिकभट्ट वैद्यात्मज मारेश्वरविरचिते चतुर्थोलंकार वाधवजरोपनामकरघुनाथसूनुनामधानी शंकरेणलिखितमल ॥ संवत् १८४२ आषाड शुद्धपंचम्यामिदो ॥
२४.२ × १०.२ सें० मी०	१२ (१–१२)	११	३५	पू०	प्राचीन संवत्–१८८६	इति श्रीमदहमदानगरस्थित माणिक भट्ट वैद्यात्मज मारश्वर विरचिते वैद्यामृत चतुर्थोलंकारः समाप्त ॥ संवत् १८८६ मिति माघ शुद्ध ४ गुरुवासर जयरामेन लिखितं ॥ कवीश्वरोपनाम्ना ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१५२	६५८३	वैद्यावतंस	लोलिंबराज		दे० का०	दे०
✓ १५३	७५३०	व्याधि ज्ञान			दे० का०	दे०
✓ १५४	६५६८	(द्रव्य गुणागुण) शतश्लोकी	त्रिमल्ल भट्ट		दे० का०	दे०
१५५	३२६४	शतश्लोकी	त्रिमल्ल कवि		दे० का०	दे०
१५६	६५४१	शतश्लोकी टीका (द्रव्यदीपिका)	त्रिमल्ल भट्ट	कृष्णदत्त	दे० का०	दे०
१५७	७०५६/३	शतश्लोकी निघंटु	त्रिमल्ल		दे० का०	दे०
✓ १५८	६६००	शारीरम (अष्टांग हृदय)	वाग्भट्ट		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१८८×७७ सें० मी०	१२ (१–१२)	८	१८	पू०	प्राचीन	......रचयति चरकादीन् वीक्ष्य वैद्यावतम कवि कुल सुलतानो लाल लोलिंब राज ॥ २ ॥...... (पत्र सं० १)
२५५× १०४ सें० मी०	६	९	३२	अपू०	प्राचीन	
२२५×९ सें० मी०	११ (१–११)	११	३२	पू०	प्राचीन	इति श्री त्रिमल्ल विरचिता गुणागुण शतश्लोकी समाप्ता ॥
२३२×१३ सें० मी०	प०सं०१० (१–२, ८–१५)	१०	३२	अपू०	प्राचीन सवत् १९२५	इति श्री त्रिमल्ल कवि विरचिता शतश्लोकी समाप्ता शुभ सवत् १९२५ फाल्गुन कृष्ण १० शनौ ॥
३४५× १२९ सें० मी०	१३ १,१–१२	९	४०	पू०	प्राचीन सवत् १९०५	इति श्री त्रिमल्ल भट्ट कृता शतश्लोकी टीका समाप्त शुभ भूयात् सवत् १९०५ के–कार्तिक ६ सु० ।
२२४×१६ सें० मी०	५ (१–५)	१३	३३	अपू०	प्राचीन	......अथ श्री त्रिमल्लकविकृत शतश्लोकी निघटु प्रारभ ॥ .. (आदि)
२२×५ ९७ सें० मी०	१५ (७,१२–२५)	९	३१	अपू०	प्राचीन	इति श्री शारीरस्थाने मर्म विभागो-नाम चतुर्थोऽध्याय ॥

क्रमाक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या या सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
√ १५६	७५६८	शाङर्गधर सहिता			दे० का०	दे०
√ १६०	७४६२	शाङर्गधर व्याख्या	शाङर्गधर	सुखराम	दे० का०	दे०
१६१	७८२७	शाङर्गधर सहिता (व्याख्या) टीका	शाङर्गधर		दे० का०	दे०
१६२	७७०७	शाङर्गधर टीका	शाङर्गधर		दे० का०	दे०
१६३	६०३४	शाङर्गधर सहिता	शाङर्गधर		दे० का०	दे०
१६४	५६६२	शाङर्गधर सहिता (पूर्व एव मध्यम खड)	शाङर्गधर		दे० का०	दे०
१६५	६८७०	शाङर्गधर सहिता	शाङर्गधर		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३४×१ ३.१ सें० मी०	२ (१-२)	१३	५२	अपू०	प्राचीन	इति श्री शाङ्गंधरे० स्नेहपानाध्याय ॥ (पत्र-सं० २)
२७×११ ५ सें० मी०	६०	६	३१	अपू०	प्राचीन (शके १७७६)	इति शाङ्गंधर व्याख्याया दृष्टि प्रसादन कल्पनाध्याय । सवत् १-शके १७७६ मासोतम मासे भाद्रपद मासे शुभे कृष्ण पक्षे तिथौ द्वितीयाया भृगुवासरे तदिन उपनाम ज्योसी गोविंदात्मज चीरजीव रामेश्वर गौडरीमा शुभस्था नेन लिखित ॥
२६.६×११ ३ सें० मी०	८ १६, ८-६	११	३८	अपू०	प्राचीन	इति श्री शाङ्गंधर व्याख्याया पुटपाक कल्पना (पत्र सं० ३)
२७×११.४ सें० मी०	१८ १-३, ३-१७	१३	३६	अपू०	प्राचीन	
२८×१२.२ सें० मी०	५६	७	४०	अपू०	प्राचीन	
३३.५×१३ सें० मी०	६२ (१-६२)	८	३७	पू०	प्राचीन सं० १६११	इति श्री दामोदर शूनुना।शाङ्गंधर विरचिताया चिकित्सा स्थाने मध्यम खड समाप्त शुभमस्तु मिति पौष सुदि द्वादसी रवौ की सवत १६०११ के साल
३३.८×१३.२ सें० मी०	११७	१०	२३	अपू०	प्राचीन	इति श्री दामोदर सूनो शाङ्गंधरेण विरचिता सहिताया चिकित्सा स्थाने यूर्णा जनवर्ति सकल्पनाध्याय समाप्त ॥ शुभमस्तु सर्वजगताम् ॥ श्री राधा कृष्णाभ्या नम ॥शुभम्॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१६६	६५१९	शार्ङ्गधरसंहिता	शार्ङ्गधर		दे० का०	दे०
१६७	५०५५	शार्ङ्गधरसंहिता	शार्ङ्गधर		दे० का०	दे०
१६८	१०१९	शार्ङ्गधरसंहिता	शार्ङ्गधर		दे० का०	दे०
१६९	३०१२	शार्ङ्गधरसंहिता	शार्ङ्गधर		दे० का०	दे०
१७०	३७९७	शार्ङ्गधरसंहिता	शार्ङ्गधर		दे० का०	दे०
१७१	३७००	शार्ङ्गधरसंहिता	शार्ङ्गधर		दे० का०	दे०
१७२	६४९	शार्ङ्गधरसंहिता	शार्ङ्गधर		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७ × ११·३ सें० मी०	३६ १–३६	१०	३१	अपू०	प्राचीन	इति श्री दामोदर सूनुनाशाङ्गर्धरेण विरचिताया सहिताया सूत्र स्थाने परिभाषाय. प्रथमः + + + (पृ० ५)
२८·७ × ११ सें० मी०	१९० १–२, ४–२५, २७–११३, ११५–१६२, १६४–१६८, १७१–१८२, १८४–१९१, १९३–१९८	९	२६	अपू०	प्राचीन	इति श्री दामोदरसुनुना शाङ्गर्धरेण विरचितायासंहितायांश्चिकित्सास्थाने लेपादिविधिरध्यायः ॥ (पत्र संख्या १८९) + + +
२२·६ × १४·७ सें०मी०	प० सं० २६	१०	२५	अपू०	प्राचीन	
२५ × १२ सें० मी०	प० सं० ५९ (१–४०, ४४–६२)	१३	२६	अपू०	प्राचीन सं० १९१८	इति श्री दामोदर सूनो शाङ्गर्धरस्य विरचिताया संहिताया चिकित्सास्थाने-रसकल्पनाध्यायः समाप्तः ॥ इति मध्यमखंड समाप्तः संवत् १९१८'''॥
२५·२ × ११·६ सें० मी०	प० सं० २१ (१–२१)	११	३२	अपू०	प्राचीन	इति श्री दामोदर सूनुना शाङ्गर्धरेण विरचिताया संहितायांनिदाने रोगगणना सख्याध्य. इति पूर्व खडः समाप्तः ॥
३० × १५·७ सें० मी०	प० सं० ६ (२–६)	१४	३५	अपू०	प्राचीन	
२८ × ११ सें० मी०	१५७ १, ३–१२, १२–३५–३५–११३, ११३–१३६, १४१–१५६	८	३१	अपू०	प्राचीन सं० १७६६	इति श्री दामोदर सूनु श्री शाङ्गर्धरेण विरचिताया संहिताया चिकित्सास्थाने-नत्रप्रशादनकर्म विधिरध्यायः ॥ शुभमस्तु लेपक पाठयो. श्रीरस्तु संवत् १७७९ वर्षे वैशाष कृष्ण पचम्य चद्रवासरे इद पुस्तकं लिखित शुभ मस्तु ॥०॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१७३	४५३	शार्ङ्गधर संहिता मध्य खंड	शार्ङ्गधर		दे० का०	दे०
१७४	१४४	शार्ङ्गधर संहिता	शार्ङ्गधर		दे० का०	दे०
१७५	३१	शार्ङ्गधर संहिता	शार्ङ्गधर		दे० का०	दे०
१७६	४३१३	शार्ङ्गधर संहिता	शार्ङ्गधर		दे० का०	दे०
१७७	१८६०	शार्ङ्गधर संहिता	शार्ङ्गधर		दे० का०	दे०
१७८	१४४६	शार्ङ्गधर संहिता	शार्ङ्गधर		दे० का०	दे०
१७९	१०६१	शार्ङ्गधर संहिता	शार्ङ्गधर		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८ ब	८ स	८ द	९०	९०	९०
२८×११ से० मी०	६६	१०	०३	पू०	प्राचीन सं० १८७२	इति श्री शाङ्गंधरस्यसहितायांचिकित्सा स्थाने रस कल्पनाध्यायः ॥ इति मध्यम खंड समाप्त. ॥ शुभमस्तु ॥ अथ शुभ सवत्सरे अस्मिन् श्री नृपति विक्रमादित्य राज्य सं० १८७२ वर्ष चैत्र शुदिदशमी १० बुध वासरे लिख तमिदं लक्ष्मण चदर्थ वड़वाला शुभ ॥
२५.५× १०.५ से० मी०	४६ (२-४७)	६	२६	अपू०	प्राचीन	इति श्री दामोदर सूनुनाशाङ्गंधरेण विरचितायां अवलेह कल्पनाध्यायः ८॥
३०×१३.५ से० मी०	४६(३-३५ ६१-६४, ७४, ८४-८४, ८६ ६२-६४)	११	३४	अपू०	प्राचीन	
३४.३× १३.१ से० मी०	५३	११	३६	अपू०	प्राचीन	इति श्री दामोदर सूनुनाशाङ्गंधरेण विरचितायां सहितायां चिकित्सा स्थाने कषादि कल्पनाध्याय × × ×॥ (पृ० १२)
२७.५× ११.३ से० मी०	३५(१-७, १०-३७	८	२८	अपू०	प्राचीन	
२१.४× १४.२ से० मी०	२७ (१-२७)	११	२६	अपू०	प्राचीन	इति श्री दामोदर सूनो शाङ्गंधर विरचितायां सहितायां दारस्थाने योग गणनाध्यायः ॥
२१.५× १४.७ से० मी०	६६ (७-४०, ४२-६६ ७२-६५)	१०	२४	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१८०	१०८१	शार्ङ्गधर संहिता	शार्ङ्गधर		दे० का०	दे०
१८१	१०७७	शार्ङ्गधर संहिता (रसकल्पना विधि-रध्याय:)	शार्ङ्गधर		दे० का०	दे०
१८२	१०५०	शार्ङ्गधर संहिता	शार्ङ्गधर		दे० का०	दे०
१८३	४५	शालिहोत्र (तुरग-प्रशंसा प्रकरण)	शार्ङ्गधर		दे० का०	दे०
१८४	७७७०	शिलाजतु शोधन (शिलाजीत शोधन)			दे० का०	दे०
१८५	५१६०	शूलज्वर चिकित्सा			दे० का०	दे०
१८६	५७३७	षड्ऋतु पथ्य			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२९.५ × १४ सें० मी०	८८	१२	४०	पू०	सं १८९६	इति श्री दामोदर सूनो शार्गंधरेण विरचितायां संहितायां चिकित्सा स्थाने नेत्र प्रसादन कर्म अध्यायः द्वात्रिंशदाख्य समाप्त सं० १८९६ मासोत्तमे माघ मासे शुक्ल पक्ष शुभ तिथौ सप्तम्या उपरांत अष्टम्या चंद्रवारान्विताया पुस्तग लिखित हेतरामज वहेडी मध्ये शुभमस्तु, मंगल ददातु ॥
३२.१ × १८.२ सें० मी०	७१ (१-७१)	९	३४	पू०	प्राचीन सं १९३२	इति श्री दामोदर सूनुना शार्ङ्गधरेण विरचितायां संहितायां चिकित्सा स्थाने रस कल्पनाविधिरध्याय चतुर्दश १४ इति श्री मध्यम खंड समाप्तम् ॥ लि० संवत १९२२ भाद्रपद कृष्णा प्रतिपदायां भौम वा० ॥
२८.५ × १४.३ सें० मी०	८० (१-८०)	१३	३७	पू०	सं १८८८	इति श्री दामोदर सूनुनाशार्ङ्गधरेण विरचितायांचिकित्सास्थाने नेत्र प्रसादन मर्म्माणिस्थान समाप्त ॥ अथ संवत्सरेऽस्मिन श्री नृपति विक्रमादित्य राजे संवत् १८८८ वर्षे वैशाखसुदी ४ चौथ वार शनि ॥... ... ... श्रीराम श्रीराम
२४.५ × ११.४ सें० मी०	९	११	३५	पू०	प्राचीन	इति शार्ङ्गधर विरचितायां पद्धत्यां तुरगप्रशंसा ।
१३.६ × ८.४ सें० मी०	४ (१-४)	९	२२	पू०	प्राचीन	इति शिलाजतुन शोधन विधि ॥
२१.१ × १३.८ सें० मी०	१	२५	३६	अपू०	प्राचीन	
२३.१ × ८.९ सें० मी०	११ (१-११)	७	३०	पू०	प्राचीन	इति षड्ऋतुपथ्य वर्णन ॥ शुभमस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१८७	६४३७	षड्ऋतुवर्णन	त्रिमल्लवैद्य		दे० का०	दे०
१८८	६५८५	हृदय दीपक			दे० का०	दे०
उपनिषद्						
१	६३२७	अथर्वणवेदोपनिषद्			दे० का०	दे०
२	१३२१	अथर्वणीयउपनिषद्			दे० का०	दे०
३	१५२५/१६	अथर्वशिखोपनिषद् (संस्कृतटीकासहित)		नारायण	दे० का०	दे०
४	७१४६	अथर्वशिखोपनिषद् दीपिका (टीका)		श्री शंकरानंद	दे० का०	दे०
५	१५२५/१६	अथर्वशिरोपनिषद् (संस्कृतटीकासहित)		नारायण	दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
१३४× १२८ सें० मी०	२ १-२		४०	पू०	प्राचीन	इति विमल्लवैद्य विरचित षट्ऋतु वर्णन संपूर्ण शुभमस्तु मंगलम ॥
१५७×६८ सें० मी०	२१ (१-२१)	११	१७	अपू०	प्राचीन	इति श्री हृदयदीपके विपाद्वर्ग ॥२॥ (पत्रसंख्या ५)
१६५× १०२ सें० मी०	६ (१-६)	८	१७	पू०	प्राचीन सं० १९३२	इत्यथर्वण वेदोपनिषत्समाप्तम् ॥ श्री रामायनम ॥ सं० १९३२ ।
२३७× १९३ सें० मी०	प०सं०८६	११	३०	अपू०	प्राचीन	
२३२× १९७ सें० मी०	३½ (२३-२५½)	१२	४६	पू०	प्राचीन	इत्यथर्वशिखोपनिषद्दीपिका ७ ॥
२५५× १०६ सें० मी०	१६ (१-१६)	१४	४३	पू०	प्राचीन	इति श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्यानंदपाद पूज्यपादशिष्यस्य श्री शंकरानंद भागवत कृतिरथर्वशिखोपनिषद्दीपिका समाप्ता ।
३२२× १५७ सें० मी०	११ (१२-२२)	१२	४६	पू०	प्राचीन	इत्यथर्वशिरउपनिषद्दीपिका ६ ॥

क्रमाक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६	१५२५/१६	ग्रमृतबिन्दूतनिषद् (सस्कृत टीका सहित)		नारायण	दे० का०	दे०
७	७७१७	ग्रल्लोपनिषद्	ग्रबुलफजल		दे० का०	दे०
८	१५२५/१६	ग्रात्मोनिषद (सस्कृतटीकासहित)		नारायण	दे० का०	दे०
९	३७४७	ग्रारण्यक			दे० का०	दे०
१०	२०३४	ईशावास्यभाष्य	शकर भगवान		दे० का०	दे०
११	१३७६	ईशावास्योपनिषद्			दे० का०	दे०
१२	२८६०/३	ईशावास्योपनिषद्			दे० का०	दे०
१३	३११६	ईशावास्योपनिषद्			दे० का०	दे०

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है।	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१४	१६८६/२२	ईशावास्योपनिषद्			दे० का०	दे०
१५	१०६४	ईशावास्योपनिषद् शांकरभाष्य		शंकराचार्य	दे० का०	दे०
१६	११७९	उपनिषद्मुपचार दीपिका	वेंकटनाथ		दे० का०	दे०
१७	७१६५	उपनिषद्संग्रह			दे० का०	दे०
१८	१६०६	उपनिषद्संग्रह			दे० का०	दे०
१९	६१९	उपनिषद्संग्रह			दे० का०	दे०
२०	५६६६	उपनिषद्सार संग्रह			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति। सख्या और प्रति पक्ति म अक्षर सख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है ता वर्तमान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६ २× १४ १ से० मी०	५०११	१५	४९	पू०	प्राचीन	इति ईशावास्य उपनिषद समाप्त ।
२५+१०८ से० मी	१४ (१–१४)	९	३२	पू०	प्राचीन	इति श्री मत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य वयगाविदभगवत्पूज्यपादशिष्य शकर-भगवन कृता ईशावास्यभाष्यसमाप्त श्री ब्रह्मार्प्पणमस्तु । •••
२८ ८+ १८ २ से० मी०	प० स०	१८	२६	पू०	प्राचीन	
३३ ६+ १२ ५ से० मी०	१० १–१०	११	६०	अपू०	प्राचीन	
१६+ ९ से० मी०	१४ (१–१४)	१०	२३	पू०	प्राचीन	तेजस्विनावधितमस्तु माविद्विषावहै॥ ओम् ॥ शाति ॥ शाति ॥ शाति ॥
२१ २+१० से० मी०	५९	९	२६	पू०	स० १८५६	समत १८५६ प्रमाथिनाम सवत्सरे मार्गशिषमासे शुक्लपक्षे चतुर्थ्यां तिथौ मदवासरेलिजित ॥
२८+११८ से० मी०	२३	११	४७	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२१	१३६७	ऐतरेयोपनिषद्			दे० का०	दे०
२२	३६३१	ऐतरेयोपनिषद्			दे० का०	दे०
२३	३४१५	ऐतरेयोपनिषद्			दे० का०	दे०
२४	११३१	ऐतरेयोपनिषद् भाष्य			दे० का०	दे०
२५	६३५	ऐतरेयोपनिषद भाष्य-टिप्पणी	ज्ञानामृतयति		दे० का०	दे०
२६	२९६२	ऐतरेयोपनिषद् सटीक			दे० का०	दे०
२७	२८६० ३	कठोपनिषद्			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८	अ	द	९	१०	११
१६.५×८ से० मी०	६	६	२६	अपू०	प्राचीन	इति एतरेयोपनिषत्समाप्तम् ॥
१६.७×७.६ से० मी०	प०सं०५ (१-५)	७	३१	अपू०	प्राचीन	
१६.४× १०.२ से० मी०	१० (१-१०)	७	१५	पू०	प्राचीन	
२५.५× १०.५ से० मी०	७ (१-७)	८	२८	पू०	प्राचीन	ॐ शांति शांति शांति ॥
२१.६×८.८ से० मी०	१३ (१-१३)	१३	३८	पू०	प्राचीन सं० १७३५	इति श्री मदुत्तमामृत पूज्यपादशिष्यस्य ज्ञानामृतयते कृतौ श्रीमदैतरेयोपनिषत्भाष्यटिप्पणे प्रथमारण्यक संपूर्ण ॥ सं० १७३५ वि० संवत्सरे आश्विन शुद्ध ७ गुरुवार ॥ कृष्णदश पुत्रस्य पुस्तक नारायणत्मज शिवरामस्य ॥
२३.१× १५.८ से० मी०	प०सं०८	१६	६२	अपू०	प्राचीन	
२३.३× १०.१ से० मी०	प०सं०९ (५-१३)	६	२६	पू०	प्राचीन	इति कठवल्ल्युपनिषद्य संपूर्ण समाप्त ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२८	८६३	कठोपनिषद्			दे० का०	दे०
२९	२४२५	कठोपनिषद् भाष्य (टीका सहित)			दे० का०	दे०
३०	१०६४	कठोपनिषद् (शांकर भाष्य)		शंकराचार्य	दे० का०	दे०
३१	१५७८/६	कालाग्निरुद्रोपनिषद्			दे० का०	दे०
३२	१६००	कालाग्नि रुद्रोपनिषद्			दे० का०	दे०
३३	३४३५	कालाग्नि रुद्रोपनिषद्			दे० का०	दे०
३४	३५४१	कालाग्नि रुद्रोपनिषद्			दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५.३ X १०.६सें०मी०	१४ (१–१४)	७	२५	अपू०	प्राचीन	
३१.४ X १६.२सें०मी०	प०सं०२८ (१–२४)	१८	५२	पू०	प्राचीन	इति श्री शंकरस्य काठकोपनिषद भाष्य टीका समाप्ता ।
२५.३ X १०.८सें०मी०	५३ (१–५३)	९	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री गोविंदभगवत पूज्यपाद शिष्यस्यपरमहंस परिव्राज कार्यस्य श्री मंछकर भगवत् रतौ काठकभाष्ये द्वितीयाध्याय स्तृतीया वल्ली ॥ सापष्टी वल्ली समाप्ता ॥
३४ X १७.४ सें० मी०	१	१६	६०	अपू०	प्राचीन	
१३ X ९.५ सें० मी०	२	९	२१	पू०	प्राचीन	इत्यथर्ववेदे कालाग्निरुद्रोपनिषत् समाप्ता ॥ शिवमस्तु ॥ श्री ॥
१५.९ X १०.९सें०मी०	प०सं०१० (१–६,९ १२)	७	२२	अपू०	प्राचीन (सं १८२४)	इति श्री नदिकेश्वर पुराणे कालाग्निरुद्रोपनिपत्सपूरणम् ॥ फागुलसुदि सवतु १८२४ पटनार्थ ··· ।
२२.५ X १० सें० मी०	प०सं०१० (१–१०)	६	२१	पू०	प्राचीन	इती श्री नदिके स्वरपुराणोक्त कालाग्निरुद्रोपनिपद सपुरण ॥ कल्याणमस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३५	३३७५	कालाग्निरुद्रोपनिषद्			दे० का०	दे०
३६	४६४८	कालाग्निरुद्रोपनिषद्			दे० का०	दे०
३७	४५८१	कालाग्निरुद्रोपनिषद्			दे० का०	दे०
३८	६६६७	कालाग्निरुद्रोपनिषद			दे० का०	दे०
३९	५७९९	कालाग्निरुद्रोपनिषद्			दे० का०	दे०
४०	६१०७	कालाग्निरुद्रोपनिषद्			दे० का०	दे०
४१	१२८७	कालाग्निरुद्रोपनिषद्			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्र सख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति सख्या और प्रति पक्ति मे अक्षर सख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्त मान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२०×११५ से० मी०	७ (१–७)	१०	२६	पू०	प्राचीन	इति श्री नदिकेश्वर पुराणोक्त श्री कालाग्निरुद्रोपनिषत् सपूर्ण समाप्तम् ।
२७ १×१३ ७ से० मी०	१	८	२८	पू०	प्राचीन	इत्यथर्ववेदे कालाग्निरुद्रोपनिषत्स-माप्ता राम ।
१६ १×८ ६ से० मी०	४ (१–४)	७	१६	पू०	प्राचीन	तत्सदिति कालाग्निरुद्रोपनिषत्स-माप्ता ॥
१७×१० ३ से० मी०	७ (१–१)	७	२१	पू०	प्राचीन	इति श्री नदिकेश्वर पुराणोक्त काला-ग्निरुद्रोपनिषत्समाप्तम् ॥··· ··
२१×१० २ से० मी०	१० (१–१०)	७	२६	पू०	प्राचीन	इति श्री नदकेश्वरपालयोक्त श्री कग्नि रुद्रोपनिषद्य समाप्ता ॥ शुभय ······
१६ ६×११ ७ से० मी०	६ (१–६)	१०	२६	पू०	सं०१८८२	इति श्री नदकेसर पुराणोक्त कालाग्नि-रुद्रोपनिषत्शुभमस्तु सवत् १८८२ एकातीद्ध २ ॥
११·८×७ ६ से० मी०	प० सं०१७ (२–१७, २१	६	१२	अपू०	प्राचीन सं०१८२८	

क्रमाक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४२	२८९०/३	केनोपनिषद्			दे० का०	दे०
४३	४५७८	केनोपनिषद्			दे० का०	दे०
४४	१०६५	केनोपनिषद (शाकर भाष्य)			दे० का०	दे०
४५	१५७८/६	कैवल्योपनिषद्			दे० का०	दे०
४६	७७७२	कैवल्कोपनिषद्			दे० का०	दे०
४७	२२२४	कैवल्योपनिषद्			दे० का०	दे०
४८	४२६६	कैवल्योपनिषद्			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२३ २×१० १ सें० मी०	१०	२१		अपू०	प्राचीन	इति सामवेदीयाना केनोपनिषदे नवमाऽध्याय ॥
१२६×११ सें० मी०	७ (१–७)	७	१५	पू०	प्राचीन	इति जैमिनी शाखा सामवेदोक्त केनोपनिषत्समाप्त ॥
२५×१०७ सें० मी०	२२ (१–२२)	१०	३६	पू०	प्राचीन	इति श्री गोविंदभगवत्पूज्यपादशिष्यपरमहंस परिव्राजकस्यश्रीशंकरभगवत कृतौपदभाष्य समाप्त ॥ केनभाष्यसमाप्त श्री ब्रम्हार्पणमस्तु ॥
३४×१७४ सें० मी०	१	१६	६०	पू०	प्राचीन	इत्यथर्ववेदे कैवल्योपनिषत्समाप्ता ॥
१६ २×१० सें०मी०	६ (१–६)	६	१८	पू०	प्राचीन	इति श्री कैवल्योपनिषद संपूर्णम् ॥
१३×८२ सें०मी०	१० (१–१०)	६	१७	पू०	प्राचीन	इति कैवल्योपनिषद्विवरण वेदांत शास्त्रोक्त। श्री गजाननार्पण मस्तु। श्री विश्वेश्वरार्पणमस्तु मस्तु।
१८ ४×१०८ सें० मी०	७ (१–७)	७	१५	पू०	शाके—१७३६	इति कैवल्यउपनिषत् ॥ सम्यक्ज्ञानी सदायोगी संसारमनुवर्त्तते ॥ परपुरुषेष्ठ या नारी भर्तारमनुवर्तते ॥ शक १७३६ भाद्रपद आश्वीन शुद्ध सप्तमी तद्दिने समाप्त ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४९	३४१४	कैवल्योपनिषद्			दे० का०	दे०
५०	४५८८	कैवल्योपनिषद्			दे० का०	दे०
५१	१९८६/२२	कैवल्योपनिषद् (संस्कृत टीका)		विद्यारण्य	दे० का०	दे०
५२	५२४६	कैवल्योपनिषद (सटीक)			दे० का०	दे०
५३	१५२५/१९	क्षुरिकोपनिषद् *(संस्कृत टीका सहित)*		नारायण	दे० का०	दे०
५४	१३७४	गरुडउपनिषद्			दे० का०	दे०
५५	१५७८/६	गरुडोपनिषद्			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१७ × ९ सें० मी०	३ (१–३)	९	३०	पू०	प्राचीन	इति कैवल्योपनिषत्समाप्ता। ॐ शांति ……।
१८·२ × १३ सें० मी०	१३ (१–१३)	१४	३०	पू०	प्राचीन	एतत्कैवल्योपनिषदोज्ञानफलस्य परब्रह्म रूपत्वात् केवल पाठस्य वक्ष्यमाण फलान्याह…… (पत्रसंख्या–१३, पंक्ति संख्या ६ से)
२९·२ × १४·१ सें० मी०	१½	२५½ (कुलपंक्तिसंख्या)	४६	पू०	प्राचीन	इति श्री मथर्वणवेदकैवल्योपनिषद्दीपिका ॥ श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्रीविद्यारण्य कृतासमाप्तः ॥
२८.५ × १३.९ सें० मी०	१३	१३	३७	पू०	सं० १८७०	इतिकैवल्योपनिषद्दीपिका समाप्ता ॥ संवत् १८७० मार्गशिरमासे कृष्णे· एकादश्यां गुरुवासरान्वितायां लिखितमिदलक्ष्मणाभिधानेन आत्मपठनार्थः शुभमस्तु ॥……
३२·२ × १५·७ सें० मी०	४½ (३–८)	१२	४६	पू०	प्राचीन	इति क्षुरिकोपनिषद्दीपिकासमाप्त चतुर्था ४ ॥
२० × ९.५ सें० मी०	६	२५	२६	पू०	प्राचीन	इति गरुड़उपनिषद् संपूर्ण ॥
३४ × १७·४ सें० मी०	१	१६	६०	पू०	प्राचीन	इत्यथर्ववेदे गारुडोपनिषद्दीपिका समाप्ता ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६३	१६६२	गोपाल सत-तापनीयोपनिषद्			दे० का०	दे०
६४	४३७४	गोपीचदनोपनिषद्			दे० का०	दे०
६५	३८६४	चाक्षुपोपनिषद्			दे० का०	दे०
६६	१५२५/१६	चूलिकोपनिषद् (सस्कृतटीकासहित)		नारायण	दे० का०	दे०
६७	१४६५	छादोग्योपनिषद्			दे० का०	दे०
६८	२८६१	छादोग्योपनिषद्			दे० का०	दे०
६९	३१२६	छादोग्योपनिषद्			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६.३×१०.७ सें० मी०	२१ (१–२१)	६	१७	पू०	प्राचीन सं०१७६८	इति गोपालत्याउपनीमत् समाप्तः ॥ सवत् १७६८ नापोशद्वदिऽखौ लीखित गयचोलिनीर्भेय राम राघवराम धोलकिया । कल्याणमस्तु । शुभव भवतु ॥
१५.८×८.६ सें० मी०	प० सं० ५ (१–५)	६	२७	पू०	प्राचीन सं०१८७३	इति अथर्वनवेदर्गोपी चदनोपनिषत्सपूर्ण सुभमस्तु मगलं ददासुभंभूयात संवत् १८७३ मार्ग कृष्ण १४ चंद्रवासरे लिषयं श्रीज्योतिपरमसुष ॥
१८.४×११.७ सें० मी०	२ (१–२)	६	२५	पू०	सं०१९३४	इति श्री चाक्षुषोपनिषत्समाप्तम् श्री संवत् १९३४ ।
३२.१×१५.७ सें० मी०	३½ (८½–११)	११	४८	पू०	प्राचीन	इति चूलिकोपनिषद्दीपिका ५ ॥
१६.५×८ सें० मी०	११	११	२६	अपू०	प्राचीन	इति छंदोग्येयष्ट प्रपाठक्स्समाप्त. ॥
२३.३×१०.४ सें० मी०	प० सं० ११ (१–११)	८	३२	पू०	प्राचीन	इति छादोग्यस्यसप्तमः प्रपाठकः ॥ श्री सच्चिदानदार्पणमस्तु ॥'''
२८.५×११.७ सें० मी०	६१ (१–६१)	८	४०	पू०	सं०१९०६	इति छादोग्यउपनिषद् ब्राह्मण संपूर्ण । समाप्तं ॥ शुभमवतु ॥ सवत् १९०६ शाके १७७१ मार्गसीर्ष मासे शुक्ल पक्षे तिथौ ''''''श्री वेदपुराणायनमः ।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६६	३३६०	छांदोग्योपनिषद्			दे० का०	दे०
७०	३०७२	छदोग्योपनिषद्			दे० का०	दे०
७१	१६५१	छांदोग्योपनिषद्			दे० का०	दे०
७२	४६१	छांदोग्योपनिषत् प्रकाशिका			दे० का०	दे०
७३	७६५	छांदोग्योपनिषद् (ब्राह्मण)			दे० का०	दे०
७४	१५७८/६	जाबालीउपनिषद्			दे० का०	दे०
७५	७३००	जाबाल्योपनिषद्			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३२·५ × १६ से० मी०	५६ (१–५६)	१५	६०	पू०		इति छांदोग्योपनिषद्यष्टमोध्याय
२३ २ × १० ५ से० मी०	६	८	३१	पू०	प्राचीन	इति छांदोग्योषष्ठोध्याय · ॥ इति छांदोग्यो षष्टम प्रपाठक ॥ शांति पाठ ॐ ··· ··· ··· × × ×
३०.५ × १३.४ से० मी०	२७ ४५ ७१,६५	१३	४३	अपू०	प्राचीन	
३० २ × १३ १ से० मी०	प०सं० ८५	१३	५२	अपू०	प्राचीन	
२३·५ × ११ से० मी०	५५ (१–४५, ६६–७५)	८	३५	अपू०	प्राचीन	इति सामवेदस्य छान्दोग्यो उपनिषद् ब्रह्मण समाप्त ॥
३४ × १७ ४ से० मी०	४	१६	६०	पू०	प्राचीन	इत्यथर्ववेदेजावालोपनिषत्समाप्ता ॥
२७ × १२ से० मी०	२ (१–२)	१०	४६	पू०	प्राचीन	इति जाबालोपनिषत्समाप्त ॥ श्री सर्व्वविद्यानिधान कवीन्द्राचार्य्य सरस्वतीना जाबालोपनिषत् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७७	४५७७	तुरीयातीतावधूतोपनिषद्			दे० का०	दे०
७८	१५२५/१९	तेजोबिन्दूपनिषद् (संस्कृत टीका सहित)		नारायण	दे० का०	दे०
७९	६१३	तैत्तिरीयोपनिषद्			दे० का०	दे०
८०	१२५७	तैत्तिरीयोपनिषद्			दे० का०	दे०
८१	१०२३	तैत्तिरीयोपनिषद् भाष्य			दे० का०	दे०
८२	१०६८	तैत्तिरीयोपनिषद् भाष्य			दे० का०	दे०
८३	१०६६	तैत्तिरीयोपनिषद् (शांकरभाष्य)		शंकराचार्य	दे० का०	दे०
८४	३४६३	दत्तात्रेयउपनिषद्			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१७.५ × ११.४ सें० मी०	२ (१–२)	१०	२०	पू०	प्राचीन	इति तुरीयातीतावधूतोऽपनिषत्समाप्ता ॥ ······
३२.५ × १५.७ सें० मी०	१३ (६३–६४)	१३	४४	पू०	प्राचीन	इति तेजोबिंदूपनिषत्दीपिका २१ ॥
२५.३ × १०.६ सें० मी०	१५ (१–१५)	८	२५	अपू०	प्राचीन	
१६.५ × ८ सें० मी०	१४	६	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री तैत्तिरियोपनिषदि तृतीयप्रपाठकः ॥
२५.१ × १०.६ सें० मी०	प०सं०३६ (१–३६)	१०	३१	अपू०	प्राचीन	इतियमेवयथोक्तायामस्यावल्यां ब्रह्मविद्योपनिषत्सर्वाभ्योविद्याम ·· ··· समाप्ता तदवल्ली।
२५.३ × १०.५ सें० मी०	२५ (१–२५)	६	३२	पू०	प्राचीन	इति श्रीशीशाभाष्य समाप्त श्रीब्रह्मार्पणमस्तु ॥
२५.२ × १०.७ सें० मी०	१० (१–१०)	६	३१	पू०	प्राचीन	इति श्री गोविंदभगवत्पूज्यपाद शिष्यस्य परमहंस परिव्राजकाचार्यस्य श्री शंकरभगवत्पादकृतौ तैत्तिरीयोपनिषद्भाष्य विवरणं समाप्तं ॥ श्रीब्रह्मार्पणमस्तु
२४ × १४.५ सें० मी०	४ (१–४)	१०	२८	पू०	प्राचीन	इति श्री दत्तात्रेयोपनिषद् अथर्ववेदोक्त समाप्तमस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८५	१५२५/१६	ध्यानबिन्दूपनिषद् (संस्कृत टीकासहित)		नारायण	दे० का०	दे०
८६	१५२५/१६	नादबिंदूपनिषद (संस्कृतटीकासहित)		नारायण	दे० का०	दे०
८७	३१७/२	नारायण उपनिषद्			दे० का०	दे०
८८	३४१३	नारायणोपनिषद्			दे० का०	दे०
८९	४५७६	निरालम्बोपनिषद्			दे० का०	दे०
९०	१८५४	निरालम्बोपनिषद्			दे० का०	दे०
९१	१५२५/१६	नीलरुद्रोपनिषद् (संस्कृतटीकासहित)		नारायण	दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश या विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
३२ २ × १५ ७ सें० मी०	५॥ (५८–६३॥)	१३	४६	पू०	प्राचीन	इतिध्यानविंदूपनिषद्दीपिका ।
३२ २ × १० ४ सें० मी०	२॥ (४७–४६)	१२	४८	पू०	प्राचीन	इतिनादविंदूसपनिषद्दीपिका सपूर्ण ।
१२ २ × ११ २ सें० मी०	११ (१–११)	७	११	पू०	प्राचीन सवत् १६३५	इत्यथर्ववेदे अथर्व नारायणोपनिषत्समाप्तम् लिपिकृत देवीदत्त ज्योतिर्विदा । स० १६३५ माघ कृष्ण १ तिथौ ।
१८ × ८ ५ सें० मी०	३ (१–३)	६	३२	पू०	प्राचीन	इत्यथर्ववेदनारायणोपनिषत्सपर्ण शुभमस्तु ।।
१७ ६ × ११ ५सें०मी०	४ (१–४)	११	२०	पू०	प्राचीन	इति निरालवोपनिषद । समाप्त ।।
१६ × १० सं० मी०	५	६	२१	पू०	प्राचीन	इति श्री अथर्वण वेदोक्त निरालम्बोपनिषद् समाप्त ।। ... ...
३२ २ × १५ ७ सें० मी०	२॥ (४५–४६॥)	११	४६	पू०	प्राचीन	इतिनीलरुद्रोपनिषद्दीपिका सपूर्णम् १६

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
९२	१३४८	नृसिंहोत्तर तापिनी उपनिषद् दीपिका (१–९) खंड			दे० का०	दे०
९३	२१५५	नेत्रोपनिषद्			दे० का०	दे०
९४	२५३९	बृहदारण्यक			दे० का०	दे०
९५	२६	बृहदारण्यक षष्ठोध्याय			दे० का०	दे०
९६	१०५९	बृहदारण्यक उपनिषद्			दे० का०	दे०
९७	३४४३	बृहदारण्यकोपनिषद्			दे० का०	दे०
९८	७०५६	बृहदारण्यकोपनिषद्			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
३२×१५.५ सें० मी०	५१ (१–५१)	१२	४६	पू०	प्राचीन सं० १८६४	इति श्री नृसिंहोत्तर तापिनी दीपिका समाप्त शुभमस्तु सं० १८६४ मी भादो सुदी ग्यार सुक्रवार ॥
१६.८× १२.२ सें० मी०	प०सं० १	१०	१६	अपू०	प्राचीन	
३४.६× १३.५ सें० मी०	प०सं०३६ (१–३६)	११	४७	पू०	प्राचीन	बृहदारण्यक चतुर्दश काड······ संहितायां चत्वारिंशोऽध्याय ॥
२०.२×८.४ सें० मी०	प०सं०२४	७	२६	पू०	प्राचीन	इति बृहदारण्यके षष्ठोध्याय समाप्तः शुभमस्तु ॥
२३×६.८ सें० मी०	५५	६	२७	अपू०	प्राचीन	इति श्री बृहदारण्यकोपनिषत्समाप्ता ॥ सर्वात्मने नम ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥
२०.५×६.५ सें० मी०	प०सं०१६ (१–१६)	८	३२	अपू०	प्राचीन	इति बृहदारण्यके उपनिषत्पादे चतुर्थोध्याय ॥··· ··तत्सत् ब्रह्मार्पणमस्तु ॥
३१.७× १५.६ सें० मी०	७ (४६–५३)	१५	५१	अपू०	प्राचीन	···बृहदारण्यकोपनिषदि षष्ठोध्याय ॥ (पत्र-संख्या–५२)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लि
१	२	३	४	५	६	७
९९	३६९	बृहदारण्यकोपनिषद्			दे० का०	दे०
१००	३४०८	बृहदारण्यकोपनिषद्			दे० का०	दे०
१०१	३६०१	बृहदारण्यकोपनिषद् (टीका)		शंकराचार्य	दे० का०	दे०
१०२	३७३०	बृहदारण्यकोपनिषद् भाष्य			दे० का०	दे०
१०३	३९५४	बृहदारण्यकोपनिषद् (संस्कृत टीका)*		भगवदानन्द-ज्ञान	दे० का०	दे०
१०४	२५३८	बृहदारण्यकोपनिषद् (सभाष्य)		शंकराचार्य	दे० का०	दे०
१०५	१५२५/१९	ब्रम्हविद्उपनिषद् (संस्कृत टीका सहित)		नारायण	दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्त मान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	ग्रंथ आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६.५ × १०.५ सें० मी०	२७(१५१–१७२,२०१–२०२,२६२–२६४)	७	३८	अपू०	प्राचीन	
१०.५ × ७.३ सें० मी०	५७(१–४३, ४६–५६)	६	१६	अपू०	प्राचीन	यजु शाखिय बृहदारण्यउपनिश ॥ समाप्त ॥
२६.५ × ११ सें० मी०	४६(१–४६)	११	४४	अपू०	प्राचीन	श्री गोविंदभगवत्पाद शिष्यस्यपरमहस परिव्राजकाचायस्य श्रीशकरभगवत कृताया बृहदारण्यवटीकायां चतुर्थोध्याय समाप्त ॥ शुभभवतु ॥
२८.३ × १२.५ सें० मी०	२२	१७	५२	अपू०	प्राचीन	
२८.८ × १०.१ सें० मी०	६५(१–६५)	१०	५१	पू०	सवत १६४१	इति श्री परिव्राजक शुद्धानद पूज्यपाद शिष्य भगवदानद ज्ञान कृतायां बृहदारण्यकभाष्यटीकायां अष्टमोध्यायः ॥ सवत १६४१ वर्षे आषाढ शुदि २ रवौउदीच्य ज्ञातीयनुपाध्याकेशवेनलेखितमिद पुस्तक जयतु श्रीशुभमस्तु
३५ × १३.५ सें० मी०	३२७	१२	५७	अपू०	प्राचीन	इति श्रीगोविंद भगवत्पूज्य पादशिष्यस्य परमहस परिव्राजकाचार्य श्रीशकर भगवत कृताया बृहदारण्यक वृत्तौ अष्टमोध्याय समाप्त ॥ शुभमस्तु ॥ सवत १७४७ समये
३२.२ × १५.७ सें० मी०	१२ (५०–५१)	११	५१	अपू०	प्राचीन	इति ब्रम्हविदु उपनिषद्दीपिका अष्टादशी १८

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०६	१५२५/१९	ब्रह्मविद्योपनिषद् (संस्कृतटीकासहित)		नारायण	दे० का०	दे०
१०७	१५२५/१९	ब्रह्मोपनिषद्		नारायण	दे० का०	दे०
१०८	३८४४	ब्रह्मोपनिषद्			दे० का०	दे०
१०९	९२६	भावनोपनिषद्भाष्य		भास्कर	दे० का०	दे०
११०	१५२५/१९	महोपनिषद (संस्कृतटीकासहित)		नारायण	दे० का०	दे०
१११	१७००	माण्डूकोपनिषद्		श्री शंकरानंद	दे० का०	दे०
११२	७२२४	माण्डूकोपनिषद्भाष्य (गौडपाद भाष्य)		भगवदानंद ज्ञान	दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
३२ २ × १५ ७ सें० मी०	२ (२–३)	११	४३	अपू०	प्राचीन	इति ब्रह्मविद्योपनिषद्दीपिका तृतीयोपनिषत् ३ ॥
३२ २ × सें० मी०	७ (३५-४१)	११	४८	पू०	प्राचीन	इति ब्रह्मोपनिषद्दीपिका १० ॥
१६ ५ × ११ सें० मी०	२ (१–२)	११	३२	पू०	प्राचीन	इति ब्रह्मोपनिषत्समाप्त ॥
२७ × १२ ४ सें० मी०	१४	१०	३६	पू०	सं० १९७५	इति भावनाभाष्य समाप्त ॥ सं० १९७५ स्य वैशाखेऽथवलेदले नवम्यां चद्रवासरे समाप्तिमगात् ॥
३३ २ × १५ ७ सें० मी०	३ (३२-३४)	१३	४०	पू०	प्राचीन	इति महोपनिषद्दीपिका समाप्ता ६।
१६ ५ × ८ सें० मी०	५	७	२५	पू०	प्राचीन	इति माडूक्योपनिषद् समाप्त ॥
२५ ४ × १३ २ सें० मी०	३० (१–३०)	१६	३८	पू०	प्राचीन	इति श्री परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री गुडानद पूज्यपाद शिष्य भगवदानदशान विरचितायां गौडपाद भाष्य टीकायां प्रथम प्रकरण समाप्त ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रह विशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११३	७६३६	माडूक्योपनिषद्			दे० का०	दे०
११४	३८१२/२	माडूक्योपनिषद्			दे० का०	दे०
११५	३४२५	माडूक्योपनिषद्			दे० का०	दे०
११६	३५५१	माडूक्योपनिषद्			दे० का०	दे०
११७	२८६२/३	माडूक्योपनिषद्			दे० का०	दे०
११८	३४१८	मुडकोपनिषद्			दे० का०	दे०
११९	२८६२/३	मुडकोपनिषद्			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२४५× १२४ से० मी०	७ (४–६७,११)	११	२६	अपू०	प्राचीन	इति श्री माडूक्योपनिषद्गौडपाद व्याख्याने वैतथ्याख्य द्वितीय प्रकरण समाप्त ॥
१६५× ११२ से० मी०	१	११	३६	पू०	प्राचीन	हरि ॐ तत्सत् माडूक्योपनिषत्समाप्त ॥ [नोट • इसके नीचे शकराचार्य कृत 'कौपीन पचम' स्तोत्र भी है]
१५८× ११५ से० मी०	८ (१-८)	६	२७	पू०	प्राचीन	इति श्री माडूक्योपनिषत्सपूर्ण ॥
१५×८८ से० मी०	३ (१-३)	७	१६	पू०	प्राचीन	इति माडुक्योपनिषत्समाप्त ॥
२३×१०२ से० मी०	प० स० २३	७	२७	पू०	प्राचीन	इति माडूक्योपनिषत्समाप्तम् । पूर्ववत् शाति कुर्यात् ॥
१६×१० से० मी०	७ (१–७)	११	२६	पू०	प्राचीन	मुडकोपनिषत्समाप्ता ॥
२३×१०२ से० मी०	प० स० ६३	६	२६	पू०	प्राचीन	इति मुण्डकोपनिषत्समाप्तम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१२०	६५६	मुण्डकोपनिषद्			दे० का०	दे०
१२१	११०२	मुण्डकोपनिषद् (शंकरभाष्य)		शंकराचार्य	दे० का०	दे०
१२२	११००	मैत्रायण्युपनिषद्			दे० का०	दे०
१२३	१५७८/६	परमहंसोपनिषद्			दे० का०	दे०
१२४	६५५	पूर्वतापित्युपनिषद्			दे० का०	दे०
१२५	३८४२/३	प्रश्नोत्तर मालिका (प्रश्नोपनिषद)	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
१२६	१४५४	प्रश्नोपनिषद्			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५.५ × १०.५ सें० मी०	८	८	२७	पू०	प्राचीन	
२५.२ × १०.८ सें० मी०	४४ (१–४४)	८	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री गोविंदभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य परमहंस परिव्राजकाचार्यस्य श्रीमछंकरभगवत हृतावाथर्वणमुंडकोपनिषद्विवरण समाप्त ॥ श्री ब्रह्मार्प्पणमस्तु ॥
२८.६ × ११ सें० मी०	प० सं० १७ (१–१६, १९)	८	२८	अपू०	प्राचीन	इति मैत्रायण्युपनिषदि सप्तम प्रपाठक ॥ लिखितमिद श्री मन्महादेव कवींद्रसरस्वत्या ॥
३४ × १७.४ सें० मी०	६	६	६३	पू०	प्राचीन	इत्यथर्ववेदे परमहंसोपनिषत्समाप्ता ॥
१७.५ × ८ सें० मी०	७	७	२८	पू०	प्राचीन	इत्यथर्वण रहस्ये पूर्वतापनियोपनिषद्‌समाप्त ॥ शुभ ॥
१४.५ × ९.५ सें० मी०	२ (१–२)	१३	२७	अपू०	प्राचीन	इति श्री शंकराचार्य विरचिते प्रश्नोत्तर मालिकारेख्य संपूर्णम् ॥
२५.३ × १०.७ सें० मी०	प० सं० ९ (१–९)	८	२६	पू०	प्राचीन	प्रश्नोपनिषत्समाप्ता ॥ ···स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु ॥ ॐ शांति ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१२७	३४१६	प्रश्नोपनिषद्			दे० का०	दे०
१२८	२८६२ / ३	प्रश्नोपनिषद्			दे० का०	दे०
१२९	१०००	प्रश्नोपनिषद् भाष्य			दे० का०	दे०
१३०	१५२५ / १६	प्राणाग्निहोत्रोपनिषद्			दे० का०	दे०
१३१	६१३०	प्राणाग्निहोत्रोपनिषद्			दे० का०	दे०
१३२	१५२५ / १६	योगतत्वोपनिषद (संस्कृत टीका सहित)		नारायण	दे० का०	दे०
१३३	१५२५ / १६	योगशिखोपनिषद (संस्कृत टीका सहित)		नारायण	दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१४×७८ सें० मी०	२१(१–२१)	६	२०	पू०	प्राचीन	इति प्रश्नोपनिषत्समाप्त ॥
(२३× १०२) सें० मी०	प० सं० ७ (१–७)	८	२६	पू०	प्राचीन	इति प्रश्नोपनिषत्सपूर्णम समाप्तम् श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥ शुभमस्तु ॥
२५२× १०५ सें० मी०	प० सं० ३२ (१–२३)	८	३१	पू०	प्राचीन	इति श्री शकर भगवन कृतौ अथर्वणोपनिषत्प्रश्न भाष्य विवरण समाप्त ॥ ‥ ⋯ द्वितिया सोमवासरे ॥
३२२× १५७ सें० मी०	३२/३ (४२–४४)	१३	४६	पू०	प्राचीन	इतिप्राणाग्निहोत्रोपनिषदसमाप्ता ११
२२×१८५ सें० मी०	४ (१–४)	८	२१	पू०	प्राचीन सं० १९०३	इति श्री प्राणाग्निहोत्रोपनिषत्समाप्ता सपूर्ण ११ मीती माघ कृष्ण १३ त्रियोदश्या भृगौ सवत १९०३ लीपी कृत गोपालेन नसीराबाद की छावणी मध्ये ‥
३२ २× १५७ सें० मी०	(६७–६८)२	१२	४७	पू०	प्राचीन	इतियोगतत्त्वोपनिषद्दीपिकासमाप्ता २३
३२२× १५७ सें० मी०	२(६५–६६)	१२	४८	पू०	प्राचीन	इति योगशिखोपनिषद्दीपिकासमाप्ता २२

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्त संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१३४	४१४०	रामतापनीउपनिषद्			दे० का०	दे०
१३५	७५०२	रामतापनीयोपनिषद् (पूर्व एवं उत्तर)			दे० का०	दे०
१३६	५६२४	रामतापिनीउपनिषद			दे० का०	दे०
१३७	४३२० / २	राममन्त्रोपनिषद्			दे० का०	दे०
१३८	६१२७	रामोत्तरतापनीयोपनिषद्			दे० का०	दे०
१३९	१४०८	रामोत्तरतापनीयोपनिषद (प्रदीपिका सहित)		नारायण	दे० का०	दे०
१४०	५३६०	रामोत्तरतापिन्युपनिषद्			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४ × १०·६ स० मी०	प६ठ०१८ (१–३, ३–१७)	७	२७	पू०	प्राचीन सं० १९०६	इति सप्तचत्वारिंशन्मंत्रैनित्य देवं स्तौति तस्य देव प्रीतो भवति स्वात्मानदर्शयतितस्माद्यएतैर्मंत्रैनित्य देव स्तौति स्देव पश्यति सोमृतत्वं गछति इत्यथवर्णं रहस्येऽश्रीरामस्योत्तरतापनीयोपनिपत्समाप्तं चैत्र सुदि ५ गुरुवासरे सवत् १९०६ ॥ शुभ ॥
२३ × ९·५ सें० मी०	११ (३–१३)	७	२६	अपू०	प्राचीन	इत्यथर्ववेदेरामपूर्वतापनीयमुपनिपत्समाप्ता ॥ (पत्र स० ९)
२१·५ × १०·१ सें० मी०	१३ (१–१३)	९	२७	पू०	प्राचीन	इत्यन्थर्वणे रामोपनिषदुत्तरतापनीयं नाम सपूर्णं ॥
१३.३ × १०·९ सें० मी०	२ (१—२)	७	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री अथर्वणरहस्ये श्री राम मत्रोपनिपत्समाप्त. ॥
१४·८ × १०·२ सें० मी०	२९ (१–२९)	७	१६	पू०	प्राचीन	इति इत्यथर्वण वेदे श्री रामोत्तर तापनीयोपनीपत्समाप्ता ॥
३१७ × १५ ६ सें० मी०	प०स०२५ (१–१४, १६–२६)	१०	४६	अपू०	प्राचीन	नारायणेनरचिता श्रुति मात्रोपजीविना। अस्पष्ट पदवाक्याना रामोत्तर प्रदीपिका ॥ इतिरामोत्तरतापिनीयोपनिपत्समाप्ता ॥
२७ × ११ सें० मी०	८ (२–४, ६–१०)	९	४४	अपू०	सं० १७५६	इन्यथर्ववेदे रामोत्तरतापिनीयमुपनिपत्समाप्ता शुभमस्तु संवत् १७५६ के फाल्गुन शुक्ल ३ तृतीयाया रविवासरे .... ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१४१	४३३०/२	रामोपनिषद्			मि० का०	दे०
१४२	२७५६	रुद्रोपनिषद्			दे० का०	दे०
१४३	५५०७	वज्रसूचिकोपनिषद्			दे० का०	दे०
१४४	३२६०	वज्रसूचिकोपनिषद्	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
१४५	२३४१	वज्रसूचिकोपनिषद्	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
१४६	२१६	वज्र सूची उपपनिषद्	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
१४७	२८७३	व्रज (वज्र) सूची उपनिषद्	शंकराचार्य		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्र संख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ क	ख	ग	घ	९	१०	११
१५·३ × १० ६ सें० मी०	१	७	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री सामवेदे श्री रामोपनिषद सम्पूर्ण शुभभूयात् ॥ श्रीमत रामानुजाय नम ॥
२१ × ८·५ सें० मी०	६	१०	२५	पू०	प्राचीन	इति श्री नदिकेश्वर पुराणोत कालाग्नि रुद्रोपनिषत् सपूर्णम् ॥
१५ ३ × ६ सें० मी०	६ (५, ७–१४)	७	१६	अपू०	सं० १९१८	इति श्री वज्रसूचिकोपनिषद्विभागो नामोपनिषद समाप्त शुभभयात सवत् १९१८ शाके १७८३ कार्तिक शुक्ल. १२··············· ।
१८ ५ × ११ ८ सें० मी०	प०सं०८ (१–८)	१०	२१	पू०	प्राचीन सं० १९०६	इति श्री मत्सकराचार्य्य विरचित वज्र-सूची उपनिषत्समाप्त शुभमस्तु श्री सम्वत् १९०६ शाके १७७१ फाल्गुन शुक्र १२ ।
२५ ३ × १४ सें० मी०	६	६	२०	पू०	सं० १९१४	इति श्री शकराचार्य विरचितायां उप-निषत्सुबोधिन्या वज्र सूची समाप्ता चैत्रे मासे सितेपक्षे एकादशाच भृगु वासरे लिप्तहयमासहायेन श्री शकर प्रसादत सवत १९१४ सुजान द्वारे लिखित मौनी सरस्वतीपठनार्थं ॥
१५ × ११ ३ सें० मी०	८ (१–८)	११	१७	पू०	प्राचीन सं०१८५५	इति श्री वज्र सूची उपनिषत्समाप्ता सं० १८५५ ।
२४ २ × ११ २ सें० मी०	प० सं० ५ (१–५)	१०	३१	पू०	प्राचीन (सं०१८८२)	इति श्री मत्सकराचार्य विरचित वज्र वज्र सूची उपनिषत समाप्ता ॥ सवत् १८८२ तत्र शाके १७४७ तिथौ···॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१४८	१६६६	वाजसनेयसंहितोपनिषद्		शंकराचार्य	दे० का०	दे०
१४९	१४१०	वासुदेवोपनिषद्-दीपिका			दे० का०	दे०
१५०	६६८	वेदांतमतविश्रामतोपनिषद्	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
१५१	८६१	षोडशोपनिषत्			दे० का०	दे०
१५२	१५२५/१६	सन्यासोपनिषद् (संस्कृतटीका सहित)		नारायण	दे० का०	दे०
१५३	१५७८/६	सर्वोपनिषत्सार			दे० का०	दे०
१५४	१६२७	सूर्योपनिषद्			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ ए	८	ग	द	९	१०	११
२२५ × १२ ३ सॅ० मी०	६ (१–६)	१८	५४	अपू०	प्राचीन सं० १८७६	इति श्री परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीगोविंद भगवत्पूज्यपाद शिष्य ·· ·· शंकर भगवत कृतो वाजसनेय संहितोपनिषद् भाष्य संपूर्णम् संवत् १८७६ ॥
३३ ४ × १७ ३ सॅ० मी०	३ (३१–३३)	१२	६१	अपू०	प्राचीन	इति वासुदेवोपनिषद्दीपिका समाप्ता ॥
२० १ × ११ २ सॅ० मी०	११ (३–१३)	१०	२३	अपू०	प्राचीन	इति श्री शंकराचार्य विरचित वेदान्त मंत्रविश्रामतोपनिषद्समाप्त ॥
२१ ५ × ६ १ सॅ० मी०	४४ (२–४५)	११	२७	अपू०	प्राचीन	इति षोडशोपनिषत् ॥१६॥
३२ २ × १५ ७ सॅ० मी०	१३ (६६–८१)	१५	५१	पू०	प्राचीन	इति सन्यासोपनिषद्दीपिका समाप्ता ॥
३४ × १७ ४ सॅ० मी०	३	१६	६०	पू०	प्राचीन	इत्यथर्ववेदे सर्वोपनिषत्सारसमाप्ता ॥
१२ ८ × ७ ६ सॅ० मी०	२	८	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री सूर्योपनिषत्समाप्तम् शुभम् ॥

ग्रमाव ग्रौर विषय	पुस्तकालय की ग्रागत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१५५	६३७/२	सूर्योपनिषद्			दे० का०	दे०
१५६	७१६४	सूर्योपनिषद्			मि० का०	दे०
१५७	२२६०	स्वरूपोपनिषत् प्रकरण			दे० का०	दे०
१५८	१६८६/२२	स्वरूपोपनिषद्			दे० का०	दे०
कर्मका १	२४६७	अंग करन्यास			दे० का०	दे०
२	३७७५	अंत्येष्टि पद्धति	भट्ट नारायण		दे० का०	दे०
३	३७७६	अंत्येष्टि पद्धति	भट्ट नारायण		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या।		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
(२६२× १११) सें० मी०	१	६	३३	पू०	प्राचीन (सं०१६१०)	इति सूर्योपनिपत्समाप्त सं० १६१० श्रावण मासे कृष्ण पक्ष श्री श्री श्री०
१०१×६३ सें० मी०	५ १–५	८	१५	पू०	प्राचीन	इत्यथर्ववेदोसूर्योपनिपत् ॥
२२८× १२४ सें० मी०	३ (१–३)	१०	२४	पू०	प्राचीन	इति श्री स्वरुपोपनिषत् प्रकरण सपूर्णम् ॥
२६२× १४१ सें० मी०	१	२०	५०	पू०	प्राचीन	इतिस्वरूपोपनिषदप्रकर्णसपूर्णसमाप्त
१७×६५ सें० मी०	४	७	१८	पू०	प्राचीन	इति अगन्यास करन्यास सपूर्ण ॥
२३२×६५ सें० मी०	२५ (१–२५)	६	४७	अपू०	प्राचीन	
२३४×६५ सें० मी०	३२ (१–३२)	६	५४	पू०	सं० १८१३	इती श्री मद्विद्वन्मुकुट माणिक्य हीरी गुर श्री मद्रामेश्वर भट्ट सूनना श्रीमद्भट्ट नारायण कृते प्रयोगरत्ने और्ध्वदेहिक पद्धति समाप्तेय सवत् ''' १८१३ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४	३२७८	अंत्येष्टि			दे० का०	दे०
५	३९५७	अंतेष्ठी			दे० का०	दे०
६	१५४	अंत्येष्टि			दे० का०	दे०
७	७६५७	अंत्येष्टि			दे० का०	दे०
८	६७४२	अंत्येष्टि			दे० का०	दे०
९	४९६९	अंत्येष्टि (दशगात्रपिंडदान विधि)			दे० का०	दे०
१०	५५	अंत्येष्टिकर्म			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्र संख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७×१३ सें० मी०	१८ (१–१८)	१०	२५	अपू०	प्राचीन	
२६.१×१२ सें० मी०	४६ (१–२०, २२–५०)	६	२६	अपू०	प्राचीन	
३१.४×१२.६ सें० मी०	४५ (१–३४,३६–४१,४३–४७)	१०	३४	अपू०	प्राचीन	
१६.३×१०.२ सें० मी०	१८ (१–१८)	१३	१४	अपू०	प्राचीन	
२४.२×१०.४ सें० मी०	४ (४६–५०, ५३–५४)	८	३३	अपू०	प्राचीन	
२८×१३.१ सें० मी०	२० (१–७, १०–२२)	६	३६	अपू०	प्राचीन	
१६.५×११.२ सें० मी०	३४ (१२–२६, २६–४६, ४८)	८	१३	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११	३४९२	अन्त्येष्टि कर्म			दे० का०	दे०
१२	१३८७	अन्त्येष्टी कर्म			दे० का०	दे०
१३	२७०	अन्त्येष्टिकर्म	ईश्वरीदत्त		दे० का०	दे०
१४	७६६	अन्त्येष्ट कर्म पद्धति			दे० का०	दे०
१५	३२१०	अन्त्येष्टि कर्म विधि			दे० का०	दे०
१६	२६२	अन्त्येष्टि कर्म विधि			दे० का०	दे०
१७	३१२३	अन्त्येष्टि कर्म विपाक			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	१०
२०.५ × १४ सें० मी०	४८	२२	१५	अपू०	प्राचीन	
२१.५ × ११ सें० मी०	१८	१०	२८	अपू०	प्राचीन	
२६.६ × ११.३ सें० मी०	६३ (१–६३)	१०	३४	अपू०	प्राचीन	
(२६.२ × ११.५) सें० मी०	१४ (१–१४)	६	३६	अपू०	प्राचीन	
२१ × १४ सें०मी०	३ (१–३)	१२	२८	अपू०	प्राचीन	
२२.५ × १५.१ सें०मी०	२० (१–२०)	१३	२३	पू०		
(१४.३ × ९.१ सें० मी०	१०	१३	१२	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१८	५५६४	अन्त्येष्टि पद्धति	नारायणभट्ट		दे० का०	दे०
१९	२१७०	अन्त्येष्टि विधि			दे० का०	दे०
२०	१७६	अन्त्येष्टि पद्धति*			दे० का०	दे०
२१	१८४५	अम्बिकास्थापन विधि			दे० का०	दे०
२२	५५३२	अम्बिकास्थापन			दे० का०	दे०
२३	५०५४/१५	अम्बुघट श्राद्धप्रयोग			दे० का०	दे०
२४	६६६९	अग्निमुख प्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५ × १०.६ सें० मी०	७४	६	२८	अपू०	प्राचीन सं०१८४६	इत्यौर्ध्वदेहिक पद्धति समाप्त शुभभूयात " " संवत् १८४६ माघ शुदि चतुर्थी भौमवासरे तद्दिने समाप्त ॥
२६.८ × १३.३ सें० मी०	१४ (१–१४)	११	४०	पू०	प्राचीन सं०१६२१	इति सपिंडीककरणकर्म संपूर्ण ॥ " " संवत १६२१ पुस्तग लिपि कृत मंगल भूयात् ......॥
२७.५ × १०.६ सें० मी०	७१ (१–२८, २८–७०)	१०	४३	पू०	प्राचीन	॥ श्री ॥ अथयष्टि पद्धतौ मिश्रदेविष्टि ॥ समाप्ता ॥
१४.५ × ६.८ सें० मी०	५ (१–५)	११	२२	पू०	प्राचीन	इति श्री अविकास्थापन संपूर्ण लिखित कन्हैयालाल स्वात्मपठनार्थ शुभमस्तु "
२७.७ × १०.२ सें० मी०	५ (१–५)	६	२६	पू०	प्राचीन	इति श्री अविकास्थापन संपूर्ण लिखित पुस्तग मीश्रमहताबस्वात्मपठनार्थ शुभमस्तु ॥
१६ × ७.८ सें० मी०	२	८	२१	अपू०	प्राचीन	
१७.४ × १०.५ सें० मी०	११ (१–११)	१७	३०	पू०	सं०१८६४	संवत १८६४ कार्तिके मासे शुक्ल पक्षे त्रयोदश्यां तिथौ भृगुवासरे तद्दिने थी लक्ष्मी ॥

क्रमाक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या या सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२५	६४६१	अग्निष्टोम			दे० का०	दे०
२६	६२२०	अग्निष्टोम	शेषगोविंद		दे० का०	दे०
२७	६७५०	अग्निष्टोम			दे० का०	दे०
२८	६४६४	अग्निष्टोम (अच्छावाक प्रयोग)			दे० का०	दे०
२९	६७४८	अग्निष्टोम (सप्तहौत्र प्रयोग)			दे० का०	दे०
३०	६७०७	अग्निष्टोमहौत्र			दे० का०	दे०
३१	६५२३	अग्निष्टोमेच्छावाक प्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२२.६ × ६.४ सें० मी०	६ (१–६)	८	३३	पू०	प्राचीन सं० १७८०	॥ अग्निष्टोम समाप्त ॥ संवत् १७८० माघ शुद्ध १६ मामावारे लिखित ॥ इति श्री जोगनेकर गोपीनाथन लिखित
२३ × १०.४ सें० मी०		१२	३५	पू०	प्राचीन स० १८१०	अथगोविंद कृत प्रयोगोग्निष्टोम समाप्ता ॥ श्री वेद पुरुषाप्रणमस्तु ॥ संवत् १८१० सार्वनिनामसंवत्सर श्रावण शुद्ध १ शनौ तद्दिने काश्यां × × ×
२४.७ × ११.५ सें० मी०	५ (१–५)	११	२६	पू०	प्राचीन शके १६६३	इति ज्योतिष्टोमाग्निष्टोमे पोतृत्व प्रयोग ॥ इदं पुस्तकं कान्हू शर्मण ॥ शके १६६३ दुमतौ श्रावणाधिक द्वितीयायां भानौ लिखित ॥
२४.७ × ११.६ सें० मी०	१८ (१–१८)	६	३२	पू०	प्राचीन स० १८१४	अग्निष्टोमादि अप्तोर्यामांत अच्छावाकस्य शस्त्रक्लृप्ति समाप्ता। संवत् १८१४ कार्तिक कृष्ण १ भृगौ समाप्त। पुस्तकमिदं राम हृदोपनामक विश्वनाथभट्टात्मज नीलकंठभट्टेन लिखापित ...
२३.६ × १०.४ सें० मी०	११६ (१–११६)	६	२६	पू०	प्राचीन शक १७३८	इत्यग्निष्टोम सप्तहौत्र प्रयोग समाप्त ॥ शके १७३८ वर्षे धातृ नामाब्दे भाद्रपद वद्य ८ ॥
२३.३ × ६.७ सें० मी०	५५ (१–५५)	११	३६	पू०	स० १८७२	इत्यग्निष्टोम हौत्र समाप्त ॥ संवत् १८७२ मिती आश्विनशुद्ध २ सौम्य वासरे तद्दिने काश्याराजधान्यां कवीश्वरेत्युपनामक महादेव भट्टात्मज लक्ष्मी नाथेन लिखितं ॥
२१.७ × ८.५ सें० मी०	४ (१–४)	६	२६	पू०	प्राचीन	इत्यग्निष्टोमेऽछावाक प्रयोग।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३२	६७१२	अग्निहोत्र प्रायश्चित्त			दे० का०	दे०
३३	६६७४	अग्निहोत्र			दे० का०	दे०
३४	६५२५	अग्रयण होत्र प्रयोग			दे० का०	दे०
३५	६८३७	अग्निहोत्रप्रायश्चित्त			दे० का०	दे०
३६	६७०२	अग्निहोत्र होम			दे० का०	दे०
३७	६७१३	अग्निहोत्र होम		शंकराचार्य	दे० का०	दे०
३८	६८२६	अछावाक प्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठ का प्रकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान ग्रंथ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ क	ख	ग	द	९	१०	११
२३६×१०४ सें० मी०	४० (१–४०)	११	३३	पू०	सं०१८७८	समाप्तमिदं अग्निहोत्र प्रायश्चित्त ॥ × × संवत् १८७८ नंदन नाम संवत्सर उदगयने वसंत ऋतौ वैशाख शुद्ध ६ नवम्या तद्दिने कवीश्वरोपनामक सखारामेण लिखित ॥ + + +
२०×१२३ सें० मी०	५ (१–५)	८	१६	पू०	प्राचीन सं०१६१७	इति श्री अग्निहोत्र संपूर्णम् शुभमस्तु संवत् १६१७ ॥
२१४×८ सें० मी०	२ (१–२)	७	३१	पू०	प्राचीन	अथाऽग्रयण होत्र प्रयोग समाप्त ॥
२०३×८३ सें० मी०	१५ (१–१५)	६	२८	अपू०	प्राचीन	
२१४×७५ सें० मी०	८ (१–८)	६	५०	पू०	प्राचीन	
२३३×१०१ सें० मी०	५ (१–५)	११	३७	पू०	सं०१८११	इत्यग्न्याधाहोत्र प्रयोग समाप्त ॥ पुस्तक मिदं रामहृदोपनामक विश्वनाथभट्टात्मज नीलकंठेन लिखापितम् संवत् १८११ कार्तिक शुद्ध पंचम्या समाप्त ॥
२३५×१०.१ सें० मी०	६ (१–६)	११	३०	पू०	प्राचीन	अथात्यग्निष्टोमे अछावाक प्रयोग समाप्त ॥

ग्रमाक ग्रौर विषय	पुस्तकालय की ग्रागत सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३९	५२३३/२	ग्रजपा गायत्री			दे० का०	दे०
४०	१६९३	ग्रजपा गायत्री जप विधि			दे० का०	दे०
४१	५४४	ग्रजपा जाप (मानस पूजा)			दे० का०	दे०
४२	६८३६	ग्रतिपवित्रेष्टिहोत्र			दे० का०	दे०
४३	६७०९	ग्रग्रानहोत्र (ग्रश्वारम्भहोत्र)			दे० का०	दे०
४४	३६२८	ग्रनतपूजा			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या	और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	ग्रंथ सम्बन्धी विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१५.५×१०.३ सें० मी०	५ (१–५)	८	२२	पू०	प्राचीन	इति श्री वसिष्ठ संहितायां अजपा विधि समाप्तम् शुभमस्तु
१४.५×९ सें० मी०	३	६	१८	अपू०	प्रा०	
१६×१०.५ सें० मी०	७	६	२०	पू०	प्राचीन	इति अजपा विधि संक्षेपेन समाप्यम् यादृशं पुस्तकं दृष्ट्वा तादृशं लिखितं मया यदि शुद्धमशुद्धं वा मम दोषो न विद्यते ?
२०.५×७.६ सें० मी०	८ १–८	७	२७	पू०	प्राचीन सं० १८७७	इत्यतिपवित्रेऽग्निभरद्वाजसूत्रोक्त समाप्ता ।। संवत १८७७ भाद्रपदकृष्ण ३ मंदवासरे लक्ष्मीनाथ कवीश्वरेण लिखित ।।शुभ।।
२०.५×८.७ सें० मी०	४(१–४)	११	३६	पू०	सं० १७८७	अश्वारभणीयवाहीत्र समाप्त ।। इदं पुस्तकं रामहृदोपनामक विश्वनाथ भट्टात्मज नीलकंठस्य संवत १७८७ श्री।
२३.७×१०.४ सें० मी०	प० सं० ७	१२	३४	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४५	१८७	अनंतपूजा			दे० का०	दे०
४६	४७०५	अनंतोद्यापन			दे० का०	दे०
४७	७४३६	अनुवाक्			दे० का०	दे०
४८	६७६१	अपाया अनुवित्ती होत्र			दे० का०	दे०
४९	१६०४/४	अभिषेक			दे० का०	दे०
५०	३००६	अर्क विवाह			दे० का०	दे०
५१	५११८	अर्क विवाह			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति सख्या और प्रति पक्ति मे अक्षर सख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२×११ सें० मी०	२२ (१–२२)	८	१६	पू०	प्राचीन	इति अनत पूजन सपूर्ण ॥
३४४× १३३ सें० मी०	१२ (१–१२)	१०	४६	पू०	प्राचीन	इति भविष्योत्तर पुराणे अनतोद्यापन समाप्त ॥
१७×८·६ सें० मी०	७	८	७	अपू०	प्राचीन (सं०१६२३)	इति सर्वानुवाक सख्या समाप्त ×× × × सवत् १६२३ मार्ग शु० १० सो०
२२१×८·५ सें० मी०	२ (१–२)	१०	३८	पू०	प्राचीन	इत्यपाद्या अनुवित्तीना होर्त ॥
१३६×७६ सें० मी०	४(१–४)	५	१७	अपू०	प्राचीन	
२८५×६३ सें० मी०	५ (१–५)	७	३५	पू०	प्राचीन	इत्यर्क विवाह समाप्त
२४६× १०६ सें० मी०	५ १, ५,	६	२८	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५२	४३६२	अशौचविचार			दे० का०	दे०
५३	६७०३	अश्वमेध हौत्र प्रयोग			दे० का०	दे०
५४	६७०५	अश्वमेध हौत्र प्रयोग (आश्वलायन सूत्रानुसार अश्वमेध हौत्र प्रयोग)			दे० का०	दे०
५५	४१६४	अष्टका श्राद्ध प्रयोग			दे० का०	दे०
५६	५६४६	अष्टप्रयोग			दे० का०	दे०
५७	६५०३	आग्नीध्रप्रयोग			दे० का०	दे०
५८	५५५६	आतुर सन्यास पद्धति			दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ म पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५८×११४ सें० मी०	२६	९	३६	अपू०	प्राचीन	
२२६×९७ सें० मी०	६७(१–६७)	१०	३८	पू०	सं० १७९५ प्राचीन	इत्यश्वमेध हौत्र पद्धती प्रथम सुत्यागोतमस्तोम ॥ इद पुस्तक रामहृदस्योपनामक विश्वनाथ भट्टात्मज नीलकठस्य ॥ सवत् १७९५··· ।
२२९×९७ सें० मी०	१२७ (१–१२७)	१०	४१	अपू०	प्राचीन	इत्यश्वमेधस्याश्वलायन सूत्रानुसारेणहोत्र प्रयोग समाप्त ॥
२१×९५ सें० मी०	८(१–८)	९	४०	पू०	प्राचीन	इति ।
२५३×९६ सें० मी०	४ (१–४)	८	३७	अपू०	प्राचीन	
२३×८७ सें० मी०	६(१–६)	७	३५	पू०	सं०१८१९	सवत् १८१९ वर्षे मार्गशिस शुद्ध दुतीया॰ मद वासरे ॥
१५७×५८ सें० मी०	३ (१–३)	६	२८	पू०	प्राचीन	आतुर सन्यास पद्धति समाप्ता ॥ शुभमवतु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या सग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५६	७३५०	आतुरसन्यास विधि			दे० का०	दे०
६०	१६८६ / २२	आत्मपूजा	शकराचार्य		दे० का०	दे०
६१	६५०६	आधान होत्र			दे० का०	दे०
६२	६५३१	आधान होत्र			दे० का०	दे०
६३	६५६८	आपस्तब सूत्रोक्त सध्यावदन प्रयोग			मि० का०	दे०
६४	२६४१	आपस्तब सूत्र मत्र प्रश्न			दे० का०	दे०
६५	६८३४	आपस्तबसध्यावदन पद्धति (भाष्य)			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१४९×९६ सें० मी०	२ (१-२)	१०	२०	पू०	प्राचीन	इति सयास विधि समाप्त ॥
२९२× १४१ सें० मी०	१३	१५	४८	पू०	प्राचीन	इति शंकराचार्य आत्मपूजासंपूर्ण ॥
२१३×८७ सें० मी०	१३ (१-१३)	९	३५	पू०	प्राचीन	अथ आधान होत्र लिख्यते ॥ (प्रारंभ)
१९८×८४ सें० मी०	३ (१-३)	९	२७	पू०	प्राचीन	इति आधान होत्र समाप्त ॥
११३×११ सें० मी०	१४ (१-१४)	११	३०	पू०	सं० १९५१	इत्यापस्तम्ब सूत्रोक्त सध्यावदन प्रयोग श्री सीताराम चंद्रार्पणमस्तु ॥ श्री संवत १९५१ शाके १८१६ पराभवनाम संवत्सरे दक्षिणायणे शरदृतौ अश्विने मासे कृष्णपक्षे '।
२६५×११ सें० मी०	प० सं० २८ (१-२८)	८	३९	पू०	प्राचीन	शके १७ विक्रम नाम संवत्सरे दक्षणायने वर्षा ऋतु भाद्रपद मासे शुक्ल पक्षे अष्टम्या तिथौ वासर भानुवासरे पुस्तक समाप्त ॥
२१२× १०९ सें० मी०	६	११	३३	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६६	६५६६	आपस्तम्बोक्त मध्याह्वदन प्रयोग			दे० का०	दे०
६७	३५५४	आभ्युदय श्राद्ध			दे० का०	दे०
६८	५६०४	आरामप्रतिष्ठा			दे० का०	दे०
६९	४४५१	आरामप्रतिष्ठाविधान			दे० का०	दे०
७०	४४५०	आरामोत्सर्ग पद्धति			दे० का०	दे०
७१	६७०८	आश्वलायनश्रौतसूत्र पूर्वषटक प्रयोग दीपिका	मचनाचार्य		दे० का०	दे०
७२	६७१०	आश्वलायन सूत्र प्रयोग दीपिका	मचनाचार्य		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२१४×११३ सें० मी०	१० (१–१०)	११	२४	पू०	आधुनिक	
२३८×१५ सें० मी०	७ (१–३, ५,७,६)			अपू०	स०१८८६	आभ्युदैक श्राद्ध समाप्त सवत् १८८६ जेष्ठ वदि २ बुधवासरे पत्र नव ॥
३२४×१४७ सें० मी०	६ (१–६)	१३	४२	पू०	जीर्ण स०१६२५	लिखत मुरलिधर स० १६२५
२२×१२ सें० मी०	३ (१–३)	१०	२२	अपू०	प्राचीन	अथायतत्कृत्यसगात्पूर्त्तारामाप्रतिष्ठा विधान लिख्यते। (प्रारम्भ) × × ×
२७४×११७ सें० मी०	११ (१–११)	८	३२	पू०	प्राचीन	इति आरामोत्सर्ग पद्धति समाप्ता ॥ विधान पारिजाते ॥ ··· · ··· · · ··· इद पुस्तक वालाजी महाराष्ट्रस्य लिखित स्वार्थपरार्थंच
२३४×१०१ सें० मी०	६६(१–७ १–६२)	३३	४१	अपू०	प्राचीन	
२३६×१०६ सें० मी०	७०(६३–१७३)	११	३५	अपू०	प्राचीन	इति मचनाचार्य विरचिताया आश्व लायन सूत्र प्रयोग दीपिकाया षष्ठोध्याय समाप्त ॥

माक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७३	६७५७	आश्वलायन सूक्त			दे० का०	दे०
७४	२८६६	आसुरी विधि			दे० का०	दे०
७५	६७११	आहिताग्निमरणविधि			दे० का०	दे०
७६	१०६६	आह्निक कर्म विधि	क्षेमकर मिश्र		दे० का०	दे०
७७	२३८१	आह्निक कर्म विधि			दे० का०	दे०
७८	१०६५	आह्निक तरग	नद पडित		दे० का०	दे०
७९	१०६७	आह्निक निर्णय			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३२.५ × १०.४ सें० मी०	३० (१–३०)	१२	३६	पू०	प्राचीन	इति आश्वलायन सूक्तानि ॥
१७.३ × १०.८ सें० मी०	१५(१–१५)	८	१६	पू०	प्राचीन	इति आगुरी विधि समाप्त. ॥ शुभ ॥
२३.३ × १०.२ सें० मी०	२१(१–२१)	११	२६	पू०	प्राचीन	इत्यापस्तवाहिताग्ने. सस्कार विशेषः ॥
१८ × ११.८ सें० मी०	८ (१–८)	८	३६	पू०	सं० १९२१	इतिश्रीक्षेमकरमिश्र विरचित संक्षिप्ताह्निक कर्म्मं विधि ॥ माघासितैकादश्यां चन्द्रे लिखितङगणेश दत्तशुकेन शुक्लेन?॥ संवत् १९२१ श्रीरामोजयति ··· ···
१९.७ × १०५ सें० मी०	१०(१–१०)	६	२०	अपू०	प्राचीन	
२६.८ × ११.५ सें० मी०	८५ (१–८५)	१०	४६	पू०	प्राचीन	इतिश्रीधर्माधिकारिकुल ॐ कमलमार्तंड नदपंडितकृतेस्मृतसिधावान्हिकतरग समाप्तिमगात् ॥ श्री कृष्णभजेत् ॥
२२.५ × ९.५ सें० मी०	२५(१–२५)	१०	३७	पू०	प्राचीन	उक्त नाज्ञमया स्वय स्वरचित यद्याज्ञवल्क्यादिभि।प्रोक्त स्वन्हित्र निर्णये तदखिलस्पष्ट परजप्वये···श्री सावसदाशिवार्पणमस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८०	६७६	आह्निक मूल पद्धति	रघुनाथ भट्ट		दे० का०	दे०
८१	६४२०	उग्ररथ शांति			मि० का०	दे०
८२	६६०६	उत्सर्जनोपाकरण प्रयोग (श्रावणी)			दे० का०	दे०
८३	६४२८	उदकशांति प्रयोग			दे० का०	दे०
८४	६८७	उद्यापन विधि			दे० का०	दे०
८५	४८३४	उपनयन पद्धति			दे० का०	दे०
८६	६४७	उपनयन पद्धति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२ × ९·२ सें० मी०	१९ (१–१९)	१०	३८	पू०	प्राचीन	रघुनाथेन विद्वर्यभट्टमाधवसूनुना ॥ कृता निबंधात्प्रेक्षाऽशुसमूलाऽऽह्निक पद्धतिः ॥१॥ ....
१६.३ × ७·६ सें० मी०	५ (१–५)	११	२५	पू०	आधुनिक सं०१९६५	इति शौनकोक्तोपरय शान्तिः ॥ सं० १९६५ शाके १८३० माघ कृष्ण द्वितीयाया शुक्रवारेऽदं पुस्तक वेतालोपाह्व श्रीनाथेन आरम्य च समापितम् ॥
२२·७ × ८·६ सें० मी०	८ (१–८)	१०	४७	पू०	प्राचीन	इत्युत्सर्जनोपाकरण प्रयोगः ॥
२३·३ × ९·१ सें० मी०	२१ (१–२१)	१०	४८	पू०	सं०१७८३	इत्युदक शांतिः समाप्ता ॥ सं० १७८३ नल नाम संवत्सरे माघ शुक्ल १५ बुध वासरे तद्दिने ··· ··· ··· ।
१४ × ९·५ सें० मी०	६	१४	२५	पू०	प्राचीन	
३१ × ११·७ सें० मी०	१० (१–१०)	१०	४८	पू०	सं०१८८३	इति व्रतबध समाप्त ॥ सं०१८८३ ॥
२३ × १२·७ सें० मी०	१९ (१–१९)	११	२८	पू०	सं०१९११	इति श्री उपनयनपद्धित समाप्तम् सं० १९११ जेष्ठ शुक्लादशम्याभूमीवासरे लिखितं जुहारारामेण ··· ··· श्री ॥

क्रमाङ्क और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८७	११८४	उपनयनवेदारंभ			दे० का०	दे०
८८	४८०	उपनयन संस्कार			दे० का०	दे०
८९	२३५७	उपनयन संस्कार			दे० का०	दे०
९०	१९००	उपनयन संस्कार (सटीक)			दे० का०	दे०
९१	२५१५	उपनयन संस्कार विधि			दे० का०	दे०
९२	२३०	उपाकर्म			मि० का०	दे०
९३	२९९७	उपाकर्म प्रयोग	गंगाधर भट्ट		दे० का०	दे०

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या या सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
९४	१४६६	उपाकर्म प्रयोग			दे० का०	दे०
९५	१६७१	ऋषितर्पण			दे० का०	दे०
९६	१८९४	ऋषितर्पण			दे० का०	दे०
९७	५८६४	ऋषिपचमी व्रत पूजा			दे० का०	दे०
९८	३७१७	ऋषिमडल			दे० का०	दे०
९९	३४६३	एकादशाह श्राद्ध विधि			दे० का०	दे०
१००	५८८	एकादशाह्निक कर्म			दे० का०	दे०

क्रमाक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०१	१६४१	एकादशी व्रत उद्यापन			दे० का०	दे०
१०२	७८४	एकादशाह श्राद्ध-प्रयोग (सपिडन पद्धति)			दे० का०	दे०
१०३	६५०८	एकाहिक चातुर्मास्य प्रयोग			दे० का०	दे०
१०४	६००५	ऐकाह्निक चातुर्मास प्रयोग			दे० का०	दे०
१०५	५१८२	एकोदिष्ट			दे० का०	दे०
१०६	५०५४ १५	एकोदिष्ट प्रयोग			दे० का०	दे०
१०७	५०५४ / १५	एकोदिष्ट श्राद्ध विधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्र संख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३०८×१६१ सें० मी०	६	११	३१	अपू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्तरपुराणे एकादशी वृत (व्रत) उद्यापन समाप्त ॥
२७५×१५ सें० मी०	२१	१०	३४	पू०	स०१६०२	इति श्राद्धविवेके सपिंडन पद्धति समाप्तम स० १६०२
२२५×६२ सें० मी०	६(१–६)	१०	४०	पू०	प्राचीन	अथैकाहिक चातुर्मास्य प्रयोग (प्रारभ)
२१८×८४ सें० मी०	५(१–५)	११	४१	पू०	प्राचीन	सतिष्ठत एकाहिक चातुर्मास्य प्रयोग ॥ समाप्त ॥
१८८×११३ सें० मी०	४(१–४)	१६	२६	पू०	प्राचीन	इति समाप्तोय (अथैकोदिष्ट प्रारभ)
१६×७८ सें० मी०	१	८	२४	अपू०	प्राचीन	अथसाम्वत्सरिकैकोदिष्ट प्रयोग (प्रारभ)
१६×७८ सें० मी०	७½	६	२१	पू०	प्राचीन	एकोदिष्ट श्राद्ध समाप्तम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०८	४६०५	एकोदिष्ट श्राद्धविधि			दे० का०	दे०
१०९	५६५८	और्ध्वदेहिककृत्य	रामप्रसाद मिश्र		दे० का०	दे०
११०	७२४७	और्ध्वदेहिक पद्धति	नारायणभट्ट		दे० का०	दे०
१११	३७२३	और्ध्वदेहिक सपिंडीकरण प्रयोग पद्धति	भट्टनारायण		दे० का०	दे०
११२	६५६४	कन्या रजस्वला शांति			दे० का०	दे०
११३	३७११	कपिलधारातीर्थ विधि			दे० का०	दे०
११४	१६६१	कपिला निवास			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३ × १०.६ सें० मी०	१८ (१–१८)	६	१६	पू०	सं०१९३६	इति एकादिष्ट श्राद्धम् श्रीरामचंद्रायनम. श्री कृष्णार्पणमस्तु संवत १९३६ श्री साके ७९६ मित्ती मार्गसिर वदि ८ भौमवारकु लिपि कृत ॥ राम ॥…
२६.५ × १२ सें० मी०	१४ (८२–९३, ९५–९६)	११	३२	अपू०	प्राचीन	इति श्रीमद्राम प्रसाद मिश्र विरचिते प्रपत्ति भूषणे श्री परमेश्वर चरण युगले द्वीपर मधुकराशयाना परमैकान्तिकाना-मौर्द्धदैहिक कृत्यानि स्वृत्ति समाप्तानि शुभमस्तु।
२२.४ × ९.७ सें० मी०	४२ १–१६,२२–२४,२७–२८, ३१–४८	१०	३२	अपू०	प्राचीन	इति श्री भट्ट रामश्वर सूरि सूनु नारायण भट्टेन कृताया मौर्द्धदेहिक पद्धतौ मरणविधानानि। समाप्ता चेय पद्धति ॥
२४.२ × १०.४ सें० मी०	७० (१–७०)	८	३४	पू०	स०१८७३	इति श्री भट्टरामश्वर सूरिसूनु भट्टनारायण कृतायामौर्ध्वदहिक पद्धत्यामरणविधा-नानि ॐतत्सत स० १८७३॥ शुभमस्तु
१६.१ × ८.६ सें० मी०	२(१–२)	१०	२८	पू०	प्राचीन	इति पितृग्रहे कन्या रजस्वला शांति ॥
११.५ × ८.५ सें० मी०	३(१–३)	१०	१८	पू०	प्राचीन	इति कपिलधारा तिर्थ विधि समाप्त ॥
२०.५ × ८.८ सें० मी०	४(१–४)	८	२४	पू०	प्राचीन स०१८३३	इति श्री कपिला निवास संपूर्न समाप्त ॥ स०१८३३ साके १६९८ फागुन सुदि षष्टी ६ रवौ पुस्तक संपूर्नलिखित प० श्री मिश्र उमेद भितरीयाचे …

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११५	३५२०	कर्मकांड			दे० का०	दे०
११६	३५६६	कर्मकांड कौमुदी			दे० का०	दे०
११७	४०६६	कर्मकांड पद्धति			मि० का०	दे०
११८	२६१६	कर्मकांडविधि			दे० का०	दे०
११९	३७४३	कर्म कौमुदी			दे० का०	दे०
१२०	३४५३	कर्म कौमुदी	कृष्णदत्त		दे० का०	दे०
१२१	२४६०	कर्म कौमुदी	कृष्णदत्त		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२१.५ × १०.४ सें० मी०	७ (२-७)	६	२५	अपू०	प्राचीन	
३१ × १४.३ सें० मी०	७ (३८,४१-४६)	१४	५१	अपू०	प्राचीन	
१६.३ × १२.७ सें० मी०	३ (१-३)	११	२४	पू०	प्राचीन	इत्यन्वय ॥ नन्दलालेन लिखित अयं श्लोक ॥
२१.३ × ११ सें० मी०	३३	८	२८	अपू०	प्राचीन	
३१.४ × १४ सें० मी०	३६ (१-३६)	१४	५७	अपू०	प्राचीन	इति कर्म कौमुद्या नाम कर्म पद्धति । (प० सं० २१)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१२२	१५४४	कर्मविपाक			दे० का०	दे०
१२३	४००६	कर्मविपाक			दे० का०	दे०
१२४	४४७६	कर्मविपाक			दे० का०	दे०
१२५	४४२६	कर्मविपाक			दे० का०	दे०
१२६	४६५२	कर्मविपाक			दे० का०	दे०
१२७	५२६०	कर्मविपाक			दे० का०	दे०
१२८	५६६१	कर्मविपाक			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६ × १० ७ सें० मी०	७४ (२-४, ६-१९, २१-७८)	९	२३	अपू०	प्राचीन	
३१ × १४ सें० मी०	२१ (२-२२)	१४	५०	अपू०	सं० १८९३	इति कर्म विपाक ग्रंथ संपूर्णम् संवत् १८९३ माषाड कृष्ण चतुर्दश्यां १४ भौम दिने लिखित मिद पुस्तक तव भारद्वाज गोत्रे मिश्र लक्ष्मणदासतत्सुत मिश्र मुरलीधरः ॥
२४ १ × १० ८ सें० मी०	२४ (१-२४)	१३	४१	पू०	प्राचीन	इती श्री कर्मविपाके ब्रह्मानारद संवादे चतुर्दशोध्याय. ॥ (पत्र संख्या २३)
३०·६ × १४ ८ सें० मी०	८ (१-३, ५-९)	१३	४२	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१२९	४३५०	कर्म विपाक(चतुर्थचरण)			दे० का०	दे०
१३०	६६४	कर्म विपाक कथन			दे० का०	दे०
१३१	४६२१/३	कलश प्रतिष्ठा			दे० का०	दे०
१३२	५८४३	कलशस्थापन			दे० का०	दे०
१३३	१५६८	कलशस्थापन			दे० का०	दे०
१३४	३६३४	कलशस्थापनविधि			दे० का०	दे०
१३५	६४३६	काक मैथुन दर्शन-शांति विधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
(३३ २×१६ ७) सें० मी०	५८ (१–३,३,४,४,५,५–५५)	१४	४१	पू०	प्राचीन	इति श्री कर्म विपाके संहितायां पार्वती हर संवादे रेवति नक्षत्रे चतुर्थ चरणे ब्रह्माड पुराणे पितृकामोत्तरे सनत्कुमार मारकंडयप्रपणात्तरेकर्म विपाक संहितायां नारद अम्बरीय प्रत्युत्तरेआलिन्यादिनक्षत्रे ॥
३०×१४ ५ सें० मी०	४	१२		पू०	सं०१९०९	इति श्री महाभारतेऽखिले कर्मविपाक कथन ॥ ॐ तत्सत् स०१९०९ लिखत मुरलीधर ॥
१६×१० ७ सें० मी०	४	९	१७	पू०	प्राचीन	इति कलस प्रतिष्ठा ॥
१९×११ सें० मी०	२ (१–२)	१०	२१	अपू०	प्राचीन	
१३×९ ८ सें० मी०	८	९	१८	पू०	सं०१९०९	स० १९०९ वैशाख मासे कृष्ण पक्षे ११ गुरुवासरे लिखत कन्हैया ॥
१५×११ ६ सें० मी०	४	१२	१५	पू०	प्राचीन	इति कलशस्थापन विधि समाप्ता शुभमस्तु ॥ श्री देव्यैनम ॥
२२ ४×९ ३ सें० मी०	१	९	४५	पू०	प्राचीन	इति काक मैथुन शाति ॥

क्रमाक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१३६	६४२२	काक स्पर्श शान्ति			दे० का०	दे०
१३७	४७५६	कात्यायन त्रिकण्डिका सूत्र (स्नानसूत्र)	कात्यायन		दे० का०	दे०
१३८	२३६/१२	कात्यायनी तर्पण			दे० का०	दे०
१३९	२११८	कात्यायनी तर्पण विधि			दे० का०	दे०
१४०	५१२२	कात्यायनी शान्ति	कात्यायन		दे० का०	दे०
१४१	३२८६/२	कात्यायनी शान्ति			दे० का०	दे०
१४२	८०५	कात्यायनी शान्ति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२०×७७ सें० मी०	६	७	३१	पू०	प्राचीन	इति काक स्पर्श शान्ति ॥
२४·६× १०·२ सें० मी०	३ (१-३)	८	३३	पू०	प्राचीन सं० १८४७	इति कात्यायन त्रिकंडिका सूत्रं समाप्तं संवत् १८४७ माघ कृष्णाष्टम्या लिखित श्री भट्टविश्वभरस्यात्मजेचंद्रशेखरेण वाराणस्याम् ॥ ... ...
१६×१०·५ सें० मी०	५	१५	१४	पू०	प्राचीन	इति कातीय तर्पण प्रयोग: ॥
१७·७× १०·७ सें० मी०	३	११	२२	पू०	सं० १९४४	इति कात्यायनी तर्पण विधि समाप्तं संवत् १९४४ ॥

क्रमाक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१४३	२२२२	कात्यायनी शाति			दे० का०	दे०
१४४	२५६६	कात्यायनी शाति	कात्यायन ऋषि		दे० का०	दे०
१४५	२२१६	कत्यायनी शाति			दे० का०	दे०
१४६	७५७१/२	कात्यायनी शाति प्रयोग			दे० का०	दे०
१४७	६३७५	काम्यवृषोत्सर्ग प्रयोग	रामकृष्ण भट्ट		दे० का०	दे०
१४८	१४८१	कारिकारत्न			दे० का०	दे०
१४९	६४७१	कारीरिष्टि हौत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१७.३ × १६.७ सें० मी०	१३ (१–१३)	१३	१८	अपू०	प्राचीन	
१७.३ × ११ सें० मी०	१७ (१–१४, १४–१६)	७	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री कात्यायन ऋषि विरचिता कात्यायनी शांति. संपूर्णम् ॥ ··· ···
२५.५ × १०.८ सें० मी०	१२ (१–१२)	८	२८	पू०	प्राचीन	इतिकात्यायनी शांति समाप्ता॥ शुभंभूयात्
२१ × १६.५ सें० मी०	१३ (१–१३)	१४	२१	पू०	प्राचीन	इति श्री कात्यायनी शान्ति समाप्ता ।
२१.७ × ९.३ सें० मी०	८ (१–८)	१०	३६	पू०	स०१७४४	इति भट्ट रामेश्वर सुत भट्टनारायणतमज भट्ट रामकृष्ण कृत शौनक मतेन काम्य वृषोत्सर्ग । प्रयोग ॥ संवत् १७४४ कार्तिक १३ लिखितमिद कृष्णेन ॥
२५.४ × ८.४ सें० मी०	२९ (१–२२, २५–३१)	६	४७	अपू०	प्राचीन	
२०.५ × १० सें० मी०	२ (१–२)	११	३१	पू०	प्राचीन सं०१७८८	लिखित मिद रामहृदोपनामक विश्वनाथ भट्टात्मज नीलकंठेन सं० १७८८ मिति भाद्रपद कृ० ११ भौमे मथुरा ग्रामे समाप्तम् ॥ ···

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१५०	७४११	कार्तवीर्य दीपदानपद्धति	कमलाकर		दे० का०	दे०
१५१	५७७५	कार्तवीर्यार्जुनदीपदान			दे० का०	दे०
१५२	५५३४	कार्तिकोद्यापनविधि			दे० का०	दे०
१५३	६१६/२	कालीपूजापद्धति			दे० का०	दे०
१५४	४०९६	कुंड प्रकाशिका	राम	रामवाजपेयी	दे० का०	दे०
१५५	१६५६	कुंडमण्डपकारिका	रामचन्द्र		दे० का०	दे०
१५६	७३३६	कुंडमंडपसिद्धि सटीक		विट्ठलदीक्षित	दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठा का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	१०
२७×११५ सें० मी०	८ १, ३–४, ७–८ १०, १२–१३	६	३२	अपू० *	प्राचीन	
२४५×७४ सें० मी०	१० (१–१०)	६	३८	पू०	प्राचीन	
२२७×८६ सें० मी०	१० (३–१२)	७	२८	अपू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे कार्तिकोद्यापन विधि समाप्त शुभमस्तु ।।
२३५×१०६ सें० मी०	२ (८–६)	६	३२	अपू०	प्राचीन	
२२×७७ सें०मी०	४२ (१–४२)	७	२३	पू०	प्राचीन	इति श्री नैमिष निवासि रामरचिता कुंड प्रकाशिका रामवाजपेय टीका समाप्ता ।।
२८५×१२० सें०मी०	१२ (१–२०)	१३	३३	अपू०	प्राचीन	
२६×११ सें० मी०	३५ (१–३५)	११	४२	पू०	प्राचीन सं० १६१७	इति श्री मत्संगमनेरस्थ विट्ठल दीक्षित विरचिता स्व कृत मंडप कुंड सिद्धि व्याख्या समाप्तेति शिव संवत १६१७ पौषशुक्ल १० तद्दिने समाप्ताय ग्रंथ स्वार्थ परार्थ च श्री रामार्पणमस्तु ।।

*(सं०पू० १६)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१५७	५७३०	कुडमडपसिद्धि			दे० का०	दे०
१५८	५४७६	कुडमडपसिद्धि	विट्ठल दीक्षित		मि० का०	दे०
१५९	५२८३	कुडमडपादिनिर्माणविधि			दे० का०	दे०
१६०	७३२१	कुडमार्तण्ड			दे० का०	दे०
१६१	६७५९	कुंडमार्तण्ड			दे० का०	दे०
१६२	१०७३	कुंडरत्नाकर टीका		विश्वनाथ द्विवेदी	दे० का०	दे०
१६३	६५१३	कुडलेष्टि होत्र प्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति सख्या और प्रति पक्ति मे अक्षर सख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
३१२×१५ सें० मी०	११ (१–११)	१४	४५	अपू०	प्राचीन	
२१७× १०४ सें० मी०	५ (२–५)	११	४०	अपू०	प्राचीन सं०१८३०	इति श्रीमज्योतिविश विटठन दीक्षित विरचिता कुड मडपसिद्धि × × सवत् १८३० समये कार्तिक शुक्ल १४ चतुर्दश्या पुस्तक लिखित आत्माराम भट्टेन महाराष्ट्रेण ॥ शुभमस्तु ॥
२३७×१० सें० मी०	६ (१–६)	८	३२	अपू०	प्राचीन	अथ कुडमडपाद्युपयुक्त भूसमत्व साधन माह ॥ (पत्र स० ४)
२७×११५ सें० मी०	७ (१–७)	११	३८	पू०	प्राचीन	इति कुडमार्तण्ड सपूर्ण ॥
२०६× १०१ सें० मी०	६ (१–६)	१२	४६	पू०	सं०१८२०	इति श्री कुडमार्तंड समाप्त ॥ सवत् १८२० पौष मासि बकुल पक्षे शिव तियौ भौम सदा शिवन लिखित ॥
२५५×११ सें० मी०	५४ (२–५५)	११	३८	अपू०	प्राचीन	इति श्री मग्नकल मतसकल विद्याविशारद श्री श्रीपति दीवदि द्विवेदी सुनु विश्वनाथ द्विवेदी कृता स्वकृता कुंड रत्नाकर टीका समाप्ता ॥ शुभभवतु ॥
२०६×८७ सें० मी०	३ (१–३)	६	२८	पू०	प्राचीन	इत्याश्वलायनानुसारी कुडलेष्टि हौत्र प्रयोग ॥

क्रमाक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१६४	८७१	कुडविचार			दे० का०	दे०
१६५	१३७७	कुडविवुसुर्होम विधि			दे० का०	दे०
१६६	६५६६	कुडसिद्धि व्याख्या	विटठल दीक्षित		दे० का०	दे०
१६७	६५६५	कुडसिद्धि व्याख्या	विट्ठल दीक्षित		दे० का०	दे०
१६८	६५६२	कुडसिद्धि व्याख्या	विट्ठल दीक्षित		दे० का०	दे०
१६९	६४११	कुडाक टीका		रघुवीरदीक्षित	दे० का०	दे०
१७०	७२७०	कुडाक व्याख्या			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण हो तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ क	ख	ग	घ	९	१०	११
२५.५×१५ सें० मी०	७ (१–७)	११	४०	पू०	सं०१७५०	इति कुडविचार समाप्त ॥ शके १६१५ फाल्गुन शुद्ध १ पूर्वे लिखितमिद पुस्तक आत्माराम ज्योतिर्विद्भि ॥
२१×१० सें० मी०	२	१०	३१	पू०	प्राचीन	
२३.६× १०.८ सें० मी०	२२(१–२२)	११	३८	पू०	सं०१८०६	इति सगमनेरस्य विटठल दीक्षीत विरचिता स्वकृत कुंडसिद्धि व्याख्या समाप्ता सवत् १८०६ मीती माघ वदी सतीमी वार शुभ दी ··· ··· ··
२३.७× १०.२ सें० मी०	३८(१–८३)	९	३३	पू०	प्राचीन	इति सगममनेरस्य विट्ठल दीक्षित विरचिता स्वकृत कुंडसिद्धि व्याख्या समाप्ता॥ + + + सं०१८०४ मिती वैशाख शुद्ध ५ समाप्ता॥
२३×९.४ सें० मी०	२९(१–२९)	९	४४	पू०	सं०१८१६	इति सगमनेरस्य विट्ठल दिक्षित रचिता स्वकृत कुंडसिद्धि व्याख्या समाप्ता ॥ सवत् १८१६ ॥
२२×८.४ सें० मी०	१७ (१–१७)	९	३१	पू०	प्राचीन सं०१८७३	इति कुंडार्क टीका समाप्त ॥ समत् १८७३ शा (के) १७३९ आश्विन कृष्ण ६० शनिवार ॥ विट्ठल दीक्षित सूनुना रघुनाथेन लिखित पुस्तक ··· ··· ···
२७.२× ११.५ सें० मी०	३ (१–३)	७	३२	पू०	प्राचीन	इति कुंडार्क समाप्त ॥

क्रमाक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१७१	१००६	कुडोद्योत			दे० का०	दे०
१७२	६४३०	कुंभ विवाह			दे० का०	दे०
१७३	६०२०	कुशकडिका			दे० का०	दे०
१७४	३६५२	कूपस्थापन विधि			दे० का०	दे०
१७५	६३७६	कूष्माड होम			दे० का०	दे०
१७६	६५०१	कूष्माड होम			मि० का०	दे०
१७७	१६०८	कूपारामादि प्रतिष्ठा विधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति सख्या और प्रति पक्ति मे अक्षर सख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५५× १०२ सें० मी०	६ (१–६)	१०	४२	पू०	प्राचीन	इति कुडोद्योत ॥
२२५× १०३ सें० मी०	१	६	३५	पू०	स०१८१३	इति कुभ विवाह ॥.........सवत् १८१३ वैशाख शुद्ध ८ ॥
१७१× १२६ सें० मी०	५ (१–५)	६	२३	पू०	प्राचीन	इति कुशकडिका सपूर्णम् ॥
२३७× १०६ सें० मी०	प०सं० ३ (१–३)	१०	३२	अपू०	प्राचीन	इति शरवधनम् ॥
१६१×६६ सें० मी०	१० (१–१०)	६	२६	पू०	सं०१६४६	इति कूष्माड होम समाप्त ॥ श्री सवत् १६४६ मी फागु० गु० व० २
१३४×६.१ सें० मी०	४ (१–४)	७	३२	पू०	प्राचीन	
३२८× १२५ सें० मी०	१३ (१–१३)	६	३८	पू०	सं० १६४०	इति दिक्पालेभ्योऽपवलिदस्वाततोदिक्पालेभ्यो नमस्कुर्या देवालयकूपतदादि (तडागादि) आराम प्रतिष्ठा पुस्तकं समाप्तम् ॥ सवत् १६४० ज्येष्ट वदि एकदश्या ११ शुक्रवासरे'''शुभमस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१७८	४४४७	कूपारामोत्सर्ग विधि			दे० का०	दे०
१७९	७७	कृत्य रत्नावली	रामचंद्र भट्ट		दे० का०	दे०
१८०	१८२	कृत्यरत्नावली	रामचंद्र भट्ट		दे० का०	दे०
१८१	२३५	कृत्यरत्नावली	रामचंद्र भट्ट		दे० का०	दे०
१८२	५१७	कृत्यरत्नावली	रामचंद्र भट्ट		दे० का०	दे०
१८३	४७५३	कृत्यरत्नावली	रामचंद्र भट्ट		दे० का०	दे०
१८४	३५२८	कृत्यरत्नावली			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७४× ११८ सें० मी०	१० (१-४,४, ५-७,९-१०)	७	३३	अपू०	स०१९१८	इति कूपारामोत्सर्गः समाप्त ॥ सवत् १९१८ श्रावण शुक्ल पूर्णमासी गुरुवासर इद पुस्तक रावजी मोघे
३०४× १४'१ सें० मी०	६८ (१-६८)	१३	४२	पू०	प्राचीन स०१८१७	इति श्रीमत्पदवाक्य प्रमाणभिज्ञतत्सु दुपाध्य बालकृष्ण भट्टागज विट्ठल भट्टाभिधबुधवरस्तनु धर्मशास्त्र परावारीणा श्रीमद्रामचन्द्रविरचिता कृत्यरत्नावली सपूर्णा ॥ श्रीरस्तुकल्याणमस्तु ॥श्री॥ सवत् १८१७ आषाढ शुक्ल ४ चतुर्थी भौमे लिखिता मिश्र नौबतराय श्री रस्ता।
(२५× १०६) सें० मी०	८७(१-२४,२८-६३,६६-९२)	१०	४१	अपू०	प्राचीन स०१७९७	इति श्री मत्पद वाक्य'''श्री प रामचंद्र भट्ट विरचिता कृत्य रत्नावली सपूर्ण ॥ सं० १७९७ कार्तिक शुक्लैकादश्या समाप्त ॥ लिखितमिद पुस्तकम्''' गगारामेण ॥
(३०३× ११) सें० मी०	८(३४-४१)	१३	४६	अपू०	प्राचीन	इति श्री मत्सद्विट्ठलभट्टात्मज रामचद्र विरचिता कृत्यरत्नावली समाप्त ॥
३०७×१३ सें० मी०	१२	१९	४८	अपू०	प्राचीन	इति श्री मत्पदवाक्यप्रमाणाभिज्ञ तत्सदुपाध्य बालकृष्ण भट्टागज विट्ठल भट्टाभिध बुधवरसूनु धर्मशास्त्र पारावारीण श्रीमद्रामचद्र भट्टविरचिता कृत्य रत्नावली समाप्तिमगमत्। ६
२१६× १०२ सें० मी०	१८ २,५-२१	९	३२	अपू०	प्राचीन	इति कार्तिक कृत्य + + + ॥
२५१×९ सें० मी० सं०मू० २०	९८ (१-९८)	९	४१	पू०	प्राचीन	इति श्रीमत्पदवाक्यप्रमाणाभिज्ञतत्सदुपाध्य बालकृष्णभट्टागज विट्ठल भट्टाभिध बुधवरसूनुधर्म'''श्रीमण श्रीमद्रामचद्रभट्ट विरचिताकृत्य रत्नावलीसमाप्ति मगमत्॥

क्रमाक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या या सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१८५	११६३	कृशरान्नश्राद्ध.			दे० का०	दे०
१८६	७५६४	कृष्णविरचि अभिषेक	श्रीकृष्ण		दे० का०	दे०
१८७	७४०४	कृष्णाव्रतोद्यापन			दे० का०	दे०
१८८	३१२/२	कृष्णार्चन पद्धति (न्यास)	गो० निबार्कशरण देवाचार्य		दे० का०	दे०
१८९	५६०२	कोकिलाव्रतोद्यापनविधि			दे० का०	दे०
१९०	६३७७	क्रमप्राप्तोविवाह			दे० का०	दे०
१९१	४७१६	क्रियापद्धति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति सख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२१.५×१४ सें० मी०	५	११	२२	पू०	सं० १९३८	इति श्रीकृशराग्न श्राद्ध समाप्ता शुभमस्तु श्रीकृष्ण १ सवत् १९३८ मु: राजनगर लिपत प० श्री अवस्थी जानकी प्रसाद जूकी जाये ता' जैं राधे कृष्ण पहुच्चे ॥
१७.२×८.६ सें० मी०	२ (१–२)	११	२२	पू०	प्राचीन सं० १८६२	इति श्रीकृष्णविरचितअभियेको समाप्त सुभ भूयात् ॥………
३४×१३ सें० मी०	९ (६–१४)	९	४९	अपू०	प्राचीन	इति भविष्योत्तरे श्रीकृष्णयुधिष्ठर सवादे श्रीकृष्ण व्रतोद्यापन ॥
२१.५×१५ सें० मी०	२८	७	१७	अपू०	प्राचीन	
१३.२×७.७ सें० मी०	११ (१–६, ९–१०,१४–१६)	७	२८	अपू०	प्राचीन	एतत्सर्व प्रभोक्तव्य यो[illegible]नमान-रेत् ॥ व्रतस्यास्यप्रभावेण वैधव्य नैवजायते ॥ इति उद्याप्न विधि ॥
१९.८×१०.२ सें० मी०	२४ (१–२४)	१०	२७	पू०	शके १६५६	शके १६५६ आनदनाम सवत्सरे अश्विन शुद्ध सप्तम्या समाप्त ॥……… (मुख पृष्ठ)
२७.६×११.२ सें० मी०	२५ (१–३, ५–६, १२–२५, २९–३०, ३३–३५,४१)	९	३२	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१६२	१२५१/२	क्षौरविधि			दे० का०	दे०
१६३	५७६४	गयापूजा			दे० का०	दे०
१६४	६००७	गंगास्नानपूजनविधि			मि० का०	दे०
१६५	२२४०	गणपतिपूजा			दे० का०	दे०
१६६	३३८३	गणपतिपूजा			दे० का०	दे०
१६६	३३८४	गणपतिपूजाविधि			दे० का०	दे०
१६७	५१६६	गणहोमविधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
१२३×७८ सें० मी०	७ (१-७)	७	११	पू०	प्राचीन	इति क्षौर विधि ॥
१४६×१०८ सें० मी०	२	१३	१७	अपू०	प्राचीन	
१५६×१२१ सें० मी०	१४ (१-१४)	७	१६	पू०	प्राचीन (सं०१६४३)	इति गंगापूजन विधि समाप्त ॥ राम वेदांक चंद्राब्दे आश्विने × × × × शुभ भूयात् ॥ द्विजेरिते इति पाठ ॥
२११×८·३ सें० मी०	६ (१-६)	६	३५	पू०	प्राचीन	इति पूजनम् ॥
३१४×१२३ सें० मी०	२ (१-२)	१२	४४	पू०	प्राचीन	इति गणपति अद्य ब्राह्मणाय इमां दक्षिणा दास्ये इति संकल्प······ ॥
१५६×१०२ सें० मी०	६ (१-६)	१०	२१	पू०	प्राचीन	इति पूजा समाप्त ॥
२३८×८४ सें० मी०	६ (१३-१८)	१०	३६	अपू०	प्राचीन	इति बौधायन प्रोक्तो गणहोम-विधि ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१९९	२३९२/२	गणेश चतुर्थीपूजाविधि			दे० का०	दे०
२००	२४३४/२	गणेशपूजन			दे० का०	दे०
२०१	४११६	गणेशपूजन			दे० का०	दे०
२०२	६३५०	गणेशपूजन विधि			दे० का०	दे०
२०३	७५३१	गणेशपूजा			मि० का०	दे०
२०४	३१४	गणेशपूजाविधान			मि० का०	दे०
२०५	३४२७	गणेशपूजाविधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
१२ × ६·७ सें० मी०	१२	६	११	अपू०	प्राचीन	इति श्री गणेश जू की पूजा विधि सपूर्ण शुभ भवति मंगलं ददात् ॥
२५·८ × ११·२ सें० मी०	१½	११	३४	पू०	प्राचीन	इति गणेश पूजन समाप्तम् ।
१७·१ × ११·२ सें० मी०	८	७	१७	अपू०	प्राचीन	नया कृत पूजनेन यथाज्ञानाज्ञानोपपन्ने भगवान्सर्वात्मा श्रीसिद्धिवृद्धि सहित महागणपति प्रियतां ॥ (अंत)
१६ × १२ सें० मी०	६ (१–६)	६	१२	०	प्राचीन	इति श्री गनेस जू की पूजन संपुरनं सुभ भवतु मगलं ददात् ॥
२१.८ × ६·७ सें० मी०	६ (१–६)	६	२१	पू०	प्राचीन	
१६·५ × १०·५ सें० मी०	६ (१–६)	८	१६	पू०	प्राचीन सं० १६१८	ॐ गनेस जी सुभं मस्तु जयाप्रततया लिपतंममदोषो न दियते। सं० १६१८ अस्वनत्रितीया ३ शुक्ल चद्रवार। गौरीदत्त······
१६ × १० सें० मी०	७ (१–७)	१२	२५	पू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२०६	६६२१	गयाकार्यानुष्ठान पद्धति			दे० का०	दे०
२०७	७६६२	गयापद्धति			दे० का०	दे०
२०८	४७२१	गर्भाधान			दे० का०	दे०
२०९	३७७४	गर्भाधान आदि संस्कार-विधि			दे० का०	दे०
२१०	६४४०	गर्भाधान संस्कार	नारायण भट्ट		दे० का०	दे०
२११	७६२०	गायत्री			दे० का०	दे०
२१२	२२४१	तुर्विंशति गायत्री जपम्			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
१७१×६६ सें० मी०	१८	११	२१	अपू०	प्राचीन	इति श्री मद्रामेश्वर भट्टात्मज नारायण भट्ट विरचिते त्रिस्थलीसेतौ गया-प्रकरण गया कार्यानुष्ठान पद्धति ॥ तीर्थ कर्त्तव्य सदेह + + + ॥
२०८×६७ सें० मी०	१८ (१–१८)	१०	३६	पू०	प्राचीन सं०१८७३	इति गया विधि अकीर्ण विस्तार· अथानुक्रमणिका ॥ ।सवत् १८७३ ।
२७७×११ सें० मी०	२ (१–२)	६	३२	अपू०	प्राचीन	
२२८×१२४ सें० मी०	१० (१६–२८)	८	२०	अपू०	प्राचीन	
२२×८७ सें० मी०	१६ (१–१६)	११	४१	पू०	प्राचीन	इति श्री विद्वन्मुकुटमाणिक्य श्री मद्रामेश्वर भट्ट सुत नारायण भट्ट विरचिते प्रयोग रत्नेस्तज्ज्येष्ठ सुत रामकृष्णो · ''दुष्ट रजो दशन श ति ॥
१६८×११५ सें० मी०	१६ (१-२, ५ १८)	७	१४	अपू०	प्राचीन	
३३२×६२ सें० मी०	१	३८	१२	पू०	प्राचीन	इति श्री चतुर्विंशति गायत्रि समाप्तम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२१३	४६३४	गायत्रीकल्प			दे० का०	दे०
२१४	१७४३	गायत्रीकल्प			दे० का०	दे०
२१५	३८१६	गायत्री जपविधि			मि० का०	दे०
२१६	१५०२/३	गायत्री तर्पण			दे० का०	दे०
२१७	७६४१	गायत्रीन्यास ध्यानपूजा			दे० का०	दे०
२१८	६२४	गायत्री पद्धति			दे० का०	दे०
२१९	१५५०	गायत्री पुरश्चरण प्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१२२×११.१ सें० मी०	६ (२, ६–१३)	११	१५	अपू०	प्राचीन सं०१८३४	इति श्री ब्रह्म ऋषि' वसिष्ट याज्ञवल्क्य प्रश्ने गायत्री कल्प सपूर्णं ॥ स०१८३४ वर्षे जेष्ट मासे कृष्ण पक्षे ७ गुरुवासरे॥
२७×१०.८ सें० मी०	३ (३३–३५)	८	३२	अपू०	प्राचीन	इति श्रीगायत्री कल्प सपूर्णम् ॥
१४२×११ सें० मी०	४ (१–४)	६	१७	पू०	आधुनिक	
१४×१० सें० मी०	८	८	१२	पू०	प्राचीन	इति तर्पण समाप्त।
२३.५×८७ सें० मी०	१० १–१०	६	२६	पू०	प्राचीन	
१६×६५ सें० मी०	७	७	२१	अपू०	प्राचीन	
२०×८४ सें० मी०	६	११	३३	पू०	प्राचीन	इति श्रीभट्ट शबूरात्मजभट्ट शाव कृत गायत्री पुरश्चरणप्रयोगः ॥'''

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२२०	७०५८	गायत्री प्रयोग			दे० का०	दे०
२२१	२००६	गायत्री विधान			दे० का०	दे०
२२२	३५६४	गायत्री विश्वामित्रकल्प			दे० का०	दे०
२२३	६८६५	गावस्तुत प्रयोग			दे० का०	दे०
२२४	२७०४	गुरु दीक्षा ?			दे० का०	दे०
२२५	३०६३	गुह्यकाल्यापूजा पद्धति			दे० का०	दे०
२२६	३६२३	गृहदान प्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२५.५×१६.२ सें० मी०	६	१४	३३	अपू०	प्राचीन	
१७.६×११.३ सें० मी०	१	८	२२	अपू०	प्राचीन	
१७.५×६.४ सें० मी०	८	८	३२	अपू०	प्राचीन	
२३.५×१०.१ सें० मी०	५ (१-५)	११	३१	पू०	प्राचीन	इति ज्योतिष्टोमेग्रावस्तुत् प्रयोग. समाप्त ॥
१६×७ सें० मी०	४ (१-४)	६	२१	पू०	प्राचीन	इति सकल्प्य कृत मत्र चल मत्र चानुसधाय सात्विक त्याग कृत्वा द्वयमुच्चार्य श्री मन्नारायण चरणारविंदयो सर्वदेश सर्व कालस " ॥
२५.१×८.४ सें० मी०	५ (१-५)	६	४२	पू०	प्राचीन	इति श्री गुह्यकाल्या पूजा पद्धति सपूर्ण ॥ नम श्रीगुह्याचार्य ॥
२३.५×१० सें० मी०	२	८	३६	पू०	प्राचीन सं० १८१२	इति गृहदान विधि सपूर्ण श्रीरर्पणमस्तु ॥ सवत् १८१२ आषाढ शुद्ध ५ समाप्तम् ॥ पुस्तकमिद रामग्रहकर विश्वनाथ भट्टात्मज नीलकंठभट्टेन लिखापित स्वाय परार्थं च । श्री साव शिव प्रसन्नोस्तु ॥

क्रमाक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२२७	६३०	गृह दीपक			दे० का०	दे०
२२८	१६२५	गृहप्रतिष्ठा विधि			दे० का०	दे०
२२६	५२३२	गृह प्रतिष्ठा विधि			दे० का०	दे०
२३०	४५३८	गृहस्थ रत्नाकर			दे० का०	दे०
२३१	७२६६	गृहारंभ शिलान्यास विधि			दे० का०	दे०
२३२	१०३१	गृह्यसार	वोपण भट्ट		दे० का०	दे०
२३३	५४१३	गृह्यसूत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्र संख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७.३×११.५ सें० मी०	१०(१–१०)	१०	३५	पू०	प्राचीन स०१९२१	इति गृहदीपक समाप्तम् । स० १९२१ शाके १७८६ श्रावन मासे कृष्ण पक्षे अमावस्या भुमी वाशरे लिपित्वा दोउन्हरामशपट्ठार्थस्य तत्वे॰ ।
३०×१३ सें० मी०	३ (१, २ अज्ञात)	६	४०	अपू०		
२९.४×१०.३ सें० मी०	१३ (१–१३)	१०	४१	पू०	प्राचीन स०१९२३	इति गृहप्रतिष्ठा विधि ॥ सवत्सरे १९२३
२९.५×११.२ सें० मी०	१५० (१–४८,४८, ४९–१४९)	८	४४	अपू०	प्राचीन	इति गृहस्थरत्नाकरे दातृनिरूपण तरग ॥ पृ० (३५)
२८.१×१०.८ सें० मी०	४(१–४)	६	३१	पू०	प्राचीन स०१९१३	इति गृहारंभ शिलान्यास्य विधि समाप्त॰ श्रीरस्तु स० १९१३ चैत्र सुदि १५रवौ ॥
२३×८.६ सें० मी०	४४ (२५–६८)	७	२८	अपू०	स०१७३५	इति श्रीमहोपाध्याय श्रीमद्रदाध्रवोवपण॰ भट्ट विदुषा विरचिता गृह्यसार समाप्त॰॥ स० १७३५ आषाढ कृष्ण द्वादश्या दश॰ पुत्ररघुनाथेन स्वार्थं परोपकारार्थं च लिखितोगृह्यसार॰ समाप्त ॥
२४.२×१०.५ सें० मी०	२८ १–२३,२३–२७	७	२८	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२३४	५८२३	गोकुलाष्टमी पूजा			दे० का०	दे०
२३५	६६३५	गोतमस्तोमादि	रघुनाथ		दे० का०	दे०
२३६	७२४८	गोलावली			दे० का०	दे०
२३७	४७३२	गोत्रोच्चार			दे० का०	दे०
२३८	६३४१	गोदान			दे० का०	दे०
२३९	७७०६	गोदान			दे० का०	दे०
२४०	४२३८	गोदान			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४.५ × १०.७ सें० मी०	४ (१–४)	७	१८	पू०	प्राचीन	गोकुलाष्टमि पूजा समाप्त ॥
२३.१ × ९.४ सें० मी०	२४ (१–२४)	८	२९	पू०	प्राचीन सं०१८०५	इति श्री मदयाचितोपनामकरुद्र भट्ट सुते नरघुनाथेन एषा पद्धतिविरचिता ॥ शुभमस्तु ॥ संवत १८०५ मिति पौषवदि द्वितीया पुस्तकमिद राम हृदोपनामक विश्वनाथ भट्टात्मज नीलकठस्य ॥
२३.८ × ९.५ सें० मी०	१० (१–१०)	८	३५	अपू०	प्राचीन	
२३.८ × १०.४ सें० मी०	६ (२–७)	८	२६	अपू०	प्राचीन	इति गोल्लाउचार समाप्तम ॥
२३.३ × ९.८ सें० मी०	४ (१–४)	१०	३२	पू०	प्राचीन	इति गोदान प्रशसा० ॥
२३.३ × ९.८ सें० मी०	७	११	३८	अपू०	प्राचीन	
१३ × ८ सें० मी०	१४ (२–१६)	७	१३	अपू०	प्राचीन	

(सं०सू० २२)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२४१	३८६५	गोदानपद्धति			दे० का०	दे०
२४२	३०४६/६	गोदान विधि			दे० का०	दे०
२४३	२३५४	गोदान विधि			दे० का०	दे०
२४४	२०००	गोदान विधि			दे० का०	दे०
२४५	२१५८	गोदान विधि			दे० का०	दे०
२४६	६०२१	गोदान विधि			दे० का०	दे०
२४७	१३६०	गोदान विधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति सख्या और प्रति पक्ति मे अक्षर सख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२०७ X ६३ सें० मी०	५ (१-५)	६	२८	पू०	प्राचीन	इति गोप्रदान पद्धति समाप्ता ॥
(१६७ X १३१ सें० मी०	३१/६	१६	१७	पू०	प्राचीन स० १८८५	इति गोदान पद्धति सपूर्ण ॥ स०१८८५ ॥
२५२ X ११२ सें० मी०	१० (१-१०)	७	२४	पू०	(कृमिव् तित) स०१६१५	इति स०१६१५ तत्रमासे महामागल्यमासे पौषमासे शुक्लपक्षे द्वादस्या १२ आदित्य वासरान्विताया लिख्यत मिश्र प्रभूलाल पठनार्थ१ इति गोदान विधि समाप्तम्।। राम-राम
२८ X १३३ सें० मी०	७ (१-७)	१०	३१	पू०	प्राचीन (जीर्ण) स० १६४४	इति श्री नारदपुराणे गोदान विधि समाप्त । स० १६४६ मासोत्तम मासे भाद्रपद मासे कृष्ण पक्ष शुभतिथौ द्वितीयाम्
१६३ X १२३ सें० मी०	४ (७-१०)	११	१६	अपू०	प्राचीन	
२७८ X ११६ सें० मी०	४ (१-४)	८	३८	पू०	प्राचीन	इति श्री पद्मपुराणे प्रयाग माहात्म्ये गोदान विधि निरूपण पट् पचाश त्तमोध्याय ॥
१२३ X ८ सें० मी०	४	८	१५	पू०	प्राचीन	इति सक्षेपेण गोदानविधि

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२४८	२८८४	गोदान विधि			दे० का०	दे०
२४९	३८८१	गोदान विधि			दे० का०	दे०
२५०	७६२३	गोदान (सूक्ष्म) विधि			दे० का०	दे०
२५१	४३३७/८	गोद्वार			दे० का०	दे०
२५२	७५८५	पूजाविधि गोपालकृष्ण			दे० का०	दे०
२५३	२५६७	गोपाल गायत्री मगन्यास			दे० का०	दे०
२५४	६५६२	गोप्रसव शान्ति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३×१० सें० मी०	६ (१-६)	१०	३४	अपू०	जीर्ण प्राचीन सं० १७८१ शाके १६४६	इति साधारण……॥ शुभमस्तु॥ संवत् १७८१ साके १६४६ माघवदि दसम्या
१५.७×१५ सें० मी०	८	११	१५	अपू०	प्राचीन	
३१.५×११.७ सें० मी०	४ (१-४)	७	४२	पू०	प्राचीन	इति सूक्ष्म विधि समाप्ता ……
१६×१३.३ सें० मी०	२ (३५-३६)	१२	२५	पू०	प्राचीन	इति गर्डत्यारणी (?) गऊत्यारणि ? समाप्ता॥
१७×१० सें० मी०	८	८	१७	पू०	प्राचीन	इति श्री गोपालकृष्ण पुजा समाप्त॥
२०×१०.५ सें० मी०	३ (१-३)	६	२२	पू०	प्राचीन	इति श्री गोपाल गायत्री पंच अगन्यास. सपूर्ण …
१६.३×६ सें० मी०	१	७	४५	पू०	प्राचीन	इत्यद्भुत सागरे मारदोक्ता सीढार्क गो प्रसव शांति॥

क्रमाक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२५५	७२७३	गोमुखप्रसव			दे० का०	दे०
२५६	४३३२	गोमुख प्रसव विधि			दे० का०	दे०
२५७	६४२३	गोमुख प्रसव शांति			दे० का०	दे०
२५८	६४३४	गोमुख प्रसव शांति प्रयोग			दे० का०	दे०
२५९	४७११	गोमुख शांति			मि० का०	दे०
२६०	७१९४	गौतमी पद्धति			दे० का०	दे०
२६१	२७३	ग्रहमख पद्धति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५×६३ सें० मी०	२ (१-२)	८	३०	पू०	प्राचीन	इति गोमुख प्रसव ॥ + + +
२१×८५ सें० मी०	२ (१-२)	९	३१	पू०	सं०१७६७	इति गोमुख प्रसव विधि ॥ सं० १७७६ शार्वरीऽदे चैत्र शु० १ · ··
२०८×७९ सें० मी०	४ (१-४)	७	२७	पू०	प्राचीन	इति गोमुख प्रसव शांति समाप्ता ॥ श्री ॥
२२२×९ सें० मी०	६ (१-६)	७	३०	पू०	सं०१९१५	संवत् १९१५ भाद्रपदशुक्ल १२ रविवासरे इदं पुस्तक वेतालोपनामकस्य ॥ शुभ ॥
२४३×११ सें० मी०	६ (१-६)	८	३४	पू०	सं०१९६६	इति श्री म० गोमुखप्रसव शांति समाप्ता । सं० १९६६ वाशिकरोपाव्ह काशिनाथ शर्मणा लिखितम् ॥
२७१×११२ सें० मी०	२८ (१-२८)	९	३४	अपू०	प्राचीन	अथ गौतमी पद्धति लिख्यते (प्रारंभ)
१७३×१०५ सें० मी०	७२	७	२२	पू०	सं०१९९९	इति ग्रहमख पद्धति समाप्त आश्विने मासे कृष्ण पक्षेतुमथायां गुरुवासरे ७ तस्मिन दिनेतु लिखित श्री गुरोश्च प्रसादत ॥ श्री रस्तु ॥ सं० ९९९९ दुर्मति नाम संवत्सरे शुभ उभयो लेखक पाठकयो ॥ लिखित इदं पुस्तक पुरुषोत्तम मिश्र । शुभ भवतु स्वार्थे परमार्थे च ॥—

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२६२	५६३०	ग्रहवास्तुपूजन			दे० का०	दे०
२६३	२२१६	ग्रह शांति	कात्यायन ऋषि		दे० का०	दे०
२६४	२६८०	ग्रहशांति			दे० का०	दे०
२६५	१८४१	ग्रह शांति			दे० का०	दे०
२६६	१६२४	ग्रह शांति			दे० का०	दे०
२६७	६७	ग्रह शांति	कात्यायन ऋषि		दे० का०	दे०
२६८	४१७२/२	ग्रहशांति विधान			दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठ या आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७४×११५ सें० मी०	४(१-४)	६	४३	पू०	प्राचीन	
२५८×११ सें० मी०	८ (१-८)	८	३५	पू०	प्राचीन	इति श्रीकात्यायन ऋषि विरचिता ग्रहशांति समाप्ता १
२२५×८८ सें० मी०	३	१०	३३	अपू०	प्राचीन	
१७×१०५ सें० मी०	२७	१२	२५	पू०	प्राचीन सं०१८६०	इति नवगृह मध्य यज्ञ समाप्त ॥ सं० १८६० मागसिर सुदि ११ गुरुवारेण लिखित जोसिचनराम सुत पुत्र कालुराम पुस्कर मध्ये ॥ श्रीमस्तु ॥ कल्याणमस्तु॥
२५५×१५ सें० मी०	१६ (१-२, ४-१७)	१२	२५	अपू०	प्राचीन	
१६×१३२ सें० मी०	१०		१५	पू०		इति कात्यायन ऋषि विरचिता ग्रह शांति समाप्ता शुभेभूयाल्लेखक पाठकयोस्ताम्वकृपात. ॥ कृष्णाय नम ॥ राम राम
१८८× १३८ सें० मी०	२३ (१-४, ६-२७)	११	३१	अपू०	प्राचीन	इति प्रवगर्भ समाप्त । (प० सं० २७)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२६६	१०२४	ग्रहशांतिविधि			दे० का०	दे०
२७०	२४३४/२	ग्रह स्थापन विधि			दे० का०	दे०
२७१	६७५२	ग्रावस्तोत्रप्रयोग			दे० का०	दे०
२७२	५०१७	घृत तुलादान प्रयोग			मि० का०	दे०
२७३	५६१७	चंडिका विधान			दे० का०	दे०
२७४	५२५१	घडी जप विधि			दे० का०	दे०
२७५	६३०	षष्ठीविधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ में पक्ति सख्या और प्रति पक्ति मे अक्षर सख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२४ ३ × १५ सें० मी०	६ (१–६)	११	२५	पू०	प्राचीन (स०१८६०)	इति श्री ग्रहशाति विधि समाप्तम् शुभ भूयात् ॥ स० १८६० चैत्रशुदि १५ गुरुदिने···श्री शो (सी)ताराजायनम ॥
२५ ८ × ११ २ सें० मी०	(१½)	१०	२६	पू०	प्राचीन	इति कात्यायन ऋषि विरचिते ग्रहास्थापन विधान समाप्त ॥
२४ × ११ सें० मी०	५ (१–५)	६	३७	पू०	प्राचीन	इति ग्राव स्तोत्र प्रयोग ॥
१६ ५ × ६ ३ सें० मी०	१	१५	३७	अपू०	आधुनिक	
२४ ४ × १० ५ सें० मी०	११ (१–१०,१३)	६	३१	अपू०	प्राचीन	इति चडिका विधान सपूर्ण ॥
२२ × १० २ सें० मी०	५ (१–५)	११	३६	अपू०	प्राचीन	अथ चडी जपविधि ॥ (प्रारम्भ) × × ×
२४ ४ × ७ ६ सें० मी०	६ (१–६)	८	३८	पू०	प्राचीन	इति चडी विधि ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा ग्रन्थविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२७६	२४३७	चडीस्तोत्र प्रयोग विधि	नागोजी भट्ट		दे० का०	दे०
२७७	२२५७	चडीस्तोत्र प्रयोग विधि	नागोजी भट्ट		दे० का०	दे०
२७८	६४४६	चतुर्थीव्रत चन्द्रार्घ्यं			दे० का०	दे०
२७९	१५०७	चतुष्टय सम्प्रदाय पूजा पद्धति			दे० का०	दे०
२८०	७२०१	चलाचलप्रतिष्ठा विधि			दे० का०	दे०
२८१	७१८३	चवरी			दे० का०	दे०
२८२	६४९९	चातुर्मास			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठा का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२४.५×११ सें० मी०	२५	६	३८	पू०	प्राचीन	इति श्री मद्पाध्यायोपनाम शिव भट्ट सुत सतीगर्भज नागोजी भट्ट कृते मारकण्डय पुराणांतगत सप्तसत्वाख्य चंडीस्तोत्र व्याख्याने चंडीस्तोत्र प्रयोग विधि समाप्त ॥ शुभमस्तु ॥
१८.८×१६.१ सं० मी०	प० सं० ३३ (२–१६, १८–३५)	१३	४०	अपू०	प्राचीन सं० १६३२	इति श्री मदुपाध्यायोपनाम शिवभट्ट सुत सतीगर्भज नागोजी भट्ट कृते मार्कंडेय पुराणांतर संवत् १६३२
१३.६×८.२ सें० मी०	३ (१–३)	५	१३	पू०	प्राचीन	इति चंद्राऽर्घ्य ४ वृत ॥
१८×६.७ सें० मी०	७ (५–११)	८	२५	अपू०	प्राचीन	
२५.८×११.२ सें० मी०	१७ (१–१७)	६	२८	पू०	सं० १६१५	इति चलाचल प्रतिष्ठा विधि संवत् १६१५ पौषमास सितेपक्ष त्रयोदश्यां भ्रात्रवेतया शोभारामेण लेखस्यात्
२६.२×१५.८ सें० मी०	१४ (१–११, १३–१५)	१३	३०	अपू०	प्राचीन	इति श्री महाब्रह्मपुराण कर्मकांडे-विवाह विधि चतुर्थोध्याय + + सं० १६०३ मर्पेगढमध्ये + + ॥
२२.५×६.५ सें० मी०	५३ (१–१३, १५–५४)	१२	४८	अपू०	प्राचीन	इति हौत्र पशुबंधश्चातुर्मास्यानां । (पत्र सं० ५४)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२८३	१२०६	चातुर्मास्यविधि			दे० का०	दे०
२८४	६७०६	चातुर्मास्यहोम			दे० का०	दे०
२८५	५१४२	चित्रगुप्त पूजा विधि			दे० का०	दे०
२८६	७०८८	चूडाकरण			दे० का०	दे०
२८७	६६७०	चौलप्रयोग			दे० का०	दे०
२८८	६१३३	जनमारी शांति			दे० का०	दे०
२८९	६२५४	जप			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२×१३ सें० मी०	६ (१–६)	७	२३	पू०		इति चातुर्मास्य विधि· सपूर्ण शुभ भूयात् ।
२२×६५ सें० मी०	८ (१–८)	१०	३१	पू०	प्राचीन	
१६७×६८ सें० मी०	११ (१३ १३-२२)	८	२५	अपू०	प्राचीन	
२२१×११·६ सें० मी०	६ १–६	६	२२	पू०	प्राचीन	इति चूडाकरण पुस्तक समाप्तम् सं॰ माते सिते पक्षे + + + + +
२२४×७७ सें० मी०	७ (१–७)	६	३८	पू०	प्राचीन	
१७२×७५ सें० मी०	४	८	२१	पू०	प्राचीन	इति विधानमालायां गर्ग प्रोक्ता कनमारी शांति समाप्तं ··· ··· ···
२१८×१०६ सें० मी०	२	७	२६	अपू०	प्राचीन	

क्रमाक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या वा सग्रहविशष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२६०	४८१६	जपविनियोग			दे० का०	दे०
२६१	१६१२	जल गायत्री			दे० का०	दे०
२६२	३७५१	जलाशयकूपोत्सर्ग			दे० का०	दे०
२६३	१३०६	जलाशय चत्वर प्रतिष्ठा			दे० का०	दे०
२६४	५६४५	जलाशयारामोत्सग मयूख	नीलकठ भट्ट		दे० का०	दे०
२६५	२५१०	जलाश्रयोत्सर्ग	नीलकठ भट्ट		दे० का०	दे०
२६६	४४४६	जलाशयोत्सग विधि	नारायण भट्ट		दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति सख्या और प्रति पक्ति म अक्षर सख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८ ब	स	द	९	१०	१०
१७×१०.७ सें० मी०	३	१०	१६	अपू०	प्राचीन	
१६×११ सें० मी०	१	७	२०	अपू०	प्राचीन	
(२७.६×१५.१) सें० मी०	२५ (१–२५)	१२	२६	पू०	प्राचीन सं०१८६६	इति जलाशय कूपोत्सर्ग समाप्त सवत् १८६६ मासानामुत्तमे फल्गुने मासि कृष्णपक्षे एकादश्या शनिवासरे लिखित मिद पुस्तक लक्ष्मी नारायणेन ··· ॥
१६.३×६.२ सें० मी०	३७ (१–३७)	६	२०	पू०	प्राचीन सं०१६०७	इत्यारामामोजलाशय चत्वर प्रतिष्ठ-समाप्ता। श्री कृष्णायनम सं०१६०७ शाके १७७२ मासोत्तम्मासे ज्येष्ठ कृष्ण ३० चद्रवासरे निपि कृत मिश्र डाल चद्र राम पुरत्र। श्री कृष्ण।
२३.४×११ सें०मी०	१३ (३–१५)	१४	३८	अपू०	स०१६०६	इति श्री मीमागव भट्ट सकरात्मज भट्ट नीलवण्ठ कृते भास्करे जलाशयारामोत्सर्ग मयूप समाप्त ॥ ·· १६०६ चैत्रे शुक्ले तरे शुभे ·· ··
२६.३×१५.२ सें०मी०	२७ (१–२७)	१३	३५	पू०	प्राचीन सं०१६१८	इति श्रीमीमांसर भट्ट सारात्मज भट्ट सौननीलकट कृत भास्करे जनाश्यों रामो-त्सर्गमयूपग्रय शाख्या १०० शुभमस्तु कार्तिक सुदि १५ का सं० १६१८ प
२७×१२ सें० मी०	८६ (१–८६)	८	३७	पू०	सं०१६१७	इति श्रीभट्ट रामश्वर सूरिसुत नारायण भट्ट कृते जलाशयारामा विधोत्सर्गो सर्ग विधि पद्धति ॥ सवत १६१६ मोम पौष सुक्ल १० स्वार्थ परोपकारार्थं च ॥

(सं०मू० २४)

क्रमाक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या या सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२९७	५०५३	जलोत्सर्ग			दे० का०	दे०
२९८	४६०२	जलोत्सर्ग			दे० का०	दे०
२९९	६४१७	जातकर्म पद्धति			दे० का०	दे०
३००	६४१८	जीर्णोद्धार			दे० का०	दे०
३०१	६३६८	जीर्णोद्धार प्रयोग			दे० का०	दे०
३०२	६३७१	जीर्णोद्धार विधि			दे० का०	दे०
३०३	६११८	जीवश्राद्ध पद्धति	गौरी भट्ट		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४.१ × ११ सें० मी०	३ १–३	१०	३१	अपू०	प्राचीन	
२८.५ × १२.२ सें० मी०	३ १–३	८	३८	अपू०	प्राचीन	
२२.४ × ९ सें० मी०	६ (१–६)	७	३२	पू०	प्राचीन	इति जातकर्म पद्धति ॥
२१.५ × ८.४ सें० मी०	४ (१–४)	९	२७	पू०	प्राचीन	इति जीर्णोद्धार निर्णयसिंधोक्तेन विधि समाप्तिमगमत् ॥
१४ × ७.९ सें० मी०	१ (१–२)	१०	२५	पू०	प्राचीन	इति जीर्णोद्धार प्रयोग समाप्त ॥
२१.८ × १०.१ सें० मी०	४ (१–४)	१०	४०	पू०	प्राचीन	इति रघुनाथ सूरि सूनु त्रिविक्रम रचितायां प्रतिष्ठापद्धतौ जीर्णोद्धार विधि ॥
२४.३ × ११.३ सें० मी०	१४ (१–१४)	७	३३	पू०	सं०१९५८ (हस्तलिखित)	सं०१९५८ माघ शुक्ल १० सोमे लिखित गणपति पुरोहितेन ॥

क्रमाक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या या सग्रहविशय की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३०४	५७२८	जेष्ठानक्षत्र जनन शाति			दे० का०	दे०
३०५	५०५४/१५	ज्वरशाति प्रयोग			दे० का०	दे०
३०६	६५८६	तडागादि प्रतिष्ठाप्रयोग		(–)	मि० का०	दे०
३०७	५४५८	तर्पण			दे० का०	दे०
३०८	६२१८	तर्पण			दे० का०	दे०
३०९	७७८२	तर्पण			दे० का०	दे०
३१०	४०७३	तर्पण			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
२४×८७ सें० मी०	३ (२–४)	८	२७	अपू०	प्राचीन	इति ज्येष्ठा नक्षत्र जनन शांति ॥
१६×७८ सें० मी०	४	८	२५	पू०	प्राचीन	इति ज्वर शांति ॥
२४×१०७ सें० मी०	८ (१–८)	१०	३६	पू०	प्राचीन	बाज बाहादुर चंद्रनिर्मिते कौस्तुभेनृपति धर्मगोचरे शौनकोक्तविधिनेयतीरिता सज्जालाशयतरुत्सृजे कृति ॥
२६×६'५ सें० मी०	५	८	३४	अपू०	प्राचीन	
६८×१६५ सें० मी०	१ (खर्रा)	६३	१४	अपू०	प्राचीन	
११×१०२ सें० मी०	८ (१–८)	११	१३	पू०	प्राचीन	
१४×८७ सें० मी०	प०सं०७ (२–८)	६	१६	अपू०	प्राचीन सं० १८६७	इति तपन संपूर्ण संवत् १८६७ साके १७६२ आषाड वदि ६ बुधवासरे तादिन प्रति संपूर्ण ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लि
१	२	३	४	५	६	७
३११	११६६	तर्पण			दे० का०	दे०
३१२	४५०४	तर्पण			दे० का०	दे०
३१३	२८७७	तर्पण			दे० का०	दे०
३१४	७००४/२	तर्पण प्रयोग			दे० का०	दे०
३१५	१३३३	तर्पण प्रयोग			दे० का०	दे०
३१६	५७१	तर्पण विधि			दे० का०	दे०
३१७	६०७	तर्पण विधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या-और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४.४×१०.६ सें० मी०	४ (१-४)	८	३०	अपू०	प्राचीन सं० १९३८	
२७.३×९.७ सें० मी०	८ (१-८)	६	४०	पू०	सं० १९३३	इति तर्पणम्सम्पूर्णम् ॥ जपानंतर कात्यायन ॥ " " संवत् १९३३ माघ शुक्ल बसंत पंचम्यां''''' ॥
१७.३×१०.६ सें० मी०	३ (१-३)	११	२५	पू०	प्राचीन	इति तर्पन सपूर्ण''''''दिवाकर ॥
१२.२×८.२ सें० मी०	१४ (१-१४)	५	१५	पू०	प्राचीन	इति सूर्य्यायार्जलिंदद्यात् शुभम् ॥
१७.५×१३ सें० मी०	५	११	२३	पू०	प्राचीन	इति तपण विधे पुस्तक मिद गंगादत्त ब्रह्मचारिण पाठार्थम् लिखित जयानंदेन शुकदेवाश्रमे प्रतिप्रत्तियौ भौमवासरे शुभम् ॥
१६.८×१४.३ सें० मी०	४ (१-४)	११	१६	पू०	प्राचीन	इति तर्पण समाप्तम् ॥१॥
१२.८×१० सें० मी०	६ (१-६)	७	१३	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या या सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३१८	६००६	तर्पणविधि			दे० का०	दे०
३१६	५३२१	तर्प्पण विधि			दे० का०	दे०
३२०	५१२६	तर्पण विधि			दे० का०	दे०
३२१	५२२६/४	तर्पण विधि			दे० का०	दे०
३२२	५२६६/२	तर्पण विधि			दे० का०	दे०
३२३	७७६/२	तर्पण विधि			दे० का०	दे०
३२४	७५४	तर्पण विधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१३.३ × ९.४ सें० मी०	५ १–५	८	१५	पू०	प्राचीन	इति तर्पण विधिसमाप्त ॥
३० × १३.६ सें० मी०	८ (१–८)	१०	३६	अपू०	प्राचीन	
७५.५ × ११.२ सें० मी०	१ (खर्रा)	७६	१७	पू०	प्राचीन	इति तर्प्पण समाप्तम् ···
१६.५ × ११.२ सें० मी०	५ (१–५)	१२	२५	पू०	प्राचीन	इति तर्पण समाप्तम् ॥
१६ × ८ सें० मी०	२ (३–४)	६	२६	अपू०	प्राचीन	
१५.४ × १०.६ सें० मी०	१६ (२–१७)	१०	६	अपू०	प्राचीन सं० १९४०	इति तर्पण विधि सं० १९४० भाद्र शु० ७ शनिवारे मध्यान्हात् घाटिका न्यून··· ···पठेत् ॥ अच्युतायनम गोविंदायनम. शुभ भूयात् ।
२६ × १०.५ सें० मी०	७	८	३५	पू०	प्राचीन सं० १९०६	इति श्री तर्पण विधि संपूर्ण शुभमस्तु शुभसंवत्सरा १९०६ शाके १७७१ वर्के शुक्ल प्रतिपदा भृगु वासरे लेखिराम-दिहल विप्रेण परोपकारार्थ हेतवे ।

(सं० गु० २५)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३२५	३५८५	तर्पणविधि			दे० का०	दे०
३२६	२२८६	तर्पणविधि			दे० का०	दे०
३२७	३६६२	तर्पणविधि			दे० का०	दे०
३२८	४०६५	तर्पणविधि			दे० का०	दे०
३२९	४२२०	तर्पणविधि			दे० का०	दे०
३३०	१५७३	तर्पणविधि			दे० का०	दे०
३३१	१६२६/३	तीर्थमुखश्राद्ध			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३.१ × १३.७ सें० मी०	८ (१–८)	८	१८	पू०	प्राचीन	इति तर्पण विधि ··· ॥
७५.६ × १०.८ सें० मी०	१	६३	१३	पू०	प्राचीन सं० १९०४	इति तर्प्पण विधि सपूर्णम् स० १९०४॥ ब्रह्मादय ···
२३.४ × ९.५ सें० मी०	१	३३	१६	पू०	प्राचीन	इति तर्पण विधि ॥
१५.७ × ७.६ सें० मी०	४ (१–४)	६	२३	पू०	प्राचीन	इति तर्पण विधि· शुभमस्तु
२७ × ११.२ सें० मी०	२ (१–२)	११	४०	पू०	प्राचीन	इति नारद पचरात्रे तर्पण विधिः ॥
३१ × ११.५ सें० मी०	११ (१–५, ५८ –६३)	११	४५	अपू०	प्राचीन	
२१.४ × १३.१ सें० मी०	८ (१–८)	९	१९	पू०	प्राचीन सं० १९००	इति तीर्थमुद्ध श्राद्ध विधि समाप्त ॥ शुभमस्तु ॥ फागुन सुक्ला बुधवासरे संवत् १९०० ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३३२	२९७७	तीर्थविधि			मि० का०	दे०
३३३	१७७५	तीर्थश्राद्ध			दे० का०	दे०
३३४	६०७४	तीर्थश्राद्ध			दे० का०	दे०
३३५	३३००	तीर्थश्राद्ध			दे० का०	दे०
३३६	७९८	तीर्थश्राद्ध			दे० का०	दे०
३३७	१३६६	तीर्थश्राद्ध निर्णय	नारायण भट्ट		दे० का०	दे०
३३८	१८४८	तीर्थश्राद्ध विधि			दे० का०	दे०

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३३६	२२३६	तीर्थश्राद्ध विधि			दे० का०	दे०
३४०	२६०१/२	तीर्थश्राद्ध विधि			दे० का०	दे०
३४१	२२४३	तीर्थश्राद्ध विधि			दे० का०	दे०
३४२	६७४	तिलकमुद्राधारण विधान			दे० का०	दे०
३४३	१५८१	तुलसीप्रतिष्ठा			दे० का०	दे०
३४४	१६२६/३	तुलसीविवाह			दे० का०	दे०
३४५	७०४३/३	तुलसीविवाह			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्र संख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्ति संख्या और प्रतिपंक्ति मे अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२१.७×१०.७ सें० मी०	८ (१–८)	८	२८	पू०	प्राचीन	इति तीर्थ श्राद्ध विधि: ॥
२१×११.५ सें० मी०	६	८	१६	पू०	सं०१६५६	इति श्री तिर्थ श्राद्ध विधि समाप्तम् ॥ लिपत प० वकुलसहाय ॥ ? ॥
१८×११.८ सें० मी०	४ (१–४)	१३	१६	पू०	प्राचीन	दक्षिणा चान्न सकल्प तीर्थ श्राद्धप्वय विधि। प्रयंमा वाहन चैव द्विजागुष्ट-निवेशन ॥ विकर तृप्ति प्रश्न च तीर्थ-श्राद्धेषु वर्जयेत् ॥२॥
१५×१० सें० मी०	५	६	१७	पू०	प्राचीन	इति श्री वाराह पुराणे चातुर्मास महात्म्ये धरणी वराह सवादे श्री भगवान-वराहोक्त तिलक मुद्रा धारण विधान नाम पचमोध्याय ॥ श्री कृष्णार्पण-मस्तु ॥ शुभ भवतु ॥ श्रीरस्तु ॥ *श्री कृष्ण ॥*
२७.५×१२.८ सें० मी०	१३ (१–१३)	१०	२६	पू०	सं०१८८१	इति तुलसी प्रतिष्टाक्रमसपूर्ण ॥ स० १८८१ ॥ तत्रवर्षेमार्गशीरशुद्विद्वादस्यां *बुसस्तवारदिने लिखितकिसनचद ॥* इद पुस्तक ॥ शुभमस्तु ॥
२११×१२.६ सें० मी०	४ (६–१२)	६	१८	पू०	प्राचीन	इति तुलसी विवाह समाप्त ॥
१४७×१३.३ सें० मी०	६	८	१४	पू०	प्राचीन सं०१८४२	इति श्री विष्णु जी मले श्री तुलसी विवाह विधि सपूर्णम् ॥ स० १८४२ वर्षे कार्त्तिक वदिकादशी भृगुदिने लिखित स्वामि तन सुखराम वेणीराम का पुत्र शुभमस्त ॥ मगल ददात् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३४६	७१३६	तुलसीविवाहपूजा पद्धति			दे० का०	दे०
३४७	४६७६/२	तुलसीविवाह विधि			दे० का०	दे०
३४८	५०५४/१५	तुलादान प्रयोग			दे० का०	दे०
३४९	३८५४	तुलादान प्रयोग	कमलाकर भट्ट		दे० का०	दे०
३५०	७७९३	तुलादान विधि			दे० का०	दे०
३५१	३५०१	तुलादान विधि			दे० का०	दे०
३५२	३०४९	तुलापुरुष पद्धति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६×१०·६ सें० मी०	१६ १–१६	८	३२	अपू०	प्राचीन	अथ तुलसी विवाह पूजा प्रारंभ × × × (प्रारंभ)
१५·८×६·५ सें० मी०	१४ १–१४	१०	२३	पू०	प्राचीन	इति भविष्योत्तर पुराणे कार्तिकोद्यापन तुलसी विवाह विधिः ॥
१६×७·८ सें० मी०	५	७	२०	अपू०	प्राचीन	अथ तुलादान प्रयोगः ॥ (प्रारंभ)
२३·५×११ सें० मी०	३ (१–३)	६	२७	पू०	प्राचीन	इति कमलाकर भट्ट कृत तुलादान प्रयोगः संमाप्तिमगमत् ॥ श्री ॥ भारद्वाज वैजनाथात्मज धुंडराजस्य
२६·६×११·३ सें० मी०	३ १–३	७	३२	पू०	प्राचीन	
२३·२×१०·३ सें० मी०	७	८	२५	अपू०	प्राचीन	
१७·५×६·३ सें० मी०	८ (१–८)	६	२७	पू०	प्राचीन सं० १७५६	इति तुलापुरुष पद्धति समाप्तः ॥ स० १७५६ समये श्रावणशुल्यपौर्णमास्याकाशीसेवे लिखित तुलापुरुष दान प्रयोगः समाप्तः ॥
(सु ७–२६)						



क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३५३	३८६४	तुलाप्रयोग			दे० का०	दे०
३५४	३१७३	त्रिकडिका			दे० का०	दे०
३५५	७२५४	त्रिकालसध्या			दे० का०	दे०
३५६	६०६७	त्रिकाल सध्या			दे० का०	दे०
३५७	६४२४	त्रिपाद पचक शाति			दे० का०	दे०
३५८	७०३	त्रिपिंडी श्राद्ध प्रयोग			दे० का०	दे०
३५९	३७०६	त्रिपिंडी श्राद्ध प्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२.१×६.५ सें० मी०	५ (१-५)	१०	३३	पू०	प्राचीन स०१८१२	इति तुला प्रयोग समाप्त ॥ स०१८१२ आषाढ शुद्ध पौर्णमास्या समाप्तम् ॥ पुस्तकमिदं रामहृदोगनामकं विश्वनाथ भट्टात्मज नीलकंठ भट्टेन निखपितम् स्वार्थ परार्थ च ॥
२३×१०.५ सें० मी०	३ (१-३)	६	२७	पू०	प्राचीन स०१८६७	इति त्रिकाडिका साम्प्रतम् । इति श्री कात्यायन प्रणीत स्नान सूत्र समाप्तं॥ लिखितं वेणी राम दिक्षितस्य ॥ स० १८६७ भाद्रपदवद्य भानुवासरे॥··· ··
१७.६×११.७ सें० मी०	१८ १-१८	७	१६	पू०	प्राचीन स०१६६१	इति त्रीकाल सध्या सपूर्णम् ॥ लिखित स० १६६१ ॥
१६.७×८.३ सें० मी०	७ (२-८)	७	१८	अपू०	प्राचीन स०१६०४	इति श्री त्रिकाल सध्या समाप्त सपूर्णम् ॥ मिति हुती जेष्ठ सुदि ३ भौम सवत् १६०४ · ।
१६.८×८ सें० मी०	४ (१-४)	६	३१	पू०	प्राचीन	त्रिपादपचक शातिः समाप्ता ॥
२२.६×११.७ सें० मी०	६ (१-६)	१०	२६	पू०	प्राचीन	प्रेतपाक च शूद्रान्नत कुर्यद्विश्वदेवक समाप्त ॥
१८.५×६.४ सें० मी०	४ (१-४)	१४	३२	पू०	प्राचीन स०१८०६	इति गरुडोक्त त्रिपिंडी श्राद्ध प्रयोग · ····· ······ । स० १८०६ मार्गशीर्ष वद्यी १४ इदं लिखितमिदम् ।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३६०	३७१०	त्रिपिंडी श्राद्ध विधान			दे० का०	दे०
३६१	३८८०	त्रिवेणी स्नान विधि			दे० का०	दे०
३६२	४७९६	त्रिसुपर्ण			मि० का०	दे०
३६३	३३१७	दडक			दे० का०	दे०
३६४	७२८९	दत्तिम पुत्र ग्रहण विधि			दे० का०	दे०
३६५	६६६०	दर्श पद्धति			दे० का०	दे०
३६६	६५१०	दर्श पूर्णमास विहार-कारिका विवरण			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२०×९ सें० मी०	६ (१–६)	१२	३५	अपू०	प्राचीन	
१५.८×१५.७ सें० मी०	६	१५	१८	अपू०	प्राचीन	
२१.२×१०.३ सें० मी०	५ (१–५)	११	२१	पू०	आधुनिक	त्रिसुपर्णमयाचित ब्राह्मणाय दद्यात्। ब्रह्महत्या वा एते घ्नति। ये ब्राह्मणा स्त्रिसुपर्ण पठति। ते सोम प्राप्नुवन्ति॥ (पत्र सख्या–१, पंक्ति सख्या–४, ५)
२३.८×१०.१ सें० मी०	२८ (१–२८)	७	२५	पू०	प्राचीन	इति दण्डक सम्पूर्णम्॥
२८.९×१०.६ सें० मी०	३ (१–३)	९	३५	पू०	प्राचीन सं०१९१२	इति दत्तिमपुत्रविधिः समाप्ता सवत् १९१२ चं० वदी १२॥
२२.८×१.७ सें० मी०	३४ (१–३४)	१०	३२	पू०	प्राचीन	प्रापस्तबोक्त रीत्यपाकारीत्य धर्मपद्धति॥ ......
२२×८.९ सें० मी०	७ (१–७)	११	३५	पू०	प्राचीन	

क्रमाक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३६७	६५००	दर्श पौर्णमास होत्र ?			दे० का०	दे०
३६८	७७२३	दर्शपौर्णमासौ व्याख्या			दे० का०	दे०
३६९	४१४५	दशगात्र			दे० का०	दे०
३७०	४९२१/३	दशगात्र			दे० का०	दे०
३७१	४८८१	दशगात्रएकादशाह श्राद्धपद्धति			दे० का०	दे०
३७२	२४०५	दशगात्र पिंडदान विधि			दे० का०	दे०
३७३	२२९२	दशगात्र विधान			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८ब	स	द	९	१०	११
२३ ५ × ६ २ सें० मी०	३ (१-३)	८	३३	पू०	प्राचीन	
२३ १ × १० ४ सें० मी०	१७ (१-१७)	६	३०	अपू०	प्राचीन	
१६ ३ × १० ३ सें० मी०	४ (१-४)	८	२३	पू०	प्राचीन	इति दशगात्र विधिः समाप्त ॥
१६ × १० ७ सें० मी०	७ (१-७)	८	१८	पू०	प्राचीन सं०१८२८	इति दसगात्र संपूरण निषितनरसिंघ दा सुकल संवत् १८२८ मिति असाढ "
२८ ८ × १०'२ सें० मी०	१५ (१-१५)	६	२८	पू०	प्राचीन सं०१८६४	व्योरो दशगात्र की सामग्री को ॥ (पत्र सं० १) इति अस्थि संचयन श्राद्ध विधि संपूर्ण ॥ (पत्र सं० ४) इति एकादशाह विधि संपूर्ण ॥१॥ संवत् १८६४ जेठ कृष्ण ६ बुधदिने इष्ट लिषत ब्राह्मणभगनुकुरणमध्ये ॥
२६ १ × १३ ६ सें० मी०	१४ (१-१४)	११	३३	पू०	प्राचीन सं०१९१३	.... संवत् १९१३ माघ कृष्ण ७ वार शनिवार शुभमस्तु भूयात् " ॥
२३ × १० ७ सें० मी०	१५ (१-१५)	८	२५	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३७४	४२५	दर्शपिंडीकरणपद्धति			दे० का०	दे०
३७५	३७२७	दानचंद्रिका			दे० का०	दे०
३७६	७८०६	दानचंद्रिका			दे० का०	दे०
३७७	४६८६	दानप्रार्थनावली			दे० का०	दे०
३७८	१६३२	दानमयूख			दे० का०	दे०
३७९	६२४९	दानविधि			दे० का०	दे०
३८०	६२४६	दानविधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२०.८×६ सें० मी०	६ (१–६)	१३	४०	पू०	प्राचीन सं०१८१२	इति सपिंडीकरण पद्धति समाप्त लिखत मिश्र नौबतराय सं०१८१२ ।
२४.५×१०.५ सें० मी०	१५६ (१–१५६) ४ (सूचीपत्र)	७	३६	पू०	सं०१८५८	इति दान चंद्रिका समाप्ता ॥········ यादृश पुस्तक दृष्ट्वा तादृश लिखितं मया ॥ यदि शुद्धमशुद्धवा ममदोषोन लिप्यते ॥ सं० १८५८ ॥ प्रतग सन्तान संवत्सर माघ शुध सात दिने समाप्ते ॥
१५.७×८.६ सें० मी०	६ (६–१०, १२–१५)	६	१८	अपू०	प्राचीन	
२६.५×१३.५ सें० मी०	५ (१–५)	१०	५०	पू०	प्राचीन (खंडित)	श्रीखंडागुरु कर्पूर कस्तूरी कुंकुमान्वित विलेपन प्रयच्छामि सौख्यमस्तु सदा मम ॥
(२६.६×१६.६) सें० मी०	११ (२–१२)	१४	२६	अपू०	प्राचीन	
१७×८ सें० मी०	१० (१–१०)	८	२५	पू०	प्राचीन	इति दशदान श्लोक ॥
२२×६.४ सें० मी०	७	१०	४०	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३८१	५०५४/१५	दानविधि			दे० का०	दे०
३८२	५०५४/१५	दानविधि			दे० का०	दे०
३८३	८७५	दानविधि			दे० का०	दे०
३८४	८२२	दानविधि			दे० का०	दे०
३८५	७८७२	दानविधि			दे० का०	दे०
३८६	२२८७	दान सिद्धांत मणि	चंडेश्वर		दे० का०	दे०
३८७	१५३५	दानम्योत्तर पद्धति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६ × ७·८ सें० मी०	६	८	२४	अपू०	प्राचीन	
१६ × ७ ८ सें० मी०	१०½	६	२६	अपू०	प्राचीन	
२७ × १२ ३ सें० मी०	२२६ (१३२–२३०, २३५–२६४, २६८–३६६ ३७०)	८	२५	अपू०	प्राचीन	
१८ ५ × १२ सें० मी०	९ (५–१३)	१०	२०	अपू०	प्राचीन	
१४ ६ × ७ ८ सें० मी०	२	५	१५	अपू०	प्राचीन	
३४ ५ × १३ ७ सें० मी०	१८ (३–२०)	१२	४१	अपू०	प्राचीन	
३२ × १२ ६ सें० मी०	५ (७–११)	१४	५२	अपू०	प्राचीन सं० १६१७	इति श्री दालभ्योत्तर पद्धति संपूर्ण ··· ······ संवत् १६१७ फाल्गुन मासे शुक्ल पक्षे ॥

क्रमाङ्क और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३८८	७०६	दाह पद्धति			दे० का०	दे०
३८९	३१६७	दाहप्रयोग			दे० का०	दे०
३९०	३११	दाहविधि	विश्वनाथ		दे० का०	दे०
३९१	६९३२	दिव ग्रयेनय			दे० का०	दे०
३९२	३५७४	दीक्षाविधान			दे० का०	दे०
३९३	१४१५	दीपमालाकृत्य			मि० का०	दे०
३९४	४२३७	दीप श्राद्ध			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४ ५ × ८ सें० मी०	२०	६	२२	पू०	प्राचीन	
२१ × ६ ४ सें० मी०	२ (१–२)	१७	४७	पू०	प्राचीन सं०१७५७	इति अहिताग्नेराश्वलायनोक्तमार्गेण दाह प्रयोग ... ... सं० १७५७ पौष शुद्ध ७ रवौ
३३ × १२ ५ सें० मी०	१७ (१–१७)	११	४५	पू०	प्राचीन	इति विश्वनाथ कृति सपूर्ण शुभमस्तु ॥
२३ ६ × ११·२ सें० मी०	४ (१–४)	६	२४	पू०	प्राचीन	इति दिव श्येनय समाप्ता ॥
१७ ३ × ६ सें० मी०	१० (१–१०)	७	२६	पू०	प्राचीन	इति दीक्षाविधान सपूर्ण शुभभवति ॥
२६ ६ × १२·१ सें० मी०	२	६	३६	पू०	प्राचीन	शुभ इति
२० ३ × १०·८ सें० मी०	२ (१–२)	१२	२७	पू०	प्राचीन सं०१८२४	इति दीप श्राद्ध प्रयोग ॥ सं०१८२४॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३९५	४०७९	दीपश्राद्ध विधि			दे० का०	दे०
३९६	२६६८	दुर्गा जंत्र विधि			दे० का०	दे०
३९७	१३९१	दुर्गापाठ विधि			दे० का०	दे०
३९८	६५६	दुर्गा पूजा			दे० का०	दे०
३९९	२८७०	दुर्गा पूजा			दे० का०	दे०
४००	१२००	दुर्गापूजा विधि			दे० का०	दे०
४०१	२०१०	दुर्गापूजा विधि			दे० का०	दे०

पत्ता या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति म अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
१५६×६६ सें० मी०	२	१०	२४	अपू०	प्राचीन	
१३३×१२ सें० मी०	२ (१-२)	७	२२	अपू०	प्राचीन	
१८८×६५ सें० मी०	४	७	२५	पू०	प्राचीन	इति दुर्गापाठ विधि समाप्तिमगात् ॥
१५×८ सें० मी०	३६ (१-३६)	५	२१	अपू०	प्राचीन (जीर्ण)	
२२८×८'६ सें० मी०	१	७	४०	अपू०	प्राचीन	
२१८×८५ सें० मी०	६	६	३४	अपू०	प्राचीन	
२१×१५ सें० मी०	२३	१३	३०	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४०२	१६४२	दुर्गाप्रतिष्ठान विधि			दे० का०	दे०
४०३	५६६८	दुर्गाहवन पद्धति			दे० का०	दे०
४०४	१६११	दुर्गार्चन विधि			दे० का०	दे०
४०५	३७७०	दुर्गोत्सव पूजा			दे० का०	दे०
४०६	३२६१	दुर्गोत्सव पूजा पद्धति			दे० का०	दे०
४०७	६३६३	दुष्ट रजोदशन शांति			दे० का०	दे०
४०८	५१५२	दुष्ट रजोदर्शन शांति			दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२६.२×१२.६ सें० मी०	६	११	३१	पू०	प्राचीन	इति दुर्गा गायत्री ॥ अथपूजारोहकोणेषु ॐ गणेशायानम ॥ ....
११.६×११.६ सें० मी०	११ (४–७,१०, २६–३१)	६	१६	अपू०	सं०१६२४	इति दुर्गा हवन पद्धति समाप्तम् शुभमस्तु सं० १६२४ मास फाल्गुण कृष्ण ६ वासर गुरु ...।
१६×१४.८ सें० मी०	५ (१–५)	११	२०	अपू०	प्राचीन	इति श्री सूरि श्री पति जं कृष्ण विरचिता भगवति पद्य पुष्पांजलि स्तव समाप्तम् । स० ३६ सु० ११ भौ० ॥
२३.८×११.२ सें० मी०	१० (१–१०)	१०	४३	अपू०	प्राचीन	
२७.६×११.६ सें० मी०	४३ (८–५०)	६	३६	अपू०	प्राचीन सं०१८७६	इति श्री शारदीय नवरात्रि प्रतिपदारभ्य विजय दशमी पर्यंत श्री दुर्गोत्सवादि चंडी पूजन पद्धति विधि संपूर्ण समाप्त शुभ भवतु मंगल ददातु श्री सं०१८७६ शाके १७४४ श्रावणे मासे शुक्ल पक्षे तिथौ ४ चंद्रवासरे ।
१६.२×८.२ सें० मी०	६	१०	३३	पू०	प्राचीन	इति दुष्ट रजोदर्शन शांति समाप्त ॥ शुभ भवतु ॥ श्रीरस्तु ॥
२४.७×१०.४ सें० मी०	८	११	३७	अपू०	प्राचीन सं०१८०६	इदं दुष्टरजोदर्शन शांति समाप्ता ॥ इदं पुस्तक चंद्रभट्टस्य ॥ सं० १८०६ शाके १६७० कार्तिक व ८ समाप्त ॥

(सं०सु० २८)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४०६	७४१०	देव प्रतिष्ठा			दे० का०	दे०
४१०	१६४५	देवप्रतिष्ठा देवमूर्ति देवालय निर्माण विधि			दे० का०	दे०
४११	१४६२	देवप्रतिष्ठा प्रयोग			दे० का०	दे०
४१२	६२०६	देवयाज्ञिक क्रिया निबंध			दे० का०	दे०
४१३	१२५०	देवपूजा			दे० का०	दे०
४१४	४६४६	देवार्चन पद्धति			दे० का०	दे०
४१५	६४१६	द्वादशाब्दादूर्ध्वं मिलन शांति विधि			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१५.८ × १२.१ सें० मी०	५ २–६	९	१६	अपू०	प्राचीन	
२९.५ × १३ सें० मी०	२ १–३	८	३०	अपू०	प्राचीन	
१७.५ × १०.५ सें० मी०	२४	८	१७	अपू०	प्राचीन स०१८८६	इति देवप्रतिष्ठा प्रयोगमल सपूर्ण नामगात् १८८६ ।
३४.७ × १३.५ सें० मी०	१३० १–१३०	९	४७	पू०	प्राचीन स०१९२३	इति दाहादिकर्मकर्तृ निर्णय भर्तृ-श्राद्ध पचमेह्नि कुर्या रजस्वला पुत्रिणी: प्रकुर्वीत मृताहनि शुचेर्यत ।। देवयाज्ञिक क्रिया निबध समाप्त ।। स०१९२३वै० शुक्ल १५ रवीवासरे।
२४.७ × १६.५ सें० मी०	३	१२	२२	पू०	प्राचीन	
२२.२ × ११ सें० मी०	१९ (५०–६८)	१०	३३	अपू०	प्राचीन	
१६ × ६.८ सें० मी०	१	८	३०	पू०	प्राचीन	इति द्वादशाब्दादूर्ध्वमिलन विधि ।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४१६	३५०२	द्वादशाह			दे० का०	दे०
४१७	२८२७ / ५	धनदापद्धति			दे० का०	दे०
४१८	१४७८	धनेश्वरी पूजाविधि			दे० का०	दे०
४१९	६४६२	नक्षत्रेष्टिप्रयोग			दे० का०	दे०
४२०	१९३९	नवग्रह पूजा			दे० का०	दे०
४२१	६६०७	नवग्रह मंत्र			दे० का०	दे०
४२२	४५३७	नवग्रहमखप्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२ ८ × ९ सें० मी०	१४ (१–१४)	११	३८	पू०	प्राचीन सं० १७९२	इति द्वादशाह समाप्त ॥ शिव शिवञ्चरी वर्त्तु ॥'' '''संवत् १७९२ शाके १६५७ फाल्गुन कृष्ण अमावस्याया भीष्मदेवेन लिखित श्री ॥
१५ ८ × ९ २ सें० मी०	६३	७	१६	पू०	प्राचीन	इति पद्धतिग्रनदाशि सपूर्णम् ॥
१८ × ११ ८ सें० मी०	४ (१–४)	१०	२०	पू०	प्राचीन सं० १९०९	इति श्री तत्वसारे धनेश्वरी पूजाविधि समाप्त । शुभ सम्वत्सरा १९०९ शाके १७७४'''''''
२५ × ११ ७ सें० मी०	१९ (१–१९)	१२	४६	पू०	प्राचीन (कृमि-कृन्तित)	इद पुस्तक गावल्यपनामदाद भट स्वामिक नक्षत्रेष्टि प्रयोगस्य । पत्र १९ ग्रंथ सख्या ६८४ ''''''
२४ ८ × १२ सें० मी०	८ (१–८)	८	२५	पू०	प्राचीन सं० १९२०	इति नवग्रह समाप्त शुभमस्तु '''''' संवत् १९२० मिति कार्तिक वदि ३ गुरौ वालि या पुस्तक राम नवग्रहे ॥
२४ ७ × १० ५ सें० मी०	१	८	४६	पू०	प्राचीन	इति नवग्र मत्र सपूर्ण ॥
२४ १ × १३ ३ सें० मी०	३९ (१–३९)	८	२७	पू०	प्राचीन सं० १८४०	इति श्री सत्यनारायणविधि नवग्रह मत्र प्रयाग समाप्त ॥ शुभमस्तु ॥''''''' संवत् १८४० क नाममय नामशीर्ष शुक्ल पक्षे १२ रविवासर विरसिंहपुर ग्राम पुस्तक लिखित मौलोक्या ॥ यदू निवारा भातु पठनाथ ॥ रामनम

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४२३	२१४०	नवग्रहमखप्रयोग			दे० का०	दे०
४२४	४७७२	नवग्रहहोमविधि			दे० का०	दे०
४२५	४६५६	नवग्रहहोमविधि			दे० का०	दे०
४२६	६४१०	नव चण्डी होम			दे० का०	दे०
४२७	३६४६	नवरात्रविधि			दे० का०	दे०
४२८	२७७३	नवान्येष्टि			दे० का०	दे०
४२९	३२३६	नवार्णविधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९०	९०	९०
२०.५×१०.५ सें० मी०	३६	६	२१	अपू०	प्राचीन सं०१७८०	
३०.३×१२.४ सें० मी०	१५ १–१५	१०	४२	पू०	प्राचीन सं०१८७७	इति श्री नवग्रह होम सर्वज्ञ विधि समाप्तम् शुभ सम्यत्सरा १८७७ साके १७४२ समयभाद्र शुक्ल २ शनिवासरे रघुवर रामेण लेखि ॥
२१.२×८.८ सें० मी०	४ (१–४)	७	२८	पू०	प्राचीन	इति ग्रह होम विधि ग्रहा + + + + सं०१८६० ॥
२१.४×७.८ सें० मी०	१८ (१–१८)	८	४२	पू०	प्राचीन	
२३.६×१०.८ सें० मी०	२५ (१–२५)	६	२४	पू०	प्राचीन	इति शारद नवरात्र विधि संपूर्णा × × × × ॥
१६.६×१३.२ सें० मी०	३ (१–३)	११	२०	पू०	प्राचीन	इति नवान्येष्टि ॥
१७.२×८.६ सें० मी०	३ (१–३)	७	२८	पू०	प्राचीन	इति नवार्ण विधि ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४३०	३०३५	नांदीमुखश्राद्ध			दे० का०	दे०
४३१	२२२१	नांदीमुखश्राद्ध			दे० का०	दे०
४३२	३६२	नांदीमुखश्राद्ध पद्धति			दे० का०	दे०
४३३	३०३७	नांदीश्राद्ध-मातृकापूजन			मि० का०	दे०
४३४	२७५५	नागबलि विधि			दे० का०	दे०
४३५	२७६४	नारायण बलि			दे० का०	दे०
४३६	२५३७	नारायण बलि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	१०
२७ ७ × १० ३ सें० मी०	१०	७	३३	अपू०	(खडित)	
३२ × १३ १ सें० मी०	७ (१–७)	१०	४६	पू०	प्राचीन स० १८१८	श्री कृष्णायनमोनम सवत्सराष्टादश शतेषु १८ द्विनवर्तीवर्तमानेऽस्मिन कार्तिक कृष्णत्रयोदश्या भौमवासरे इद लिपिकृत हरिसिंहारमजेन हरदयालु नावडोतमघेस्वस्यपठनकर्मानुसारेणशुभ-मगलादि भूयात्नः ॥
१६ ३ × ११ ५ सें० मी०	३६ (१–३६)	१०	१८	पू०	प्राचीन सं० १९१६	इति नादी मुख श्राद्धपद्धति समाप्तम् ॥
१८ × १० सें० मी०	२५ (१–२५)	८	२१	पू०	प्राचीन	इति सपूर्ण । उमाकात दीक्षित···
२३ × १० ५ सें०मी०	११	७	२२	पू०	प्राचीन स० १९२८	इति शौनक प्रोक्त नागबलि विधान पूर्ण ॥ सवत १९२८ माघवद्य ११ चद्रवासरे। लि० लालजी दुबे अल स्वार्थ परमार्थ ॥
२३ २ × १० ५ सें०मी०	६	७	२४	पू०	प्राचीन	इति नारायण बलि समाप्त ॥
२ ५३ × १५ ७ सें० मी०	८२ (१–८२)	२०	१९	पू०	प्राचीन	इति नारायण बलि कर्म समाप्तम् श्री शुभमस्तु ॥

प्रमाण और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४३७	४४०४	नारायणबलि			दे० का०	दे०
४३८	११०४	नारायणबलि			दे० का०	दे०
४३९	१८०५	नारायणबलि पद्धति			दे० का०	दे०
४४०	२५९	नारायणबलि पद्धति			दे० का०	दे०
४४१	१७९	नारायणबलि प्रयोग				
४४२	१२६६	नारायणविधि			दे० का०	दे०
४४३	३१५/२	नारायणबलि विधान			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
१९.४×११.४ सें० मी०	६	१०	२४	अपू०	प्राचीन	
१९.६×१३ सें० मी०	७६ (१–७६)	८	१८	अपू०	प्राचीन	
१९.६×१२.४ सें० मी०	५ (१–३,७–८)	१८	२३	अपू०	प्राचीन	इति नारायणीवल (नारायणबलि) सपूर्ण शुभ॥
२६×१७.५ सें० मी०	२४	२७	१८	पू०	सं०१९४५	इति नारायणीबलि पद्धति समाप्ता॥ श्री॥ स० १९४५ भाद्रपद शुक्ल द्वितीयायां वडेडो नगरे ग्रामध्ये विश्रामे तिलक रामेण लेपित शुभ भूयात्॥ रामकृष्ण॥
१३.५×८.२ सें० मी०	१३ (१–१३)	१०	१६	पू०	प्राचीन	इति नारायण बलि प्रयोग॥ एताव द्विस्तरावेत्तो प्रयोगशक्तौ बौधायनी॥
२२.६×१५ सें० मी०	१४ (१–१४)	१०	१६	पू०	प्राचीन सं०१९२६	इति ··· नारायणविधि समाप्तम् सवत् १९२६ ज्येष्ठ शुक्ला ८॥
१७.७×११.८ सें० मी०	१८ (१–१८)	१५	१२	पू०	प्राचीन सं०१९२१	····नारायणि बलि कार्यो इति मत्येश पूजन विधि समाप्तिम् गात् लिपित पचौलिमहताव सं० १९२१॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या या सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४४४	१६०८	नित्यकर्म			दे० का०	दे०
४४५	१६१२	नित्यकर्म प्रयोग			दे० का०	दे०
४४६	३२२२	नित्यपूजा-जप विधान			दे० का०	दे०
४४७	७१५७	नित्यपूजा विधि			दे० का०	दे०
४४८	३३६६	नित्यश्राद्ध पद्धति			दे० का०	दे०
४४९	१४८८	नित्य स्नान विधि			दे० का०	दे०
४५०	५८१४	निर्णय चितामणि	विष्णु शर्म		दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८	स	द	९	१०	११
१३.५ × ८.५ सॅ० मी०	२	१०	१६	अपू०	प्राचीन	
२६.५ × १२.७ सॅ० मी०	४	८	३५	अपू०	प्राचीन	
१३ × ६.२ सॅ० मी०	४ (२–५)	७	२३	अपू०	प्राचीन	इति नित्य पूजादिजपविधान समाप्त उडालेकरइत्युपनाम्ना जनार्दनेनलिखित ॥
३४.५ × ११.३ सॅ० मी०	३	१४	६०	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४५१	५६६५	निर्णयसार	राघवभट्ट		दे० का०	दे०
४५२	६६०	नीलोदाह विधि			दे० का०	दे०
४५३	६८६४	नेष्ट्रत्व प्रयोग			दे० का०	दे०
४५४	७३४२	नेष्ट्र प्रयोग			दे० का०	दे०
४५५	२६३७/१२	न्यासतिलक	वेदांताचार्य		दे० का०	दे०
४५६	२६३७/१२	न्यासदशक			दे० का०	दे०
४५७	२६३७/१२	न्यासविंशति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्र संख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८ ब	स	द	९	१०	११
२५×११ सें० मी०	६ (१–६)	११	४८	पू०	प्राचीन स०१८६५	इति राघव भट्ट विरचिते निर्णयसारः समाप्त ॥ ······ सं० १८५६ शक १७२३ लिखित ······ ॥
२३×१०.२ सें० मी०	१८ (१–१८)	१२	३४	पू०	प्राचीन	इति भगस्त्य पुराणे शौनकोश्ननीलोत्सर्गविधि(१)समाप्तः ॥ शुभभवतु ॥···
२३.३×१०.१ सें० मी०	६ (१–६)	११	३५	पू०	प्राचीन	इति नेष्टृत्व प्रयोग समाप्त ॥
१५.८×७.६ सें० मी०	१३ (१, ३–१०, १३–१६)	७	२१	अपू०	प्राचीन	अथ साड्ख्यायनसूत्रिय नेष्टृ प्रयोगः ॥
१३.१×८ सें० मी०	१३ (१–१३)	७	१३	पू०	प्राचीन	इति श्री वेदांताचार्य विरचितायां न्यासतिलक संपूर्णं श्री मोरामानुजायनमः ॥
१३.१×८ सें० मी०	३ (१–३)	७	१२	पू०	प्राचीन	इति श्री न्यासविंशति संपूर्णं ॥
१३.१×८ सें० मी०	१४ (४–१७)	६	१२	पू०	प्राचीन	इति न्यास विंशति संपूर्णं ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४५८	४७६५	न्युब्जपादजनन शान्ति			दे० का०	दे०
४५९	६५७	पचक मरण विधि			दे० का०	दे०
४६०	१८६५	पचकविधान			दे० का०	दे०
४६१	१७३५	पंचकविधान			दे० का०	दे०
४६२	३०४६/६	पचकविधान			दे० का०	दे०
४६३	२३४५	पचकविधान			दे० का०	दे०
४६४	८००	पचकविधान			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसख्या और प्रति पक्ति में अक्षरसख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१३४×१०३ सें० मी०	२ (१–२)	१०	१६	पू०	प्राचीन	इति नारदोक्त न्युब्जपादप्रभृति जनन शाति ॥ है पुस्तक सदासीव भट दुघोडकरेण लिखित वाचितार्थ विजई भव ॥ शुभ भवतु ॥
३११×१५१ सें० मी०	२३ (१–२३)	१३	३६	पू०	प्राचीन	इति पचकर्मेण विधि समाप्त ॥ लिप्यत देविसाहाय विद्यार्थी······ नक्षत्रे योगे च शुभगाभवेत् ॥
३०८×१३४ सें० मी०	४ (१–४)	१२	३४	पू०	प्राचीन सं०१६०२	इति पचकविधान समाप्त ॥ सवत् १६०२ मासोतम मासे श्रावणमासे शुक्ल पक्षे शुभतिथौ दशम्या बुधवासरे ॥
१४७×१०३ सें० मी०	८	१०	२०	पू०	सं०१६०१	इति पचक विधान समाप्त सवत् १६०१ कार्तिक ········
१६७×११३ सें० मी०	१	१६	१६	अपू०	प्राचीन	
१७२×१२३ सें० मी०	७	६	१५	अपू०	प्राचीन	
२७६×१२५ सें० मी० (सं०मू०३०)	३	१२	३१	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४६५	४४६	पचक विधि			दे० का०	दे०
४६६	३५११	पंचक विधि			दे० का०	दे०
४६७	४१८६	पचक शान्ति			दे० का०	दे०
४६८	६४३५	पंचक शांति			दे० का०	दे०
४६९	७९१	पंचक शाति			दे० का०	दे०
४७०	९०२	पचकशाति विधि			दे० का०	दे०
४७१	६९७५	पचगव्य विधि			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति सख्या और प्रति पक्ति मे अक्षर सख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वत मान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	व	स	द	६	१०	११
२१×६२ सें० मी०	४ (१–४)	१४	४६	पू०	प्राचीन स०१८१२	(कृमिकृतित) इति ब्रह्मपुराणोक्तमस्ति इच्छाचेत्कत्तव्य। अकृतेन दोष। इति पचक विधि।
१६१×६५ सें० मी०	६ (१–६)	६	२२	अपू०	प्राचीन	इति पचक विधान समाप्त ॥ (पृ० ५)
२७८×१० सें० मी०	३ (१–३)	८	३८	पू०	प्राचीन	इति सामग्री समाप्तम् शुभमस्तु ॥
२१५×६३ सें० मी०	२ (१–२)	१०	४०	पू०	स०१८०१	इति ब्रह्माडपुराणोक्त पचक शाति समाप्त ॥ '' ॥सवत १८०१ मासे जेष्ठासिते पक्षे द्वादशी मदवासरे ॥ '' ''॥
२६५×११ सें० मी०	५ (१–५)	६	२७	अपू०	प्राचीन	
२४३×६६ सें० मी०	४ (१,३–५)	८	४३	अपू०	प्राचीन	शेष पचकशातिवत् ॥
२२१×१३५ सें० मी०	२ (१–२)	७	२३	पू०	प्राचीन	इति पचगव्य विधि समाप्तम ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४७२	५१८८	पंचगव्य विधि			दे० का०	दे०
४७३	१७६७	पंचपातकनाशन विधि			दे० का०	दे०
४७४	७८६६/४	पंचसंस्कार			दे० का०	दे०
४७५	२६५२	पंचायतन पूजा			दे० का०	दे०
४७६	४२४१	पंचीकरण	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
४७७	७२३८	पतिदेह संस्कार			दे० का०	दे०
४७८	६७६३	परमहंस दीक्षाग्रहण विधि	विश्वेश्वर		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१८·६ × १३·२ सें० मी०	१	१२	२४	पू०	प्राचीन	इति पंचगव्य विधि समाप्तम् ॥
१५ × ८ सें० मी०	४	८	२३	अपू०	प्राचीन	
१०·५ × ७·७ सें० मी०	२ (९९–१००)	७	११	अपू०	प्राचीन	इति पंचसंस्कार संपूर्ण ॥
(१५·१ × १०·८) सें० मी०	१२ (१–१२)	८	१८	पू०	प्राचीन	श्री वासुदेवाय नम इति पुस्तक समाप्त ॥
२६·२ × १२·८ सें० मी०	३ (१–३)	१०	३१	पू०	प्राचीन	इति श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्य श्रीमद्भगवद्गोविंदपादपूज्यशिष्य श्रीमच्छंकराचार्य्य विरचित पंचीकरण संपूर्ण शुभमस्तु:
१७·६ × १०·४ सें० मी०	४	११	३०	अपू०	प्राचीन	
३४·५ × १३·६ सें० मी०	७६ (१–७६)	१३	४४	पू०	प्राचीन	इति श्री विश्वेश्वरविरचित परमहंस दीक्षा ग्रहण विधि समाप्त ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४७६	३२१६	परायणक्रम विधि मूल वाक्य			दे० का०	दे०
४८०	६४२१	पर्यंकखट्वागादि भग (अद्भुतसावार) शांति			दे० का०	दे०
४८१	६००४	पल्लीशरट शांति विधान			दे० का०	दे०
४८२	६५०७	पवित्रेष्टि			दे० का०	दे०
४८३	६४७०	पवित्रेष्टि होत्र			दे० का०	दे०
४८४	६७०६	पशुबंध प्रयोग			दे० का०	दे०
४८५	३११२	पात्रशोधन			दे० का०	दे

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
१८×८६ सें० मी०	२६ (१–२६)	६	३१	पू०	प्राचीन	इति परायणक्रम विधि मूलवाक्यानि ॥ समाप्तश्चायं ग्रंथ ।
१६७×७४ सें० मी०	४ (१–४)	७	२६	पू०	प्राचीन	इति अद्भुतसागरे पर्यं वक्षद्वाग्यादि-भग शांति समाप्ता ॥······
२७१×११·५ सें० मी०	२ (१–२)	१०	४२	पू०	प्राचीन	इति श्री वसंतराजे गर्गोक्त पल्ली-शरट्यो शांति विधान सपूर्णम् ॥
२२·५×६२ सें० मी०	२ (१–२)	१०	४०	पू०	प्राचीन	सतिष्ठते पवित्रेष्टिः ॥
२२×१०·२ सें० मी०	४ (१–४)	१०	२६	पू०	प्राचीन	
२३ × ६५ सें० मी०	२२ (१–२२)	८	४१	पू०	प्राचीन	
२३×११–१ सें० मी०	४ (१–४)	७	२४	पू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मपात्रे शोधन सपूर्णं शुभम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४८६	४७१७	पार्थिव गणेश पूजन पद्धति			दे० का०	दे०
४८७	४३८५	पार्थिवपूजन			दे० का०	दे०
४८८	३०५०	पार्थिव (लिंग) पूजन			दे० का०	
४८९	१५००	पार्थिव पूजनविधि			दे० का०	
४९०	७३८७	पार्थिव पूजा			दे० का०	
४९१	७८२८	पार्थिवपूजा			दे० का०	
४९२	२१८४	पार्थिवपूजा			दे० का०	

पत्रा या पृष्ठो का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ म पक्ति सख्या और प्रति पक्ति मे अक्षर सख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है ता वर्तमान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
१८ ७ × ११ ७ सें० मी०	३ (१–३)	१०	६०	पू०	प्राचीन	इति श्री गणेशपुराणे उपासनाखडे पार्थिवगणेशपूजन पद्धति समाप्ता ॥
१७ ७ × १७ ७ सें० मी०	१२ (१–१२)	१४	२०	अपू०	प्राचीन	अथ पार्थिवपूजन निख्यते ॥ ··· (प्रारम्भ) × × ×
१५ ३ × ७ ५ सें० मी०	४ (६,११–१३)	७	१६	अपू०	प्राचीन	
१७ २ × ७ ६ सें० मी०	४	८	२६	अपू०	प्राचीन	
१४ ४ × १० ४ सें० मी०	७ १–७ (शेष फुटकलपत्र)	७	१५	पू०	प्राचीन स०१६२६	पार्थिवपूजा अपवित्र पवित्रो वा सर्वावस्थागतो × × समता १६२६ ×
२३ १ × ११ ५ सें० मी०	१० १–१०	८	२३	अपू०	प्राचीन	
२० ५ × ११ से० मी०	६	६	२५	अपू०	प्राचीन	इति पार्थिवपूजा समाप्त ॥
(सं०मू०३१)						

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४६३	६०२६	पार्थिवपूजा			दे० का०	दे०
४६४	५४७३	पार्थिवपूजाप्रकार			दे० का०	दे०
४६५	१२५४	पार्थिवपूजाविधान			दे० का०	दे०
४६६	४६५६	पार्थिवपूजाविधि			दे० का०	दे०
४६७	३४५०	पार्थिवपूजाविधि			दे० का०	दे०
४६८	२०३६	पार्थिवपूजाविधि			दे० का०	दे०
४६९	४८४४	पार्थिवपूजाविधि			दे० का०	दे०

पत्ता या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२१६×११ सें० मी०	५ (१-५)	६	१८	पू०	प्राचीन	इति पूजा कुर्यात ॥
३१२×१२ सें० मी०	८ (१-८)	१५	५०	पू०	प्राचीन	इति लिंगपुराणे पार्थिवलिंगोद्यापन संपूर्णम ॥
२२×११ सें० मी०	८ (६-१३)	१२	३८	अपू०	प्राचीन सं०१८५७	इति पार्थिवपूजाविधान समाप्तम सं० १८५७ तत्रवर्षे चैत्रमासे शुक्ले पक्ष तिथौ तृतीया ३ भृगु० दिने लिषत पाडयु स्यालमे रठीचिरंजीवद मध्ये ॥ शुभमस्तु मगल ददात ॥ श्री०
२१७×८८ सं० मी०	३ (१-३)	६	२७	पू०	प्राचीन सं०१८६०	इति शिवपार्थिव पुजन समाप्तम शुभमस्तु ॥ इति शिवायनम ॥ सम्वत १८६० शाके १७२५ समये ज्येष्ठ मासे कृष्ण पक्ष द्वि ॥
१३८×७२ सें० मी०	७ (१-७)	७	१६	पू०	प्राचीन	इति पार्थिवपूजा विधि
१६६×६७ सें० मी०	७ (१-७)	७	२३	पू०	प्राचीन	इति पार्थिव विधि समाप्त शुभमस्तु ॥
२३६×६४ सें० मी०	६ (२-१०)	८	३३	अपू०	प्राचीन सं०१८७०	इति श्री सकल सारोद्धार पार्थिव पूजाविधि समाप्तम् शुभ सम्वत्सरा १८७० साके सालिवाहनस्य गतसमा १७३५ समय श्रावण + + + +

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५००	६६८	पार्थिव महापूजा			दे० का०	दे०
५०१	२६००	पार्थिव लिंग पूजन			दे० का०	दे०
५०२	५४४८	पार्थिवलिंग पूजा उद्यापन विधि			दे० का०	दे०
५०३	३३०७	पार्थिवलिंगपूजा विधि			दे० का०	दे०
५०४	५९७३	पार्थिव विधान			दे० का०	दे०
५०५	७५८७	पार्थिवार्चन विधि			दे० का०	दे०
५०६	७६३	पार्थिवेश्वर चिंतामणि			दे० का०	दे०

पत्ता या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२×१४.५ सें० मी०	८	१४	३४	पू०	सं०१६११	इति सं० १६११ लिखित मुरलीधर श्रोतरसत श्री ॥
१०×६ सें० मी०	१६	६	१३	अपू०	प्राचीन	
२१.२×१०.५ सें० मी०	१५ (१ १५)	६	३२	पू०	सं०१८२७	इति लिंगपूजा उद्यापण विधि समाप्त सिवापण संवत १८२७ शाके शोरासं १६६२ विष्णु विशतिकाया ··· ·
२२.६×१० सें० मी०	१३ (१-२ ४-१४)	६	२७	अपू०	प्राचीन सं०१८२८	इति लिंग पूजा उद्यापण विधि समाप्त सिवापण संवत १८२८-१६६३ वैशाष वदि ३ गणेस लिषत गोविंद पारम दुव ॥
१५.८×६.६ सें० मी०	८ (१-८)	८	१६	पू०	प्राचीन सं०१७८६	इति पार्थिव विधान समाप्तम् ॥ सवत् १६२१ साके १७८६ मिति माघ वदि ५ भौमवासरे × × × × ॥
२६.३×११.३ सें० मी०	३ (१-३)	१७	४८	पू०	प्राचीन	इति पार्थिवाचन विधि ॥
२०.६×१०.७ सें० मी०	४ (१-४)	७	१६	पू०	प्राचीन	इति तर्पनम ॥ ॐ नम ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५०७	७०६२	पार्थिवेश्वरमन्त्र विधि			दे० का०	दे०
५०८	३३६	पार्वणश्राद्ध			दे० का०	दे०
५०९	५५५०	पार्वणश्राद्ध			दे० का०	दे०
५१०	५३२६	पार्वणश्राद्ध			दे० का०	दे०
५११	३३१६	पार्वणश्राद्ध			दे० का०	दे०
५१२	२४८६	पार्वणश्राद्ध			दे० का०	दे०
५१३	४०६१	पार्वणश्राद्ध			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	म	द	९	१०	११
१७·८×१० सें० मी०	२ (१–२)	७	२१	अपू०	प्राचीन	
३२·१×११·४ सें० मी०	६ (१–६)	७	२६	पू०	प्राचीन सं०१९५५	इति पार्वणं श्राद्ध सपूर्णं शुभ सवत् सो आश्विनमासे कृष्ण पक्षे पौर्णमाया १५ रविवासरे सवत् १९५५ इद पुस्तक कबूलचद शुभमस्तु ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥१॥
२२·८×१०·४ सें० मी०	२१ (१–२१)	६	२८	पू०	प्राचीन	इति पार्वणश्राद्ध सपूर्णं + + + + + + + अस्तु परिपूर्णमस्तु मार्ग शीर्षे शुक्लपक्षे तु पचम्या रविवासरे लिपत प्रयाग मध्ये तु० ग० पाठ द्विजोत्तमः ॥ स्वार्थ परार्थं शुभमस्तु ॥ सवत् १६०७ ॥
२४·८+१०·६ सें० मी०	४ (१–४)	११	४६	अपू०	प्राचीन	
२३×१४·३ सें० मी०	१३ (१–१३)	८	१६	अपू०	प्राचीन	इत्येका पार्वण श्राद्ध समाप्त. ।
२०·२×९·२ सें० मी०	७ (२–८)	७	२४	अपू०	प्राचीन सं० १९२२	इति पार्वण श्राद्ध सपूर्णं शुभ सवत्सरे कारतिक् मासे शुक्ल पक्षे ··· सवत् १९२२ इद पुस्तक लिप्यते गौरीदत्त शुभमस्तु ओ नम शिवाय ॥
१७×१०·३ सें० मी०	२१ (३–२३)	१०	२३	अपू०	प्राचीन सं०१९६७	इति पार्वण श्राद्ध सपूर्णं सवत् १९६७ भाद्र शुक्ले १० वृद्धे ··· ।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५१४	१८४४	पार्वणश्राद्ध पद्धति			दे० का०	दे०
४१५	५५०६	पार्वणश्राद्ध प्रयोग			दे० का०	दे०
५१६	६३८०	पार्वणश्राद्ध प्रयोग			दे० का०	दे०
५१७	३८६६	पार्वणश्राद्ध प्रयोग			दे० का०	दे०
५१८	६११७	पार्वणश्राद्ध विधि			दे० का०	दे०
५१९	६६७६	पावणश्राद्ध विधि			दे० का०	दे०
५२०	५७७६	पार्वणश्राद्ध विधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१४९×१०३ सें० मी०	२० (१–२०)	१०	१९	पू०	प्राचीन	इति पार्वण श्राद्ध पद्धति समाप्तम ॥ ' '' आसाढ मासे कृष्णपक्षे शुभतिथौ ४ रविवासरे सवत् १८८९ ॥ साके १७५४ ॥ लिखत कन्हैया लाल ॥
२४५×१०७ सें० मी०	१० (१–१०)	११	३१	पू०	प्राचीन	इति पार्वण श्राद्ध सपूर्ण ।
२०८×९७ सें० मी०	२ (१–२)	९	२४	अपू०	प्राचीन	
२१५×७९ सें० मी०	१२ (१–१२)	७	३५	अपू०	प्राचीन	
२०२×९ सें० मी०	३२ (१–३२)	६	२८	पू०	प्राचीन	इति पार्वण श्राद्धविधि सपूर्ण ॥
२५×९५ सें० मी०	६ (१–६)	१०	३०	पू०	प्राचीन	इति पावण श्राद्ध विधि समाप्ता॥ × × × × ।
१९५×१९ सें० मी०	८ (१–८)	७	२५	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५२१	३४२०	पार्वणश्राद्ध पद्धति			दे० का०	दे०
५२२	५०५४/१५	पार्वण श्राद्धपद्धति			दे० का०	दे०
५२३	४६२४	पार्वण श्राद्धपद्धति			दे० का०	दे०
५२४	१२३२	पार्वण श्राद्धपद्धति			दे० का०	दे०
५२५	७४८	पार्वण श्राद्धपद्धति			दे० का०	दे०
५२६	५६६७	पिंडदानम्			दे० का०	दे०
५२७	१५०८	पिंडदानम्			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	१०
२३·२ × १० सें० मी०	१२ (१–१२)	८	२५	पू०	प्राचीन सं० १८१५	गया श्राद्ध फलमस्तु ॥ सम्वत् १८१५ ॥ भाद्र बहुलोय पक्षतिथेपु नवमी तथा ॥ रविवार मुहूर्तायां लिखित दुर्नामिस्तथा ॥
१६ × ७८ सें० मी०	१४३	६	२४	पू०	प्राचीन सं० १८६६ शाके १७६१	इति पार्वणि श्राद्धपद्धतिः समाप्त शाके १७६१ माघ सुदि ६भौमेव ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५२८	१२८२	पिंडदानम्			दे० का०×	दे०
५२९	३५५५	पिंडदान विधि			दे० का०×	दे०
५३०	७०२८	पिंडदान विधि			दे० का०	दे०
५३१	६५२८	पिंडपितृयज्ञ			दे० का०	दे०
५३२	६५३२	पिंडपितृयज्ञ			दे० का०	दे०
५३३	६५३३	पिंडपितृयज्ञ			दे० का०	दे०
५३४	६५२६	पिंडपितृयज्ञ			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१७×१३ सें० मी०	२५ (१–२५)	१४	१२	अपू०	प्राचीन	
२३×१४ सें० मी०	१८	२०	२२	अपू०	प्राचीन	
१९.२×१३.८ सें० मी०	१५ (४–१८)	१४	१५	अपू०	प्राचीन	
२०.४×८.६ सें० मी०	६ (१–६)	८	२४	पू०	प्राचीन	
१५.३×८ सें० मी०	४ (१–४)	१०	२८	पू०	प्राचीन	इति पिंडपितृयज्ञ ॥
१९.५×७.३ सें० मी०	२ (१–२)	८	४५	पू०	सं०१८३४	इति पिंडपितृयज्ञः समाप्त ॥ सवत् १८३४ श्रा० कृ० ३ र० ॥
२१.३×८ सें० मी०	३ (१–३)	८	३२	पू०	प्राचीन	इति पिंडपितृयज्ञ समाप्त ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५३५	५७५७	पितृकर्म			दे० का०	दे०
५३६	६४४१	पिपीलिका शांति			दे० का०	दे०
५३७	७३११	पुण्याहवाचन			दे० का०	दे०
५३८	४२५४	पुण्याहवाचन			दे० का०	दे०
५३९	४६६०	पुण्याहवाचन			दे० का०	दे०
५४०	६६६०	पुण्याहवाचन			दे० का०	दे०
५४१	७७०४	नांदीश्राद्ध प्रयोग पुण्याहवाचन			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७.६×११.८ सें० मी०	६ (१–६)	८	३१	पू०	प्राचीन	इति श्री संहितायाम्पाठे पितृकर्म्म संपूर्णम् ॥
२२.४×९ सें० मी०	२ (१–२)	१०	३०	पू०	सं० १९९९	॥ एक खडम् ॥ गोविंद ज्योतिर्विसुत माधवेन लिखितेय शांति ॥ संवत् १९९९ जेष्ट शुद्ध १५ बुधे ॥
२५.१×१०.९ सें० मी०	२४ (१–२४)	६	२२	पू०	प्राचीन	
२१×११ सें० मी०	५ (१–५)	७	२६	पू०	प्राचीन	
१२.७×८.३ सें० मी०	१७ (२–१०, १२–१९)	८	१८	अपू०	प्राचीन	इति पुण्याहवाचन संपूर्ण ॥………
१६.७×८.७ सें० मी०	१२ (१, ३–५, १२, १५–१७ १९–२२)	७	२२	अपू०	प्राचीन	
१९.६×८ सें० मी०	१८ (१–१८)	७	३०	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५४२	५३६३	पुत्तलविधान			दे० का०	दे०
५४३	४३८८	पुत्तलविधान			दे० का०	दे०
५४४	७५२०	पुनराधेयप्रयोग			दे० का०	दे०
५४५	७०७७	पुनराधेयप्रयोग			दे० का०	दे०
५४६	६४१६	पुनर्लिङ्गप्रतिष्ठापन-विधि			दे० का०	दे०
५४७	४३५७	पुरश्चरण चंद्रिका	देवेन्द्राश्रम		दे० का०	दे०
५४८	५३६	पुरश्चरण चंद्रिका	देवेन्द्राश्रम		दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठा का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२६.५×११ सें० मी०	६ (१–६)	१०	३०	पू०	सं०१६१२	इति पुत्तलविधान समाप्त'''लिपित दत्तरामेण पठनार्थ सवत् १६१२
३२×१२.४ सें० मी०	७ (१–७)	१०	४२	पू०	सं०१६०६	इति पुत्तलविधानसमाप्तम स०१६०६ लिखित पचौली महतावसिंह स्वात्मपठनार्थ ॥
२३×१०.६ सें० मी०	५ (१–५)	१२	५०	पू०	प्राचीन	इत्यनंतदेव कृत्पुनराधेय समाप्तमगमत् ॥
२२.८×१०.६ सें० मी०	२ (१–४)	१०	५०	अपू०	प्राचीन	
२११×६.५ सें० मी०	१	१०	३८	पू०	प्राचीन	इति बौधायन सूत्रोक्त पुनर्लिंग प्रतिष्ठापन विधि समाप्ता ॥ सदाशिवभट्ट *ववीश्वरेण लिखित पुस्तक ॥ ''*
२६.१×१०.५ सें० मी०	२७ (१–२७)	१०	४१	अपू०	प्राचीन	प्रणम्य जानकीनाथ देवेंद्राश्रमधीमता क्रियतेमत्रचद्राणापुरश्चरणचंद्रिका ॥ (प्रारम्भ) × × × ×
२३.८×१० सें० मी०	४८ (२–४६)	११	३६	अपू०	प्राचीन	इति श्री देवेन्द्राश्रमकृतायं पुरश्चरण चन्द्रिकासमाप्त शुभमस्तु श्रीरस्तु विद्यास्तु श्रीगणेशदेव ''

(सं०स० ३३)

क्रमाक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५४६	४३८३	पुष्य स्नान विधि			मि० का०	दे०
५५०	२६०८	पूजनक्रम			दे० का०	दे०
५५१	५३८४	पूजनविधि			दे० का०	दे०
५५२	४०६३	पूजापद्धति			दे० का०	दे०
५५३	२८३	पूजापद्धति			दे० का०	दे०
५५४	२६६२	पूजापद्धति			दे० का०	दे०
५५५	४६६०	पूजाप्रकार			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५.३×११.३ सें० मी०	७ (१–७)	७	३२	पू०	सं०१९६६	इति पुण्य स्नान ॥ सं० १९६६ पौष कृ० रवि वासरे काशिवरो पाह्व काशिनाथ शर्मणा लिखितम् ॥
२०.६×१४.१ सें० मी०	४ (१–४)	१०	२५	पू०	प्राचीन सं०१८१७	इति पूजनक्रम समाप्तिमगात् श्री विक्रम गताब्दान् १८१७ मिथुनार्के ति ९ ५ रविवासर ।
२६.८×१३.३ सें० मी०	११ (१–११)	१२	३२	अपू०	प्राचीन	
१३.६×११.३ सें० मी०	१२	८	१५	अपू०	प्राचीन	
१८.५×१३.५ सें० मी०	१० (२–११)	६	१७	अपू०	प्राचीन	
१३.५×८.७ सें० मी०	१३ (४–१६)	६	२३	अपू०	प्राचीन	इति पूजापद्धति पटल समाप्त ॥
२७.६×११.५ सें० मी०	२ (१–२)	६	३५	पू०	प्राचीन	इति श्रीमदम्बाम्बरामाचर्ये पूजा-प्रकार ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५५६	५३५६	पूजाविधि			दे० का०	दे०
५५७	५४०५	पूजाविधि			दे० का०	दे०
५५८	५२१	पूजाविधि			दे० का०	दे०
५५९	२१४८	पूजाविधि			दे० का०	दे०
५६०	१७०५	पूतनाविधान			दे० का०	दे०
५६१	६८३८	पूर्णमासप्रायश्चित्त	महादेव		दे० का०	दे०
५६२	६४२६	पूर्तकमलाकर	कमलाकर भट्ट		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्र सख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति सख्या और प्रति पक्ति मे अक्षर सख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	म	द	६	१०	११
१६·४ × १०·२ सें० मी०	६ (१–६)	८	२४	पू०	प्राचीन	इति पूजाविधि समाप्तोयम् ।।
१६·६ × १३·७ सें० मी०	१० (१–१०)	१०	२१	पू०	प्राचीन	कल्पसुत्रोक्त प्रकारेण पूजा विधिः समाप्त ।।
३० × १४·८ सें० मी०	३० (१–२१, २३–३२)	१२	३६	अपू०	प्राचीन	
२४·७ × १०·३ सें० मी०	३ (१–३)	८	३८	अपू०	प्राचीन	
१६·५ × ११ सें० मी०	१०	१२	२५	पू०	प्राचीन	इति पूतनाविधान मालाया स्कद पुराणोक्त भामिनीपीडा शमन विधान सपूर्ण ।। श्री··· ··· ··· ··· ···
२२·१ × ८·६ सें० मी०	२८ (१–२)	१३	४३	पू०	प्राचीन	इति महादेव सोमयाजि विरचिते सत्याषाढीमहिरण्यकेशिसूत्र प्रयोगरत्ने दशपूर्णमास प्रायश्चित्तानि समाप्तानि ।।
२२·३ × १०·३ सें० मी०	४८ (१–४८)	८	२५	पू०	प्राचीन	इति श्रीमीमांसकरामकृष्णभट्टात्मज महामहोपाध्याय कमलाकर भट्टकृत ऐंद्रीमहाशांति सहित. पूर्त्तकमलाकरः समाप्त ।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५६३	७४	पूर्त्त कमलाकर (जलज्ञानोपाय)	कमलाकरभट्ट		दे० का०	दे०
५६४	२५४	पूर्त कमलाकर	कमलाकरभट्ट		दे० का०	दे०
५६५	६५३०	पोतृत्व प्रयोग			दे० का०	दे०
५६६	६५२७	पोतृ प्रयोग			दे० का०	दे०
५६७	६४६३	पौंडरीक होत्र			दे० का०	दे०
५६८	६४६८	प्रजागमनयेष्टि			दे० का०	दे०
५६९	२६४५	प्रतिष्ठा धर्म			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५.२×११ सें० मी०	१२१ १–१२१	११	४०	पू०	प्राचीन	इति भट्टकमलाकर कृतो जलज्ञानोपाय ॥
२६.२×११.२ सें० मी०	१३८	११	४२	अपू०	प्राचीन	इति श्री मीमांसक रामकृष्ण भट्टात्मज महामहोपाध्याय कमलाकरभट्ट कृत ऐंद्री महाशांति सहितो राज्याभिषेक प्रयोगश्च पूर्त्त कमलाकर समाप्तः सं० १८९४ मिती श्रावण सुदि १० शुक्रेका का राम राम राम
२०.४×८.४ सें० मी०	८ (१–८)	६	२८	पू०	प्राचीन	इत्यग्निष्टोमस्य पोतृत्व प्रयोग समाप्त ॥
२१.३×७.८ सें० मी०	४ (१–४)	११	४२	पू०	प्राचीन (सं०१६४३)	इति सस्थाजप । वतीर्थेन निष्क्रम्य ॥ सतिष्ठते ज्योतिष्टोमो ज्योतिष्टोम ॥ सवत् १६४३ श्रावण वदि ………
२२.५×१०.४ सें० मी०	२६ (१–२६)	१०	३१	पू०	प्राचीन (सं०१७६५)	समाप्त पौंडरीक हौत्रम् ॥ सवंत १७६५ पौष कृष्ण १ शनौ लिखित ॥
२०.७×१०.३ सें० मी०	२ (१–२)	६	३२	पू०	प्राचीन (सं०१७६०)	लिखितमिद रामहृदस्थ नीलकंठेन सवत १७६०
२६.७×१२.५ सें० मी०	५ (१–५)	१०	३६	पू०	प्राचीन (सं०१९२५)	इति प्रतिष्टानुक्रम ॥ लिख्यते गणेश शुक्लेन मार्ग वदी ११ सवत् १९२५

क्रमाक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५७०	२६८७	प्रतिष्ठापद्धति			दे० का०	दे०
५७१	३३२८	प्रतिष्ठामयूख	नीलकठभट्ट		दे० का०	दे०
५७२	४४०२	प्रतिष्ठामयूख	नीलकठभट्ट		दे० का०	दे०
५७३	१६३१	प्रतिष्ठामयूख			दे० का०	दे०
५७४	७३	प्रतिष्ठामयूख	नीलकठभट्ट		दे० का०	दे०
५७५	६२६	प्रतिष्ठामयूख	भट्टनीलकठ		दे० का०	दे०
५७६	६१५/३	प्रथम स्नानविधि वाजसनेयिनाम्			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का माकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५१×६२ सें० मी०	११	१०	४६	अपू०	प्राचीन	
२६×९.६ सें० मी०	४६ (१–४६)	६	२७	पू०	प्राचीन सं०१९२६	इति श्री मीमांसकभट्ट नीलकण्ठकृते भास्करे प्रतिष्ठामयूखाप्टमः सपूर्णमिति जेष्टवदी १३ बृहस्पतिवार संवत् १९१४ ॥
२८.४×१२.३ सें० मी०	२७ (३–२९)	१२	४४	अपू०	प्राचीन	इति श्री शंकरभट्टात्मज भट्ट नीलकंठेन कृते भास्करे प्रतिष्ठा मयूखोप्टम ॥
२८६×१४३ सें० मी०	८	१२	३८	अपू०	प्राचीन	
२७५×१३ सें०मी०	३१ (१–३१)	१२	४१	पू०	प्राचीन सं०१८३७	शुभि भूत्विर। इति श्री सेंगर वंशजनस श्री महाराजाधिराज भगवा देवाधिप्ट मीमांसक भट्ट शंकरात्मज नीलकंठ कृते प्रतिष्ठामयूखो नवमः ॥९॥''' '''संवत् १८३७ शाके''' मासात्मासे फाल्गुन मासे कृष्णपक्षे शुभ''' ''मरे लिखित हरबुराय मरठ नगरे ॥ शुभं ॥ नोवनराय पाठार्थं ॥ शुभं ॥
२५८×११४ सें०मी०	३७	१२	२५	पू०	प्राचीन	इतिश्रीमद्विश्वामित्र वंशावतंस श्री महाराजाधिराज मीमांसक शंकर भट्टात्मज भट्टनीलकंठेन कृते भगवत भास्कर प्रतिष्ठा मयूखोप्टम ॥
१९३×११३ सें० मी०	२ (१–२)	१४	३०	अपू०	प्राचीन	

क्रमाक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५७७	३८२१	प्रदीप पद्धति			दे० का०	दे०
५७८	४१५४	प्रधानपुरुष घटस्थापन पूजा			दे० का०	दे०
५७९	६६	प्रपत्नकठाभरण	श्रीरामप्रसाद मिश्र		दे० का०	दे०
५८०	४५६३	प्रपन्नकठाभरण	रामप्रसाद मिश्र		दे० का०	दे०
५८१	६७८४	प्रयोगचिंतामणि	अनत भट्ट		दे० पा०	दे०
५८२	६६६७	प्रयोगपरिजात (पोडश कर्मकाड समावर्तन-प्रयोग)			दे० का०	दे०
५८३	३६३	प्रयोग रत्न (पोडश कर्मपद्धति)			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या	और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५.५ × ६.८ सें० मी०	१३ (२–१४)	१०	४८	अपू०	प्राचीन	
२५.४ × १५.२ सें० मी०	४ (१–४)	१०	३६	अपू०	प्राचीन	इति प्रधानपुरुष पूजा समाप्ता ॥
२१.५ × १० सें० मी०	२१० (७–२१०)	८	२७	पू०	प्राचीन सं०१८६६	समाप्तेयमानुश्रमभणिका ॥ संवत् १८६६ शाक १७३१ ज्येष्ठे मासि सोमवासरे नवम्या तिथौ समाप्तोयं ग्रंथ ॥
३६.२ × ११.५ सें० मी०	१०२ (१,१,१,१–१३,१३,३०–६८,६८,६६–७१,७१,७२–७५,७७–७६,१०१–१०२,१३१,१३४,१३६,१३७,१३७,१३८–१५७,१५७,१५८–१८६,१८८–१८६)	१४	५४	अपू०	प्राचीन	श्री महानप्रसाद मिश्र विरचिते प्रश्नकठाभरणे सप्तेश्वरेश्वरागमश्रवणानन्दोत्सर्वनाम षष्ठ विरचन ॥
२८.५ × ११.६ सें० मी०	१६१ (१–१६१)	११	४२	अपू०	प्राचीन	[illegible] भट्ट विरचित श्री रामकथा-[illegible] प्रवार्थ[illegible] वृद्धि प्राद ॥… … … … (पत्रसंख्या–१२)
२२.७ × १० सें० मी०	४ (१–४)	११	५२	पू०	सं०१७६६	संवत् १७६६ [illegible] नवमी [illegible] ॥ + + +
२१.७ × १०.१ सें० मी०	४७ (२–४८)	६	३३	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५८४	२२५	प्रयोगरत्न	काशी दीक्षित		दे० का०	दे०
५८५	६३७६	प्रयोगरत्न	अनंत दीक्षित		दे० का०	दे०
५८६	९९९	प्रयोगरत्न	नारायण भट्ट		दे० का०	दे०
५८७	४७५१	प्रयोगरत्न	काशी दीक्षित		दे० का०	दे०
५८८	७००३/२	प्राणप्रतिष्ठा			दे० का०	दे०
५८९	३६६१	प्राणप्रतिष्ठा			दे० का०	दे०
५९०	४९५	प्राणप्रतिष्ठापद्धति			दे० का०	दे०

क्रमाङ्क और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५६१	२१४५	प्राणप्रतिष्ठामन्त्र			दे० का०	०
५६२	४६७८	प्रातःकालपूजाविधि			दे० का०	दे०
५६३	७७४८	प्रातःसंध्या			दे० का०	दे०
५६४	७७५३	प्रातःसंध्या			नि० का०	दे०
५६५	५८३६	प्रातःसंध्या			दे० का०	दे०
५६६	५७७६	प्रातःसंध्या			दे० का०	दे०
५६७	६१२	प्रायश्चित्तमुक्तावली	दिवाकरभट्ट		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
१६·५ × १२·८ सें० मी०	१½	११	२३	पू०	प्राचीन	इति प्राणप्रतिष्ठा समाप्तम् ।
२४·८ × १०·५ सें० मी०	६ (१–६)	१३	५५	पू०	प्राचीन	इति प्रात काल पूजाविधिः ॥शुभमस्तु ॥
१४·५ × ८·४ सें० मी०	२० (१–२०)	६	१४	पू०	शके १६५३	इति प्रात सध्या समाप्त ।··· शके १६५३······ ॥
१६ × १० सें० मी०	१६ (१–१६)	७	२०	पू०	आधुनिक	
१६·३ × १० सें० मी०	४ (१–४)	११	३५	पू०	प्राचीन	···सवत् १८७४ ॥शाके १७३८॥ प्रथम श्रावण सुदि ८ चद्रे समाप्तोय···
१६·४ × ८·४ सें० मी०	६	७	१६	अपू०	प्राचीन	
२५·३ × ११·४ सें० मी०	६	६	३६	पू०	प्राचीन	इति श्री भारद्वाज महादेव भट्टात्मज दिवाकर विरचितायां प्रायश्चित मुक्तावल्या सर्व साधारण प्रायश्चित्त प्रयोग ॥६॥

क्रमाक और विशेष	पुस्तकालय की आगत सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५९८	२३७२	प्रायश्चित्तविधि			दे० का०	दे०
५९९	७७०८	प्रासादमूर्तिप्रतिष्ठा-न्वाधान (प्रासाद नव कुडी प्रयोग)			दे० का०	दे०
६००	२८५४	प्रेतदीपिका			दे० का०	दे०
६०१	४९८९	प्रेतप्रकाशिका	उद्योतमणिमिश्र		दे० का०	दे०
६०२	३८२८	प्रेतमजरी			दे० का०	दे०
६०३	९	प्रेतमजरी			दे० का०	दे०
६०४	७०८	प्रेतमजरी			दे० का०	दे०

पत्ता या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसंख्या और प्रतिपक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२८.१ × १०.७ सें० मी०	१६ (२.६, ८.६ १३.१६, १६.२५)	७	२६	अपू०	प्राचीन	
२३.२ × ६.४ सें० मी०	५ (१–५)	१०	३३	अपू०	प्राचीन	
२६.२ × ११.८ सें० मी०	४० (१-११, १३ १३–३१, ३३–४१)	११	३८	अपू०	प्राचीन	
२६.३ × १०.८ सें० मी०	१६ (२४,६–२२)	८	३५	अपू०	प्राचीन सं०१९१४	इति श्री मन्पडितद्योतमणि मिश्र कृताया प्रेत प्रकाशिताया निरग्नि सवत् १६१४ वैशाख सुदि ६ बुधे लिखित प श्री नायक रामगोपाल ॥
२८ × १८ सें० मी०	३१ (१–३१)	२१	१८	पू०	सं०१९३६	इति सपिंडी श्राद्ध सपूर्णम् । इति श्री प्रेत मजरी सपूर्णम् " .... "सवत् १९३६ मिति जेष्ठ सुदी २ वार शुक्रवार कु सपूरण हुई ।
२६.५ × १४ सें० मी०	२३	२३	३३	पू०	प्राचीन	
२३.३ × १०.८ सें० मी०	११	११	३१	अपू०	प्राचीन सं०१८८८	इति प्रेत मजरी समाप्ता ॥ सवत् १८८८ प्रथिर वैशाख शुद्ध २ गुरो लिखित स्वार्थ परार्थ ॥ शुभ

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६०५	३७४०	प्रेतमंजरी			दे० का०	दे०
६०६	२१७६	प्रेतमजरी			दे० का०	दे०
६०७	४१०६	प्रेतमुक्तिदा पद्धति	क्षेमराम		दे० का०	दे०
६०८	४०००/३	बलदेवाह्निक			दे० का०	दे०
६०९	२८०१/४	बलिवैश्वदेवविधि			दे० का०	दे०
६१०	६५०४	बृहस्पतिसव होत्र			दे० का०	दे०
६११	४८७०	बौधायनोक्तविनायक-शांति				दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रन्थ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ घ	८	८	८	९	१०	११
१८×१३.२ सें० मी०	३८ (४–४१)	१२	२२	अपू०	प्राचीन	
२७.८×१४.१ सें० मी०	३६ (१-१९ २१-३२ ३२-३६)	८	३०	अपू०	प्राचीन	
२५.५×१०.७ सें० मी०	१५ (१–१३, १३–१५)	१२	४७	अपू०	प्राचीन	श्री क्षेमरामेणवृतेय प्रेतमुक्तिदा समाप्ता शुभ भूयात् ।। सवत् १८३३ शाके १६६८ मलिमासे कृष्णपक्षे रविवासरे ।।
१८.७×१५.४ सें० मी०	६ (४–६)	१३	२२	अपू०	सवत् १९१८	इति श्री हरिवंशे बलदेवाह्निक नारायण समष्टि स्वरूपनवन ग्रामरक्षाकरण १६४ के तत्सत् सवत् १९१८ मार्गशीर्ष शुक्ला १२ लिखितमिद पुस्तक मुरलिधर आत्मपठनार्थं ।।
१७.५×१३.५ सें० मी०	२	११	२०	अपू०	प्राचीन	
२३.३×८.५ सें० मी०	८ (१–८)	८	३३	अपू०	सं०१७८२	इति बृहस्पति सव समाप्त ।। सवत् १७८२ मार्गशीर्ष शुद्ध ८ बुधे लिखित जय राम खेडी कामेश्वरस्य ।।
२५.५×१०.८ सें० मी०	४ (१–४)	९	३५	पू०	प्राचीन	इति प्रतापनारसिंहाख्ये सस्कार प्रकाशे बौधायनानुसारीविनायक शाति प्रयोग समाप्त ।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६१२	१४३३	व्रतबंध			दे० का०	दे०
६१३	१४६६	ब्रह्मचर्यव्रतम् पद्धति			दे० का०	दे०
६१४	६५२४	ब्रह्मतत्वप्रयोग			दे० का०	दे०
६१५	७५८०	ब्रह्मयज्ञ			दे० का०	दे०
६१६	६३६४	ब्रह्मयज्ञ			दे० का०	दे०
६१७	६३६६	ब्रह्मयज्ञ			दे० का०	दे०
६१८	६३७०	ब्रह्मयज्ञ			दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
१८×११.५ सें० मी०	१४ (१–१२, १६–१७)	८	१४	अपू०	प्राचीन	
२१.५×१०.३ सें० मी०	२४ (२–२५)	६	२८	अपू०	प्राचीन	
२१.३×८.८ सें० मी०	६ (१–६)	१०	४७	पू०	प्राचीन	इति ब्रह्मस्तव ॥ अथश्यगोपामनि पद्यमान ॥
११.५×६.६ सें० मी०	५ (१–४, ६)	११	१४	अपू०	प्राचीन	अत्मना समस्त पापक्षयार्थं देवर्षि-मुष ॥ पित्रु प्रीत्यर्थं ॥ ब्रह्मयज्ञमह करिष्ये ॥ (पत्र-संख्या—१, प्रारंभ)
१६.५×१०.३ सें० मी०	१४ (१–१४)	८	२१	पू०	प्राचीन	इति ब्रह्मयज्ञदेवऋषिमनुष्यपितृ-तर्पण समाप्त ॥ शुभं भूयात् ॥ श्रीरस्तु ॥
१७.७×६ सें० मी०	५ (१–५)	६	१६	अपू०	प्राचीन	
१५.५×६.८ सें० मी०	७ (१–७)	७	१८	पू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की क्रमांक संख्या या संग्रह विशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ जिस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६१९	४४७४	भागवतपूजा विधान			दे० का०	दे०
६२०	४४६०	भुवनेश्वरी शांतिः			दे० का०	दे०
६२१	४,४६	भूतशुद्धि			दे० का०	दे०
६२२	७००३/२	भूतशुद्धि			दे० का०	दे०
६२३	१२१०	भैरव दीपदान			दे० का०	दे०
६२४	२००५	भैरवपूजा पद्धति			दे० का०	दे०
६२५	२८७१	भौमपूजा			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७.६×११.७ सें० मी०	३ (१-३)	९	५०	अपू०	प्राचीन	चिंतामणि फलप्रदा श्री भागवताभिधा सप्ताह यज्ञ नियमेन श्रवणमह करिष्ये॥ इति संकल्प ॥•••(पत्र संख्या २)
२४.५×१०.५ सें० मी०	८	९	३७	पू०	प्राचीन	इति भुवनेश्वरी शांति
२१.५×९.५ सें० मी०	२ (१-२)	८	३६	पू०	प्राचीन	इति भूतशुद्धि ॥
१२.३×८ सें० मी०	५ (१-५)	६	२३	पू०	आधुनिक	इति भूतशुद्धि संपूर्ण शुभमस्तु श्रीरस्तु॥ ब्रह्मार्पण मस्तु ॥
२०×११.५ सें० मी०	६ (५-९,११)	६	१६	अपू०	प्राचीन	•
२०.२×१०.८ सें० मी०	१०	१०	२७	पू०	प्राचीन	इति भैरवपूजा पद्धति ।
१९.२×८.४ सें० मी०	१४ (१-१४)	६	२२	पू०	प्राचीन	

क्रमाक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या या सग्रह विशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६२६	४४६१	भौमपूजा			दे० का०	दे०
६२७	५३८५	भौमपूजा विधि			दे० का०	दे०
६२८	१३०६	मगलव्रत विधान			दे० का०	दे०
६२६	७४७०	मगलव्रत विधान			दे० का०	दे०
६३०	६०३७	मडपपूजा			दे० का०	दे०
६३१	१३५४	मडपपूजा विधि			दे० का०	दे०
६३२	६८१	मडपपूजा विधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पङ्क्तिसंख्या और प्रति पङ्क्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथपूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२०·५×८·८ सें० मी०	३ (१,४,५)	६	२४	अपू०	आधुनिक	इति भौमपूजा ।
१६·६×८·५ सें० मी०	१२ (१–१२)	५	२०	अपू०	प्राचीन	
३०×१३·५ सें० मी०	२	१०	३५	पू०	प्राचीन	
१६·१×११·२ सें० मी०	२	२१	२०	अपू०	प्राचीन	

क्रमाक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६३३	७१३५	मडलदेवतापूजन (सर्वतोभद्र-लिंगतोभद्र-देव स्थापन-पूजन)			दे० का०	दे०
६३४	३१०६	मत्रदीक्षा			दे० का०	दे०
६३५	७१४०	मत्रदीक्षासिद्धि विधि			दे० का०	दे०
६३६	२६६६	मत्रपूजा होमविधि (नारद पचरात्र)			दे० का०	दे०
६३७	३८४६	मत्रमुक्तावली			दे० का०	दे०
६३८	७१५६	मत्ररत्नावलीयत्रपूजा विधि			दे० का०	दे०
६३९	५८५१	मत्रला			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२७×११.३ सें० मी०	६ (१–६)	७	३४	पू०	प्राचीन	इति मंडलदेवताः पूजनसंपूर्णं ॥
२१.६×१०.८ सें० मी०	१४ (१–१४)	८	२७	पू०	प्राचीन	
१५.६×१०.६ सें० मी०	१० (१–१०)	६	१६	अपू०	प्राचीन	
२७×११.३ सें० मी०	४ (१–४)	१०	३६	पू०	प्राचीन	इति श्री नारद पञ्चरात्रे मंत्रपूजा होमविधि ॥
२३.५×११.४ सें० मी०	७ (१, ३–८)	६	३१	अपू०	प्राचीन सं० १६०६	इति श्री मंत्रमुक्तावल्यां कृष्ण नारद संवादे दीक्षाविधाणपंचमोध्याय संपूर्णं शुभमस्तु मंगलददात् संवतु १६०६ साके १७७३ ··· ॥ शेष पंचकशातिवत् ॥
११.४×७.२ सें० मी०	३ (१–२, ११)	८	१४	अपू०	प्राचीन	इति श्रीमंत्ररत्नावल्यायंत्रपूजनविधानमेकादशोल्लास + + + + +
२३.३×१०.६ सें० मी०	४	७	२६	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६४०	२६९९	मठविधि			दे० का०	दे०
६४१	७८६०	मठमंडपोत्सर्ग			दे० का०	दे०
६४२	१७५१	महादाननिर्णय	दामोदर		दे० का०	दे०
६४३	६३६०	महान्यास	माधव भट्ट		दे० का०	दे०
६४४	३६६६	महामृत्युंजय जप पद्धति			मि० का०	दे०
६४५	१५३८	महामृत्युंजय मंत्र			दे० का०	दे०
६४६	७७२३	महामृत्युंजय जपविधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१३.५×१० सें० मी०	४ (२–५)	८	२५	अपू०		इति मंत्र विधि समाप्त ॥
२४.५×१०.१ सें० मी०	६५ (१–६५)	८	३३	अपू०	प्राचीन	
२७.७×१०.५ सें० मी०	४८	८	४४	अपू०	प्राचीन	
१४.७×७.१ सें० मी०	१४ (१–१४)	६	२६	पू०	शके१६७४	इति न्यास संपूर्ण । श्री कृष्णार्पणमस्तु शके १६७४ माघ मासे शुक्ल पक्षे प्रतिपदभृगुवासरे । कवीश्वरोपनामक मुकुंद भट्टस्य सूनुना माधवेन लिखित ॥
१६.८×१०.३ सें० मी०	५ (१–५)	६	२४	अपू०	प्राचीन	इति श्री महामृत्युंजय पद्धतिस्समाप्ता मंत्रोयया……
१७.२×८.६ सें० मी०	३ (१–३)	५	१९	अपू०	प्राचीन	
२१.५×१०.७ सें० मी०	६ (१–६)	८	१८	पू०	प्राचीन सं०१८३०	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६४७	४६६४	महालक्ष्मी पूजन			दे० का०	दे०
६४८	३१३५	महालक्ष्मीव्रत उद्यापन			दे० का०	दे०
६४९	३०३४	महालक्ष्मीव्रत-पूजन विधि			दे० का०	दे०
६५०	६८६३	महाव्रत होत्र प्रयोग			दे० का०	दे०
६५१	७६१	महाषष्टी पूजा			दे० का०	दे०
६५२	३२४६	महाष्टमी दुर्गोत्सव व्रत पूजा			दे० का०	दे०
६५३	६५६१	महिम्नोक्त लिंग-प्रतिष्ठा			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३०.५×१७.५ सें० मी०	१७ (१–१७)	९	२४	पू०	स०१९७९	इति श्री लक्ष्मी जी की आरती समाप्तम् ॥ प० लालमन दास लिपि कृत स० १९७९ मिति वै० शु० ५ भौमवासरे चाँदपुर निवसि ॥
२३.८×१०.३ सें० मी०	७ (१–७)	१०	५२	पू०	प्राचीन	इति महालक्ष्मी व्रतोद्यापन समाप्त ॥
२४×१०.४ सें० मी०	७ (१–७)	८	३०	अपू०	प्राचीन	
२३.४×९.८ सें० मी०	१४ (१–१४)	१०	४१	पू०	प्राचीन स०१७९१	इति आश्वलायनोक्त महाव्रत ॥ सवत् १७९१ श्रावण कृष्ण ३ चंद्रे लिखित ॥
२४.५×१० सें० मी०	७ (२–८)	७	२५	अपू०	प्राचीन	
२५.५×७.७ सें० मी०	१० (२–११)	८	३२	अपू०	प्राचीन	इति महाष्टमी दुर्गोत्सव व्रत पूजा समाप्त ॥
२५×११.४ सें० मी०	२५ (१–२५)	७	३३	पू०	स०१९३६	इति महिम्नात्मक लिंगप्रतिष्ठा स्थापन विधि समाप्ता। । सवत् १९३६ मि०•••

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६५४	३८६६	महीदानविधि			दे० का०	दे०
६५५	२३५६	माघउद्यापन विधि			दे० का०	दे०
६५६	३०१६	मातृका न्यास			दे० का०	दे०
६५७	५४०६	मातृश्राद्धप्रयोग			दे० का०	दे०
६५८	६३६६	(जगदवाया) मानस पूजा	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
६५९	५९४६	मानसपूजा			दे० का०	दे०
६६०	३३४८/४६	(श्रीराम) मानसीपूजाविधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८ ब	८ स	८ द	९	१०	११
२०.४ × ६.७ सें० मी०	२ (१–२)	८	३१	पू०	प्राचीन	इतिमहीदानं ॥
६३ × १८.५ सें० मी०	१ (खर्रा)	६४	२३	पू०	प्राचीन सं० १८२०	इति श्री नारद ब्रह्म सवादे माघनुद्यापन विधि सपूर्ण समाप्त ॥ सवत् १८२० माघमासे त्रियोदशी १३ बुधदिने······ शुभमस्तु ॥ मगल ददातु ॥
२३.५ × ८.८ सें० मी०	६ (१–६)	७	२८	पू०	प्राचीन सं० १८२८	इति केशवादि मातृकान्यास. । स्वामिचरणारविंदयोरस्तु ॥ सवत् १८२८ शके १६९३ ज्ये० कृ० ११ भृगोर्वासरे ॥ ··························
२४.८ × १०.३ सें० मी०	५ (१–५)	१०	३०	पू०	सं० १९९३	इति मातृश्राद्ध समाप्तम् ॥१॥ सवत् १९९३ भाद्रपद शुक्ल पक्षे च प्रतिपदा बुधवासरे लिखित दत्त रामेण घोघडी पुर मध्ये ॥ स्वहेतवे ॥ शुभभूयात् रामायानम ।
२३.५ × १०.२ सें० मी०	६ (१–६)	८	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री मच्छ(क)राचार्य विरचिता जगदवाया मानसपूजा समाप्ता ॥
२४ × ११.८ सें० मी०	५ (१–५)	९	३३	पू०	प्राचीन	इत्यगस्त्य सहितायां परमरहस्ये मानसीपूजा कथन नाम त्रयस्त्रिशोध्याय ३३ ······ ॥
१२.५ × ८.२ सें० मी० (सं० मू० ३७)	१३ (१–१३)	६	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री अगस्त सहितायां परमरहस्ये श्रीराम मानसीपूजाविधिपंचत्रिंशोऽध्यायः श्रीराम··· ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६६१	१६१२	मानसोपचार पूजा	शंकराचार्य		मि० का०	दे०
६६२	६३४६	मालासंस्कार	चिरजीव भट्टाचार्य		दे० का०	दे०
६६३	७७६६/२	मालासंस्कार			मि० का०	दे०
६६४	२८६२	मालासंस्कार			दे० का०	दे०
६६५	३३०६	मालासंस्कार			दे० का०	दे०
६६६	६७४७	मालासंस्कार विधि			दे० का०	दे०
६६७	५७५२	मालासंस्कार विधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२८.२ X १५.५ सें० मी०	४ (१–४)	१५	४२	पू०	प्राचीन	इति श्रीमच्छ्री शंकराचार्य कृतामानसो पचार पूजा समाप्तम् ॥ शुभमस्तु ॥
२४ X १०.५ सें० मी०	२ (१–२)	१०	३४	पू०	प्राचीन	इति विरजी भट्टाचार्य कृते सर्वार्णये माला संस्कार ॥
२०.८ X ११ सें० मी०	३ (१–३)	६	२३	पू०	प्राचीन	इति माला संस्कार ॥
१६.७ X ७.७ सें० मी०	५ (१–५)	८	१६	पू०	प्राचीन सं० १८३६	इति रुद्र यामले तंत्रे माला संस्कार संपूर्ण सुभ मस्तु ॥ संवत् १८३६ ॥ मुकामछत्रपुर लिषित लल्लू अवस्थी ॥
२०.३ X ११.४ सें० मी०	३ (१–३)	७	१७	पू०	प्राचीन	इति माला संस्कार संपूर्ण ॥
२४.६ X १०.६ सें० मी०	२ (१–२)	१०	३३	पू०	प्राचीन	इति माला विधि समाप्ता··· ··· ···
१८.५ X ८.२ सें० मी०	१	८	३५	पू०	प्राचीन	इत्य मालानां संस्कार्य्यं यथाशक्ति मूलमन्त्र जपेदिति ॥ मालानां संस्कार-विधि ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६६८	३०२६	मुंडनसंस्कार विधि			दे० का०	दे०
६६९	६४२६	मूर्तिदान विधि			दे० का०	दे०
६७०	६४१५	मूर्तिप्रतिष्ठा	सदाशिव भट्ट		दे० का०	दे०
६७१	४८८३	मूर्तिप्रतिष्ठा विधि			मि० का०	दे०
६७२	२५०५	मूर्तिप्रतिष्ठा विधि			दे० का०	दे०
६७३	४७७८	मूलशांति			दे० का०	दे०
६७४	३१०७	मूलशांति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६.७×६.५ सें० मी०	५	१२	२५	अपू०	प्राचीन	
१२.६×१०.३ सें० मी०	१	८	३६	पू०	सं०१८१३	इति मूर्तिदान विधि ॥ .... संवत् १८१३ वैशाख शुद्ध ८ ॥
२२.२×६.२ सें० मी०	७ (१-७)	१०	३७	पू०	प्राचीन	इत्यागमोक्ता मूर्तिप्रतिष्ठा ॥ ...... चलाचल प्रतिष्ठाया पुस्तकं लिखित सदा शिव भट्ट कवीश्वरेण ॥ ......
२८.८×१४.१ सें० मी०	१० (१-१०)	१३	३२	पू०	सं०१६५७	इति चलाचल मूर्ति प्रतिष्ठा विधि समाप्त संवत् १६५७ माघ मासे शुक्ले पक्षे शुभतिथौ एकादश्या बुधवारान्विताया लिखित .... ॥
२०.६×१० सें० मी०	५ (१६-२०)	१२	५२	अपू०	प्राचीन	
३२.७×१३.४ सें० मी०	७ (१-७)	११	४६	पू०	सं०१६०६	इति श्री मूलशांति समाप्तः संवत् १६०६ ॥
२२.५×८.८ सें० मी०	२	१०	३६	अपू०	प्राचीन	इति श्री सर्व शास्त्रोद्धारे मूल शांतिक समाप्त ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६७५	३७३५	मूलशांति			दे० का०	दे०
६७६	३७१४	मूलशांति			दे० का०	दे०
६७७	४५५	मूलशांति			दे० का०	दे०
६७८	८२१	मूलशांति			दे० का०	दे०
६७९	२४२६	मूलशांति			दे० का०	दे०
६८०	७३२	मूलशांति कारिका	वामदेव दीक्षित		दे० का०	दे०
६८१	२८४२	मूलशांतिविधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति सख्या ग्रौर प्रति पक्ति मे ग्रक्षर सख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है ? ग्रपूर्ण है तो वर्तमान ग्रश का विवरण	ग्रवस्था ग्रौर प्राचीनता	ग्रन्य ग्रावश्यक विवरण
८ ग्र	ब	स	द	६	१०	११
३०.५×११.४ सें० मी०	८	११	४४	ग्रपू०	प्राचीन	इति श्री मूलाद्यर्क्षे स्नान कर्म विधि लिखत मुरलिधर + + + + + ॥
२३.५×१२ सें० मी०	८ (१–८)	८	२६	पू०	प्राचीन सं०१६५०	इति श्री मूल सात विधायसपुर्नं ॥शुभ। मिती द्वितिय ग्राषाडशुक्ल १४ गुरवासरे सवत् १६५० ॥ ....
२४.४×११ सें० मी०	६	११	३२	पू०	प्राचीन स०१६६६	इति मूलशाति कर्तव्यता ॥ ,१६६६ वर्षे माघवदिदशमी बुधवासरान्विता जा तत्र वदरी मिश्रण ग्रालेपि ॥१॥ शुभमस्तु ॥१॥
१६.७×६.५ सें० मी०	६ (१–६)	६	२४	पू०	प्राचीन	इति विश्वप्रकाशे मूलजनन शात समाप्त
२०.१×११.१ सें० मी०	२१ (१–२१)	८	२१	पू०	प्राचीन स० १८६२	पुतग लिष्यत जमनादास स० १८६२ शाके १७२७ ॥
२३.१×११. सें० मी०	६ (१–६)	१०	३६	पू०	प्राचीन	इति श्री दीक्षित विश्वामित्रात्मज दीक्षित कामदेव कृता मूल शाति काडिकाया पद्धति समाप्ता ॥
२०.६×१०.६ सें० मी०	५ (१–५)	१०	२५	पू०	प्राचीन	इति मूल शाति विधि समाप्त ॥ शुभमस्तु

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६८२	२०६०	मूलशांति विधि			दे० का०	दे०
६८३	२३१०	मूलशाति विधि			दे० का०	दे०
६८४	२६८६	मूलशाति विधि			दे० का०	दे०
६८५	६७१४	मृगारेष्टि प्रयोग			दे० का०	दे०
६८६	६५१२	मृगारेष्टि हौत्र			दे० का०	दे०
६८७	६५२२	मृगार्ष्टि हौत्र			दे० का०	दे०
६८८	६४६६	मृगारेष्टि हौत्र			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति सख्या और प्रति पक्ति मे अक्षर सख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१५४×८८ सें० मी०	६ (१–६)	७	१८	अपू०	प्राचीन	
१७५×८६ सें० मी०	१२ (३–१४)	७	२३	अपू०	प्राचीन	इति श्री मूलशाति विधि समाप्त श्री शिवायनम श्रीकृष्णायनम सवत् १६३५ राम······
२६५×१२५ सें० मी०	६	८	२५	पू०	सं०१६१५	सवत १६१५ मासोत्तमे मासे कार्तिक मासे कृष्ण पक्षे पुन्यतिथौ मावस्यायां शुक्रवासरान्वितायां शुक्रवासरे लिखित चदन मिश्र सूनु हरिदीयाल मिश्रका ॥
२३४×१० सें० मी०	६	१०	४२	पू०	सं०१७६१	इति मृगारेष्टि प्रयोग ॥ श्री लक्ष्मी-नृसिहार्पणमस्तु ॥ सवत् १७६१ आषाढ शुद्ध १२ लिखितमिद पुस्तक रामडोहुकरोपनामक विश्वनाथ भट्टेन ॥
२१६×८२ सें० मी०	५ (१–५)	८	२६	पू०	प्राचीन	॥ सतिष्ठते मृगारेष्टि ॥
२१५×८६ सें० मी०	३ (१–३)	११	३५	पू०	प्राचीन	इति मृगारेष्टि होत्र समाप्त ॥
२१·६×१०४ सें० मी०	७ (१–७)	६	२३	पू०	प्राचीन सं०१७८७	इति मृगारेष्टि होत्र सपूर्ण ॥ श्री ॥ सवत् १७८७ शाके १६५२ अश्विन शुक्ल पक्षे ··· ············

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६८६	३६६८	मृतदाहविधि	नारायणभट्ट		दे० का०	दे०
६६०	६२८	मृत्युंजयपूजा			दे० का०	दे०
६६१	६३६६	मृत्युंजय विधान			दे० का०	दे०
६६२	३३०८	मृत्युंजयविधान			दे० का०	दे०
६६३	७३४७	मैत्रावरुण अग्निष्टोम			दे० का०	दे०
६६४	६५०५	मैत्रावरुण प्रयोग			दे० का०	दे०
६६५	६६६१	मैत्रावरुण प्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
२२ ५ × ६ ३ सें० मी०	११ (१–११)	६	३५	पू०	प्राचीन सं०१८१४	इति श्री भट्टरामेश्वर सुतनारायण भट्ट विरचितः साग्निकाग्राश्वलायन मृतदाह विधि ॥ (पत्रसख्या ९) + + + पुस्तकमिद रामहृदोपनामक विश्वनाथ भट्टात्मज नीलकटभट्टेन लिखापित स्वार्थं परार्थं च सवत् १८१४ समय आश्विन कृष्ण ७ रवौसमाप्तम् ॥···
२४ १ × १० ६ सें० मी०	७ (१–७)	६	३४	पू०	प्राचीन सं०१८८८	इति मृयुञ्जयपूजा सपूर्णमिति ओनमः शिवाय सवत १८८८ तत्रमासे ······ मम दोषा नदीयते मगल ददातु ॥
२२ ८ × ६ ७ सें० मी०	४ (१–४)	६	२८	पू०	प्राचीन	इति श्री मृत्युजय विधान समाप्तः ॥ सदाशिव देवताऽपर्णमस्तु॥सवत्१६१० के साल समये नाम मिती माघ सुदि ७ कः बुधवासरे कः समाप्त. ॥+ + +
२० ६ × १० ६ सें० मी०	१० (१–१०)	६	२६	पू०	प्राचीन स०१८७६	इति मृत्युजयविधान वसिष्ठ कल्पे ॥ आचार्य सदा रक्षेन्मत्रेनानेन मत्रवित् ॥ राजाहि सर्वलोकस्य पिता भवति धार्मिक ॥ तस्मात्तत्प्रयत्नेन कर्म कुर्वीत शांतये ॥ श्री महादेवायनम ॥ सवत् १८७६ ॥ मार्गशीर्ष मासेशुक्लपक्षे
२२ ३ × ६ ६ सें० मी०	३५ (१–३५)	११	३५	अपू०	प्राचीन	
२२·६ × ८ ५ सें० मी०	१५ (१–१५)	१४	३६	पू०	प्राचीन	अथाग्निष्टो मोमंत्रावरणप्रयोगो लिख्यते (प्रारभ)
२३ ६ × ६ ८ सें० मी०	३	७	१६	अपू०	प्राचीन (स०१७८८)	- मैत्रावरुण समाप्त ॥ इदं पुस्तकं रामहृदोपनामक विश्वनाथ भट्टात्मज नीलकण्ठस्य सवत् १७८८ ज्येष्ठ शुक्ल ५··· ···

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६९६	१८६९	यज्ञपद्धति			दे० का०	दे०
६९७	४७७६	यज्ञपद्धति	रामप्रसाद प्रणीत		दे० का०	दे०
६९८	४५४९	यज्ञपद्धति			दे० का०	दे०
६९९	५८९३	यज्ञोपवीत			दे० का०	दे०
७००	६३५७	यज्ञोपवीत			दे० का०	दे०
७०१	३९२९/२	यज्ञोपवीतकरण विधि			दे० का०	दे०
७०२	२४३६	यज्ञोपवीत पद्धति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
१८.५×६.५ सें० मी०	३८ (२–३७, ४३–४४)	१०	२०	अपू०	प्राचीन	जीर्ण
३६.६×१२.२ सें० मी०	६० (२–६०) पत्र ४२–दो	११	४०	अपू०	प्राचीन स०१८७२	साब्दर्पे युग्म सप्ताब्ज शशि परिमित मासि माघे च शुक्ले पछे चायुष्य योगे कुसुमशर तिथौ पुण्यभ चाक्क वारे॥ श्री मद्रामप्रसाद प्रणत विरचिता श्री वशिष्ठ प्रणीतैश्छन्दो मर्त्तैर्विशिष्टाधरवर परमा पद्धति पूर्तिमाप्ता॥ समाप्तेय यज्ञ पद्धतिः समस्त॥
२५.४×१२.८ सें० मी०	२७ (२–५) १४–३६)	६	३३	अपू०	प्राचीन स०१६१७	इति श्री यज्ञ पद्धित सपूर्णम् शुभ मस्तु सवत १६१७ आषाड शुल्क ६ बुधवासरे॥
२५.२×१०.३ सें० मी०	६ (१–६)	६	४६	अपू०	प्राचीन	
१६.६×१०.३ सें० मी०	१५ (१–१५)	८	२१	अपू०	प्राचीन	
१३.४×१५.६ सें० मी०	३	६	१४	पू०	प्राचीन	इति यज्ञोपवीत करण विधि॥
२२.२×१२.१ सें० मी०	११ (३–४ ८,२० २४–२५ २७ ३०–३३)			अपू०	सं० १८४६	इति यज्ञोपवीत पद्धति समाप्त॥ शुभमस्तु। सवत् १८४६ श्रावण कृष्ण षष्टया सोमवासरे॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७०३	१२७६/२	यज्ञोपवीत प्रकार			दे० का०	दे०
७०४	४१२८	यज्ञोपवीतसंस्कार पद्धति			दे० का०	दे०
७०५	३०३८	यज्ञोपवीतसंस्कार विधि			दे० का०	दे०
७०६	१००७	यतिसंस्कार विधि			दे० का०	दे०
७०७	७६६२	यतीआराधना प्रयोग			दे० का०	दे०
७०८	६६२३	योगपट्ट विधि			दे० का०	दे०
७०९	२६६६	रजोदर्शन शांति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ घ	५	८	८	६	१०	११
१६×११.५ सें० मी०	४ (१–४)	१२	१२	पू०	प्राचीन	इत्युपवीत प्रकार ॥
२२.२×१२.१ सें० मी०	१५ (५, ७–८, १०–१६, २५–२६)	११	२५	अपू०	प्राचीन	
२१.५×१०.७ सें० मी०	१२ (१–१२)	६	१०	अपू०	प्राचीन	
२३.१×१०.६ सें० मी०	११ (१–११)	११	३५	पू०	सं० १८३७	इति यति सस्कार विधि निर्णयसग्रह ॥ श्रीरामकृष्णायनम ॥ श्रीकृष्णायनम सवत् १८३७ मी० मा०
२५.८× १०.७ सें० मी०	५ (१–५)	६	३०	पू०	प्राचीन	इति सतीना आराधना प्रयोग ॥
१८.६×८.६ सें० मी०	५ (१–५)	७	२०	पू०	प्राचीन सं० १८६३	इति योगपट्ट विधि समाप्त ॥ सवत् १८८३ शाके १७२८ मासाश्विन शुक्ल पक्षे तिथौ ५ गुरुवासरे ॥ लखि ब्राह्मण विसनगरा ॥ पंड्या ऊद्धवजीये ॥ पोथिशिवानद स्वामिनीछ ॥
१६.६×७.७ सें० मी०	१० (१–१०)	७	२०	पू०	सं० १८२७	इति शौनकोक्त रजोदर्शन शांति ॥ सवत् १८२७ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७१०	३४५६	राधाकृष्णमानसीपूजा			दे० का०	दे०
७११	३६६४	रामचंद्राह्निक (संस्कृत टीका सहित)			दे० का०	दे०
७१२	५७८८	रामपद्धति	रामानुज		दे० का०	दे०
७१३	५८१८	रामपद्धति	रामानुजाचार्य		दे० का०	दे०
७१४	३२०४	रामपद्धति	रामानुजाचार्य		दे० का०	दे०
७१५	६०६७	रामपद्धति			दे० का०	दे०
७१६	२१४२/६	रामपूजा प्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रन्थ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ ख	८	ग	८	६	१०	११
१६.३ × ८.५ सें० मी०	८ (१-८)	६	२३	पू०	प्राचीन	श्रीरामारण्य मानसीपूजा सम्पूर्णम् ॥
३२.२ × १२.२ सें० मी०	३० (४-६, ८-११ १४-१६ २१,२४ ३२-३५ ३८,४१ ४४-४६)	११	५४	अपू०	प्राचीन	
२२.४ × १०.५ सें० मी०	११ (१-११)	६	२५	पू०	प्राचीन सं० १८८३	इति श्री रामानुजकृता रामपद्धति वेदोक्त-समाप्ता । शुभमस्तु अस्वन सुदि ७ सवत् १८८३ ... ... ॥
२७.२ × ११.६ सें० मी०	१२ (१-१२)	१०	३४	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्रामानुजाचार्य विरचित श्री रामपद्धति वेदोक्त सपूर्णम् लिखित लक्ष्मीनाथ भट्ट तैलिंग पचद्रावल ॥ शुभभूयात् ॥ " आरोग्यं भवतु ॥
२१.८ × १०.३ सें० मी०	२१ (१-२ ४-२२)	६	२७	अपू०	सं० १८२३	इति श्री रामानुजाचार्य कृता वेदोक्तो पद्धति सपूर्णम् ॥ सुभमस्तु सवत् १८२३ मास ॥ स्रावण शुक्ल पक्षे ॥१०॥ वार ॥ रवि ॥ लिखित बरेली मध्ये ॥ चपतराय का ॥ बाग मे ॥ दासानुदास । वनदेवदास ॥ ... ...
१४.७ × ६.२ सें० मी०	२६ (१-२६)	६	१७	पू०	प्राचीन	श्री रामानुजीय श्री रामपद्धति सपूर्ण ॥
१८.५ × १६ सें० मी०	४ (६-१२)	६	१६	पू०	सं० १६२३	सवत् १६२३ श्रावणे कृष्ण पक्षेतु तृतीये सौम्य वासरे लिपित जय रामेण याद दास्ती शुभ भवेत् ॥ श्री... ...

(सं० सू०३६)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्त संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७१७	३०६६	रामपूजा विधि			दे० का०	दे०
७१८	२८३२	रामसेवा विचार			दे० का०	दे०
७१९	५३३८	रामायणपरायण विधि			दे० का०	दे०
७२०	७८६१	रामायणपूजन			दे० का०	दे०
७२१	७५६९	रामायणविधि			दे० का०	दे०
७२२	१५०३	रामार्चन			दे० का०	दे०
७२३	७५०७	रामार्चनचंद्रिका			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ क	ख	ग	घ	९	१०	११
२४ × ९.७ सें० मी०	२	८	३२	पू०	प्राचीन	इति रामार्दनि सर्वेषतो पूजा विधिः ॥
२६ × ११.२ सें० मी०	४५ (१–४५)	११	३७	पू०	प्राचीन	इति श्रीराम सेवाविचारे एकोनविंशतिध्याय ॥
२७.७ × ११.१ सें० मी०	११ (१–११)	७	२७	पू०	प्राचीन	इति रामायण पुरश्चरण विधि ॥
२३.३ × ११ सें० मी०	५ (१–५)	११	२४	पू०	प्राचीन	
३१.५ × १२.२ सें० मी०	४ (१–४)	९	४०	पू०	प्राचीन	इति श्री मद्रामायण विधिः·········
२०.२ × १०.३ सें० मी०	६ (१५–२०)	९	२८	अपू०	प्राचीन	
२२.७ × १२.५ सें० मी०	९२ (१–९२)	१०	३३	पू०	प्राचीन सं० १९०४	इति रामार्चन चंद्रिकाया पचम पटलः समाप्त. ॥·········संवत् १९०४···

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ जिस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७२४	६१२४	रामार्चन पद्धति			दे० का०	दे०
७२५	१००३	रामार्चन दिदीपिका	रामकृष्ण भट्ट		दे० का०	दे०
७२६	६२१७	रामार्चन विधि			दे० का०	दे०
७२७	३५३६	रामार्चा पद्धति			दे० का०	दे०
७२८	६२८६	रामार्चा विधि			दे० का०	दे०
७२९	७६११	रामार्चा विधि (द्वितीय अध्याय)			दे० का०	दे०
७३०	६४८३	रामार्चा विधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४ × ९.७ सें० मी०	५ (९–१३)	६	३३	अपू०	प्राचीन	
२५.५ × ८ सें० मी०	३४ (१–३४)	५	३२	पू०	प्राचीन	इति श्री महाराष्ट रामकृष्ण भट्ट विरचिता श्री रामर्चन विदीपिका समाप्ता ॥
१८.८ × ७.५ सें० मी०	५ (१–५)	६	२२	अपू०	प्राचीन	
२४.५ × १०.५ सें० मी०	६ (१–६)	६	३८	पू०	प्राचीन	
३१.२ × १६.२ सें० मी०	७ (१–७)	१२	३५	पू०	प्राचीन सं०१९२३	इति श्री शिव सहिताया भविष्योत्तर खडेशिव पार्वती सवादे रामार्च्चा विधि सपूर्ण सं० १९२३ जेष्ट शुक्ल ८ भोमे ॥
२७.५ × ११.३ सें० मी०	१० (१–१०)	८	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री शिव सहिताया भव्योत्तरपडे रामार्चा विधि कथेन शिव सवादे द्वितीयोध्याय ॥ + + +
१४ × ९.२ सें० मी०	१४ (१–१४)	८	१२	अपू०	प्राचीन	

क्रमाङ्क और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७३१	१२५५	रुद्रजाप (प्रथम एवं द्वितीय अध्याय)			दे० का०	दे०
७३२	७१५८	रुद्रजाप			दे० का०	दे०
७३३	५७१३	रुद्रपद्धति	रंगनाथ		दे० का०	दे०
७३४	१४०५	रुद्रपाठ (अष्टम अध्याय)			दे० का०	दे०
७३५	४४२६	रुद्रपूजन विधि			दे० का०	दे०
७३६	२१३५	रुद्रप्रश्न			दे० का०	दे०
७३७	३००३	रुद्रप्रश्न			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्र सख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति सख्या और प्रतिपक्ति मे अक्षर सख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
१२·५ × ६ सें० मी०	१४ (१–१४)	५	१२	पू०	प्राचीन	इति रुद्र जापे द्वितियोध्याय ॥२॥
६.५ × ५·७ सें० मी०	७	६	१०	अपू०	प्राचीन	इति रुद्रजाप्ये पचमोध्यायः ॥
२७ × १०.८ सें० मी०	१५ ३–१७	१०	३८	अपू०	प्राचीन	इति रगनाथ कृते रुद्रपद्धतौ ॥
२०.८ × १०·५ सें० मी०	२१ (१-२,६-१३, १७–१८, २०-२७,२६	८	२४	अपू०	प्राचीन सं०१६१५	इति रुद्रपाठोऽष्टमोध्याय सं० १६१५ श्रावण कृष्ण दशम्या लिखित भवानी दत्तेन शुभ भूयात् ॥
२४·२ × ११.२ सें० मी०	८ (४३-५०)	१०	४०	अपू०	प्राचीन	इति बौधायनोक्त रुद्र स्नान विधान समाप्त ॥··· ··· (पत्रसख्या ५०)
२४.३ × ६.३ सें० मी०	१५	१०	३१	अपू०	प्राचीन	
१८ × ५.१ सें० मी०	१०	५	१३	पू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७३८	७१०	रुद्रवत्युं द्यापनविधि			दे० का०	दे०
७३९	२३५५	रुद्राक्षधारण विधि	वृषसिंहदेव		दे० का०	दे०
७४०	५५५६	रुद्राक्षमाला संस्कार			दे० का०	दे०
७४१	६९३०	रुद्रानुष्ठान पद्धति	नारायण भट्ट		दे० का०	दे०
७४२	५००८	रुद्राभिषेक कल्प			दे० का०	दे०
७४३	२९६७	रुद्राभिषेक विधि			दे० का०	दे०
७४४	४७४२	रुद्रीजाप			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६.५ × ९.५ सें० मी०	३	१२	६४	पू०	प्राचीन	इति काशी खंडे रुद्रवाल्युंधापन विधान संपूर्णं ॥
२६ × १५ सें० मी०	५ (१–५)	१५	४२	अपू०	प्राचीन	
१८.५ × ८ सें० मी०	४ (१–४)	९	३३	पू०	प्राचीन	रुद्राक्षमाला संस्कारे'''मंत्रसिद्धि कामोऽमुक देवता माला संस्कारमहं करिष्ये ''' ''' (प्रथम पत्र)
२३.७ × १०.३ सें० मी०	५६ (१–५६)	९	३२	पू०	सं० १८०३	संवत् १८०३ मासे आश्विन कृष्ण पक्षे तिथि ३० वार गुरौ तद्दिने अवस्थी माहेश्वरेण लिखित ॥
१९.३ × १२.५ सें० मी०	४५	७	२२	अपू०	आधुनिक	
१९.२ × ९.६ सें० मी०	४ (१–२७)	९	२०	अपू०	प्राचीन	
१७.४ × ९.७ सें० मी० (सं०सू० ४०)	२२ (१–२२)	९	१७	पू०	प्राचीन सं० १७८१	इति रुद्रविधान समाप्त ॥ संवत् १७८१ ''' ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७४५	४६७७	लक्ष्मीपूजन विधि			दे० का०	दे०
७४६	१२५१/२	लघु आतुरसन्यास विधि			दे० का०	दे०
७४७	६४७२	लघुपद्धति			दे० का०	दे०
७४८	१८४६	लघु लक्ष्मीहवन विधि			दे० का०	दे०
७४९	६३१२/७	लघुशांति			दे० का०	दे०
७५०	४४७७	लिंगतोभद्रमंडल देवता			दे० का०	दे०
७५१	६७३	लिंगतोभद्र होम			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२०.५×८.६ सें० मी०	३ (१–३)	७	२६	पू०	प्राचीन	
१२.३×७.८ सें० मी०	४ (१–४)	१०	१३	पू०	प्राचीन	इति सन्यास ।
२३.३×७.२ सें० मी०	७९ (७ ७७, ७९-८६)	५	३२	अपू०	प्राचीन	
१४.६×१० स० मी०	६ (१–६)	१०	२०	पू०	प्राचीन	इति लघु लक्ष्मी हवन समाप्त इति श्री लिखत पुस्तग कन्हैया लाल स्वात्म पठनाय शुभमस्तु ।।
२०.८×१४.२ सें० मी०	२ (५–६)	१५	२१	अपू०	प्राचीन	इति श्री लघुशांति समाप्त ॥
२५.५×१०.६ सें० मी	१० (१–१०)	९	२८	पू०	प्राचीन	इति देवता होमे समाप्त ॥
२०.२×८ सें० मी०	९	७	२२	पू०	सं०१९३६	इति लिंगतोभद्र देवता प्रधान होम समाप्त ॥ इद होपुरोपाक वटुवनार्थेन स्वपठनार्थं लिखित ॥ स्वार्थं पराय च ॥ माघे शुद्ध ८ म्या लिखित ॥ सं० १९३६ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या वा संग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७५२	७८०५	(शिव) लिंगप्रतिष्ठा पद्धति			दे० का०	दे०
७५३	३३२५	लिंगप्रतिष्ठा पद्धति	अनतभट्ट		दे० का०	दे०
७५४	१००६	लिंगप्रतिष्ठापन विधि			दे० का०	दे०
७५५	१०६०	लिंगप्रतिष्ठा विधि			दे० का०	दे०
७५६	५७२७	लिंगस्थापन विधि			दे० का०	दे०
७५७	६५६७	लिंगार्चाप्रतिष्ठा विधि	कमलाकर		दे० का०	दे०
७५८	१२०६	वरुणोपासमन्त्रानुष्ठान			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठो का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसख्या और प्रतिपंक्ति मे अक्षरसख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त-मान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२९.५×११.४ सें० मी०	१३ (१–१३)	८	३२	पू०	प्राचीन	इति बौधायनोक्त लिंगप्रतिष्ठा पद्धति समाप्ता ॥
२९.३×१० सें० मी०	२० (१–२०)	९	३९	अपू०	प्राचीन सं० १९२३	इति श्रीमद्विद्वद्वृन्दमुकुटमणि श्री-मन्नागदेवात्मज श्रीमदनंत भट्ट विर-चिता लिंगप्रतिष्ठा पद्धतिः समाप्ता ** इति लिपि कृत स्यामलालस्तस्ये य ग्रथ स० १९२३ मास माघ. शुक्ल. ११ ॥
२४×१०.३ सें० मी०	१४ (१–१४)	८	३१	पू०	प्राचीन	श्रीराम श्री कासी विश्वेश्वरार्पणमस्तु ॥ श्री अन्नपूर्णा देविभ्यो नम. श्री भैरव-नाथ समर्थ श्री अष्टमातृका देवता नवग्रा देवतार्पणमस्तु । श्री राम ॥
२३.६×११.७ सें० मी०	६	१०	३४	पू०	प्राचीन	इति वास्तुदेवता ॥ शुभभवतु ॥
२०.२×९.३ सें० मी०	११ (१–११)	८	२३	पू०	प्राचीन	इति बौधायनसूत्रोक्त लिंगस्थापन विधि ॥
२४×९.५ सें० मी०	७	९	५०	पू०	प्राचीन	इति भट्ट कमलाकर कृते लिंगार्चा-प्रतिष्ठा विधिः ॥
३२×११ सें० मी०	१	७	२८	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा हैं	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७५९	५७७४	वटुकदीपदान विधि			दे० का०	दे०
७६०	५२८१	वटुकबलि विधि			दे० का०	दे०
७६१	४८३०	वनप्रतिष्ठा विधि			दे० का०	दे०
७६२	४८४६	वनप्रतिष्ठा विधि			दे० का०	दे०
७६३	७७४०	बलिदान विधि			दे० का०	दे०
७६४	३८३१	बलिदान विधि			दे० का०	दे०
७६५	४८३१	बलिप्रदान विधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	१०
२३८×८५ सें० मी०	१	३३	१७	पू०	प्राचीन	इति वटुकदिपदान विधि ॥ शुभ०
२६२×११ सें० मी०	३ (१–२)	१२	३७	अपू०	प्राचीन	इति वटुक वलि विधि ॥
३०३×१२५ सें० मी०	११ (१–११)	१०	४०	पू०	सं०१८७४	इति श्रीवनोतराम जलोतसजी विधि सपूर्णम। सम्वत्सरा १८७४ साके १७३६ समय फाल्गुण मासे शुल्क पक्षे पचम्या बुध वासरे वेलेपिरघुवगमन पुस्तकि समाप्तम ॥
२४६×१० सें० मी०	१७ १–१७	८	२६	अपू०	प्राचीन सं०१७८१	× सम्वत्सरे १७८१ समय भाद्र शुक्ल स्यकादश्या बुधवासर ॥
१३७×६२ सें० मी०	४ (१–४)	६	१५	पू०	प्राचीन	इति वलिदान विधि ॥
३५६×६२ सें० मी०	२	७	४६	पू०	प्राचीन	इति वलिदान प्रकरण समाप्त ॥
२७५×११५ सें० मी०	४ (१–४)	६	४१	पू०	सं०१६४०	इति वलिदान विधि समाप्तम् ॥ सं० १६४० शा १८०५ गौरि द्विज ॥

क्रमांक और विशेष	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७६६	५२२८	वलिवैश्वदेव			दे० का०	दे०
७६७	५८४६	वलिवैश्वदेव			दे० का०	दे०
७६८	७५८०	वलिवैश्वदेव विधि			दे० का०	दे०
७६९	६८६२	वाजपेयहौत्रप्रयोग			दे० का०	दे०
७७०	२३५८	वापीकूपतडागादि-प्रतिष्ठा विधि			दे० का०	दे०
७७१	६६५०	वाल्मीकि रामायण पाठ प्रयोग			दे० का०	दे०
७७२	६६४९	वाल्मीकि रामायण-पाठ प्रयोग			मि० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ मे पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	१०
२८×१२.५ सें० मी०	२ (१–२)	१०	२८	पू०	प्राचीन	इति बल वैश्वदेव क्रिया समाप्तम् ॥
२१.८×६.२ सें० मी०	२ (१–२)	११	४५	पू०	प्राचीन	
२६.३×११ सें० मी०	३ (१–३)	६	४५	पू०	प्राचीन	अथ वैश्वदेव लिप्यते (प्रारभ)
२३.६×१० सें० मी०	२५ (१–२५)	१२	४५	पू०	प्राचीन	इति वाजपेय हौत्र समाप्त ॥
२७.५×१३ सें०मी०	११	१३	२६	अपू०	प्राचीन	
२२.३×१०.५ सें० मी०	८ (१–८)	१०	२६	पू०	प्राचीन	इति सक्षिप्त श्री वाल्मीकि रामायण-पाठप्रयोग ॥ अयं विधि. श्री काशीस्थ ठाकुरद्वारा समीपस्थ श्री विश्वनाथजी अग्निहोत्रीति प्रसिद्ध सोमयाजिना परम कारुणिकेन सगृहीत ॥ तथा श्री सवत् १६५० + + + + ॥
१६.२×६.६ सें० मी०	५ (१–५)	११	२५	पू०	प्राचीन	इति श्री महाहस प्रयाणे उमामहेश्वर-सवादेपचम पत्र ॥५॥ श्री सवत् १६५० श्रावण कृष्ण १२ द्वादश्या + + + + रामदास भट्टात्मजराम कृष्णे-नैतत् विधान सीतला घट्ट समीपस्थ-ठाकुर द्वारा समीप वासि श्री विश्वनाथ अग्निहोत्री + + + + + +

(सं॰सू॰ ४१)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७७३	६६४८	वाल्मीकि रामायणपाठ विधान			दे० का०	दे०
७७४	६६६६	वाल्मीकीय रामायण संक्षेप पाठ प्रयोग			दे० का०	दे०
७७५	५३०१	वाशिष्टी			दे० का०	दे०
७७६	५९४७	वाशिष्ठी			दे० का०	दे०
७७७	१४	वाशिष्ठी हवन पद्धति			दे० का०	दे०
७७८	२२५१	वाशिष्ठी हवन पद्धति			दे० का०	दे०
७७९	५	वाशिष्ठी हवन पद्धति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रन्थपूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६.६×१०.४ सें० मी०	६	१२	२४	पू०	प्राचीन सं०१९४६	श्री वाल्मीकि रामायण पाठ विधान श्री रामभक्तार्थं महता परिश्रमेण संगृह्य लिखित श्रीराम भट्टात्मज राम कृष्ण तैलङ्गेण । श्रीकाशीविश्वनाथ पुरी सवत् १९४६ × × ×
२८.६×११.६ सें० मी०	१२ (१–१२)	६	३६	पू०	सं०१९५०	इति श्री महाल्मीकि रामायण पारायण सक्षेप प्रयोग ॥ श्री सवत् १९५० शके १८१५ विश्वावसुनाम सवत्सरे मार्गशीर्ष शुक्ल तृतीया
२१.४×११.५ सें० मी०	२६ (७–३२)	११	२४	अपू०	सं०१९३२	इति वाशिष्टी समाप्त··· ·· · ··· ··· ·· ···सवदि १९३२ शाके१७९७ वारानाम ग्रामे लिष्यत पपरे पाठक ॥
२३.६×११ सें० मी०	५ (१०–१४)	६	२६	अपू०	प्राचीन सं०१८६६	इति श्री वासिष्ठीकीरिचा समाप्त ॥ श्री रस्तु ॥ मिति कार्तिक वदी ७ सवत् १८६६ · ···॥
१५×१०.५ सें० मी०	११ (१–११)	७	१३	पूर्ण	प्राचीन	
१५.५×१० सें० मी०	२६ (१–२६)	६	१८	पू०	प्राचीन सं०१७८६	इति वासिष्ठी समाप्त ॥ शुभ मगल ददातु ॥ कार्तिक वदि ४ वासरे सवत् १८७६ लिखत प० श्री पाठक जवाहिर सोप ग्रामे विहारी आश्रमे ॥ स्वस्ति । दीर्घायु भूयात ॥४॥
१७×१२.५ सें० मी०	१४	८	१६	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७८०	३५६८	वाशिष्ठी हवन पद्धति			दे० का०	दे०
७८१	३५१५	वाशिष्ठी हवन पद्धति			दे० का०	दे०
७८२	५०४९	वाशिष्ठी होम पद्धति			दे० का०	दे०
७८३	८३८	वाशिष्ठी होम पद्धति			दे० का०	दे०
७८४	६६७	वाशिष्ठी होम पद्धति			दे० का०	दे०
७८५	५००५	वाशिष्ठी होम विधि			दे० का०	दे०
७८६	६८२	वास्तुपूजा			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२२×११.५ सें० मी०	१४ (६–१२, १७–२२)	१०	३०	अपू०	प्राचीन	
२५.४×१५.१ सें० मी०	१६	१४	३०	अपू०	प्राचीन	
२४.२×११.५ सें० मी०	४० (१–३०, ३३–४२	७	२८	अपू०	प्राचीन सं०१६०७	इति श्री ब्रम्हप्रोक्त सहितायां वाशिष्ठी दुर्गोत्सव होम पद्धति समाप्तम् ॥ × × संवत १६०७ वैसाषकृष्ण ६ रवौ ॥
२३.७×१३.२ सें० मी०	७ (४६–५५)	६	२३	अपू०	प्राचीन सं०१६२३	इति श्री होम पद्धित वाशिष्टी सपूरन शुभमस्तु श्रीरस्तु मगल भूयात संवत् १६२३... ... ...लिषत मया यदि शुद्धमसुद्ध वाम मम दोशो न दीयते ॥
२०.५×१०.२ सें० मी०	२५ (२–२६)	६	२५	अपू०	प्राचीन	
२५.७×११ सें० मी०	४० (१–४०)	६	३६	पू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मोक्त वसिष्टोक्त होम विधि समाप्त ॥
२०.८×११ सें० मी०	६	७	३०	पू०	संवत् १६३६	गौरी शंकर शर्मा लिपित्वा · ...

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७८७	२६७६	वास्तुपूजा			दे० का०	दे०
७८८	७४७३	वास्तुपूजादि			दे० का०	दे०
७८९	६२७	वास्तुपूजा विधि			दे० का०	दे०
७९०	६०३६	वास्तुपूजा विधि			दे० का०	दे०
७९१	२१३८	वास्तुपूजा विधि			दे० का०	दे०
७९२	६४१३	वास्तुप्रतिष्ठा			दे० का०	दे०
७९३	३७७३	वास्तुप्रतिष्ठा पूजा-विधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२५.१ × १५.५ सें० मी०	३ (१–३)	१०	३१	अपू०	प्राचीन	
२४.६ × ११ सें० मी०	१३ (२–१४)	८	२८	अपू०	प्राचीन	
२४.८ × १०.२ सें० मी०	५ (१–५)	८	३७	पू०	सं०१६४६	इति वास्तुपूजा विधि समाप्तम् संवत् १६४६ शाके १८११ माघ शुक्ल १ भौम लिपित्वा गौरी शर्मणे ॥
२४.१ × ६.२ सें० मी०	६ (१–६)	६	३५	पू०	प्राचीन	इति वास्तु पूजा विधि ।
२०.५ × १० सें० मी०	१७	८	२१	अपू०	प्राचीन	
२१.४ × ६.६ सें० मी०	१० (१–१०)	१०	३८	अपू०	प्राचीन	अथ प्रतिष्ठावास्तुलिख्यते तत्र प्रकार । (प्रारंभ)
२६.२ × १४.२ सें० मी०	२	१४	५०	पू० (जीर्ण शीर्ण)	प्राचीन सं०१६०६	इति वास्तु पूजा विधि संपूर्न सुभमास्तु-मंगल ददात संवत् १६०६ कातिक कृष्ण १ बु

क्रमाक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रह विशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७९४	४८९६	वास्तुशांति (वास्तु पूजन पद्धति)			दे० का०	दे०
७९५	१००४	वास्तुशांति प्रयोग			दे० का०	दे०
७९६	६४२७	वास्तुशांति प्रयोग	रामकृष्ण भट्ट		दे० का०	दे०
७९७	५१३३	वास्तुशांति प्रयोग			दे० का०	दे०
७९८	२०३२	विजया दशमी पूजन विधि			दे० का०	दे०
७९९	५८४	विजया दशमी पूजन विधि			दे० का०	दे०
८००	६१४८	विघ्नराज प्रायश्चित्त-विधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ		स	द	९	१०	११
२५·८ × ११ ४ सें० मी०	११ (१–११)	८	२६	पू०	सं० १९०६	इति वास्तु पूजन पद्धति समाप्ता ॥ संवत् १९०६ ॥
२४ × १० ३ सें० मी०	११ (१–११)	११	३७	पू०	प्राचीन	अग्निरित्यादिप्रजापत्यत ॥ एकैकयाज्याहुत्यायक्षे ॥
२२ २ × ९ ५ सें० मी०	१० (१–१०)	१०	४४	पू०	प्राचीन	इति श्री भट्ट रामकृष्ण विरचिते आश्वलायन गृह्योक्त वास्तु शाति प्रयोग ॥
२१ ४ × १० ५ सें० मी०	३ (१–३)	१४	४५	पू०	प्राचीन	इति गृहवास्तु शाति प्रयोग ।
२७ ७ × १३ १ सें० मी०	४ (१–४)	१३	३७	पू०	प्राचीन सं० १८२३	इति श्री विजयादशमी पूजा समाप्त ॥ ·· ·······संवत् १८२३ तत्र वर्षे माघ मासे कृष्ण पक्षे प्रतिपदाया १ गुरुदिन लिखित ·· ·····॥
१६ × ११ ५ सें० मी०	८ (१–८)	१६	१०	पू०	प्राचीन सं० १८३६	इति विजयदशमी कर्तव्यता संपूर्ण सं० १८३६ ॥
२३ ५ × १० ५ सें० मी०	११ (१–११)	१२	४४	पू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८०१	७८१५	विनायक शांति			दे० का०	दे०
८०२	५४८१	विवाह			दे० का०	दे०
८०३	६११६/७	विवाह कर्म	रूपलाल गुसाईं		दे० का०	दे०
८०४	४३३७/८	विवाह कर्म			दे० का०	दे०
८०५	३२८३/२	विवाह कर्म			दे० का०	दे०
८०६	५४२	विवाह कर्म			दे० का०	दे०
८०७	५२४३	विवाह कर्म			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६.८×११.१ सें० मी०	३ (१–३)	११	५०	पू०	प्राचीन	इति विनायक शांति ॥ शुभमस्तु
१८.९×१० सें० मी०	२० (२४–४३)	७	२०	अपू०	प्राचीन	
१४.७×९.९ सें० मी०	४० (१–४०)	९	१८	पू०	प्राचीन	इति शापाचार रूपलाल गुशाई कृत संपूर्ण॥ + + इति ग्रहघ्नोक्त विवाह कर्म संपूर्णम् ॥१॥
१९×१३.३ सें० मी०	२४ (७–३०)	१३	२५	अपू०	प्राचीन	इति ग्रहघ्नोक्त वीवा कर्म संपूर्ण ॥
१८.५×१२.८ सें० मी०	१९ (१–१९)	१२	२३	पू०	प्राचीन सं०१८६५	इति विवाह कर्म समाप्त ॥ इति ॥ संवत् १८६५ मिति वैशाप शुदि शुक्र वासरे नम । लिपत्त तोतेराम ब्राह्मणे वहावडि मध्ये ॥
१६×१२.२ सें० मी०	१९ (१–१९)	१०	१८	पू०	प्राचीन सं०१९०८	इति श्री विवाह कर्म समाप्तम् । संवत् १९०८ श्रावण कृष्णा ४ गुरुवासरे लिपत लोति रम । पठनार्थं कन्हैयाराम । शुभमस्तु श्रीः ॥ श्रीरामचंद्र
२७×११.६ सें० मी०	२२ (१–२,४–८,१०,१२–२५)	९	३४	अपू०	प्राचीन	इति विवाहकर्म्म समाप्तम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८०८	५११६	विवाहकर्म			दे० का०	दे०
८०९	१००२	विवाहकर्म			दे० का०	दे०
८१०	५५९६	विवाहकर्म (टीका सहित)	हलायुध		दे० का०	दे०
८११	४२८७	विवाहकर्म			दे० का०	
८१२	६०८२	विवाह टीका			मि० का०	
८१३	४०६५	विवाह दर्पण			दे० का०	
८१४	४६४	विवाह पद्धति	रामदत्त		दे० का०	

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१८७×१४७ सें० मी०	१५	११	२०	अपू०	प्राचीन	
२५५×११ सें० मी०	१० (१–६,११)	१०	४१	अपू०	सं०१८१३	इति विवाह क्रम ॥ सपूर्ण ॥ सवत् १८१३ मति वैसाप शुक्ल १० रवि वासरे ॥ यादृसि पुस्तक दृष्टवा ॥ तादृस लिखित मयापजदि शुद्ध विशुद्ध बा मम दोषो न दियेते ॥ श्रीराम
३०८×१४७ सें० मी०	१५ (४–१८)	१४	५२	अपू०	सं०१८८३	इति श्री विवाह कर्म मत्र व्याख्या हलायुधन कृत विवाह सपूर्णम् · ·· सम्वत १८८३ श १७५८ फाल्गुण कृष्ण ६ सौम्य दिने लिपि कृत मिद ।
२५३×११२ सें० मी०	१७ (२–१८)	११	३१	अपू०	सं०१८४६	इति विवाहकम समाप्त ॥शुभमस्तु॥ सवत १८।४६ समय पाष कृष्ण एका दश्या लिखित रामहित शुक्ल आदारे वंसे ॥ राम कृष्णायनम ॥
१६६×८ सें० मी०	१२ (१–१२)	५	१५	पू०	सं०१६०५	इति श्री विवाह टिका सपूर्ण सवत् १६०५ मीति आषाडवदि ११ वार मगलवार · ···
२३५×८८ सें० मी०	२३ (२५–४७)	७	३५	अपू०	प्राचीन	
२५५×११३ सें० मी०	३४ (१–३४)	१०	३५	पू०	स०१६३२	इति वाक्याथ इति चतुर्थमत्र व्याख्या विवाहकम समाप्तम् हलायुधन ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८१५	२४४	विवाह पद्धति	श्री रामदत्त		दे० का०	दे०
८१६	११८६	विवाह पद्धति			दे० का०	दे०
८१७	११९४/२	विवाह पद्धति	श्री रामदत्त आचार्य		दे० का०	दे०
८१८	४६२	विवाह पद्धति (संस्कृत टीका सहित)			दे० का०	दे०
८१९	४६०९	विवाह पद्धति (कर्मकौमुद्यातर्गत)	कृष्णदत्त अवस्थी		दे० का०	दे०
८२०	५२२१	विवाह पद्धति (सटीक)	रामदत्त		दे० का०	दे०
८२१	४०१०	विवाह पद्धति (सटीक)	पं० गंगासहाय		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१९.२×१२.६ सें० मी०	२२ (१–२२)	१२	१६	पू०	प्राचीन स०१०६७	इति चतुर्थी कम समाप्तम स० १०६७ तिथि ६ बुधवासर मार्गशीप ।
२२.५×८ सें० मी०	२२ (१–२२)	७	३२	पू०	सं०१७२७	अनेचित पिगोधर विपाठी मिद पुस्तक सपूर्ण शुभ मस्तु ॥ सवत् १७२७ ॥ शाके ॥ १५९२ श्रावणे मासि कृष्ण पक्षे तिथौ चतुर्दश्या ॥१४॥ भौमवासरे
१५.२×१२.४ सें० मी०	३६ (३–४२)	१०	१७	अ० पू०	सं०१९१०	इति श्री रामदत्त आचार्य कृते विवाह पद्धति सपूर्णम् शुभ भूयात लिप्यनार्थ गगन आचाथ १९१० पौष शुक्ला ८ भृगु०……
३३×१४ सें० मी०	१६ (१–१६)	१४	५१	पू०	सं०१८६७	इति चतुर्थी कर्म प्रकारः समाप्तमिति श्रीरस्तू ॥
२३.१×११.८ सें० मी०	२६ (१–२६)	१०	२६	पू०	सं०१९०६	इत्यावस्थिक कृष्णदत्त विरचितायां कर्म कौमुद्या विवाह पद्धति प्रकर्ण समाप्त शुभमस्तु सवत ॥ १९०६ जेष्ट शुक्ल ॥ १३ ॥ सोमकौ लिख्यत प० श्री अउजरिया विहारी स्वार्थम् ॥
३३.४×१२.६ सें० मी०	२२ (१–२२)	१०	५०	पू०	प्राचीन	इति श्री रामछति विरचिताया विवाह पद्धति ॥
३२.५×१८.४ सें० मी०	४२ (१–४२)	६	२७	पू०	स०१९५७	इति विवाह प्रकरणम् ॥ + + + + + सवत् १९५७ पडित गगा शहाय कृत ॥

क्रमाक और विषय	पुस्तकालय की आगत सख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८२२	१७७२	विवाह पद्धति			दे० का०	दे०
८२३	५२०३	विवाह पद्धति			दे० का०	दे०
८२४	२०२६	विवाह पद्धति			दे० का०	दे०
८२५	२२६२	विवाह पद्धति			दे० का०	दे०
८२६	२२४४	विवाह पद्धति			दे० का०	दे०
८२७	६५५५	विवाह पद्धति			दे० का०	दे०
८२८	१८६७	विवाह पद्धति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४.२×१०.३ सें० मी०	२२	१०	३५	पू०	प्राचीन	
१४.६×६.२ सें० मी०	२०	१०	१७	अपू०	प्राचीन	अथ वर धर्मार्थकामाय गौरी विवाहः विप्र्ये वर इति सकल्पा पचभू सस्कारा न्कृत्वा लौकिकाऽग्नि स्थापन ... (पत्र-संख्या ३)
३०.२×१४.५ सें० मी०	६ (१–६)	१६	५२	पू०	सं०१८५८	इति विवाह कर्म समाप्तम् सवत् १८५८ फाल्गुन शुक्ला प्रतपदा भृगुवासरे विवाह पद्धति लिषितम्
१८.३×१०.७ सें० मी०	२५ (१–६, ११–२६)	८	१८	अपू०	प्राचीन	
२५.५×१५.२ सें० मी०	४ (६,८-६,११)	१६	२०	अपू०	प्राचीन	
२५.६×१०.८ सें० मी०	४ (४–७)	७	२६	अपू०	प्राचीन	इति विवाह विधि ॥
१७.३×१३.३ सें० मी०	३१	१०	१५	अपू०	सं०१६४३ कृमिकृतित	इति विह कर्म्म समाप्त ॥ अथ चतुर्थी कर्म लिप्यतम् ॥ सं० १६४३ मासाना मासोत्तमासे चैत्रमासे कृष्णपक्षे शुभतिथौ १३ त्रयोदश्या भौमवासरे लिष्यत मीश्र बाहालराम ॥

(सं० सू० ४३)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८२९	१५४०	विवाहपद्धति			दे० का०	दे०
८३०	४५०५	विवाहपद्धति			दे० का०	दे०
८३१	४६२१/३	विवाहपद्धति			दे० का०	दे०
८३२	४२०४	विवाहपद्धति			मि० का०	दे०
८३३	७२०२	विवाहपद्धति			दे० का०	दे०
८३४	४१६०	विवाहपद्धति			दे० का०	दे०
८३५	२७०६	विवाहपद्धति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१७ × १०·२ सें० मी०	१८ (१-७,९-१६ १८-२३)	७	२२	अपू०	प्राचीन	
२३·२ × ११·५ सें० मी०	२५ (१-२५)	८	२४	अपू०	प्राचीन	अथ क्रमप्राप्तो विवाह विधिमुच्यते (प्रारंभ) × × ×
१६ × १०·७ सें० मी०	१३	९	१६	अपू०	प्राचीन	
२२·३ × १७·६ सें० मी०	१९	११	२३	अपू०	प्राचीन	
२७ × ११·८ सें० मी०	१२ (१-१२)	७	३०	अपू०	प्राचीन	अथ विवाहपद्धति लिखते (प्रथमपत्र)
२१·१ × १०·३ सें० मी०	९ (१०-२०)	७	२६	अपू०	प्राचीन	
१६ × १०·५ सें० मी०	११	९	१७	अपू०	सं० १८४९	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८३६	३५०४	विवाहपद्धति			दे० का०	दे०
८३७	१२२५	विवाहपद्धति			दे० का०	दे०
८३८	४०३६	विवाहपद्धति			दे० का०	दे०
८३९	६२६	विवाहपद्धति			दे० का०	दे०
८४०	६२७	विवाहपद्धति			दे० का०	दे०
८४१	१८०८	विवाहपद्धति (टीकासहित)			दे० का०	दे०
८४२	१६०४	विवाहपद्धति (सटीका)			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१८.५ × १३ सें० मी०	२७ (१–२७)	११	२६	पू०	प्राचीन सं० १८७१	इति विवाहपद्धति कर्म समाप्तम् ॥ ······सवत् १८७१ आपाढ शुक्ल प्रतिपत्सनिवासरे लिपीपूर्ति······ ··।
२३.७ × १०.२ सें० मी०	१७ (१–१७)	७	२३	पू०	प्राचीन	इति विवाह समाप्त ॥ मी पौषशुदी ८ शुभ
१६ × १०.२ सें० मी०	३० (१–३०)	७	२८	अपू०	प्राचीन	
१६.५ × १२.५ सें० मी०	२७	६	२२	अपू० कृमिकृतित	सं० १६२१	इति चतुर्थी कर्म समाप्तम् ॥ शुभमस्तु-मगल ददातु ॥ श्री ॥ सवत् १६२१ मिति पौष वदि १३ चद्रवार लिपव मिश्र हरगु (गुन)लाल ॥ पठनार्थं मिश्र लाल ॥ शुभ ॥
२३ × १६ सें० मी०	६ (१-२,७-१३)	२२	२०	अपू०	प्राचीन	
३२.७ × १२.५ सें० मी०	३८ (२-७,६-३८, ४३–४४)	७	४०	अपू०	प्राचीन	
२६.५ × १३.७ सें० मी०	११ (१-४,६-१२)	११	३६	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८४३	३५१४	विवाहपद्धति (सटीक)			दे० का०	दे०
८४४	६६६८	विवाहप्रयोग	कमलाकर भट्ट		दे० का०	दे०
८४५	१६७४	विवाहमन्त्र व्याख्या			दे० का०	दे०
८४६	४०४०	विवाहविधि			दे० का०	दे०
८४७	४७१०	विवाहविधि			मि० का०	दे०
८४८	७५७१/२	विवाहविधि			दे० का०	दे०
८४९	४६२६	विवाहसूत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९०	९०	९०
३१६×१२५ सें० मी०	१० (१–१०)	१०	३७	अपू०	प्राचीन	
२२३×१०३ सें० मी०	११ (१–११)	१०	३४	पू०	सं०१७८८	इति श्री राम कृष्ण भट्टात्मज कमलाकर भट्ट कृतो विवाह प्रयोग ॥ संवत् १७८८ माघ कृष्ण ११ बुधे लिखितं मिद रामहृदापनामक विश्वनाथ भट्टात्मज नीलकंठेन ॥
२२५×१४५ सें० मी०	६ (१–२,६, ११–१३)	२०	३०	अपू०	प्राचीन	
२७×१०५ सें० मी०	४३ (१–४३)	६	२६	पू०	सं०१६१७	इति विवाह विधि समाप्त ॥ संवत् १६१७ ॥ फाल्गुण मासे शुभे कृष्ण पक्षे ॥ तिथौ पंचमीयां ॥ शुक्रवासरे ॥ .. .. ..
२०७×१७३ सें० मी०	११ (१–११)	८	२३	अपू०	आधुनिक	
२१×१६५ सें० मी०	३३ (१–३३)	१८	२१	अपू०	प्राचीन	
१५३×१०२ सें० मी०	५ (१–५)	८	१८	पू०	सं०१८५०	इति विवाह सूत्र लिखित पंडित राम हित ॥ संवत् १८५० भादो वंदे मिति जेठ शुक्ल पंचमी गुरु वासर के पुस्तक समाप्त ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८५०	३७६१	विश्वामित्रकल्प			दे० का०	दे०
८५१	६५७०	विष्णुबलि प्रयोग			दे० का०	दे०
८५२	६६४०	विष्णुबलिप्रयोग			दे० का०	दे०
८५३	१४८४	विष्णुशयनो थापन विधि			दे० का०	दे०
८५४	२७६०	विष्णु षोडश नाम			दे० का०	दे०
८५५	२७८३	विष्णु षोडशोपचार पूजा			दे० का०	दे०
८५६	५७५०	विष्णु सहस्रनाम पद्धति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५.१×१०.७ सें० मी०	४२ (२–४३)	६	३१	अपू०	प्राचीन	इति श्री विश्वामित्रकल्पे वानप्रस्थ-गृहस्थाश्रम धर्मपंचमहायज्ञविधि समाप्त ॥ (पत्रसंख्या–३७) + + +
२४.४×११.१ सें० मी०	४ (१–४)	१०	३८	पू०	सं०१८१६	इति विष्णुबलि प्रयोग ॥ पुस्तकमिद रामडोहकर विश्वनाथ भात्मज भट्टात्मज नीलकंठभट्टेन लिखित स्वार्थं परार्थं च संवत् १८ १६ कार्तिक शुद्ध १०
२२.६×१०.१ सें० मी०	४ (१–४)	६	४१	पू०	प्राचीन	इति विष्णुबलि प्रयोग ।।
१८.८×१० सें० मी०	५ (१,४-७)	६	२४	अपू०	प्राचीन	इति श्री भविष्योत्तर पुराणे विष्णु-शयनायुद्यापन विधि समाप्ती शुक्रा संपूर्ण शुभ भूयात् श्री कृष्णायनम
१२.८×६.६ सें० मी०	२ (१–२)	८	१२	पू०	प्राचीन	इति विष्णु पुराणे षोडस नाम समाप्त ॥
१४×८.४ सें० मी०	३ (१,३,४)	७	१६	अपू०	प्राचीन	
१७.३×६.७ सें० मी०	३	४	१६	अपू०	प्राचीन	

(भ०पु०४४)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८५७	६३१२/७	वृद्धि शांति			दे० का०	दे०
८५८	६६५	वृषाक पद्धति			दे० का०	दे०
८५९	४१६०	वृषोत्सर्ग			दे० का०	दे०
८६०	११३०	वृषोत्सर्ग			दे० का०	दे०
८६१	५५०२	वृषोत्सर्ग			दे० का०	दे०
८६२	५२७७	वृहस्पतिमंत्र न्यास			दे० का०	दे०
८६३	३७५८/२	वेणीमाधव पूजन			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२०८×१४२ सें० मी०	३ (६–८)	१४	३२	पू०	प्राचीन	इति वृद्धि शान्ति संपूर्णा ॥
३२५×१७६ सें० मी०	३	१०	३०	अपू०	प्राचीन	
२२७×६ सें० मी०	७ (१–७)	१२	४४	पू०	सं०१८४५	श्री रस्तु ॥ संवत् १८४५ मिति श्रावण वद्य पचमी लिखत नारायणस्य हस्ताक्षर पुस्तक समाप्त ॥ इद पुस्तक वृषोत्सर्गस्येद ॥
३१×१३ १ सें० मी०	१३ (१–१३)	१२	४०	पू०	सं०१९४२	इति वृषोत्सर्ग गोदान संवत १९४२ आश्विने कृष्णपक्षे च द्वादश्या चद्र वासरे लिखित फकीरचद्रेण पुस्तक शुभदायक ॥ श्रीशिवायनम शुभंभूयात् ॥
२७४×१७५ सें० मी०	१ अर्ध (१–४)	३६	३०	अपू०	जीर्ण प्राचीन	
१५६×११५ सें० मी०	१	१५	२०	पू०	प्राचीन	वृहस्पते गृत्समदो वृहस्पतिस्त्रिष्टुप् छदः न्यासे विनि०'''' '' (प्रारंभ)
१५७×८५ सें० मी०	९ (२–१०)	११	२३	अपू०	प्राचीन सं०१९०४	इति श्री पदमपुराणे पाताल खंडोक्त श्री वेणीमाधव पूजन समाप्त ॥०॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८६४	६३७२	वेदपारायण विधि			दे० का०	दे०
८६५	५०५४/१५	वेदपारायण विधि			दे० का०	दे०
८६६	१२१६	वेदोक्तशिवार्चन पद्धति			दे० का०	दे०
८६७	६६३१	वैदिकमंत्र संग्रह			दे० का०	दे०
८६८	६६२६	वैदिकमंत्र संग्रह			दे० का०	दे०
८६९	६४३३	वैधृतिशांति प्रयोग			दे० का०	दे०
८७०	५०५४/१५	वैशाखस्नान विधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश या विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२·४×९·१ सें० मी०	५ (१–५)	१०	३६	पू०	प्राचीन	इति ऋग्विधानाद्युक्तो वेदपरायण विधिः ॥
१६×७·८ सें० मी०	१३½	७	२१	अपू०	प्राचीन	
२३·१×१२·३ सें० मी०	४४ (१–४४)	४	१३	पू०	प्राचीन	इति वेदोक्तशिवार्चन पद्धति । शुभम् ।
२४·५×११·१ सें० मी०	४ (१–४)	६	२६	पू०	प्राचीन	
२४·३×११·१ सें० मी०	३ (१–३)	१०	३५	पू०	प्राचीन	
२२·३×८·८ सें० मी०	३ (१–३)	७	२७	पू०	प्राचीन	
१६×७·८ सें० मी०	४½	७	२१	अपू०	प्राचीन	इतिस्तोत्रम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८७१	७६४७	वैशाखाद्यापन			दे० का०	दे०
८७२	४४८५	वैश्य सध्या			दे० का०	दे०
८७३	१६२०	वैश्व (वलिवैश्व)			दे० का०	दे०
८७४	६३६१	वैश्वदेव			दे० का०	दे०
८७५	५७५८	वैश्वदव विधि			दे० का०	दे०
८७६	५८१६	वैश्य विधि			दे० का०	दे०
८७७	६४२	व्यास पूजा	शकराचार्य		दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठो का आकार	पत्र सख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्ति सख्या और प्रति पक्ति मे अक्षर सख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वत मान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७ ३ × ११ ४ सें० मी०	२	६	३५	अपू०	प्राचीन	इति वैशाखोद्यापनविधि ॥
२५ × १० ४ सें० मी०	२ (१–२)	८	४२	पू०	सं० १९२३	इति वैश्य सध्या समाप्तिमगात स० १९२३ वैशाख शुक्ला ८ श० वा० ॥
२५ ५ × १० ७ सें० मी०	५ (१ ३–६)	१०	३५	पू०	प्राचीन सं० १८७३	इति वैश्वम समाप्तम पौषमासे असिते पक्षे दशम्या सनिवासरे ॥ नयन मिश्र द्विजे नेद लिषित पुस्तग् मिद ॥ सवत् १८७३ शकेश १७३८ शुभमस्तु ॥
१४ ७ × ८ ३ सें० मी०	६ (१–६)	६	२४	अपू०	स० १९३५	इति वैश्वदेव समाप्त ॥ स्वार्थं परोप काराय ॥ शिवाय गुरवे नम ॥ सवत् १९३५ शके १८०० ॥
२६ ४ × २१ ३ सें० मी०	१ (खर्रा)	२०	३३	पू०	स० १८८६	इति श्री वैस्वदेव पद्धति सपूर्णं ॥ समाप्त ॥ श्री रस्तु ॥ स० १८८६ के उपरात चै० व० ७ मु० वेरेठी लिष्यत प० विद्रुवा सुपनाल ॥
२७ ३ × ११ ४ सें० मी०	२ (१–२)	११	३२	पू०	प्राचीन	इति वैश्व विधि ॥ स० १९३२ मा० मा० वृ० ४ लि० ॥
१३ × १० ५ सें० मी०	६ (३–८)	१२	१५	अपू०	प्राचीन	इति छकराचार्य विरचित व्यास पूजा समाप्ता ॥ श्री हरहराण्यर्णद् ॥

क्रमाक और विषय	पुस्तकालय की आगतसख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८७८	१८४२	व्रतवध			दे० का०	दे०
८७९	४८१३	व्रतार्क			दे० का०	दे०
८८०	५९२६	व्रतार्क			दे० का०	दे०
८८१	६९४१	ब्रह्मचारीव्रतलोप-प्रायश्चित्त			दे० का०	दे०
८८२	१२४४	ब्रह्मयज्ञ			दे० का०	दे०
८८३	५२६६ / २	ब्रह्मयज्ञ			दे० का०	दे०
८८४	७०५२	ब्रह्मयज्ञ तर्पण			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	ग	द	९	१०	११
१४ × १२·३ सें० मी०	२	१०,	१८	अपू०	प्राचीन (खंडित) जीर्ण	इति व्रतबंध व्रतादेश व्रतविर्ग तृतीय कर्म समाप्तम्""संवत् १६१५ ?मिति भाद्रपद वदि १ भृगुवासरे ॥ लिपित मिश्र नयन ॥ पठनार्थं नानक पचोलि ॥
२६.३ × १०.३ सें० मी०	१६ (१५–३०)	८	३७	अपू०	प्राचीन	
२३·५ × १०·६ सें० मी०	१७ (१–१७)	१३	३६	अपू०	प्राचीन	
२२.७ × १०.२ सें० मी०	२ (१–२)	१०	३६	पू०	सं० १७१८	लिखितमिद रामहृदस्य विश्वनाथ भट्ट सुत नील कंठ भट्टेन वैशाख शु० ११ संवत् १७१८ ००
२०.८ × ६.२ सें० मी०	५ (१–५)	७	२५	पू०	प्राचीन	अथ ब्रह्मयज्ञ समाप्त ॥ ··· ······ भिष्म युधिष्ठिर संवादे सहस्त्रशत रामायण समाप्त । श्री कृष्णार्पणमस्तु॥
१६ × ८ सें० मी०	२ (१–२)	६	२६	पू०	प्राचीन	ब्रह्मयज्ञ समाप्त । शुभमस्तु
२७.२ × १०.६ सें० मी०	११ (१–११)	६	३४	पू०	प्राचीन सं०१८६२	इति श्री ब्रह्मयज्ञतर्पण समाप्तम् शुभमस्तु मि० वै० सु० १२ मंगलवार समाप्तम् स० १८६२ लिखित पुरशोतम रलिराने रोवा बैठे ।
(सं० सू० ४५)						

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८८५	४८६६	ब्रह्मशापविमोचन			मि० का०	दे०
८८६	६८२८	ब्राह्मणाच्छंसी प्रयोग			दे० का०	दे०
८८७	६६६६	ब्राह्मविवहागभूत-वाग्दान विधि			मि० का०	दे०
८८८	२२६६	शकारार्चन दीपिका पद्धति	श्रीपति		दे० का०	दे०
८८९	४७२६	शमीपूजन			दे० का०	दे०
८९०	५०२२	शय्यादान			दे० का०	दे०
८९१	४२२७	शय्यादान प्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
१६·६×८·२ सें० मी०	३ (१–३)	६	२२	पू०	प्राचीन सं०१६१८	इति श्री रुद्रया जामले चंडिका ब्रह्मशाप विमोचन सपूर्णम् ।। ...... सं०१६१८ ।।
२३·४×१० सें० मी०	७ (१–७)	११	३०	पू०	प्राचीन	इति ब्राह्मणाछसी प्रयोग समाप्त ।।
२२·३×१०·३ सें० मी०	३ (१–३)	६	३५	पू०	प्राचीन	
२५·३×६·५ सें० मी०	७१ (६–७६)	८	२६	अपू०	प्राचीन	
२०·६×१०·१ सें० मी०	४ (२–५)	१०	२८	अपू०	प्राचीन	इति शमीपूजन समाप्त शुभ भूयात् ।। राम...... . ...
२१·२×६·७ सें० मी०	१	८	४०	अपू०	प्राचीन	
२१·६×८·८ सें० मी०	३ (१–३)	६	३४	अपू०	प्राचीन	श्री गणेशायनम ।। अथ शय्यादान ।। (प्रारंभ)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८९२	३००३	शांतिकर्म			दे० का०	दे०
८९३	६४३२	शांतिरत्न (ज्वरशांति प्रयोग)			दे० का०	दे०
८९४	५१	शांतिविधान			दे० का०	दे०
८९५	६३५१	शांतिविधि			मि० का०	दे०
८९६	६४२५	शांतिसार			दे० का०	दे०
८९७	२१२	शारदनवरात्र			दे० का०	दे०
८९८	६३८१	शालग्राम पंचायतन दान विधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३०.६×१५.१ सें० मी०	१३ (१–१३)	१२	३८	अपू०	प्राचीन	
२१७×१० सें० मी०	२ (१–२)	१०	४२	पू०	प्राचीन	इति शांतिरत्ने ज्वरशांति प्रयोग ॥
२६.५×१२.२ सें० मी०	८	११	३०	अपू०	प्राचीन	
२४.२×१५.३ सें० मी०	८ (१–८)	१४	२६	अपू०	प्राचीन	
२२.७×१०.३ सें० मी०	१० (१–११) (पत्र १ पर दानवर)	१२	५०	पू०	प्राचीन	इति वैधृतिव्यतीपातसंक्रांतिजनन शांति ॥
२४२×११ सें० मी०	१४	११	३७	अपू०	प्राचीन	
२०.५×६ सें० मी०	१	१३	३३	अपू०	प्राचीन	इति पंचायतन दान विधि

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८९९	६३६२	शिलान्यास विधि			दे० का०	दे०
९००	४२८२	शिव पार्थिव पूजा			दे० का०	दे०
९०१	४०५१	शिवपूजन			दे० का०	दे०
९०२	२८३८	शिवपूजन			दे० का०	दे०
९०३	८१२	शिवपूजनन्यास			दे० का०	दे०
९०४	८११	शिवपूजनन्यास			दे० का०	दे०
९०५	४०३८	शिवपूजनपद्धति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८ ब	८ स	८ द	६	१०	११
१५×७२ सें० मी०	६ (१–६)	६	२५	पू०	स० १८५४ शाके१७१६	इति शिलान्यास विधि ॥ श्री सवत् १८५४ विभवनाम सवत्सर फाल्गुन कृष्ण ७ शके १७१६ ॥
१५६×११६ सें० मी०	१४ (१–१० १३–१८)	८	१६	अपू०	प्राचीन	इति शिव पार्थिव पूजन सपूर्ण समापत शुभ मगल मस्तू ।
२१×१०७ सें० मी०	५ (१२–१३ १५–१७)	७	२६	अपू०	स०१६१२	इति शिवपूजन सपूर्णम् शुभ सवत १६१२ ॥
१४६×८६ सें० मी०	६ (१–६)	८	१७	अपू०	प्राचीन	
२२४×१०६ सें० मी०	६ (१,३,५–६,१०–११)	१२	२७	अपू०	प्राचीन सं० १८७२	इति श्री इतिहास्येन पूजा विधि समाप्तिमगमत ॥ सवत् १८७२ ॥
२२४×१०६ सें० मी०	६	१२	२८	अपू०	सं० १८७२	इति श्री इति हा स्येन पूजा विधि समाप्तिमगमत् ॥ सवत् १८७२ ॥
१५५×८२ सें० मी०	१५ (१–१५)	७	२२	पू०	स० १६०८	इति शिवपूजन सपूर्णम् ……… पौषशुक्ल १० भृगौ सवत् १६०८ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६०६	१३३८	शिवपूजनपद्धति			दे० का०	दे०
६०७	३०४६/६	शिवपूजन विधि			दे० का०	दे०
६०८	१५१०	शिवपूजन विधि			दे० का०	दे०
६०९	४३३७/८	शिवपूजा			दे० का०	दे०
६१०	२६८७	शिवपूजा			दे० का०	दे०
६११	१६०४/४	शिवपूजा			दे० का०	दे०
६१२	१४८३	शिवपूजा			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठ का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२१७×६५ सें० मी०	१५ (१-१५)	७	३२	पू०	प्राचीन सं०१८७१	इति श्री शिवपूजनपद्धतिसंपूर्णं शुभमस्तु संवत् १८७१ समंभाद्रपदकृष्ण षष्ट्या रविवासरे ॥
१९.७×१३.१ सें० मी०	३	२१	१५	पू०	प्राचीन	इति विसर्जन ॥
१६×८५ सें० मी०	८ (२-४,७-११)	७	१८	पू०	प्राचीन	
१६×१३.३ सें० मी०	१४ (४२-५५)	१२	२५	पू०	प्राचीन	इति रुद्रामल शिवपूजा सपूर्ण ॥
१९.५×११.५ सें० मी०	६	६	२१	पू०	प्राचीन सं०१९१८	इति शिवपूजा सपूर्ण संवत १९१८ ॥
१३.६×७.६ सें० मी०	२ (५-६)	८	१३	अपू०	प्राचीन	इति शान्तियम् ॥
१८.८×११.२ सें० मी० (सं०मू०४६)	६ (५-१०)	७	१८	अपू०	प्राचीन सं०१८८८	इति शिव पूजा समाप्ति सं०१८८८ ॥ श्रावण वदी त्रयोदशी १३ ॥ शनिवासरे ॥ शुभ मगल ददातु ·······

क्रमाक और विषय	पुस्तकालय की आगतसख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६१३	७००५	शिवपूजा			दे० का०	दे०
६१४	३६२५	शिवपूजा			दे० का०	दे०
६१५	७८७७	(विश्वनाथ) शिवपूजा-तरगिणि			दे० का०	दे०
६१६	४०७१	शिवपूजाविधान			दे० का०	दे०
६१७	६६२	शिवपूजाविधि			दे० का०	दे०
६१८	२४७१	शिवपूजाविधि			दे० का०	दे०
६१९	४५३३	शिवपूजाविधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२१ ५।×१० ३ सें० मी०	८ (६–१३)	६	२५	अपू०	प्राचीन	इति रुद्रयामले शिवपूजावेदोक्तसपूर्ण। इद प्रति लिपत कार्तिक कृष्णा १० । चद्रवासरे इद प्रति लिपत रामधन मिश्र २ अहिरवा मध्ये आत्म पठनार्थं ॥+ + + +
१५ ८×७ ८ सें० मी०	६ (२–१०)	८	१६	अपू०	प्राचीन सं०१८५४	इति शिवपूजा समाप्त ॥ मत्र हीन० गछ जातिदेव गणा सर्व पूजा+ + + + + स० १८५४
२१ ५।×६ ५ सें० मी०	१० (१-६, ६-१२)	६	२६	अपू०	प्राचीन	
१७ ४×८ ८ सें० मी०	६ (१–६)	१०	२०	पू०	प्राचीन सं०१६०२	इति श्री वेदोक्त सिव पूजा विधान सपूर्ण समाप्त जेष्ट सुदि २ सवतु १६०२ · ''॥
३३×१३ सें० मी०	२	४८	२६	पू०	प्राचीन	इति पूजा विधि समाप्ता ॥
२३×१० ७ सें० मी	३ (१,४ ५)	६	३७	अपू०८	प्राचीन।	इति श्री शिवपद्धतौ शिवपूजा विधि ॥ सपूर्ण समाप्तम् ॥ शुभमस्तु मगल ददातु ॥
२४ ३×१० १ सें० मी०	६ (४–६)	८	३५	अपू०।	प्राचीन सं०१६१७	इति शिवपूजाविधि समाप्त शुभमस्तु ज्येठे मासे त्रस्न पक्षे तिथौ १३ भृगु वासरे सवत १६१७ लिपत प श्री रिछारिया हर परसाद ॥

क्रमाङ्क और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६२०	१२५८	शिवपूजाविधि			दे० का०	दे०
६२१	४६१७/२	शिवपूजाविधि			दे० का०	दे०
६२२	४८८५	शिवपूजाविधि प्रतिष्ठा			दे० का०	दे०
६२३	४६७६/२	शिवप्रतिष्ठा विधि			दे० का०	दे०
६२४	१२७५/२	शिव मानसपूजा			दे० का०	दे०
६२५	४२३	शिव रहस्यमहालिंगार्चन			दे० का०	दे०
६२६	१४८२	शिवलिंग (पूजा-तर्पणम्)			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२९ × १४ सें० मी०	७	१२	३५	पू०	स०१८३४ शके१७३६	इति हाम्येन पूजा विधि समाप्ति मगमत ॥ सवत् १८१४ शाके १७३६ वैशाख शुदि चतुर्दशी बुधवार पुस्तग लिखि है।
१५.१ × ६.६ सें० मी०	३	८	१५	अपू०	प्राचीन	इति शिवपूजा विधि. सपूर्ण ॥
२२.५ × १०.६ सें० मी०	१३ (१–१३)	१०	२८	पू०	सं०१८७२	इति श्री इतिहास्येन शिव पूजा विधि प्रतिष्ठा समाप्ता ॥ शुभमस्तु ॥ सवत् १८७२। पौष शुदि द्वितीया २ चद्र वासरे लिखितमिद पुस्तक लक्ष्मणाभिधानेन चडिपुरमध्ये शुभ॥
१५.८ × ६.५ सें० मी०	१४ (२–१४)	१०	२४	पू०	प्राचीन स०१८८४	इति शिव प्रतिष्ठा समाप्तम् शुभ भूयात यादृश पुस्तक दृष्टा तादृश लिखत मया यदि शुद्ध वा मम दोषो न दियते १ सवत १८८४ तत्रवर्षे माघ मासे शुक्ल पक्षे × ×
१५ × ६.५ सें० मी०	२	८	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री वेद वेदात परिकर्ण शिव मानवपूजा समाप्त ॥
१९.२ × ११ सें० मी०	१४ (१–१४)	८	१७	पू०	प्राचीन	इति श्री शैव पुराणे शिव रहस्ये महालिंगार्चन विवर्णननामषट्विंशोध्यायः। यादृश पुस्तक दृष्टा तादृश लिखितमया यदि शुद्धम शुद्धवामम दोषो नदीयते लेखक पाठकयोर्मंगल शुभमस्तु।
२०.६ × ११.२ सें० मी०	३ (१–३)	६	२६	पू०	प्राचीन स१६०६	इति श्री पार्थिवेश्वर चिंता मनि शिव लिङ्ग पूजा तर्पण सपूरणम् ॥ स० १६०६ शाके १७७३ अधिक

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६२७	६८२	शिवलिंगप्रतिष्ठा-प्रयोग			दे० का०	दे०
६२८	४०५२	शिवस्थापन पूजन विधि			दे० का०	दे०
६२९	६२१५	शिवार्चन पद्धति			दे० का०	दे०
६३०	४७६५	शिवार्चन विधि			दे० का०	दे०
६३१	५०२१	शिबिकादान			दे० का०	दे०
६३२	६६३७	शुक्लसूत्र परिशिष्ट			दे० का०	दे०
६३३	११७७	शुद्ध एकादशाह			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
४२.२ × ६.२ सें० मी०	२ (१–२)	८	६६	अपू०	प्राचीन	
२३ × १० सें० मी०	४ (१–४)	१०	३५	पू०	सं०१६०८	इति शिवस्थापन पूजन विधि समाप्तम् ॥ श्रा० श० १४ रवौसवत् १६०८ अस्थित ·······
१६.५ × ११ सें० मी०	२ (२–३)	१०	१८	अपू०	प्राचीन	इति शिवार्चन पद्धति ॥
३० × १४ सें० मी०	१ (खर्रा)	३८	१६	पू०	प्राचीन सं०१८६७	इति बौधायन सूत्रोक्त शिवार्चन विधि ॥ सं० ॥ १८६७ वैशाख शु ॥ ३ पराज्य इत्युनाम्ना भणा भट्टेन लिखित ॥
२१.२ × ६.७ सें० मी०	२ (१–२)	८	३६	अपू०	प्राचीन	
१७.१ × ७.५ सें० मी०	६ (१–६)	८	३०	पू०	प्राचीन	इति कात्यायनोक्तं शुक्ल सूत्र परिशिष्टं समाप्त ॥ श्री रामचन्द्रायनम । नीलकंठ ज्योतिर्विदात्मजेन गोविंदेन शुक्ल सूत्र पुस्तक लिखित + + + + ॥
२२.१ × १२.७ सें० मी०	६ (१–६)	१६	२८	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विशेष	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
९३४	८२८	शुद्धिविवेक	रुद्रधर		दे० का०	दे०
९३५	५२६२	शौनककारिका			दे० का०	दे०
९३६	५२००	श्राद्धकर्म			दे० का०	दे०
९३७	१३२४	श्राद्धकर्म			दे० का०	दे०
९३८	१६४६	श्राद्धकर्म पद्धति			दे० का०	दे०
९३९	१६७	श्राद्ध काण्ड	भट्टोजी दीक्षित		दे० का०	दे०
९४०	१४६३	श्राद्ध चन्द्रिका	दिवाकर		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ में पक्तिसख्या और प्रति पक्ति में अक्षरसख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२८४×९५ सें० मी०	१०० (१–१००)	७	४०	अपू०	प्राचीन	
२३×९६ सें० मी०	१	२०	३५	अपू०	प्राचीन	श्री गणेशायनम शौनक कारिका ॥ (प्रारभ)
२२८×९६ सें० मी०	३ (१–३)	७	२९	पू०	प्राचीन सं०१८०२	श्राद्धाहनितु सप्राप्ते भवेन्निरशनोपि वेति ।'''लिखितमिद पुस्तक रामहृदोपनामक नीलकठेन पौष वदि १ सवत् १८०२''''''''''''''' ।
२१×११५ सें० मी०	१३ (२–१४)	११	२८	अपू०	प्राचीन	
३०×१३ सें० मी०	८ (६५–६९, ७४–७६)	१२	४५	अपू०	प्राचीन	
२११×९ सें० मी०	२४ (१–२४)	१४	४३	पू०	प्राचीन स०१६९७ श०१५६२	इति पदवाक्य प्रमाण श्री लक्ष्मीधर सूरे सूनुना भट्टोजिदीक्षितेनरचिताया श्री चतुरविशति मुनिमत व्याख्या श्राद्ध काडम । सं०१६९७ शके १५६२ विरोधिनि सविता माघसित द्वादश्या प्रयागेयाज्ञवल्क्यो पेंड्भटोपाध्याय सूनुना भट्टोपाध्यायान तेना लेखीदम् ।
२०५×११ सें० मी०	२६	१०	२५	पू०	प्राचीन	इति श्री भारद्वाज महादेव भट्टात्मज सकल विद्या निधान श्री दिवाकर विरचिताया श्राद्ध चद्रिकाया महालय श्राद्धानि ॥
(सं०सू० ४७)						

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६४१	६८४१	श्राद्धचंद्रिका प्रकाशानुक्रमणिका	वैजनाथ		दे० का०	दे०
६४२	३८३८	श्राद्धदीपिका			दे० का०	दे०
६४३	५५७४	श्राद्धनिर्णय			दे० का०	दे०
६४४	६५५७	श्राद्धपद्धति			दे० का०	दे०
६४५	६६८८	श्राद्धपद्धति			दे० का०	दे०
६४६	३४७१	श्राद्धपद्धति			दे० का०	दे०
६४७	३६७२	श्राद्धपद्धति	सोमराग		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथपूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२७.६×११.४ सें० मी०	८१ (१–८१)	१०	४३	पू०	प्राचीन सं०१७८२	इति श्री दिवाकरात्मज वैजनाथ विरचिता श्राद्धचंद्रिका प्रकाशानुक्रमणिका समाप्ता ॥ सवत् १७८२ श्रावण सुदि १२ × × × म०१७८६ ज्येष्ठवदि १ शोधितमदोभारद्वाज काशीनाथेन + ॥
२४.५×१२.२ सें० मी०	१६ (१२–२७)	६	२४	अपू०	सं०१८१७	सपिंडी श्राद्ध कर्तव्य ॥ ·········· ··· ··· ···शुभमस्तु सवत् १८१७ ॥
२२.८×११ सें० मी०	३ (२०,२८,२९)	६	२७	अपू०	प्राचीन	
२२.४×८.८ सें० मी०	८ (१–८)	६	२६	पू०	प्राचीन	इति कोकिल ऋषिमत संक्षेपत ॥ सवत् १६६६ वर्षे पौष मासे शुक्लपक्षे + + + + + ॥
२१.७×१६.८ सें० मी०	१२ (१–१२)	१४	२३	पू०	प्राचीन	
२१.४×१२ सें० मी०	७ (१–७)	१४	३६	पू०	सं०१८५६	इति श्री रूपरति समाप्त शुभमस्तु सवत् १८५६ अघनवदि १० सनीचर लिपत्तपुमानसुक्ल श्री जमुना चैनम ···
२२.३×८ सें० मी०	६३ (१–६३)	७	३८	पू०	प्राचीन सं०१८७१	इति श्री क्षेमराम कृता श्राद्धपद्धति समाप्ता सुभमस्तु सुभभूयात् सवत् १८७१ शाके १७३६ अधिक माद्रे मासि शुक्ल पक्षे तिथौ त्रयोदश्यां रविवासरे लिखितमिद पुस्तक वेणीप्रसाद त्रिपाठिना ·····

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६४८	५४६२	श्राद्धपद्धति			दे० का०	दे०
६४९	६७८७	श्राद्धपद्धति			दे० का०	दे०
६५०	७२६७	श्राद्धपद्धति			दे० का०	दे०
६५१	३४६०	श्राद्धपद्धति	रघुनाथ भट्ट		दे० का०	दे०
६५२	४११५	श्राद्धपद्धति			दे० का०	दे०
६५३	३६६६	श्राद्धपद्धति			दे० का०	दे०
६५४	५१७६	श्राद्धपद्धति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	ग्रंथ आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२०.१×१०.६ सें० मी०	११ (१–११)	११	२२	पू०	जीर्ण सं०१८८८	इति श्री श्राद्धपद्धति समाप्त ॥ संवत १८८९ (८) मिति आश्विनवदी २ गुरु वार लिषत गंगाधर पाठ ...
२५.७×१०.५ सें० मी०	९ (१–९)	९	३७	पू०	प्राचीन सं०१९०४	इति श्राद्ध पद्धति समाप्त ॥ माघकृष्ण ११ भौमक संवत् १९०४ व शाके १७६९॥
२२.२×९.२ सें० मी०	४० (१–३०, ३३–४२)	८	३१	अपू०	सं०१९२१	इति द पुस्तक श्राद्धपद्धति समाप्त संवत १९२१ मि० पौ० शु १ गुरुवार
१९.७×१० सें० मी०	६९ (२–७०)	८	२७	अपू०	प्राचीन	इति श्री मत्पदवाक्य प्रमाणज्ञ सुवि वरविसरनातीरसराघ्य भट्ट मरा-धवात्मज भट रघुनाथ विरचिता श्राद्धपद्धति संपूर्ण ॥ ...
२४.४×१०.६ सें० मी०	२२ (२–२१ ३८–३९)	६	२१	अपू०	प्राचीन सं०१८५८	ईति श्राद्ध समाप्त ॥ समत १८५८ प्रमादनाम सवत्सरे वैशाष वदय पच-मित दिन समाप्त ॥ (पत्र सं० ३९)
२३.३×१०.२ सें० मी०	१६ (२२–३७)	६	२२	अपू०	प्राचीन	
२५.२×९.५ सें० मी०	१०	१०	३१	अपू०	प्राचीन	

क्रमाङ्क और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकर	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
९५५	३८२६	श्राद्धपद्धति			दे० का०	दे०
९५६	५७४१/२	श्राद्धपद्धति			दे० का०	दे०
९५७	१६६९	श्राद्धपद्धति			दे० का०	दे०
९५८	५१३१	श्राद्धप्रकार			दे० का०	दे०
९५९	४५१८	श्राद्धप्रकाश	इन्द्रदत्तोपाध्याय		दे० का०	दे०
९६०	३४८७	श्राद्धप्रयोग			दे० का०	दे०
९६१	४६७४	श्राद्धप्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो कौन-सा भाग है उसका विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ क	ख	ग	घ	९	१०	११
१६३×६१ सें० मी०	८ (१,५–१०, १०)	४	२८	अपू०	प्राचीन	
१८१×१३६ सें० मी०	२	१६	२१	अपू०	प्राचीन	
२१७×११२ सें० मी०	५ (१,३–६)	१०	३०	अपू०	प्राचीन	
१५८×६३ सें० मी०	३ (१–३)	८	२२	अपू०	प्राचीन	
३४४×१३६ सें० मी०	२६ (१–२६)	१०	३१	पू०	प्राचीन सं०१६२७	इति श्री श्राद्धप्रकाशे इन्द्रदत्तोपाध्या कृते अधुना श्राद्धार्थ सपिण्डन विधि तृतीय प्रकाश ।३। श्री संवत् १६२७ । ज्येष्ट मासे शुक्ल पक्षे प्रतिपदा मगल वासरे द्विजन रामभरोसेन श्राद्धप्रकाश लिख्यते ॥
२१७×१०५ सें० मी०	२३ (१–२३)	११	२४	पू०	सं०१६५०	श्री संवत १६५० शाके १८१५ विश्वा-वसु नाम संवत्सरे अमान्तमानेन आषाढ कृष्ण ६ षष्ठ्यां गुरुवासरे श्री क्षेत्र काश्यां रामदासराम भट्टा त्मज रामकृष्ण तैलङ्गेन धार्मिक जनमोनल्हादनाया असाप्रदायिकोय श्राद्धप्रयोगो लिखित
२४१×१०१ सें० मी०	४ (१–४)	६	३८	पू०	प्राचीन	श्राद्ध संपूर्णता यातु प्रासादादभव + + + + + + +॥

क्रमाङ्क और विषय	पुस्तकालय की आगमसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
९६२	५५७९	श्राद्धप्रयोग			दे० का०	दे०
९६३	७०१५	श्राद्धप्रयोग			दे० का०	दे०
९६४	१७१३	श्राद्धप्रयोग			दे० का०	दे०
९६५	६९१	श्राद्धप्रयोग			दे० का०	दे०
९६६	५९५८	श्राद्धविधि			दे० का०	दे०
९६७	१६२२	श्राद्धविधि			दे० का०	दे०
९६८	५६३९	श्राद्धविधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ म पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति म अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	१०
२७ ६ × ११ २ सें० मी०	५६ (३-५,७-१०, १२-१६,२१-३४,३६-३७, ३६-६५,६७)	१०	४०	अपू०	प्राचीन	……गरुड पुराणादौ श्राद्ध प्रयोग लिख्यते (पत्र सं० ३)
१७ ८ × ६ ५ सें० मी०	११ (१-११)	६	२४	अपू०	प्राचीन	
१७ ४ × ६ ४ सें० मी०	१० (१-१०)	७	२४	अपू०	प्राचीन	
१६ ५ × ६ ६ सें० मी०	१० (१-३, ५-११)	६	२५	अपू०	प्राचीन	इति श्राद्ध सपूर्ण शुभम श्री गणेशाधनम सीताराम ॥
२१ ८ × ८ ७ सें०मी०	१० (१-१०)	७	२६	पू०	सं० १७४४	इति श्राद्ध विधि समाप्त शुभमस्तु सवत १७४४ आश्विन वदि १० मगल वासरे कस्य लिपितमिद…… ॥
२३ ७ × ७ ८ सें० मी०	१	१६	११	पू०	प्राचीन	
२८ × ११ ८ सें० मी०	१३	१०	३६	अपू०	प्राचीन	

(सं०सू० ४८)

क्रमाक और विषय	पुस्तकालय की आगतसख्या वा सग्रहविशेप की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६६६	१४१८	श्राद्धविधि			दे० का०	दे०
६७०	२२६	श्राद्धविधि			दे० का०	दे०
६७१	२२३५	श्राद्धविवेक			दे० का०	दे०
६७२	४८५१	श्राद्धविवेक	रुद्रधर		दे० का०	दे०
६७३	४४२३	श्राद्धविवेक (प्रेतक्रिया)	कृष्णदत्त		दे० का०	दे०
६७४	२१८२	श्राद्धविवेक			दे० का०	दे०
६७५	३४८५	श्राद्धसार			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
३०.६×१३ सें० मी०	२४	१२	४२	अपू०	प्राचीन	
२७×११.७ सें० मी०	१० (१–१०)	११	४३	अपू०	प्राचीन	
२७.५×१०.३ सें० मी०	३ (१–३)	११	३२	पू०	प्राचीन सं०१६३५	सवत् १६३५ तमसे फलगणमसे कृप्न पक्षे शुभतिथी १ लीखत हरसण सहाय''........
२६.४×१०.६ सें० मी०	३० १–३०	८	२६	पू०	प्राचीन	इति श्री भट्टोपाध्याय श्री रुद्रधर कृते श्राद्ध विवेक श्रीनारायणयनम + + + + + + ॥
२५.६×१०.७ सें० मी०	१५ (२६–४३)	११	३६	अपू०	प्राचीन सं०१६१५	इति श्री कृष्णदत्त प्रकाशिकाया पितृभक्तिलताया श्राद्धं देहीकेति कर्त्तव्या सपूर्णम्॥ चैत्रमासे कृष्णपक्षे अष्टम्या शनिवासरे लिखित दत्तारामेण पठनार्थस्वमात्मने ॥ शुभमूयात् मगल ददातु ॥ संवत्१६१५॥
२७.५×१४.२ सें० मी०	६७ (१–५१, ५३–६८)	१३	३०	अपू०	प्राचीन	
२०.२×६.५ सें० मी०	१४ (१–१४)	६	३२	पू०	प्राचीन	भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा भृगुवासरे पुस्तक श्राद्ध सकल्प समाप्त ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
९७६	३४८६	श्राद्धसंकल्प			दे० का०	दे०
९७७	३४९८	श्राद्धसंकल्प			दे० का०	दे०
९७८	५५९८	श्राद्धसूत्र	कात्यायन		दे० का०	दे०
९७९	५५६६	श्राद्धसूत्र			दे० का०	दे०
९८०	४११३	श्री वेंशवलीर्त्यादि न्यास			दे० का०	दे०
९८१	४३३६	श्रीनाथादिश्लोक उद्धार			दे० का०	दे०
९८२	११६५	श्रीरामचन्द्र षोडशोपचार पूजा विधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठा का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	म	द	६	१०	११
२१.७×६.२ सें० मी०	१० (१–१०)	७	२६	पू०	प्राचीन सं०१८६७	यस्य स्म० श्राद्ध सकल्प समाप्त ॥ सवत् १८६७ चैत्र कृष्ण षष्ठ्या समापित गदाधर वेतालेन लिखित ॥
२३×६ सें० मी०	१६ (१–११)	११	४३	पू०	प्राचीन	श्री काशी विश्वेश्वरार्पणमस्तु ॥
२१×१० सें० मी०	३ (१–३)	६	४१	पू०	सं०१६३६	इति श्री कात्यानकृत श्राद्ध सूत्र सपूर्णम् ॥ सं० १६३६ चैत्रसिते ५ बुधे बटुकनाथेनालखि ॥
२५.६×११.८ सें० मी०	४ (१–४)	११	४३	पू०	सं०१६०६	इति कात्यायनमुन्युक्त श्राद्ध सूत्र ॥ सं० १६०६ श्रावणवदि ७ गुरौ मिरजापुरे लिखित ॥
२२.१×६.७ सें० मी०	२ (१–२)	८	३१	पू०	प्राचीन	इति श्री केशव कीर्त्यादि न्यास ॥
२२×१०.७ सें० मी०	५ (१–५)	८	३६	पू०	प्राचीन	इति श्रीनाथादिस्लोक उद्धार सपूर्णं ॥ शुभमस्तु ॥
१५.५×८.५ सें० मी०	५	६	१८	पू०	प्राचीन	इति श्री रामचद्र षोडसोपचार पूजाविधि वसिष्ट हितायाम् सपूर्ण ॥ श्री रामयत ॥ सीताराम ॥ सीताराम

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६८३	२३०६	श्रीराम नित्यपूजा पद्धति			दे० का०	दे०
६८४	७८१७	श्रीराम पद्धति	रामानुजाचार्य		दे० का०	दे०
६८५	१२८५/८	श्रीराम पद्धति	श्री रामानुज		दे० का०	दे०
६८६	२०२०	श्रीराम मानसपूजा			दे० का०	दे०
६८७	७२३४	श्रीसूक्त जपविधि			दे० का०	दे०
६८८	११५६	श्रीसूक्त विधान			दे० का०	दे०
६८९	६५०२	श्रुतिलक्षण प्रायश्चित्त			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२७६×११३ सें० मी०	७२ (१–७२)	७	३२	पू०	प्राचीन	इति श्री ब्रह्मयामले तंत्रे हरगौरी सवादे श्रीराम नित्यपूजा पद्धतिः समाप्तम् शुभमस्तु ॥
१६६×१०२ सें० मी०	२१ (१–२१)	८	२१	पू०	प्राचीन सं०१६०७	इति श्रीमद्रामानुजाचार्यं कृत श्री राम पद्धति वेदोक्त संपूर्ण × × सुभमस्तू माघे मासे कृष्ण पछे १२ दसी सं० १६०७ ॥
१७५×६५ सें० मी०	२१ (१–२१)	७	२०	पू०	प्राचीन	इति श्री रामानुजा कृता वेदोक्त श्री राम पद्धति सपूर्ण ॥ श्रीरस्तुकल्याण-मस्तु ॥
१३४×८४ सें० मी०	१४	६	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री अगस्त्य सहितायां परमहस्ये श्री अगस्त्य सुतीक्षण सवदे श्रीराम-मानसीपूजा संपूर्ण समाप्तम् ॥ शुभ ॥ राम''' ''''
१४२×८७ सें० मी०	११ (१–११)	६	२०	पू०	प्राचीन सं०१८३२	इति श्रीसूक्त विधि सपूर्ण ॥ श्री महालक्ष्मी देवतार्पणमस्तु ॥ संवत् १८३२ माघ शुध १५ रवौ इद पुस्तकं समाप्तिमस्तु ॥ स्वार्थं परोपकारार्थं च ॥
१३६×८७ सें० मी०	२४	१०	२०	पू०	प्राचीन	इति श्रीसूक्तविधान समाप्त'' ' श्री परमेश्वरार्पणमस्तु ॥
२२६×६१ सें० मी०	२० (१–२०)	६	३५	पू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
९९०	८२६	श्लेपाशांति विधि			दे० का०	दे०
९९१	४३३७/८	षडंग रुद्रजाप्य			दे० का०	दे०
९९२	७३४९	षडंग ,, ,,			दे० का०	दे०
९९३	३७४५	षडंग ,, ,,			दे० का०	दे०
९९४	१३७६	षण्णवतीश्राद्ध निर्णय			दे० का०	दे०
९९५	२०५४	षष्ठीका पूजाविधि			दे० का०	दे०
९९६	६५८८	षष्ठीपूजा			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ		स	द	६	१०	११
१६·६ × ६·२ सें० मी०	३ (१–३)	७	२३	पू०	प्राचीन	इति श्लेपाशाति विधि ॥
१६ × १३ ३ सें० मी०	२१ (५६–७७)	१२	२५	पू०	प्राचीन	इति रुद्रजाप्येपडंग समाप्ता शुभमस्तु ॥
२१·२ × १२ सें० मी०	१५	६	२२	अपू०	प्राचीन	
१३ × ८ सें० मी०	१६ (१–११, २२–२६)	६	२४	अपू०	प्राचीन स०१८३३	·········संवत् १८३३
२१ × १० सें० मी०	८	१०	३०	पू०	प्राचीन	इति श्रीमच्चातुर्धर गोविंद सूरिसूनो शिवस्य कृतौ पद्मावती श्राद्ध निर्णयः समाप्त ॥
२० ५ × १० सें० मी०	१० (१–१०)	७	२०	पू०	प्राचीन स०१८४१	इति षष्टिमा पुजा समाप्ता शुभमस्तु संवत् १८ सै ४१ वेशला चैत्रावदि अमावस्य रविवासरे न : लिषत सिद्धपारगद पंडेंवे पुस्तक रापुरण शुभमस्तु ॥
२४ ६ × १० ५ सें० मी०	६ (१–६)	६	३४	पू०	प्राचीन	इति षष्टी पूजा समाप्ता ॥······
(सं०सू०४६)						

क्रमाङ्क और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
९९७	५३६२	षष्टी पूजा			दे० का०	दे०
९९८	६६७१	षष्ठि पूजा			दे० का०	दे०
९९९	५५८७	षष्ठी पूजा विधि			दे० का०	दे०
१०००	६०१	षोडश कर्म			दे० का०	दे०
१००१	२७१	षोडशकर्म विधि			दे० का०	दे०
१००२	५०४७	षोडश पूजा			दे० का०	दे०
१००३	४४४० / १०	षोडश पूजाविधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४.१×१० सें० मी०	३ (५–७)	६	३१	अपू०	सं०१८५७	इति षष्ठी पुजन समाप्त शुभमस्तु सवत् १८५७ शाक १७२२ फाल्गुन मासि कृष्ण पक्षे········
२०.५×१०.५ सें० मी०	३ (१–३)	१२	३४	पू०	सं० १८८७	इति श्री षष्ठि पूजा समाप्ता ।। सवत् १८८७ मिति अश्विन शुद्ध ३ सोमवासरे समाप्त ॥
२५×१२.५ सें० मी०	६	११	२८	अपू०	प्राचीन (जीर्ण)	
२३×६ सें० मी०	२३ (१–२, ४–२४)	१४	४३	अपू०	प्राचीन	इति षोडश कर्माणि समाप्तानि ॥
२६×१४ सें० मी०	६	१२	३१	अपू०	प्राचीन	
२५.३×१२.६ सें० मी०	३ (१–३)	६	२७	अपू०	प्राचीन	
१२.४×६.१ सें० मी०	५	६	१६	पू०	प्राचीन	इति षोडश पूजा विधि सपूर्ण ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१००४	७७२	षोडशसंस्कार पद्धति			दे० का०	दे०
१००५	६१७	षोडससंस्कार विधि			दे० का०	दे०
१००६	४३१०	षोडशोपचार			दे० का०	दे०
१००७	५६०६	षोडशोपचार			दे० का०	दे०
१००८	६३९४	षोडशोप्रकार पूजाविधि			मि० का०	दे०
१००९	४५८७	संकष्ट चतुर्थी पूजा			दे० का०	दे०
१०१०	६४१४	संक्षिप्त चलार्चा-प्रतिष्ठाविधि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
२१२×९५ सें० मी०	२२ (२१-४२)	६	३०	अपू०	प्राचीन	
२४७×१०४ सें० मी०	३५	८	२६	अपू०	प्राचीन	
२१४×११५ सें० मी०	३ (१–३)	८	१८	पू०	प्राचीन	
१७३×९.५ सें० मी०	५ (१–५)	६	२०	अपू०	प्राचीन	
२३३×१०२ सें० मी०	३ (१–३)	७	३०	पू०	प्राचीन	इति पाडशोप्रकारपूजा विधि सहस्र-शीपा समाप्तम् ॥
१९३×१२५ सें० मी०	६ (१–६)	१०	१२	पू०	प्राचीन	सकष्ट चतुर्थि पूजा समाप्त ॥
२१३×९२ सें० मी०	६ (१–६)	१६	३७	पू०	प्राचीन स०१७५३	इति सक्षिप्त चलार्चा प्रतिष्ठाविधिः॥ "सवत् १७५३ समये मार्गशीर्ष शुद्ध ३ भौम लिखितमिद पुस्तक शास्यां विश्वनाथभट्ट राडाहृवरण ॥----

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०११	६६६३	संक्षिप्त शिवपूजा प्रयोग			दे० का०	दे०
१०१२	७०५५/४	संक्षिप्त संध्या प्रयोग			दे० का०	दे०
१०१३	५७३१	संक्षेप पार्थिवपूजन विधि			दे० का०	दे०
१०१४	४२६८	संतानगोपाल विधि	सत्यापाढ		दे० का०	दे०
१०१५	३३०१	संध्या			दे० का०	दे०
१०१६	३१०८	संध्या			दे० का०	दे०
१०१७	५५३०/३	संध्या			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
३०×११ ६ सें० मी०	१	१४	३५	पू०	प्राचीन	ततो मूल जप्त्वा शिवाय जप समर्पये दिति संक्षिप्त शिवपूजा प्रयोग ॥
१३ ५×१३ सें० मी०	४ (१–४)	१६	१७	पू०	प्राचीन	
१५ ६×१० ६ सें० मी०	२ (१–२)	१०	२४	पू०	प्राचीन	इति संक्षेपत पार्थिव विधि ॥
२५ ७×११ ५ सें० मी०	१७ (१–१७)	६	३६	पू०	प्राचीन	इति श्री सत्यापाढ कृते अनपत्यत्व-हर संतान गोपाल विधि ॥
२२ ६×१५ सें० मी०	३ (१–३)	१७	३१	पू०	प्राचीन	इति सायं संध्या समाप्ता ॥ × × ×
२६ ४×११ ३ सें० मी०	४ (१–४)	८	३६	पू०	प्राचीन	इति संध्या संपूर्ण ॥
२६×१४ ७ सें० मी०	७ (१–७)	८	२१	पू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०१८	५५६१	संध्या			दे० का०	दे०
१०१९	६११३/१०	संध्या			दे० का०	दे०
१०२०	५७५६	संध्या			दे० का०	दे०
१०२१	२३६७	संध्या			दे० का०	दे०
१०२२	२२६६	संध्या			दे० का०	दे०
१०२३	६४०१	संध्या			दे० का०	दे०
१०२४	६४४४	संध्या			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो कहां तक का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ क	ख	ग	घ	९	१०	११
२५·४ × ११·८ सें० मी०	८ (१–८)	७	३५	पू०	प्राचीन सं० १६४१	इति सामसंध्या संध्या समाप्तम ॥ शुभं मंगलंददातु'''संवत् १६०१ मु: सलेउपुर।
१६·५ × १३ सें० मी०	१० (२७–३६)	८	१८	पू०	प्राचीन	इति त्रिकाल संध्या समाप्ता ॥
१६·३ × १२·६ सें० मी०	८ (१–८)	१४	१४	पू०	प्राचीन	इति सायं संध्या समाप्ता शुभमस्तु मंगलंददातु ॥''' '''
२२ × ८·५ सें० मी०	६	७	३०	पू०	प्राचीन सं० १८६५	इति श्री यजुर्वेद सन्ध्या सम्पूर्णम् सम्वत् १८६५ ॥
२७·८ × ११·६ सें० मी०	६ (१–६)	६	२५	पू०	प्राचीन सं० १६११	इति संध्या विधिप्रयोगः ''''''''''''' ''''''संवत् १६११ का फाल्गुण मासे दशम्यां '''''' ॥
२१·५ × ६·३ सें० मी०	७ (१–२, ४–८)	६	२२	अपू०	प्राचीन	इति त्रिकाल संध्या विधि + + + ॥
१५·६ × ८·४ सें० मी०	४ (४–६)	७	२३	अपू०	प्राचीन	इति गायत्री त्रिकाल संध्या संपूर्णं शुभमस्तु संवत् १८६६ के साल मार्ग सुदि १२ क. लिपा दामोदर दास पंपपरा वैठे श्री तिवारी वस्ती राम पठनार्थक ॥
(सं० सू० ५०)						

क्रमाक और विषय	पुस्तकालय की आगनसख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०२५	५५१२	सध्या			दे० का०	दे०
१०२६	७३७७/२	सध्या			दे० का०	दे०
१०२७	७७६८	सध्या			मि० का०	दे०
१०२८	७६७४	सध्या			दे० का०	दे०
१०२९	६२१६	सध्या			दे० का०	दे०
१०३०	७०४/४	सध्या			दे० का०	दे०
१०३१	७०२०	सध्या			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१८·४ × ८·६ सें० मी०	१५ (१–१५)	६	२५	अपू०	प्राचीन	
९.९ × ४.१ सें० मी०	१२	४	१२	अपू०	प्राचीन	
१६·१ × ९·९ सें० मी०	५	७	१६	अपू०	अर्वाचीन	
१७·५ × ८·९ सें० मी०	३ (४, ५, १०)	५	१८	अपू०	प्राचीन	
१७·२ × ८·६ सें० मी०	३	८	२०	अपू०	प्राचीन	
१४·६ × ९·३ सें० मी०	६ (१५-२०)	७	१३	अपू०	प्राचीन	
१२·३ × ९·६ सें० मी०	६ (१–६)	७	१२	पू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०३२	३८५७	संध्या जप			मि० का०	दे०
१०३३	५०५१	संध्यातर्पणविधि			दे० का०	दे०
१०३४	७०७६	संध्या पद्धति			दे० का०	दे०
१०३५	६४६	संध्याप्रयोग			दे० का०	दे०
१०३६	७७११	संध्याप्रयोग			दे० का०	दे०
१०३७	७०२५/३	संध्याप्रयोग			दे० का०	दे०
१०३८	२०५१	संध्याप्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६·३ × १०·४ सें० मी०	४ (१–४)	७	२७	पू०	आधुनिक	इति सरस्छोजप । तीर्थेनिष्क्रम्य ॥
२४·८ × ११·८ सें० मी०	१८ (१–१७,१९)	१०	४१	अपू०	प्राचीन	
२४·१ × ९·६ सें० मी०	४२ (५९–९१, ९३–१०२)	१०	४२	अपू०	प्राचीन	
२६·५ × ११ सें० मी०	४ (१–४)	६	३८	पू०	१० १८७३	इति श्री सध्यासमाप्तम् ॥ शुभमस्तु स० १८७३ तत्रवर्षे मासोत्तममासे चैत्रमासे कृष्णपक्षे अष्टम्या चद्रवसरे लिपितम् रामदियाल ब्रम्हण स्वपठनार्थ हेतवे .. ..
२५·६ × ११·३ सें० मी०	५ (१–५)	६	३०	पू०	प्राचीन	इति सध्या प्रयोगसंपूर्णम् लीषित्त मिश्र दिवान श्रावण मासे कृष्णपक्षे तृतीयाया भोमवासर शुभमस्तु श्रीराम चद्रायनम + + ॥
१०·८ × १०·६ सें० मी०	६ (१–६)	७	१७	अपू०	प्राचीन (जीर्ण)	
१४·१ × ९·५ सें० मी०	१० (१–१०)	८	१५	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की भागसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०३९	२११७	संध्याप्रयोग			दे० का०	दे०
१०४०	३२९९	संध्याप्रयोग			दे० का०	दे०
१०४१	३९९५	संध्याविधि			दे० का०	दे०
१०४२	२६५६	संध्याप्रयोग			दे० का०	दे०
१०४३	३९२९/२	संध्याप्रयोग			दे० का०	दे०
१०४४	४३३५	संध्याप्रयोग			दे० का०	दे०
१०४५	१९१५	संध्याप्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२०.६×११.५ सें० मी०	६ (१–६)	९	२२	अपू०	प्राचीन	
१३.५×८.६ सें० मी०	४	६	१६	अपू०	प्राचीन	
१५.३×१०.३ सें० मी०	९ (१–९)	१०	२४	पू०	प्राचीन	इति त्रिकाल सध्या समाप्ता ॥ × × × × × × ×
१६.५×१०.५ सें० मी०	६	९	२३	अपू०	प्राचीन	
१३.४×१५.६ सें० मी०	११ (२–१२)	९	१३	अपू०	प्राचीन	इति यजुर्वेदी सध्या प्रयोग ॥
१५.७×८ सें० मी०	११ (२–९, ११–१३)	१०	१६	अपू०	प्राचीन सं० १९२०	लिखित प श्री पुजारी कनइया लाल सवत १९२० कार्तिकवदि ॥
३१×९.४ सें० मी०	४ (१–४)	७	४७	पू०	प्राचीन स० १९११	इति सध्या प्रयोग समाप्त सवत् १९११ चैत्र कृष्णे १५ भौमवासरे मु० कपु गगातरे ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकान्थ की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०४६	२८०१/४	संध्याप्रयोग			दे० का०	दे०
१०४७	५६७६	संध्याप्रयोग			दे० का०	दे०
१०४८	७००४/२	संध्याप्रयोग			दे० का०	दे०
१०४९	५२२६/४	संध्याप्रयोग			दे० का०	दे०
१०५०	३५८६	संध्याप्रयोग			दे० का०	दे०
१०५१	४४३०	संध्याभाष्य	दिनरामशर्मा		दे० का०	दे०
१०५२	५२०८	संध्याभाष्य			दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या	और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१७.५×१३.५ सें० मी०	७ (३–९)	९	१५	अपू०	प्राचीन	इति संध्याप्रयोग ॥
१४.८×१०.८ सें० मी०	८ (१–८)	९	१६	पू०	प्राचीन	इति संध्याप्रयोग ॥
१२.२×८.२ सें० मी०	११ (१५–२५)	५	१४	पू०	प्राचीन	इति संध्या संपूर्णम् ॥ शुभम् ॥
१६.५×११.२ सें० मी०	५ (५–९)	११	२०	पू०	प्राचीन	संध्या समाप्त ॥
२१.६×१२.७ सें० मी०	७ (१–७)	८	१८	पू०	प्राचीन सं०१९२१	"इति त्रैकालिक संध्योपासन समाप्तम् ॥ राम सम्वत् १९२१ गायत्री लिपत "॥
३५.२×१३.४ सें० मी०	२१ (१–२१)	१२	५७	पू०	प्राचीन	इति संध्याविधानम् ॥
२२.४×११.६ सें० मी०	३ (१६–१८)	९	३०	अपू०	प्राचीन	

क्रमाक और विषय	पुस्तकालय की आगतसख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०५३	६५७१	सध्यामत्र व्याख्या	भट्टोजी दीक्षित		दे० का०	दे०
१०५४	२७४६	सध्या महावाक्य पचीकरण			दे० का०	दे०
१०५५	१५४५	संध्याविधि			दे० का०	दे०
१०५६	३८८४	सध्याविधि			दे० का०	दे०
१०५७	४६२८	सध्या विधि प्रयोग			दे० का०	दे०
१०५८	४६६५	सध्या विधि प्रयोग			दे० का०	दे०
१०५९	७१२७ / ३	सध्या विधि प्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२५×९९ सें० मी०	७ (१–७)	१२	३२	पू०	प्राचीन	भट्टो जी दीक्षित विरचित सध्या मंत्र व्याख्यान सपूर्णं ॥
१७×८५ सें० मी०	१२ (१–१२)	६	१६	पू०	प्राचीन	इति परिव्राजकाना सध्या पचीकरण महावाक्यादिक समाप्त ।
११५×९७ सें० मी०	१७ (१–१७)	९	१२	पू०	प्राचीन सं०१७६९	इति त्रिकाल संध्या विधि । सं०१७६९ वर्षे कातिक सु ७ शनौ लिषित सदा शिव देवेन वदन दुवे निमित्त ॥
१६१×१११ सें० मी०	८ (१–८)	१०	१४	पू०	प्राचीन	इति जप विधिः सध्याविधिः समाप्त ॥
१४७×१११ सें० मी०	१३ (१–१३)	७	१५	पू०	प्राचीन	इति सध्या प्रयोगस्समाप्त शुभ राम "
२७९×१२१ सें० मी०	६ (१–६)	७	२४	पू०	प्राचीन	इति श्री सध्याप्रयोग समाप्त ॥
१७×१०९ सें० मी०	७ (१–७)	१६	१२	पू०	प्राचीन सं०१७७९	इति सध्या प्रयोग ॥ शुभभवतु ॥ सवत् १७७९ चैतसुदी २ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०६०	५२६८	सध्या विधि प्रयोग			दे० का०	दे०
१०६१	३०८०	सध्या विधि प्रयोग			दे० का०	दे०
१०६२	६६४	सध्या विधि प्रयोग			दे० का०	दे०
१०६३	४६८८	सध्या विधि प्रयाग			दे० का०	दे०
१०६४	५५४३	सध्या विधि प्रयोग			मि० का०	दे०
१०६५	१२४३	सध्या विधि प्रयोग			दे० का०	दे०
१०६६	२२८८	साध्या विधि प्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	१०
२४×१०·२ सें० मी०	८ (१–८)	६	२७	पू०	प्राचीन	इति संध्या प्रयोग सम्पूर्णम् ॥
१५·७×१०·३ सें० मी०	८	८	१८	पू०	प्राचीन	इति संध्या विधि प्रयोग समाप्त ॥ शुभ भूयात् । श्रीरामायनम ॥
२२·८×११ सें० मी०	४	६	२२	अपू०	प्राचीन	
२३·८×१३·४ सें० मी०	११ (१–११)	७	१८	पू०	प्राचीन	इति संध्या समाप्त ॥
२०×८·२ सें० मी०	६ (१–६)	७	२५	अपू०	आधुनिक	······ अथ संध्या प्रयोग······ (आदि)
२१·१×६·४ सें० मी०	४ (१–४)	७	२७	अपू०	प्राचीन	
२१·८×६·५ सें० मी०	६ (१–६)	६	३४	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०६७	६७७३	संध्या विधि प्रयोग			दे० का०	दे०
१०६८	४६६४	संध्या विधि प्रयोग			दे० का०	दे०
१०६९	४५१७	संध्या विधि प्रयोग			दे० का०	दे०
१०७०	१२८५/८	संध्योपासन			दे० का०	दे०
१०७१	४९६१	संध्योपासन			दे० का०	दे०
१०७२	५५०३	संध्योपासन			दे० का०	दे०
१०७३	१५१५	संध्योपासन			दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	म	द	६	१०	११
१७२×८६ सें० मी०	६ (१–६)	८	२७	अपू०	प्राचीन सं०१६०६	इति विसर्जनम् इति + + + + + संध्याविधि प्र० समाप्ता शुभमस्तु संवत् १६०६ ज्यष्ट कृष्ण पक्षा + + + ॥
१४६×७६ सें० मी०	२५ (१–२५)	५	१६	पू०	प्राचीन	इति सन्याससस्य सध्याविधि समाप्त ॥
२५२×१०४ सें० मी०	१४ (२,२–१४)	७	३३	अपू०	प्राचीन	इतिसायंसध्या संपूर्ण ·············॥
१७५×६.५ सें० मी०	६ (१–६)	७	२१	पू०	प्राचीन	इति सामगानिवे त्रिकाल सध्योपासन समाप्त ॥१७॥६॥ ॥ ॐ ॥
२२६×८५ सें० मी०	८ (१–८)	७	३०	पू०	प्राचीन	इति त्रिकाल गायत्री विधि समाप्त ॥ + + + + + ॥
२१७×१० सें० मी	५ (२–६)	८	२६	अपू०	प्राचीन	इति सामगाना सन्ध्योपासनम् ॥
१४८×८५ सें० मी०	१० (२–११)	६	२४	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विशेष	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०७४	१८५१	संध्योपासन विधि			दे० का०	दे०
१०७५	२६२०	संध्योपासन विधि			दे० का०	दे०
१०७६	२४६६	संन्यास पद्धति			दे० का०	दे०
१०७७	३७०१	(आतुर) संन्यासविधि प्रयोग			दे० का०	दे०
१०७८	७५३६	संस्कार पद्धति			मि० का०	दे०
१०७९	२३६६	संस्कार विधि			दे० का०	दे०
१०८०	६२४१	संस्कार विधि (गर्भाधान से अन्नप्राशन तक)			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
११×८ सें० मी०	१४	८	११	पू०	प्राचीन सं०१८५३	इति संध्या संपूर्ण समाप्तं ॥ संवत् १८५३ भाद्र पद वदि आदित वार ॥ १० ॥
१५·७×७·५ सें० मी०	६ (१–६)	६	१८	अपू०	प्राचीन	
२३·४×९·५ सें० मी०	३६ (१–३६)	७	२७	अपू०	प्राचीन	
२३·७×११·७ सें० मी०	४ (१–४)	८	२८	पू०	प्राचीन	अथ आतुर सन्यास विधि समाप्तः ॥
२२·५×१०·५ सें० मी०	४७ (१–८, १५–५३)	६	२७	अपू०	प्राचीन सं०१८६४	सरस्वती गुरु चैव कुर्वे सस्कार पद्धति ॥ (प्रारभ) + + + इत्यर्कविवाह ॥ सवत् १८६४ सके १६५(?) भाद्रपदकृष्ण १० शुक्रवासरे टोपलोपनामक बाला जी नामकेन लीखीत स्वार्थं परार्थं च इय देव नाथि······
२३·२×९·४ सें० मी०	३४	१३	४१	अपू०	प्राचीन	
१६×११·३ सें० मी०	२५	६	२१	पू०	प्राचीन	
(सं०सू०५२)						

क्रमाक और विषय	पुस्तकालय की आगतसख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०८१	६३५८	सस्कारविधि (चोलकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन आदि)			दे० का०	दे०
१०८२	२४१८	सस्कारविधि			दे० का०	दे०
१०८३	२१८५	सत्यनारायण पूजाविधि			दे० का०	दे०
१०८४	१८७८	सत्यनारायण पूजाविधि			दे० का०	दे०
१०८५	६२१	सपिण्डकर्म			दे० का०	दे०
१०८६	३८६१	सपिण्डी			दे० का०	दे०
१०८७	४७४१	सपिण्डीकरण			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६ ४ × ८ ४ सें० मी०	१४		३२	पू०	प्राचीन	
३२ ६ × १३ ३ सें० मी०	७ (१३४–१३६, १४१)	११	४३	अपू०	प्राचीन	
१७ ५ × १० ३ सें० मी०	५ ,	८	२५	पू०	प्राचीन	
२२ ६ × १३ २ सें० मी०	३ (१–३)	१०	२४	अपू०, कृमिकृतिस	प्राचीन	इति प्रार्थना ॥०॥
१६ × १३ सें० मी०	३६ (१–६, १२–४१)	१०	१७	अपू०	प्राचीन	इतिसपिंडि कर्म समाप्तम ।
१६ १ × ८ ३ सें० मी०	२ (१–२)	१०	२३	पू०	प्राचीन	इति वाराहेपिंडकल्पे भगवच्छास्त्रे ॥
१६ १ × ६ ८ सें० मी०	४१ (१–४१)	७	२४	पू०	प्राचीन	इति सपिंडी करणम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०८८	३६०७	सपिंडीकरण विधि	सोमणि मिश्र		गि० का०	दे०
१०८९	५४७६	सपिंडीकरण श्राद्ध			दे० का०	दे०
१०९०	१०६२	सपिंडीकरण श्राद्ध पद्धति			दे० का०	दे०
१०९१	४९६४	सपिंडीकरण श्राद्ध पद्धति			दे० का०	दे०
१०९२	५२२६ / ४	सप्तशतिका पूजा पद्धति			दे० का०	दे०
१०९३	५८०५	सप्तशती पाठविधान			दे० का०	दे०
१०९४	८९६	सरोजमलिका			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२५×११४ सें० मी०	१८ (१–६,८–९, १२–१४, १६–२२)	९	२२	अपू०	प्राचीन सं०१९२२	इति श्री मत्पंडित घोपमणि मिश्र कृतायां प्रेतप्रकाशिकायां निरग्निको••• हिक क्रिया सपिंडीकरण विधि समाप्त शुभमवतु संवत् १९२२ चैत्र मासे शुक्ल पक्षे तिथौ त्रयोदश्या ॥•••
२१७×१०६ सें० मी०	१८ (५–१७, १९–२०, २२–२४, २६–२८)	१०	३०	अपू०	प्राचीन	इति सपिंडीकरण श्राद्ध संपूर्ण ॥ संवत १९० चैत्र शुक्ला चतुर्थी शनिवासरे लिखत पचोली महताव सिंह स्वात्म पठनार्थं शुभ भूयात् ॥
३२५×१२७ सें० मी०	४७ (१–४७)	१०	२९	पू०	प्राचीन सं०१९३७	इति सपिंडीकरण श्राद्ध पद्धति समाप्तम् ॥ संवत १९३७ ॥ शाके १८०२ ॥ मिति••• लखित फिकिरचंद्रेण पुस्तक शुभदायक ॥ रामायनम ॥ लक्ष्मणायनम ॥
२५४×१०७ सें० मी०	२२ (१–३,३–४ ४-५,५ ७,९, ११–२१)	९	३०	अपू०	प्राचीन सं०१९०४	इति सपिंडीकरणं श्राद्ध पद्धति ॥ श्रीरस्तु ॥ सं० १९०४ कार्तिक वदि ६ ॥
१६५×११२ सें० मी०	५	७	१४	पू०	प्राचीन	सप्त सतका पूजा पध्यत समाप्ता ॥१॥
१५६×९८ सें० मी०	३ (१–३)	१०	१७	अपू०	प्राचीन	
२३१×१३१ सें० मी०	१४ (१–१४)	११	२९	पू०	प्राचीन सं०१८५८	इति मैथिल निबंधे सरोज कलिका समाप्ता ॥ संवत् १८५८ ॥ पौष कृष्ण षष्ठी शनौ यात्त–ग्रामे ॥ शुभ० ॥

क्रमांक ग्रौर विषय	पुस्तकालय की ग्रागतसंख्या या सग्रहविशेप की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०९५	४००१	सर्पसंस्कार विधान			दे० का०	दे०
१०९६	५८२७	सर्वकर्मसाधारणांगपद्धति	देवभद्रपाठक		दे० का०	दे०
१०९७	४४३४	सर्वकर्मस्वग्निनिर्णय	कमलाकर भट्ट		दे० का०	दे०
१०९८	५१९८	सर्वतोभद्रदेव स्थापन			मि० का०	दे०
१०९९	७६३२	सर्वतोभद्रपूजन			दे० का०	दे०
११००	३५०७	सर्वतोभद्रपूजनम्			दे० का०	दे०
११०१	२२४२	सर्वतोभद्रपूजनम्			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२१ × ९ सें० मी०	२ (१–२)	१०	४३	पू०	प्राचीन	सर्व संस्कार विधान ॥
२३·२ × १०·४ सें० मी०	२५ (१–२५)	९	३६	पू०	प्राचीन सं०१९१२	इति श्री मन्महायाज्ञिक नागर ज्ञातीय पाठक श्री रामचद्र सूनु गगाधर पाठक वश समुत पाठक श्रीबलभद्रात्मज देवभद्रकृत सर्वकर्मसाधारणाग पद्धतिर समाप्ता। सवत् १९१२ मिती ज्येंट वदी ५ रइवार लिखतं ॥
१८·७ × १०·७ सें० मी०	९ (१–९)	९	२०	अपू०	प्राचीन	इमि रामकृष्ण भट्टात्मज कमलाकर भट्टे कृतो सर्वकर्मस्वग्निनिर्णयः ॥ शुभमस्तु ॥
३२·५ × २०·७ सें० मी०	१ (खर्रा)	३३	१८	पू०	आधुनिक	
२२ × १० सें० मी०	४ (१–४)	१०	३३	पू०	प्राचीन	इति सर्वतोभदेवता ॥
३१ × १३ सें० मी०	१० (१–१०)	१०	४०	पू०	प्राचीन सं०१९०४	इति सर्वतोभद्र पूजनम् श्री तत्सत् सवत् १९०४ मार्गशुक्ला ५ रवौ लिखित.........। ९
३१·२ × १६·१ सें० मी०	१२ (१–१२)	९	२६	पू०	प्राचीन स० १९१३	इति सर्वतो भद्रपूजनम् ओम् तत्सत् सवत् १९१३ आषाड कृष्णा......

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११०२	५३६४	सर्वतोभद्रपूजन विधि			दे० का०	दे०
११०३	२८२६	सर्वतोभद्रमंडल पूजाविधि			दे० का०	दे०
११०४	७५८८	सर्वतोभद्र लिंगतोभद्र			दे० का०	दे०
११०५	६७४१	सर्वदेवता प्रतिष्ठा विधि			दे० का०	दे०
११०६	३१५/२	सर्वदेवपूजन प्रकार			दे० का०	दे०
११०७	८२५	सर्वदेव प्रतिष्ठा			दे० का०	दे०
११०८	६७५४	सर्वपृष्ठाप्तोर्यामस्यप्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८ ब	स	द	९	१०	११
२८.५×१२.४ सें० मी०	४ (१-४)	८	३२	पू०	प्राचीन सं०१९२९	इति सर्वतोभद्रपूजनविधि समाप्तं शुभमस्तु संवत् १९२९ शाल ।। मोती मार्ग शिर्ष शुक्ल ९ ।। रविवासरे ।।
२४.७×१५.६ सें० मी०	५ (१-५)	१०	३१	पू०	प्राचीन सं०१९२५	इति सर्वतोभद्रमंडल पूजा विधि समाप्ता ।। श्रावणे चसितेपक्षेपचम्या भृगुवासरे ।। शखाह्नकेंदुकेऽब्दे १९२५ लिख्यते पूजनमया। ··· ···
२३.७×१०.३ सें० मी०	६ (१-६)	११	३७	पू०	प्राचीन सं०१८७४	इति सर्वतोभद्र लिंगतोभद्र समाप्त ।। संवत १८७४ शके१७३९ सर्व धारिणा संवत्सरे भाद्र पद मासे शुक्लपक्षे + +
२१.४×१० सें० मी०	२ (१-२)	११	४०	पू०	प्राचीन	लिंगतोभद्र देवता समाप्ता ।।
१७.७×११.८ सें० मी०	४ (१-४)	१५	१२	पू०	प्राचीन	इति सर्व देव पू०
२७.७×११.३ सें० मी०	७० (१-५१ ५१-६९)	९	४४	अपू०	प्राचीन	
२४.१×९ सें० मी०	७ (१-७)	१४	४३	पू०	प्राचीन	यश पुछादि सव मति रात्रवत अप्तोर्या मेसर्यास्त्रिशद्दस्त्राणिभवति एषा तृप्ति सर्वस्तोमस्य सर्वं पृष्ठाप्तोर्यामस्य समाप्ता ।।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११०९	६७६०	सर्वपृष्ठाप्तोर्यामस्यो क्थ्यत प्रयोग			दे० का०	दे०
१११०	६५१५	सर्वपृष्ठेष्टि हौत्र प्रयोग			दे० का०	दे०
११११	६५०६	सर्वपृष्ठेष्ठि आध्वर्यव प्रयोग			दे० का०	दे०
१११२	४७३७	सर्वप्रायश्चित प्रयोग			दे० का०	दे०
१११३	६६३८	सर्वस्तोम सर्वपृष्टाप्तो र्यामस्य ब्राह्मणाच्छसी प्रयोग			दे० का०	दे०
१११४	६१५ / ३	सर्वेषा वर्णानां शुद्धा-शुद्धि			दे० का०	दे०
१११५	३६८४	सहस्रचंडी (होम) विधान			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८ ब	८ स	८ द	६	१०	११
२०.८×८.८ सें० मी०	१७ (१, ४–१६)	७	३२	अपू०	प्राचीन	इति सर्वपृष्ठाप्तोर्यामस्योक्ष्यत प्रयोगः ॥………
२२.३×८.१ सें० मी०	४ (१–४)	८	३४	पू०	प्राचीन	इत्याश्वलायनोक्त सर्वपृष्ठेष्टिहोत्र प्रयोगः समाप्त. ॥ …
२३×६.३ सें० मी०	५ (१–५)	१०	३८	पू०	प्राचीन	इति सर्व पृष्ठेष्ठिमाध्वर्यंव प्रयोग ॥
२०.३×७.५ सें० मी०	६ (१–६)	७	३६	अपू०	प्राचीन	……अथ सर्व प्रायश्चित प्रयोग ॥ …… (प्रारम्भ) × × ×
२३.१×६.७ सें० मी०	११ (१–११)	६	३३	पू०	प्राचीन	छन्दोगवशानिर्णय ॥ सर्वस्तोम सर्वपृष्ठाप्तोर्यामस्य ग्राह्ये ॥
१६½×११½ सें० मी०	२ (१–२)	१४	३०	अपू०	प्राचीन	
२५.६×८८ सें० मी०	१	७	३६	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकर	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१११६	२६६०	सहस्त्रशीर्षा			दे० का०	दे०
१११७	६३७३	सागमडलपवमान अनुष्ठान पद्धति प्रयाग			दे० का०	दे०
१११८	५४४०	सांवत्सरिक श्राद्ध			दे० का०	दे०
१११९	५८१३	सापिंड्य प्रदीप	नागोजीभट्ट		दे० का०	दे०
११२०	४७२० / ३	साय सध्या			दे० का०	दे०
११२१	५४८५	सालाकर्म			दे० का०	दे०
११२२	७२०	सावित्रीव्रतकल्पोद्यापन			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२२४×८६ सें० मी०	८ (२–३, ७, ६ १२–१४)	६	३०	अपू०	प्राचीन	इति श्री सहस्त्रगोपो संपूर्णम् ॥ शुभमस्तु राम ॥
२०८×६८ सें० मी०	७ (१–७)	१०	३८	पू०	सं०१८२६	इति श्री महद्दग्निध्यान शौनकानुसारी साग मडल पवकानानुष्ठान पद्धति प्रयोग समाप्त । इद पुस्तक सदा सदाशिवकवीश्वरेण पौष शुद्ध पौर्णमास्या लिखित ॥ सवत् १८२६ मिति ॥
२१×७८ सें० मी०	६ (१३–१८)	७	३३	अपू०	प्राचीन	इति सावस्तरीक श्राद्ध प्रयोग ॥
२८७×१२१ सें० मी०	१६ (१–१६)	११	४५	पू०	प्राचीन सं०१८१०	इति श्री मत्कालोपनाम शिव भट्ट सुत सतीगभज नागोजी भट्ट कृत सापिंड्य प्रदीप समाप्त शुभमस्तु । सवत् १८१० मीति सावनवदि अमावस्य १५
१७७×११ सें० मी०	३ (१८–२०)	७	१८	पू०	प्राचीन	
२२८×६४ सें० मी०	३ (१–३)	७	४०	पू०	प्राचीन	इति साला समाप्तम् ।
३४४×७७ सें० मी०	१४ (१–१४)	८	३५	पू०	प्राचीन सं०१८७८	इति श्री भविष्योत्तर पुराण कृष्ण युधिष्ठिर सवादे वट सावित्री व्रत कथोद्यापन समाप्त ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११२३	६११२	सिद्धिविनायक-पूजाविधि			दे० का०	दे०
११२४	५३३६	(श्री) सूक्तविधान			दे० का०	दे०
११२५	१२२६	(श्री) सूक्तविधान पुरश्चरण			दे० का०	दे०
११२६	४७२० / ३	सूत्रोक्त प्रातः संध्या	रघुनाथ भट्ट		दे० का०	दे०
११२७	४७२० / ३	सूत्रोक्त मध्याह्नसंध्या			दे० का०	दे०
११२८	४७४४	सूत्रोक्त श्राद्ध प्रयोग			दे० का०	दे०
११२९	४१६५	सूत्रोक्त श्राद्ध संकल्प[1]			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसख्या और प्रति पक्ति म अक्षरसख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है? अपूर्ण तो वर्तमान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४'८ X १०.६ सें० मी०	७ (१–७)	७	२४	पू०	प्राचीन	इति वरद चर्या सिद्धि विनायक पूजा विधि समाप्त ॥
२२.२ X ७.४ सें० मी०	४ (१–४)	८	४८	पू०	प्राचीन	इतिश्री सूक्त विधान सपूर्ण ॥
२१.५ X ८.६ सें० मी०	५ (१–५)	१०	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री सूक्तस्य विधान पुरश्चरण प्रकार शुभभवतु ॥
१७.७ X ११ सें० मी०	११ (१–११)	७	१८	पू०	प्राचीन	इति सूत्रोक्त प्रात सध्या समाप्त ॥
१७.७ X ११ सें० मी०	६ (१२–१७)	७	१८	पू०	प्राचीन	इति सूत्रोक्तमध्यान्ह सध्या ॥
२४'८ X ११.२ सें० मी०	३ (१–३)	१२	३६	पू०	प्राचीन	समाप्तोय सूत्रानुसारी दश श्राद्धप्रयाग ॥ श्री सीताराम चद्र ॥
२१.५ X ९ सें० मी०	३ (१–३)	१२	३६	पू०	प्राचीन	इति सूत्रोक्त श्राद्ध सकल्प ॥

क्रमाङ्क और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११३०	६५२६	सोमभक्षविवेक			दे० का०	दे०
११३१	६५११	सोमभक्षविवेक			दे० का०	दे०
११३२	६७००	सौत्रामणि प्रयोग			दे० का०	दे०
११३३	६७५३	सौत्रामणी होत्र			दे० का०	दे०
११३४	६२७६	स्नान			दे० का०	दे०
११३५	२६६१	स्नान मंत्र			दे० का०	दे०
११३६	२०६	स्मार्तकर्मानुष्ठान	भवदेव भट्ट		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२०८×८६ सें० मी०	११ (१–११)	६	३२	पू०	प्राचीन स०१८८८	सवत् १८८८ शुभ कृत् नाम सवत्सरे मिति वैशाख व १० गुरुवार ॥
१८६×८४ सें० मी०	२ (१–२)	६	२८	पू०	प्राचीन	इत्यग्निष्टोमे आश्वलायनाना सोम भक्ष विवेक ॥ + + +
२१६×६ सें० मी०	३ (१–३)	८	२७	पू०	प्राचीन	इति सौत्रामणि प्रयोग ॥
२४×१०३ सें० मी०	३ (१–३)	६	३५	पू०	प्राचीन	
२१६×१०८ सें० मी०	६ (३–५, ८–१०)	६	२२	अपू०	प्राचीन	
२७५×११२ सें० मी०	२ (१–२)	७	२८	पू०	प्राचीन	इति स्नान मन्त्र ।
१६×८७ सें० मी०	१८ (१–१८)	८	१६	पू०	प्राचीन	इति पिंड पितृ यज्ञ ॥ समाप्त ॥
(सं०पु० ५४)						

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११३७	६७६	श्री स्मार्तपदार्थ संग्रह (गङ्गाधरी)	गङ्गाधर भट्ट		दे० का०	दे०
११३८	६६१२	स्मार्तपाकसंप्रयोग	अनंत दीक्षित		दे० का०	दे०
११३९	६३७४	स्मार्त प्रायश्चित्त	दिवाकर		दे० का०	दे०
११४०	४६६६	स्मार्तसंग्रह कारिका (आधान पद्धति)	गंगाधर भट्ट		दे० का०	दे०
११४०	७६४५	स्मार्तान्यनुगमन प्रायश्चित्त			दे० का०	दे०
११४१	४१७६	स्वस्ति वाचन			दे० का०	दे०
११४०	४७०८	स्वस्तिर वाचन			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२५.५ × ११.५ सें० मी०	५०	१०	३६	पू०	प्राचीन सं० १६८४	इति गगाधरी पुस्तक मिद सपूर्ण ॥ सवत १६८४ वर्षे आषाढ वदि ५ रवौ लेख ॥
२३.२ × १०.२ सें० मी०	२४ (१–२४)	१०	४१	पू०	प्राचीन	इति श्री मद्यज्ञोपवीताभिधान श्री विश्वनाथ सूनुना दीक्षितानन्देन सर्वोपकाराय वशिष्ठासमवर्त्काश्ववरणावर्मा व्यापाकृ सप्रयोग समाप्त ॥ ...
२१ × ६.४ सें० मी०	६७ (१–६७)	८	३५	पू०	प्राचीन	इति श्रीमत्कालोपनामक भट्टरामेश्वरात्मज भट्ट महादेव द्विज वर्य सूनु भट्ट दिवाकर विरचित स्मार्त प्रायश्चित्तानि प्रयोग रूपेण नित्यनैमित्तिक प्रायश्चित्तानिकारिकाद्युक्तानि निरूपितानि ॥ इतिस्मात प्रायश्चित समाप्त ॥
२७.४ × ११.१ सें० मी०	५४ (१–५४)	६	४१	अपू०	प्राचीन	इति श्री गगाधरभट्टविरचितेस्मातपदार्थ सग्रहेमणिकावधानसमाप्त ॥··· (पत्रसंख्या ६) आधानपद्धतिकुर्वे स्मात सग्रह कारिका ॥१॥ (प्रारभ)
२७.२ × ११.४ सें० मी०	४ (१–४)	७	३४	पू०	प्राचीन	इति स्मार्ताग्न्यनुगमन प्रायश्चित समाप्त ॥
१६ × ६.१२ सें० मी०	१० (२–११)	६	२२	अपू०	प्राचीन	
२५ × १०.१ सें० मी०	७ (१-२,४-८)	६	२७	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लि
१	२	३	४	५	६	७
११४४	७०३६	स्वस्त्ययन			दे० का०	दे०
११४५	५६३६	स्वाहाप्राण			दे० का०	दे०
११४६	५४३	हुतविधानार्घ्यम्			दे० का०	दे०
११४७	७१७०	हनुमत्प्रतिष्ठा प्रयोग			दे० का०	दे०
११४८	६६५७	हरिवंशश्रवणविधि			दे० का०	दे०
११४९	५०८२	हरिसमाराधनासार संग्रह	रामप्रसाद		दे० का०	दे०
११५०	४६१२	हरिसमाराधनसार संग्रह	रामप्रसादमिश्र		दे० का०	दे०

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११५१	८६६६	हरिसमाराधनसारसंग्रह	रामप्रसादमिश्र		दे० का०	दे०
११५२	१४०१	हरिस्मृति			दे० का०	दे०
११५३	३५२४	हवनपद्धति			दे० का०	दे०
११५४	४७४६	हिरण्यश्राद्ध प्रयोग			दे० का०	दे०
११५५	४६३७	होम			दे० का०	दे०
११५६	६७५६	होमचिंतामणि			दे० का०	दे०
११५७	५३०	होमपद्धति	श्रीलंबोदर		दे० का०	दे०

समाज और विषय	पुस्तकालय की भागतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११५८	२७४४	होमपद्धति			दे० का०	दे०
११५९	४३५१	होमपद्धति			दे० का०	दे०
११६०	६७७	होमपद्धति	लम्बोदर		दे० का०	दे०
११६१	५०२६	होमपद्धति			दे० का०	दे०
११६२	७८६८	होमपद्धति			दे० का०	दे०
११६३	३०२१	होमपद्धति			दे० का०	दे०
११६४	४६८४	होमपद्धति			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ म पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति म अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है वा वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	१०
२१७×१२ ६ सें० मी०	२८ (१–२८)	९	२३	पू०	प्राचीन सं०१८६५	इति रूपनारायन होमपद्धति समाप्त शभ भूयात ॥ सवत १८६५ शके १७३० पौष शुक्ल नवम्या सोमवासरे पुस्तक लिखित मिश्र पुमान राम श्री श्रीराम चन्द्राय नम ॥
३० ५×१२ ९ सें० मी०	५ (१–५)	१४	४९	पू०	सं०१९१३	सं० १९१३ आषाड कृष्ण १३ लिखित मिश्र मुरलीधर स्वय पठनाय श्री तत्सत् ॥
२६ ६×११ ५ सें० मी०	२९ (१–२९)	९	३६	पू०	प्राचीन सं०१९३५	इति श्री लम्बोदर विरचित होम पद्धति समाप्तम् सवत् १९३५ चैत्र कृष्ण ९ रवियासरे लिखित गगा सहायेन अहीलना मध्ये इद पुस्तक सपूर्णोजात शररजयतु शुभा ददातु ॥
२४×१० ३ सें० मी०	२ (९–१०)	१०	३७	अपू०	प्राचीन	
१४ ८×१३ ५ सें०मी०	२०	१२	१६	अपू०	प्राचीन सं०१८६५	इति श्रीवसुर्धाहुति होमजप्य पद्धति समाप्ता ॥ मीता ज्यष्ट सुदि २ सवत् १८६५
२४ १×१० २ सें० मी०	१५	३०	३३	अपू०	प्राचीन	
२६×१२ सें० मी०	१६ (६५–११३)	९	३१	अपू०	प्राचीन (जीर्ण)	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११६५	५२६७	होम पद्धति			दे० का०	दे०
११६६	२४२८	होम पद्धति			दे० का०	दे०
११६७	७५९६	होम विधि			दे० का०	दे०
११६८	५२४९	होम विधि (कुशकंडिका)			दे० का०	दे०
११६९	७३११	होम विधि			दे० का०	दे०
११७०	७७४५	होम विधि			दे० का०	दे०
११७१	६४६५	होत्र प्रयोग			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२१·५ × १२·४ सें० मी०	५ (१-३, ५-६)	८	२५	अपू०	प्राचीन	
२४ × १०·३ सें० मी०	८ (१-६, २७, २९)	१२	३५	पू०	प्राचीन	
३०.६ × १४.७ सें० मी०	४५ (१-४५)	११	३१	पू०	सं० १९३९	इति श्री होम समाप्त सवत् १९३९ के शाल·········
२३.२ × ९.८ सें० मी०	४ (१-४)	६	४०	पू०	प्राचीन	इति होम समाप्तम् ॥ शुभमस्तु ॥
२४ × १२ सें० मी०	१० (१-१०)	१०	३७	अपू०	प्राचीन	
२६·१ × १०·३ सें० मी०	१० (१-१०)	४२	३६	अपू०	प्राचीन	
२२.६ × १०.४ सें० मी०	८	८	३२	पू०	प्राचीन	अथ पशुबध होत्र प्रयोग ॥ (प्रारम)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
कोश						
१	१७६८	अनेकार्थ ध्वनि मंजरी	क्षपणक		दे० का०	दे०
२	४५२८	अनेकार्थ ध्वनि मंजरी	क्षपणक		दे० का०	दे०
३	५५६६	अनेकार्थ ध्वनि मंजरी			मि० का०	दे०
४	४४८७	अनेकार्थ मंजरी (१–४ अध्याय)			दे० का०	दे०
५	६०६६	अनेकार्थ मंजरी			दे० का०	दे०
६	३४७६	अभिधान चिंतामणि	हेमचंद्र		दे० का०	दे०
७	११७६	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३.५×१०.५ सें० मी०	६ (४–९)	१३	४०	अपू०	सं०१८७४	इति श्री काश्मीरराम्नायेमहाक्षपणक विरचिते अनेकार्थध्वनिमंजर्यां पदाधिकार कांड शुभमस्तु ॥ संवत् १८०७४ ॥
२३.२×११.६ सें० मी०	७ (१–६, ८)	११	४८	अपू०	सं० १८६४	इति श्री काश्मीराम्नायेमहाक्षपण कविविरचितानेकार्थनामध्वनिमंजर्यां श्लोकाधिकार प्रथमकांड । (पत्रसंख्या–४) × × × इतिऽनेकार्थ ध्वनिमंजर्यां तृतीयोध्याय ३ संवत् १८६४ वैशाष मास कृष्णपक्षे सप्तम्यां बुधवासरान्वितायां लिखित मिश्रमहतावसिंह स्वात्मपठनार्थं शुभमस्तु ॥
२१×११.१ सें० मी०	९ (१–९)	११	४०	पू०	आधुनिक	इत्यनेकार्थध्वनि मंजर्यां द्वितीय कांडो र्धश्लोकाधिकार साग एव सर्थित ॥ अनेकार्थ नाश समाप्त .. ..
२७.८×११.५ सें० मी०	१४ (१–१४)	९	३२	पू०	सं० १९१४	इत्यनेकार्थमंजरयां एकाक्षराधिकार श्चतुर्थोध्याय ॥ ४ माघमास शितेपक्षे चतुर्थीसामवासरेस्वलिखितस्वात्मपाठार्थं बडकलीनगरस्थित १ संवत् १९१४ मंगल लेखकानांच पाठकानांचमंगल
२२.२×९.७ सें० मी०	१५ (१, ३–१६)	८	३४	अपू०	प्राचीन	इति श्री लिंगशासन समाप्त ॥ महाशब्दार्णवनामक गदाधर भट्टेन माघे ससि शुक्ल पक्षेन वम्यां लिखित ॥
३०×१०.९ सें० मी०	२५	१४	५४	अपू०	खंडित सं०१७६६	इत्याचार्य श्री हेमचंद्र विरचितायामभिधान चिंतामणौ नाममालायां सामान्य कांड षष्ठ समाप्त ॥ सं०१७६६ वर्षे
२५.७×११.२ सें० मी०	(४६,९४–९९,१०६)	८	२६	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८	३०९४	अमरकोश (नामलिंगानुशासन-भूमिकाड)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
९	७४६	अमरकोश			दे० का०	दे०
१०	७७५	अमरकोश (नामलिंगानुशासन)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
११	८५१	अमरकोश (स्वरादिकाड) (संस्कृतटीकासहित)	अमरसिंह	क्षीरस्वामी भट्ट	दे० का०	दे०
१२	८६६	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
१३	४३०७	अमरकोश (सटीक)	अमरसिंह	भानुजीदीक्षित	दे० का०	दे०
१४	४३८२	अमरकोश (नामलिंगानुशासन)	अमरसिंह		दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठो का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसख्या और प्रति पक्ति म अक्षरसख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त्तमान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
२२८×१०५ सें० मी०	२१ (२२-४२)	११	३७	अपू०	प्राचीन	इत्यमरसिंह कृतौ नामलिगानुशासने ॥ भूमिकाण्डो द्वितीयाऽय साङ्गएव समर्थित ॥ तपसि शुक्लदले चतुर्दश्या कुजे दिने समाप्तोय द्वितीय' कण्ड लिखितमिद गुरुदयालेनेति शिवम् ॥
२१६×१०३ सें० मी०	६०	६	२८	अपू०	प्राचीन	इत्यमरसिंह कृतौ नामलिगानुशासने··· ···एव समर्थितः ? ॥
२२२×१०४ सें० मी०	२१	६	३०	पू०	सं० १६३७	इत्यमरसिंह कृतौ नाम लिगानुशासने-स्वरादि काड प्रथम १ सागएव समर्थित आषाढमासे कृष्ण पक्षे द्वितीया गुरुवासरे लिखित रामप्रसादेन पुस्तक वृद्धि दायक सवत् १६३७, राम राम
२७५×११·२ सें० मी०	५२ १, १-५३	११	४०	अपू०	प्राचीन	इति श्री भट्ट क्षीरस्वाम्युत्प्रेक्षितमरकोशोद्घाटने स्वर्गादि काड प्रथम समाप्त ॥···
२६७×१०१ सें० मी०	६० (२-८०, ८४-६४)	७	३७	अपू०	प्राचीन सं० १७०२	इत्यमरसिंह कृतौ नाम लिगानुशासने काड तृतीय सामान्य' सागएव समर्थित शुभमस्तु शुभदिने ॥ सवत् १७०२ समये आषाढ सुदि प्रतिपदा गुरवासरे ॥
२६६×१०८ सें० मी०	१०२ (१-८६, १-१६)	११	४३	अपू०	प्राचीन	इति श्री वघेल वशोद्भव श्री मैंहर विषयाधिप श्री कीर्ति सिंह देवाज्ञया श्री भट्टो जी दीक्षितात्मज श्री भानु जी दीक्षित विरचितायाममर टीकायां व्याख्या सुधाख्याया पातालभोगिवर्ग विवरण समाप्त ॥ (पृ० ७५)
२४५×६६ सें० मी०	८३ (२६-३८, ४०-४४, ४६-५६, ५६, ६६-७८, ८०-१०७, १०६-१२३)	६	३३	अपू०	प्राचीन	इत्यमरसिंह कृतौ नामलिगानुशासने ॥ सामान्यकाण्डस्तृतीय सांगएव समर्थित शुभमस्तु ॥ श्री रस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१५	७५७०	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
१६	४३८४	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
१७	१३०२	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
१८	१९०२	अमरकोश (प्रथमसर्ग) (संस्कृतटीकासहित)	अमरसिंह	भानु दीक्षित	दे० का०	दे०
१९	१८०७	अमरकोश (प्रथमकाड)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
२०	४२२६	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
२१	४१३०	अमरकोश			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५·५ × ९·६ सें० मी०	९१ (१–६,१२–९३)	८	३२	अपू०	प्राचीन	
१६·८ × १३·६ सें० मी०	३३ (१,६–३५, ३७–३८)	६	१५	अपू०	प्राचीन	
२५·६ × १२ सें० मी०	४५	८	२५	अपू०	प्राचीन	
३३.७ × १५·४ सें० मी०	४१ (१–४१)	११	५७	पू०	प्राचीन	इति श्री वघेलवंशोद्भवश्रीमहीधर विषयाधिप श्री सिंहदेवज्ञाया श्रीभट्टोजिदीक्षितात्मज श्री भानुदीक्षित विरचितायामरटीकायाव्याख्या सुख्यायाप्रथमः काड सपूर्णतामगमत्··· ··· ···· ···
२८·६ × १२·१ सें० मी०	१३ (१–१३)	११	३८	पू०	प्राचीन स०१८८६	इति श्री अमराचार्य कृतो प्रथमकांड समाप्त ॥ सवत् १८८६ मिती माघ कृष्ण सप्तम्या लिप्पी कृत स्थानेश्वर नगरमध्ये ॥
२५·१ × ११ सें० मी०	५	१०	३२	अपू०	प्राचीन (खडित)	
२५·८ × ११·१ सें० मी०	११ (८५–९५)	८	३७	अपू०	प्राचीन	
(सं०मू०५६)						

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२२	४२२८	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
२३	२७४६	अमरकोश (नामलिंगानुशासन)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
२४	३५२३	अमरकोश			दे० का०	दे०
२५	३५३०	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
२६	३६४७	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
२७	४०२१	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
२८	२५४६	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३·७ × ९ सें० मी०	४४ (११३,१६-१८,१८-२३, २३,२४,२४-३२,३४-३५, ३७,३९-४३, ४५-५३,५६-६१,६३-६५)	८	२८	अपू०	प्राचीन (जीर्ण-शीर्ण) (खंडित)	समाहृत्यान्यतन्त्राणि संक्षिप्तैः प्रति संस्कृतैः ॥ संपूर्णं मुच्यते वर्गैर्नामलिंगानुशासनम् ॥ २ ॥ (प्रारंभ)
२५.२ × ११ सें० मी०	३४	८	३७	अपू०	प्राचीन	
२४.६ × १०.६ सें० मी०	२६ (३२-४५, ५४-६१, ६५-६६, ६७-६८)	७	३२	अपू०	प्राचीन	
२२·१ × ८.३ सें० मी०	५५ (१-५५)	७	३६	अपू०	प्राचीन सं०१९०८	इत्यमरसिंह कृतौ नाम लिंगानुशासने भूमिकाडो द्वितीयोय सागएव समर्थित ॥२॥ समाप्तोय द्वितीय कांड ॥ संवत् १९०८ मार्गशीर्ष शुक्र १५ ''॥
२२.६ × ११.१ सें० मी०	२८ (१-१०, १२-२४, २६-३२)	८	३०	अपू०	प्राचीन	
२२.५ × १०·७ सें० मी०	२८ (१-९)	८	२४	अपू०	प्राचीन	अथ अमर लिप्यते ॥ (प्रारंभ)
२७ × १०·९ सें० मी०	३ (१-३)	७	३५	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२६	३३	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
३०	३७	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
३१	४२	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
३२	१३२	अमरकोश (प्रथम काड)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
३३	१३३	अमरकोश (तृतीय काड)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
३४	४७१	*अमरकोश (नामलिंगानुशासन)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
३५	४०२	अमरकोश (लिंगानुशासन)	अमरसिंह		दे० का०	दे०

...त्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८	स	द	९	१०	११
२८.६ × १४.२ सें० मी०	१० (१–१०)	६	२६	अपू०	प्राचीन	
२८.५ × ११ सें० मी०	८६ (१–७, १२–९१)	७	२६	अपू०	प्राचीन	
२७.६ × १०.६ सें० मी०	६६ ९२–१६०	१०	२७	अपू०	प्राचीन सं०१८५४	शुभमूयाल्लेखक पाठकयोः ॥ सं०१८५४ ज्येष्ट मासे शुक्ल ११ चन्द्र० रत्नाख्यन लिखितम् ॥ शुभमस्तु ॥ श्रीरस्तु ॥ श्री ॥
२५ × १२.५ सें० मी०	१८ (१–१८)	६	३०	पू०	प्राचीन सं०१७१८	इत्यमर सिंह कृतौ नाम लिंगानुशासने॥ स्वरादिकांड प्रथम साग एव समर्पित ॥२॥ इति प्रथमकांड समाप्त ॥ शके १७१८ ** भाद्रपदशुक्ल तृतीया इद पुस्तक समाप्त ॥ गंगाधर महादेव काणेरया इद ॥ स्वार्थंपरार्थं च ॥६॥
२३.३ × १०.७ सें० मी०	२६ (१–२६)	६	२८	पू०	प्राचीन	इत्यमर सिंह कृतौ नामलिंगानुशाने सामान्य कांड तृतीय साग एव समर्पित ।
२५ × १०.३ सें० मी०	६४ (१–६४)	६	३४	पू०	प्राचीन कृमिकृ तित सं०१६८०	इति लिंगादि संग्रहवर्ग ॥ इत्यमरसिंह कृतौनामलिंगानुशासने ॥ सामान्य काण्डतृतीय साग एवसमर्पित ॥ शुभ मस्तु ॥ श्री विश्वेश्वरायनम ॥ श्री रामायनम ॥ सवत् १६८० ॥ *****
३३.५ × १३ सें० मी०	१५१	५	३२	पू०	प्राचीन सं०१६०२	इत्य अमरसिंह कृतौनाम लिंगानुशानें काडस्तृतीय सामान्य । सग राद समर्पित ॥३॥ सवत्१६०२ शाके१७६७॥ अश्वनमासे शुक्लपक्षे शुभ तिथौ ॥७॥ भौमवासरे ॥ लिपत विहारिलाल ॥ शुभमस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३६	२४५	अमरकोश (लिंगानुशासन)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
३७	२५५	अमरकोष (लिंगानुशासन)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
३८	२८१	अमरकोश (लिंगानुशासन) (तृतीय कांड)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
३९	३६१९	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
४०	३७९५	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
४१	३८११	अमरकोश (नामलिंगानुशासन)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
४२	३०३२	अमरकोश (नामलिंगानुशासन) (भूमिकांड)	अमरसिंह		दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ ग	ञ	स	द	६	१०	११
२७ ५ × ११ सें० मी०	१०	११	३६	पू०	प्राचीन (जीर्ण)	इत्यमरसिह कृतौ नामलिङ्गानुशासने स्वर्गादिकाण्ड. प्रथम साङ्गएव समर्थित ॥
२७ ५ × ११ सें० मी०	३४ (१–३४)	१०	३६	पू०	प्राचीन	इत्यमरसिह कृतौनामलिङ्गानुशासने भूमिकाण्डो द्वितीयोऽयसाङ्गएव समर्थितः ॥
२७ ६ × ११ २ सें० मी०	२६ (१–२६)	१०	३६	पू०	प्राचीन सं० १८८५	इत्यमरसिह कृतौ नामलिङ्ग नुशासने काण्डस्तृतीयः सामान्य साङ्गएव समर्थित ॥ शुभमस्तु लेखक पाठकयो श्री रस्तु सिद्धि श्री महाराजाधिराजे श्री महाराजा श्री राजा जै सिंहदेव राज्ये शुभस्थाने रीवाएणगरपुस्तकलित श्री चतुर्वेदयो धाली रामेए सं० १८८५ के मधिन शुक्ल ५ सामे ग्रात्मर्यवा शुभभवतु ॥
२६ ७ × १५ २ सें० मी०	२६ (१-४, ६-५४, ५६–५७)	१२	३५	अपू०	प्राचीन	
२४ ७ × ११ ३ सें० मी०	४१ (४–५, ११–४६)	८	२४	अपू०	प्राचीन	
२६ ५ × १५ सें० मी०	३३ (१–१२, १–२१)	६	२६	पू०	प्राचीन	इत्यमरसिह कृतौ नामलिङ्गानुशासने स्वरादिकाड प्रथम साङ्गएव समर्थित ॥
२७ १ × ११ ८ सें० मी०	६७ (१–६७)	७	३१	पू०	प्राचीन	इत्यमरसिह कृतौ नामलिङ्गानुशासने भूमिकाडो द्वितीयोय साङ्गएव समर्थित ॥ शुभमवतु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४३	३०७८	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
४४	४८५०	अमरकोश (लिंगानुशासन)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
४५	४८५६	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
४६	४६४०	अमरकोश (नामलिंगानुशासन–१–२ कांड)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
४७	५३३४	अमरकोश (सटीक)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
४८	४४३०	अमरकोश (प्रथमसर्ग) (अमरविवेक संस्कृत टीका सहित)	अमरसिंह	महेश्वर	दे० का०	दे०
४९	६३३५	अमकोश (तृतीयकांड)	अमरसिंह		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४८×१०७ सें० मी०	११ (७३–८३)	८	३८	अपू०	प्राचीन	
३१×११३ सें० मी०	५२ (१–५२)	९	३६	अपू०	प्राचीन	इत्यमरसिंह कृतौनाम लिंगानुशासने भूतकाण्डो द्वितीय साग एव समर्थित × × × × × × × × ॥
३०३×१२८ सें० मी०	२७ (१–२७)	११	३९	अपू०	प्राचीन	
२५·७×१०५ सें० मी०	३८ (३–२४, २६–४१)	७	४२	अपू०	प्राचीन सं०१८९४	इति श्री इत्यमरासस्कृतौ नामलिंगानुशासनेद्वितीयो भमि काडोयसागएवसन्वित ॥ अगहसुदि दुइज सवत १८९४ श्रीकृष्ण प्रशाद ब्राह्मणेन लिखित समाप्त शुभमस्तु ''॥
२७३×१०४ सें० मी०	१३० (१–१३०)	९	४५	पू०	प्राचीन	श्रीमत्यमरविवेके महेश्वरेण विरचित्त-एवाय ॥ भूम्यादि द्वितीयकाड समाप्तिम गमच्छुभभवतु इति द्वितीय काड समाप्त ॥
२७२×११६ सें० मी०	७९ (१–४९)	९	३७	पू०	प्राचीन	इत्यमर सिंह कृतौ नामलिंगानुशासने ॥ स्वरादिकाण्ड प्रथम साग एव समर्पित
२२×१२५ सें० मी० (सं० सू० ५७)	१९ (११ २१–२७,२९ ३९ ५२–५५ ५७, ५९,६२–६३ ८७)	८	२३	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५०	५०८५	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
५१	४८६६	अमरकोश (तृतीय कांड)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
५२	५००३	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
५३	५१८३	अमरकोश (नामलिंगानुशासन)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
५४	७२००	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
५५	६६८६ / ३	अमरकोश (नामलिंगानुशासन)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
५६	७०२६	अमरकोश			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४.५×१२.१ सें० मी०	२३ (२–११, १३–२५)	८	२७	अपू०	प्राचीन	इत्यमर सिंह कृतौ नाम लिंगानुशासने स्वरादि कांड प्रथम समाप्तः ॥
२२.८×८.८ सें० मी०	३९ (१–३९)	६	३८	पू०	प्राचीन	इत्यमरसिंह कृतौ नाम लिंगानुशासने ··· · ॥ इति श्री अमरकोश तृतीय कांडः समाप्त ।
२३.५×११ सें० मी०	३७ (४–२२, ३०,४७,४८)	७	२७	अपू०	प्राचीन	
२७.८×११.६ सें० मी०	३ (१–३)	९	३१	अपू०	प्राचीन	······समाहृत्यान्य तंत्राणि संक्षिप्तै प्रति संस्कृतै ॥ संपूर्णमुच्यते वर्गैर्नामलिंगानुशासनम् ॥ २ ॥····· (प्रारंभ)
२५.३×१०.८ सें० मी०	८ (१–८)	६	२६	अपू०	प्राचीन	
१७×१५.७ सें० मी०	२२ (१–२२)	१२	१९	पू०	प्राचीन	इति श्री अमरसिंह विरचिते नाम लिंगानुशासने स्वरादिकांड प्रथम. समाप्तम् ॥
२१.१×१२.३ सें० मी०	१	९	२७	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५७	२३४६	अमरकोश (नाम लिंगानुशासन)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
५८	२३०२	अमरकोश (संस्कृत टीका सहित)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
५९	२३००	अमरकोश (संस्कृत टीका सहित)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
६०	५६३७	अमरकोश (सटीक) (प्रथम कांड)	अमरसिंह	नरहरि भट्ट	दे० का०	दे०
६१	५६२५	अमरकोश (सटीक) (द्वितीय कांड)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
६२	५५७५	अमरकोश			दे० का०	दे०
६३	५५२४	अमरकोश-टीका	अमरसिंह	भानुदीक्षित	दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठा का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसख्या और प्रति पक्ति म अक्षरसख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है ता वर्तमान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६×११ सें० मी०	५	८	३०	अपू०	प्राचीन	
२६.६×११.६ सें० मी०	११० (१–२३, २५–१११)	१२	४६	अपू०	प्राचीन	इत्यिमरसिंह कृतौ नाम लिंगानुशासने ... . ॥
२८.५×११.२ सें० मी०	१५४ (१–१५४)	१०	४९	पू०	प्राचीन	इत्यमरसिंह कृतौ नामलिगानुशासनो। साम न्य काण्डस्तृतीय साग एव समर्यित॥ शुभमस्तु ॥
२२.५×९ सें० मी०	४३ (१–४३)	७	२५	पू०	प्राचीन	इति श्री नरहरि भट्ट विरचिते अमर ने प्रथम काड. ॥
२२.५×९ सें० मी०	३६ (१–२८,२८ २९,२९–३४)	७	२०	अपू०	प्राचीन	
२७.५×११–४ सें० मी	४२ (२–४२)	८	३४	पू०	प्राचीन सं०१९४६	इत्यमरसिंह कृतौ नाम लिंगानुशासने॥ सामा य काडस्तृतीय साग एव समर्पित ॥४७॥ सवत् १९४५ माघ शुक्ले षष्ठ्या रवौ समाप्तोऽयमत्तिम
२१.८×१२.७ सें० मी०	८१ १–७,७–५, ५–७८,१०७)	१३	३५	अपू०	प्राचीन	इति श्री बघेलवशोद्भव श्री महीघर विषयाधिप श्री कीर्त्तिसिंह देवाजया श्री भट्टोजि दीक्षितात्मज श्री भानु जी दीक्षित विरचितायामारटीकया व्याख्या सुधाया प्रथम काण्ड सपूर्णतामगमत् ॥शुभमस्तु॥

क्रमाक और विशेष	पुस्तकालय की आगतसख्या या सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६४	१६८०	अमरकोश (टीका)			दे० का०	दे०
६५	१६३६	अमरकोश (सटीक)			दे० का०	दे०
६६	२१२६	अमरकोश (सस्कृत टीका सहित)	अमरसिंह	भानुजीदीक्षित	दे० का०	दे०
६७	२०६६	अमरकोश (नामलिगानुशासन)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
६८	२०२५	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
६६	५७६३	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
७०	५७६७	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	१०
२२.५ × १२.३ सें० मी०	३६ (१–३८,४६)	१३	५७	अपू०	प्राचीन	
२२.५ × १२ सें० मी०	५६	१३	५०	अपू०	प्राचीन	
२८ × ११.५ सें० मी०	२७१ (१८–२८८)	११	४७	अपू०	सं० १७४७	इति श्रीवघेलवशोद्भव श्रीमहीधर विषयाधिप श्रीमहाराजकुमार श्री-कीर्ति सिह देवज्ञाय । श्रीभट्टोजी दीक्षितात्मज श्रीभानुजी दीक्षित विरचितायाममरटीकायां व्याख्या-सुधा द्वितीय काण्ड. संपूर्णतामगात् ॥ शुभसवत् १७४७ समये……
२१.४ × ८.२ सें० मी०	८६ (१४,१४-१८, ३५-६६, १०१-११६)	६	३५	अपू०	प्राचीन सं० १७३७	इति लिंग संज्ञवर्ग इत्यमर सिंह कृतौ तृतीय काड समाप्त शुभमस्तु सं० १७३७ समये पौष सुदि एका-दश्या पुस्तक लेखित गंगाराम वदी जनेन लेखायित श्री महाराज कुमार भगवतराय धर्मार्थं ॥
२६ × ११.५ सें० मी०	१७ (७–२३)	८	२६	अपू०	प्राचीन	इति अमरसिंह कृते……
२७.५ × ११.४ सें० मी०	१५ (१–१५)	७	२६	अपू०	प्राचीन	
२३.१ × ११ सें० मी०	२८ (४–६ १०–३४)	६	३१	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७१	५७३५	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
७२	५९९९	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
७३	६११५	अमरकोश (नामलिंगानुशासन)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
७४	६०४७	अमरकोश–सटीक (प्रथमकांड)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
७५	६३१९	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०
७६	६३१८	अमरकोश (नामलिंगानुशासन, तृतीयखंड)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
७७	७६१६	अमरकोश	अमरसिंह		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७·३ × ११ ५ सें० मी०	५७ (१–५७)	७	३१	पू०	प्राचीन	इति शूद्रवर्ग इत्यमर सिंह कृतौ नाम-लिंगानुशासने ॥ द्वितीय कांडो भूम्यादि सांगएव समर्थित ॥
२३ × ८ ४ सें० मी०	६०	४	२७	अपू०	प्राचीन	इत्यमरसिंह कृतो नाम लिंगानुशासने स्वरादि कांड ········· ॥ (पृ० ४७)
२८ × ११ ५ सें० मी०	२९ (१–२९)	५	२९	पू०	प्राचीन	इत्यमरसिंह कृतौ नामलिंगानुशासने स्वरादि कांड प्रथम सांग एव समर्थित ॥
२७ १ × ११ ३ सें० मी०	३९ (१–३९)	८	३५	पू०	प्राचीन	इत्यमर सिंह कृतौ नामलिंगानुशासने ॥ स्वरादि कांडः प्रथम सांगएव समर्थित ॥१॥
२२ ८ × ९ ८ सें० मी०	९ (१, ६, १५–२१)	१२	२४	अपू०	प्राचीन	
२२ ८ × १० ४ सें० मी०	३८ (१–३८)	१०	२४	पू०	प्राचीन	इत्यमर सिंह कृतौ नामलिंगाऽनुशा-सने ॥ काण्डस्तृतीय सामान्य सांगएव समर्थित ॥
२६·७ × १० ३ सें० मी०	६	७	३८	अपू०	प्राचीन	महाराज कुमार श्री बाबू फत्तेसिंह देव राज्ये तस्मिन्काले वर्त्माने ॥ पुस्तक लिखित पण्डित भोपति × × ॥

(सं०मू०५८)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७९	७७१०	अमरकोश (तृतीयकांड)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
८०	७६६०	अमरकोश नामालिंगानुशासन			दे० का०	दे०
८१	७४७४	अमरकोश			दे० का०	दे०
८२	७३९८	अमरकोश (द्वितीय कांड)	अमरसिंह		दे० का०	दे०
८३	११७३	एकाक्षरकोश	क्षपणक		दे० का०	दे०
८४	४७४६	एकाक्षरकोश			दे० का०	दे०
८५	५२६५	एकाक्षर कोश			दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठा का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या	और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३ ३ × १३ २ सें० मी०	२६ (१–२६)	११	२८	अपू०	प्राचीन	
२४ ० × १० ७ सें० मी०	३८ (१–३८)	७	३५	पू०	प्राचीन	इति लिंगादिशेषवर्ग इत्यमरसिंह कृतौ नाम लिंगानुशासन काण्डस्तृतीय × × × × × ॥
२३ २ × १० ६ सें० मी०	८ (५६–६६)	७	३०	अपू०	प्राचीन	
२६ ५ × १४ ४ सें० मी०	३४ (१–३, १५–३५)	१२	२६	अपू०	प्राचीन	
२६ १ × १४ ८ सें० मी०	२ (१–२)	१३	३०	अपू०	प्राचीन सं० १९१८	इतीत्थं काक्षर कोश कथित मुनिना पुरा इति श्री महा क्षपणक कवि विरचितमेकाक्षर नाम कोश ॥
२५ १ × ११ २ सें० मी०	३ (१–३)	११	२२	पू०	प्राचीन	इत्येकाक्षरि नाम समाप्ता ॥
२२ ७ × १० २ सें० मी०	३ (१–३)	६	३५	पू०	प्राचीन सं० १८६०	इत्येकाक्षर कोश समाप्त सवत १८६० शके १७२५ श्रावन सुदि १४ भौमे क पुस्तक लिखित सीतारामेणात्मकपठनार्थम्परायम्वा श्री गणेशायनम ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८६	६५३८	एकाक्षर कोश			दे० का०	दे०
८७	५८६६	एकाक्षर कोश			दे० का०	दे०
८८	७२७२	एकाक्षर कोश			दे० का०	दे०
८६	३०७८	एकाक्षर कोश			दे० का०	दे०
६०	१०११/२	एकाक्षरी कोश			दे० का०	दे०
६१	१६२६	एकाक्षरी कोश			दे० का०	दे०
६२	१७६६	एकाक्षरी कोश			दे० का०	दे०

ता या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	ग	द	९	१०	११
१७.२×११.१ सें० मी०	२ (१–२)	६	३८	पू०	प्राचीन स०१६४३	इत्येकाक्षर कोश समाप्त संवत् १६०३ पौषवदि × × × × ।
२४.६×११.२ सें० मी०	३ (१–३)	१०	३७	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभट्टारक कविराज विरचित एकाक्षनाम कोश ।।
२३.८×१३.४ सें० मी०	६ (१–६)	१४	२६	अपू०	प्राचीन	
२३.५×११ सें० मी०	६	६	२१	पू०	सं०१६३६	इति एकाक्षर कोश समाप्त ।। लिखित नवदाप्रसाद तिवारी सं० १६३६ के मिति माघ सुदि १४ ·········· ।।
२६×१८.२ सें० मी०	३ (१–३)	६	२७	पू०	प्राचीन	इत्येकाक्षरकोश समाप्तम् ।।
२४.२×८.३ सें० मी०	३ (१–३)	१०	३४	पू०	प्राचीन	इति एकाक्षरीकोश परिपूर्ण ।। राम राम ।।
२४.१×११ सें० मी०	२ (१–२)	११	३६	पू०	प्राचीन स० १८७५	इत्येकाक्षरकोश ।। संवत् १८७५ ।।

समाव और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६३	४०५८	कोश			दे० का०	दे०
६४	१३४६	जगद्विजयी छंदटीका	कवींद्राचार्य सरस्वती		दे० का०	दे०
६५	२३३	त्रिकांडकोश	श्री पुरुषोत्तमदेव		दे० का०	दे०
६६	६०१६	दीपिकोश मुक्तवली	नगेंद्र		दे० का०	दे०
६७	२३५३	नाम माला	वल्लभ		दे० का०	दे०
६८	७५३६ / २	नाममाला निघटु	धनजय		दे० का०	दे०
६९	१७१९	नामलिगानुशासन	अमरसिंह		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६.३×९.५ सें० मी०	१३ (२–११, १३–१४)	८	३१	अपू०	प्राचीन	
२६×१२.५ सें० मी०	३२ (३–३४)	८	४३	अपू०	प्राचीन	इतिश्रीसर्वविद्यानिधान कवींद्राचार्य सरस्वती विरचिताया वृहद्जगद्विजछन्दीश समाप्तं ॥
३०.७×१०.३ सें० मी०	२५	९	४३	पू०	प्राचीन	इति श्री पुरुषोत्तम देव विरचित शेषामर समाप्त ॥ इद पुस्तक·········· स्वस्ति श्री नृपशालि बहु नशक्के १७७३ विरोधकृतनाम संवत्सरे श्रवणे शुक्ल द्वादश्या भृगुवमरयुतायातदिन समाप्त ॥
२७.४×११.२ सें० मी०	३ (१–३)	१८	५५	पू०	प्राचीन सं०१६२४	तस्यातिशायिनिश्चे पयिजागरुक धीलोचनस्य गृह शासन लोचनस्य नानाकवींद्र रचितानभिधानकोषानाकृष्य लोचनमिवोथमदीपिकोष ॥३॥ * नागेंद्र स प्रथित कोष समुद्रमध्ये नानाकवींद्र मुखसुक्ति समुद्धृवेय । विद्वदगृहादमरनिर्मित पट्टसूत्र । मुक्तावली विरचिता हृदि संनिधातु ॥ इति ग्रंथस्यादि समाप्ता ॥ संवत १६२४ जेष्ठे ॥
२४.६×११.४ सें० मी०	२ (१–२)	१०	३७	पू०	प्राचीन	इति वलभ कृत माला समाप्ता श्लोक मख्या श्राठ ॥
२७×११.५ सें० मी०	१८ (१–१८)	७	२८	पू०	सं०१९३६	इति श्रीधनजयकृत नाममालानिघंटु समाप्तम शुभम शुभमस्तुसिद्धिरस्तु श्री संवत १९३६ मार्गशीर्ष कृष्णे ५ पंचम्यगुरौ लिखित रामप्रसाद दिच्छित ॥
१६.५×६.७ सें० मी०	१४ (११२–११३ १३५,१४२, १४२ १४५–१५१,१५३–१५४)	७	२३	अपू०	प्राचीन सं०१८१२	इत्यऽमरसिंह कृतौ नाम लिगानुशासने सामान्य काण्ड तृतीय सागएव समर्थित शुभमस्तु लेखक पाठकयो सं०१८१२ ज्यष्ठसुदि ४ गुरऊ श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥श्री॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१००	३६६६	निघंटु			दे० का०	दे०
१०१	२५७४	निघंटनाममाला			दे० का०	दे०
१०२	२६४३	निघंटमाला	धनजय		दे० का०	दे०
१०३	११९२	ॐ पारसीप्रकाश	कृष्णदास		दे० का०	दे०
१०४	६६८	पारसीप्रकाश	कृष्णदास		दे० का०	दे०
१०५	३२३६	मातृकाकोश			दे० का०	दे०
१०६	५१७०	मातृकाकोश			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
१६ × ७.७ सें० मी०	१६ (१–१६)	६	२३	पू०	प्राचीन सं०१८५८	इतिनिघटौ पचमोध्याय समाप्त ॥ सं० १८५८ ॥ शके १७२३ मिती माघकृष्ण अमाया समाप्त ॥
२३ × १०.३ सें० मी०	६	१०	४१	पू०	सं०१८७०	इति श्री धनंजय महाकाव्ये निघंटनाम माला समाप्ता, शुभमस्तु श्रीस्तु ॥ सं० १८७० पोष कृष्ण पचमी रवि वासरे इद पुस्तक लिख्यते ॥ रामाय नमः ··· ··· ··· ···
२२ × ६ सें० मी०	२० (१–२०)	७	३६	पू०	सं०१७८७	इति श्री धनजय विरचितायां निघंट माला ॥ समाप्त शुभमस्तु ॥ सवत् १७८७ शाल कार्तिक ······ ·· ··
२८.८ × ११ सें० मी०	१९ (१–१९)	१०	४२	पू०	प्राचीन सं०१८३३	इति श्री महीमहेंद्र श्रीमदकबर शाहकारिते विहारि कृष्ण दाश मिश्र कृते पारसी प्रकाशे कृत्प्रकरण समाप्त ॥ अग्नि राम वसु भूमि सयुते फाल्गुणे शिवतिथौ सितेतरे ॥ सूर्य नदनदिने हरिवशो वशरूप कृतये विलिलेष ॥
२८ × ११.३ सें० मी०	१० (१–१०)	१३	४४	पू०	प्राचीन सं०१८३४	इति श्री मही महेंद्र श्री मदकबरसाह कारिते कृष्णदास पारसी प्रकाशे शब्दार्थ कोश प्रकरणम् ॥ सं०१८३४ के साल चैत्र वदी ११ गरीक लिखि महापाल वशरू पेशा ।
२३.४ × १०.३ सें० मी०	३ (१–३)	१२	३४	पू०	प्राचीन	इति मातृका कोशः सपूर्ण ।
१६.७ × ८.५ सें० मी०	६	६	२१	पू०	सं०१९१७	इति मातृका कोश समाप्त सं०१९१७ आश्विन कृष्ण १३ गुरौ ॥
(सं०सू०५६)						

[क्र]माव और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकर	ग्रंथ जिस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०७	६२०/२	मातृकाकोश			दे० का०	दे०
१०८	६२०/२	मातृका निघंटु			दे० का०	दे०
१०६	७५५६	मेदिनीकोश			दे० का०	दे०
११०	२६६०	मेदिनीकोश			दे० का०	दे०
१११	१३८३	मेदिनीकोश	मेदिनीकर		दे० का०	दे०
११२	१०४०	व्यजनैकातरेकोश			दे० का०	दे०
११३	२७३५	शुद्ध प्रदीप	सुरेश्वर		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
१६.६ × ६.८ सें० मी०	५	८	२३	अपू०	प्राचीन	इति श्री मातृकाकोशरसमाप्त ॥
१६.३ × १० सें० मी०	८	१०	२७	अपू०	प्राचीन	
३१.२ × १३.५ सें० मी०	७४ (१–७४)	१०	२६	अपू०	प्राचीन	
२२.४ × १०.६ सें० मी०	४	१३	३१	अपू०	प्राचीन	
२२.४ × १०.८ सें० मी०	१०२	११	३४	अपू०	प्राचीन	
३१ × ११.८ सें० मी०	६	६	३१	पू०	सं०१८८२	इति व्यंजनैकातरे कोष समाप्त ।. श्रीकृष्ण गोकुल वासी सवत् १८८२ समय नाम कार्तिकमासे कृष्ण पक्षे द्वादश्यां सौमवासरे बुझावन शर्मणे लेख्यमिदं पुस्तक ॥
२४.३ × ८.५ सें० मी०	४३	६	४६	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
गीता						
१	६००२	अर्जुन गीता			दे० का०	दे०
२	१७०७	अर्जुन गीता			दे० का०	दे०
३	२८१३	अर्जुन गीता			दे० का०	दे०
४	३४४८	अर्जुन गीता			दे० का०	दे०
५	३५७५	अर्जुन गीता			दे० का०	दे०
६	२५१२	अर्जुन गीता			दे० का०	दे०
७	२७३	अवधूत गीता			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	ग	द	६	१०	११
१६.३×१०.५ सें० मी०	१६ (१–१६)	७	१६	पू०	सं०१६०६	इति श्री अर्जुन गीता श्री कृस्न अर्जुन सवादे तत्व गनदीपो संवत् १६०६ ॥ …… ॥
२२.५×६.८ सें० मी०	६ (६–१७)	६	२५	अपू०	प्राचीन	इति श्री कृष्णार्जुन सवादे अर्जुन गीता समाप्त । श्री शुभमस्तु । श्रीरामायनम
१२×८ सें० मी०	(४३ पृ० सस्कृत, १६ पृ० हिंदी) कुल ५६ पृ०	७	१२	पू०	सं०१८६३	इति श्री कृष्णमार्जुन सवादे अर्जुन गीता सपूरण, भाद्र शुक्ल पक्ष तिथौ ४ बुधवासरे सवत् ॥१८६३॥
१८.४×६.६ सें० मी०	११ (१–११)	६	२१	अपू०	प्राचीन सं०१८४७	इति श्री अर्जुन गीता सपूर्ण सवत् १८४७ कवार वदि द्वतीया ॥
२३.३×११ सें० मी०	६ (१,५–८,१०, १२–१३, १७, १६)	६	२०	अपू०	प्राचीन	इति श्रीकृष्णार्जुन संवादे अर्ज्जुन गीता समाप्त ॥
२१.३×१४.१ सें० मी०	७ (१–७)	१२	२८	पू०	प्राचीन सं०१८८६	इति श्री कृष्णार्ज्जन सवादे अर्ज्जुन गीता समाप्त शुभमस्तु सं० १८८६ प्र श्रवण वदि नवमी रविवासरे प्रति लिषित राधकृष्ण ब्रह्मन उपाध्या श्री कृष्णायनम राधकुजविहारी की जैराम ॥
१६.५×१२ सें० मी०	८ (१०–१३, २०–२३)	१२	२२	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की ग्रागतसख्या या सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८	६७३१	ग्रवधूत गीता	दत्तात्रेय		दे० का०	दे०
९	७८४५	ग्रष्टादशश्लोकी गीता			दे० का०	दे०
१०	३६६४	उत्तरगीता	गौडपादाचार्य		दे० का०	दे०
११	१९२६	उत्तरगीता			दे० का०	दे०
१२	२०२२	उत्तरगीता			दे० का०	दे०
१३	७७०५	उत्तरगीताभाषा (द्वितीय ग्रध्याय)		गौडपादाचार्य	दे० का०	दे०
१४	४१५८	कपिलगीता			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	म	द	६	१०	११
२४·६ × १३·६ सें० मी०	१८ (१–१८)	१२	२७	पू०	प्राचीन	इति श्री दत्तात्रय विरचितायां अवधूत गीतायां ॥ स्वात्म मवित्युपदेशे चतुर्थं प्रकरण । (पत्र संख्या १३)
१६·६ × ६ सें० मी०	२	७	१८	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे अष्टादश श्लोकी गीता संपूर्णम् श्री कृष्णार्पणमस्तु श्री गुरुदत्तात्रयायार्पणमस्तु शुभं भवतु ॥
२०·४ × ६·३ सें० मी०	२५ (१–२५)	१२	३३	अपू०	प्राचीन	इति श्री गौडपादाचार्य विरचितायां उत्तर गीतायां द्वितीयो० ॥ (पत्रसंख्या–२२)
१५·५ × ६·४ सें० मी०	१३ (१–१३)	५	१५	अपू०	प्राचीन	
१५·५ × ६·६ सें० मी०	१२ (१–१२)	५	१७	अपू०	प्राचीन	
२६·६ × १४·३ सें० मी०	२१ (१–२१)	१२	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री गौडपादाचार्य विरचितायां उत्तरगीता व्याख्या द्वितीयोऽध्यायः ॥ श्रीमदुत्तर गीतायां द्वितीयोऽध्याय ॥
१५·३ × ६ सें० मी०	२७	६	१६	अपू०	प्राचीन	इति पद्म पुराणे सिद्धांत सारे कपिल ऋषि सिद्ध संवादे राजराजेश्वरयोग कथन नाम अष्टमोऽध्याय ।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की ग्रन्थसंख्या या सग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१५	३२८१	गणेशगीता			दे० का०	दे०
१६	५७१५	गर्भगीता			दे० का०	दे०
१७	१०६(अ)	गीता	व्यास		दे० का०	दे०
१८	२०५५	गीता (तृतीय अध्याय)			दे० का०	दे०
१९	३८८	गीता (सस्कृत टीका सहित)	व्यास		दे० का०	दे०
२०	३१७४	गीता			दे० का०	दे०
२१	५२३३/२१	गीता (दशम और एकादश स्कन्ध)			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१७×८८ सें० मी०	५० (१–५०)	७	२५	पू०	सं०१८२०	इति श्री गणेशगीता संपूर्णं। संवत् १८२० शके १६८५ विजयनामसंवत्से अधिक ज्येष्ठवद्यतता देशीतदिन पुस्तक समाप्त ॥ श्री गजाननार्पणमस्तु ॥
१६६×६२ सें० मी०	५ (१–५)	६	१६	पू०	सं०१६३६	इति श्री गर्भगीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे गर्भ गीता समाप्तम ॥ शुभमस्तु ॥ संवत् १६३६ के आषाढ सुदि १२ कालिपित श्री बाबा मंगलदाश ॥
१२५×७५ सें० मी०	१३० (१ १३०)	६	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शत सहस्र्या संहिताया भीष्मपर्वणि श्रीभगवदगीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे मोक्ष संयास योगो नामाष्टादशोध्याय ॥१८॥ समाप्ता श्री भगवदगीता ॥
१५५×६६ सें० मी०	८ (१–८)	५	१८	पू०	प्राचीन	श्रीमदुत्तर गीता सूपनिषत्सु० यायोग शास्त्र० संवादे महाभारते अश्वमेध० शत सहस्र० ज्ञान विवरणनाम तृतीयोध्याय ३ ॥
३४७×१३१ सें० मी०	१० (५, ६ १२–१६)	६	३७	अपू०	प्राचीन	
१५×७४ सें० मी०	३६ (४८ ६६ ७१–८४)	८	२०	अपू०	प्राचीन	श्रीमदभागवतदगीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे मोक्ष संयास योगोनाम अष्टादशोध्याय ॥१८॥ × × ×
१५५×१०३ सें० मी०	११	६	२३	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवदगीतासूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे विश्वरूप दर्शन नाम एकादशोऽध्याय ॥
(सं० सू० ६०)						

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्राप्तसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२२	२८	गीतागूढार्थ दीपिका		मधुसूदनदास सरस्वती	दे० का०	दे०
२३	२१०२	गीतागूढार्थ दीपिका		मधुसूदन सरस्वती	दे० का०	दे०
२४	२१०३	गीतागूढार्थ दीपिका		मधुसूदन सरस्वती	दे० का०	दे०
२५	२१०४	गीतार्थगूढार्थ दीपिका		मधुसूदन सरस्वती	दे० का०	दे०
२६	२३०८	गीतागूढार्थ दीपिका (अष्टम अध्याय)			दे० का०	दे०
२७	२३०७	गीतागूढार्थ दीपिका (अष्टम अध्याय)			दे० का०	दे०
२८	२११३	गीतागूढार्थ दीपिका		मधुसूदन सरस्वती	दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ ग	ब	स	द	६	१०	११
२८·४×१३·३ सें० मी०	२८	१३	४६	अपू०	प्राचीन	
२८·३×१२ सें० मी०	१२	१०	५०	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता गूढार्थ दीपिकायां षोडशोध्याय ॥१६॥
२८×१२ सें० मी०	१०	६	३२	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूप निषत्सु ब्रह्मविद्यायां योग शास्त्रे श्री कृष्ण मार्जुन संवादे गूढार्थ दीपिकायां चतुर्दशाध्याय ॥ श्री कृष्णाय गोविंदाय नमोनमः ॥श्री॥
२८·३×१२ सें० मी०	८	११	४६	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सुपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योग शास्त्रे श्री कृष्ण मार्जुन संवादे दीपिकायां द्वादशाध्याय ॥ श्री कृष्णाय गोविंदाय नमोस्तुते ॥ श्री भवान्यै नम ॥
२८×११·७ सें० मी०	१२ (१–१२)	१०	४४	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता गूढार्थ दीपिकाया मोध्याय ।
२८·४×१२·१ सें० मी०	३१ (१–३१)	११	५४	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता गूढार्थ दीपिकाया षष्ठोध्याय समाप्त प्रथमकांड समाप्त ॥
२८·२×११·६ सें० मी०	१६ (१–१६)	११	५४	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता गूढार्थ दीपिकाया तृतीयोध्याय ॥शुभमस्तु॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगत संख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२९	२११२	गीतागूढार्थ दीपिका (चतुर्थ अध्याय)			दे० का०	दे०
३०	२१११	गीतागूढार्थ दीपिका (पंचम अध्याय)		मधुसूदन सरस्वती	दे० का०	दे०
३१	२११०	गीतागूढार्थ दीपिका (सप्तम अध्याय)		मधुसूदन सरस्वती	दे० का०	दे०
३२	२१०८	गीतागूढार्थ दीपिका		मधुसूदन सरस्वती	दे० का०	दे०
३३	२१०६	गीतागूढार्थ दीपिका		मधुसूदन सरस्वती	दे० का०	दे०
३४	८३६	गीता शांकर भाष्य	शंकराचार्य		दे० का०	दे०
३५	१६६५	गीता (संस्कृत टीका सहित)			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
८ घ	ब	स	द	६	१०	११
२८.२ × ११.६ सें० मी०	२४ (१–२४)	१०	४४	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता गूढार्थदीपिकायां चतुर्थोऽध्याय. ॥
२८.२ × ११.६ सें० मी०	११ (१–११)	१०	४५	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सुब्रह्म ··· ···गीता गूढार्थ दीपिकायां पंचदशोऽध्याय ॥
२८.४ × १२ सें० मी०	१४ (१–१४)	१०	४१	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सुपनिषत्सु ··· ··· गूढार्थ दीपिकाया सप्तमोध्याय. समाप्त. ॥ ७ ॥ शुभमस्तु ॥
२८.५ × १२ सें० मी०	४६	१०	४६	पू०	प्राचीन	इति श्री मत परमहंस परिव्राजकाचार्य विश्वेश्वर सरस्वती श्री पाद शिष्य श्री मधुसूदन सरस्वती विरचितायां श्रीमद्भगवद्गीता गूढार्थ दीपिकायां सर्व गीतार्थ सूत्रण नाम द्वितीयो ध्याय ॥ शुभमस्तु ॥ शुभ रस्तु ॥
२८.५ × १२ सें० मी०	१३	१०	५०	पू०	प्राचीन	इति श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य विश्वेश्वर सरस्वती श्री पाद शिष्य श्री मधुसूदन सरस्वती विरचितायां गीता गूढार्थ दीपिकाया प्रथमोध्यायः समाप्त ॥ शुभमस्तु ॥ श्रीकृष्णाय नम ॥ श्री गोपालाय नम ॥
२६.३ × १२ सें० मी०	१२३ (१–४४, ४६–१२४)	१५	४७	अपू०	प्राचीन	इति श्री परमहंस परिव्राजकाचार्यस्य शंकरभगवत कृतौ श्रीगीताभाष्ये पूपनिषत्स्वष्टा दशोध्याय समाप्ता ॥ ·········
२४.२ × १२.६ सें० मी०	५ (२–४, ४, २०)	६	१६	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा समहृविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३६	२६३५/७	गुरुगीता			दे० का०	दे०
३७	७५३२	गुरुगीता			दे० का०	दे०
३८	१७०१	गुरुगीता			दे० का०	दे०
३६	१७०८	गुरुगीता			दे० का०	दे०
४०	११९६/४	जन्मविपाकगीता			दे० का०	दे०
४१	७६०८	तत्वसागरगीता			दे० का०	दे०
४२	२४८४	नारदगीता			दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४.५ × १४.५ सें० मी०	२	२६	१७	अपू०	प्राचीन	
१८.२ × ६.५ सें० मी०	११ (१–११)	६	३२	पू०	प्राचीन	श्री स्कंद पुराणे ब्रह्मोत्तर खंडे इश्वर पार्वती संवादे श्री गुरुगीतास्तोत्र मंत्र संपूर्ण ॥ × × × × × ×
२२ × १०.५ सें० मी०	१० (३, ७–१६)	७	३०	अपू०	प्राचीन	
२३.५ × ११.३ सें० मी०	७ (३–९)	११	३१	अपू०	प्राचीन सं०१८३४	इति श्री स्कंदपुराणे उमा महेश्वर संवादे गुर गीता संपूर्ण ॥ शुभमस्तु ॥ ... सं०१८३४ मासानाकार्तिक मासे कृष्णपक्षे चतुर्दश्या १४ बुधवासरे लि त गुसाईं ॥
२६ × १४.१ सें० मी०	२ (३–४)	१५	४६	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवान अर्जुन संवादे जनम विपाक गीता समाप्त ॥
१३.१ × ८.४ सें० मी०	१३ (१–१३)	७	१४	अपू०	प्राचीन	
१६.५ × ९.३ सें० मी०	६ (१–६)	७	२०	पू०	प्राचीन	इति श्री कृष्ण नारद संवादे नारद गीता संपूर्ण शुभमस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४३	१६८३	नारदगीता			दे० का०	दे०
४४	३३४८ / ४६	नारदगीता			दे० का०	दे०
४५	१५००	नारदगीता			दे० का०	दे०
४६	७१७८	नारदगीता			दे० का०	दे०
४७	२६३१ / १२	पाडवगीता			दे० का०	दे०
४८	७७४५	पाडवगीता			दे० का०	दे०
४९	७२८८	पाडवगीता			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२६.६×११.५ सें० मी०	२ (२-३)	७	३७	अपू०	प्राचीन	इति श्री कृष्ण नारद संवादे नारद गीता सम्पूर्णम् ॥
१२.५×८.२ सें० मी०	६ (१-६)	६	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री कृष्णनारद संवादे नारद गीता सम्पूर्णम् शुभमस्तु श्री राम

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५०	६०००	पाडवगीता			दे० का०	दे०
५१	५६०६	पाडवगीता			दे० का०	दे०
५२	२३८६	पाडवगीता			दे० का०	दे०
५३	३२१२	पाडवगीता			दे० का०	दे०
५४	६५२० / १६	पाडवगीता			दे० का०	दे०
५५	३३४८ / ४६	पाडवगीता			दे० का०	दे०
५६	३२०७	पाडवगीता			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	१०
२३.४×११.७ सें० मी०	७ (१–७)	१२	३३	पू०	प्राचीन	इति श्री पाण्डव गिता शुभ शुभुन समाप्त ॥
२०.७×१०.६ सें० मी०	१४ (१–१४)	७	२०	पू०	प्राचीन सं०१८७१	इति श्री सकल महार्वैष्णव विरचनाया पाण्डवगीता स्तोत्र समप्त शुभ भवत मगल ददात् ॥ फगुन सुद १० ॥ सवत् १८७१ ॥ मु का ॥ वाद ॥ **
२२×१० सें० मी०	१० (१–४, ६–११)	८	२८	अपू०	प्राचीन सं०१८१७	इति श्री महाभारते शाति पर्वणि भीष्म नारद सवादे पाडवगीता नाम विष्णु प्रस्तुति समाप्ता । शुभमस्तु ॥ सवत् १८१७ ॥ तत्र वर्षे श्रावण मासे शुक्ला सप्तम्या पक्षे भौमवासरे ॥ मिद पुस्तक समाप्त ॥
१५.३×१०.१ सें० मी०	७६	८	२०	अपू०	प्राचीन	
६.६×६.५ सें० मी०	१६ (१–१६)	१०	१२	पू०	प्राचीन	इति श्री पाडवगीता शमाप्त शुभमस्तू + + + ॥
१२.५×८.२ सें० मी०	२१ (१–२१)	६	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री पाडवगीता स्तोत्र संपूरणम् शुभमस्तु श्रीराम ॥
१६.५×८.३ सें० मी०	११ (१–११)	७	२८	पू०	प्राचीन	इति पाडवगीता समाप्त श्री लक्ष्मी नारायणापणमस्तु ॥ शुभवतु ॥ यादृशा पुस्तकं दृष्ट्वातादृशो लिखित मया । यदि शुद्धमशुद्ध वा मम दोषो न विद्यत ॥ १ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५७	११२१	पांडवगीता			दे० का०	दे०
५८	३५६२	पांडवगीता			दे० का०	दे०
५९	४१३७	पांडवगीता			मि० का०	दे०
६०	२८३७	पांडवगीता			दे० का०	दे०
६१	२८६८	पांडवगीता			दे० का०	दे०
६२	४५१४	पांडवगीता			दे० का०	दे०
६३	१८६१ / ५	पांडवगीता			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६×१२.६ सें० मी०	१० (१–१०)	१०	३२	अपू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते·········राजशूय प्रकरणे शिशुपालवधे पांडवगीता समाप्ता ॥
१६×८४ सें० मी०	१५ (१–१५)	६	२१	पू०	प्राचीन	इति श्री पांडवगीता समाप्ता।
१७२×१०.३ सें० मी०	१० (१–१०)	१०	१९	पू०	प्राचीन	इति श्री पांडवगीता संपूर्णम् शुभ भूयात् मिती आषाढ सुदि ७ संवत् १९०७ रामायनम ·········॥
१६.६×८७ सें० मी०	१३ (१–१३)	८	२१	पू०	प्राचीन	इति पांडवगीता संपूर्ण ॥ समाप्त ॥ सं० १९२२ ॥ श्री श्री स्वामी जी चेत·········॥
१२.३×७३ सें० मी०	१८ (१–१८)	७	१५	पू०	प्राचीन सं०१९१७	इति श्री पांडवगीता समाप्ता सं० १९१७ के मार्ग सुदी १० शुक्रेश पुस्तक लिखित प० अमोरासिवदीन राम चतुर्वेदी उचहरा वेद ॥
२३.१×१०७ सें० मी०	७ (१–७)	६	३५	पू०	प्राचीन	इति श्री पांडव गीता संपूर्ण ॥ शुभमस्तु ॥
२८४×१४ सें० मी०	३ (१–३)	१५	४४	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६४	१३६८	पाडव गीता			दे० का०	दे०
६५	४२७६	पांडव गीता			दे० का०	दे०
६६	६८६६	ब्रह्मगीता-सटीक			दे० का०	दे०
६७	६१	भगवतगीता	लालताप्रसाद मिश्र		दे० का०	दे०
६८	३६४	भगवतगीता	व्यास		दे० का०	दे०
६९	७२७६	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
७०	७४५२	भगवद्गीता			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का ग्राकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसख्या ग्रौर प्रति पक्ति मे ग्रक्षरसख्या		क्या ग्रथ पूर्णहै ? ग्रपूर्ण है तो वर्तमान ग्रश का विवरण	ग्रवस्था ग्रौर प्राचीनता	ग्रन्य ग्रावश्यक विवरण
८ ग्र	ब	स	द	१०	१०	१०
१८×६ सें० मी०	६	८	३३	ग्रपू०	सं० १८५४	इति पाडवगीता सपूर्णम् शुभमस्तु स० १८५४ वं० शु० ५ भृगु० लि० उदेरामेणशुभम् ।
२१.५×१०.५ सें० मी०	१४ (१-३,१५)	७	२५	३५०	स० १९१८	इति श्री पाडवगीता समाप्ताः ॥''' '''॥ सवत् १९१८ माघ कृष्ण ६ शनौ लिप्यत प० श्री दुवेराम्रे पठनार्थं ''' ।
२७.५×१२ सें० मी०	१५० (१-३२, ३२-१४६)	११	३८	पू०	प्राचीन	इति श्री स्कदेपुराणे सूत सहिताया यज्ञवैभव खडस्योपरिभागे ब्रह्मगीतासूपनिषत्सुद्वादशोध्याय ॥
२१×११.७ सें० मी०	६६ (१-६६)	६	१९	पू०	प्राचीन	भाद्र कृष्ण १० गुरु वारे लिप्यत मिदं पुस्तक समाप्ता लिप्यत लालताप्रसाद मिसिर पलटन गोपन वपनी ८ रजमट
२८.३×१४.४ सें० मी०	२८ (२-२४, २६-२९, ३१)	१४	३७	ग्रपू०	प्राचीन	६६ वनाजमालपुनदि कृष्ण पुल के निकट ॥ जद ग्रक्षर पुस्तक द्रष्टातादश लिप्यत मया । यदि शुद्धम शुद्धवा मम दोशोन दीयते ।
२०.२×१०.४ सें० मी०	६३ (१-६३)	६	२६	पू०	प्राचीन (जीर्ण)	इति श्री भगवद्गीता सपूर्ण सुभमस्तु सवत् १८८१ के शुक्ल चैत्र सुदि नौमि गुरौ व :-
२०.६×६.१ सें० मी०	७१ (१-७१)	७	२८	पू०	प्राचीन सं० १८८१	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन सवादे मोक्ष योगोनामाष्टादशोध्यायः । शुभमस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७१	७४५०	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
७२	७२९८ / २	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
७३	७६१५	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
७४	७६०१	भगवद्गीता टीका			दे० का०	दे०
७५	७६६६	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
७६	७८८६	भगवद्गीता-सटीक (सुबोधिनी टीका)		श्रीधर स्वामी	दे० का०	दे०
७७	७८९३	भगवद्गीता टीका		श्रीधर स्वामी	दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६·४ × १२·४ सें० मी०	७८ (२–७९)	९	२०	अपू०	प्राचीन	इति श्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्याया योग शास्त्रे श्रीकृष्णअर्जुन सवादे गुणत्रयविभागयोगोनाम सप्तदशोध्याय ॥ (पृ० ७५)
१६·४ × १२·५ सें० मी०	३९ (१–३९)	१८	१३	अपू०	प्राचीन (जीर्ण)	इति श्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन सवादे मोक्षसन्यास योगोनामाष्ठादशोध्याय १८ ॥ भगवद्गीता सपूर्णा ॥
२५·७ × १३·४ सें० मी०	४० (२–४१)	११	३०	अपू०	प्राचीन स० १८९९	इति श्रीभगवद्गीता सूपनिषत्सुब्रह्मविद्याया योग शास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन सवादे सन्यासयोगोनामा द्वादशोध्याय ॥ × × सवत् १८९९ वर्षे ॥ सके १७६४ ॥ वर्षे फाल्गुन मासे सुदि···
२३·५ × १२·४ सें० मी०	१९	९	२५	अपू०	प्राचीन (जीर्ण)	
९·४ × ८·६ सें० मी०	४९	९	१३	अपू०	प्राचीन	
३३·८ × १५·७ सें० मी०	८१ (१–८१)	१३	५०	पू०	प्राचीन स० १८८३	इति श्रीभगवद्गीता टीकाया सुबोधिन्याश्रीधरस्वामि विरचिताया परमार्थं निर्णयोनामाष्टादशोऽध्याय १८ ॥ रामेभवसुभू सख्य १८८३ वर्षे पौषेसितेभृगौ ॥ पक्षेऽष्टम्या चरेवत्या मल्लिनाथोव्यलीलिखत ॥१॥ समाप्तोय ग्रथ सुभमस्तु श्रीराम ॥
३१·१ × १३·३ सें० मी०	११५ (१–११५)	११	४०	पू०	प्राचीन स० १८५३	इति श्रीभगवदगीता टीकाया सुबोधिन्या श्रीधरस्वामि कृताया मोक्ष योगो नामाष्टादशोध्याय ॥ १८ ॥ सर्मं मासे चैत्र शुक्ल पक्षे पचम्या भौमवासरे पुस्तक गीता टीका रामे लिपावा बाल कृष्ण रामभक्त समत १८५३ श्री पदुमपूर ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की भागतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७८	५८११	भगवद्गीता (द्वादश अध्याय)			दे० का०	दे०
७९	५८२९	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
८०	५८२५	भगवद्गीता (भाषा टीका)			दे० का०	दे०
८१	५९९४	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
८२	५९९१	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
८३	५९८२	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
७४	५९७१ / ६	भगवद्गीता			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२.८ × ११ सें० मी०	२ (१-२)	८	२६	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीतासूपनिपत्सु ब्रह्मविद्याण योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन सवादे भक्तियोगो नाम द्वादशोऽध्याय १२॥
२० × १४ सें० मी०	६० (३३–९२)	६	१७	अपू०	प्राचीन स० १६२२ (कृमि-कृति)	इति श्रीभगवद्गीता सूपनिपत्सुब्रह्मविद्या यायागशास्त्रे श्रीकृष्णाजु न सवादेसन्यास मोक्षयोगो नाम अष्टादशोध्याय स० १६२२॥
२२.३ × १३.४ सें० मी०	६६	८	२३	अपू०	प्राचीन	इति श्री मनमहाभारते सतमहस्र सहितायावैयाशिक्या भीष्म पर्वणि श्रीमद्भगवद्गीता सू परिपत्सु ब्रह्मविद्याया योयशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसवादे ज्ञान-विज्ञान यागोनाम सप्तमोऽध्याय
१६.५ × ९.५ सें० मी०	३० (१–२,४–६,११–१६, २५, २८–३३, ६६, ६९–७३)	७	२२	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीतासूपनिपत्सु ब्रह्मविद्याया योग शास्त्रे श्रीकृष्णाजु न सवादे गुणकर्म दर्शना नाम सप्तदशोऽध्याय ॥
१३ × ९.१ सें० मी०	२२	५	१६	अपू०	प्राचीन	इति श्रीभगवद्गीता सूपनिपत्सु ब्रह्मविद्याया यागशास्त्र श्रीकृष्णाजु न सवादे विभूति योगोनाम दशमोऽध्याय' ॥१०॥
१६.६ × ९.५ सें० मी०	१०३ (१–१०३)	६	२१	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिपत्सु ब्रह्मविद्यायां योग शास्त्र श्रीकृष्णाजु न सवादे मोक्षयोगो नाम अष्टादशोध्याय. ॥
१०.८ × ६.७ सें० मी०	१३५ (१–१३५)	६	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारतेशत महस्र्य-सहितायावैयासिक्या भीष्म पर्वणि भगवद्गीता सूपनिपत्सुब्रह्मविद्यायायोग शास्त्रे श्री कृष्णतत सवाद सन्यास योगो नामाष्टदशोध्याय' ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८५	६१२५	भगवद्गीता (दशम और एकादश अध्याय)			दे० का०	दे०
८६	६०७६/५	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
८७	६२०८	भगवदगीता (चतुर्थ, पंचम अध्याय)			दे० का०	दे०
८८	२२८१	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
८९	५५२०/५	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
९०	२१९३	भगवदगीता			दे० का०	दे०
९१	२१२३	भगवदगीता (गूढार्थदीपिका)		मधुसूदन सरस्वती	दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१३.३×८.५ सें० मी०	१५ (१-१५)	६	१८	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्याया योग शास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन सवादे विश्वरूप दर्शनोनामैकादशोध्याय ॥११॥
१५.४×६.४ सें० मी०	१३५	६	१७	अपू०	प्राचीन	इति श्री महाभारतेशत सहस्रसहितायां वैयासिक्या भीष्म पर्वणि श्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन सवादे मोक्ष सन्यास योगोनाम अष्टादशोध्याय सपूर्णम् ॥शुभम्॥
१७×७.६ सें० मी०	५ (३३-३७)	६	१७	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन सवादे सन्यास योगो नाम चतुर्थोध्याय ।••• (पत्रसख्या—३६)
१६.८×११.४ सें० मी०	२८ (१—२८)	५	१४	अपू०	प्राचीन स०१८४४	
१३.६×७.६ सें० मी०	१४३ (१-१४४)	६	१४	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया योग शास्त्रे श्री कृष्णार्जुन सवादे मोक्षयोगोनामअष्टादशोध्याय ॥
१७.७×७.८ सें० मी०	१६ (८,११-१२,२५,२६—३६)	८	२५	अपू०	प्राचीन	
२८×१२ सें० मी०	११ (१—११)	१०	४५	पू०	प्राचीन	इतिश्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन सवादे गूढार्थदीपिकाया सप्तदशोध्याय.॥ श्रीकृष्णाय गोविंदाय नमोस्तुते ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६२	६४६१	भगवद्गीता (हिन्दी-मराठी-टीका)		पार्थ सारथी	दे० का०	दे०
६३	७१५७	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
६४	१३६	भगवद्गीता	व्यासजी		दे० का०	दे०
६५	३८५	भगवद्गीता (सटीक)	व्यास	रामानुजमुनि	दे० का०	दे०
६६	६६७	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
६७	३३७	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
६८	१८७५	भगवद्गीता			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४·३ × १५·२ सें० मी०	६०	१०	१५	अपू०	प्राचीन	इति टीका समश्लोकी अध्याय पंच मावरी श्री पार्थसारथी कर्त्ता जीवा मन मनोरथी ५ (पत्र सं० २८) (पत्रांक ३४)
१२·५ × ८·२ सें० मी०	१२६ (१-११५, १४१-१५१)	६	१५	अपू०	प्राचीन सं०१६१७	इति श्री महाभारते शत साहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यां भीष्मपर्वणि श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादेसंन्यास योगोनामष्टादशोध्याय: ॥··· संवत् ॥ १६१७ ॥······
१६ × १० सें० मी०	७१ (१-७१)	७	२७	पू०	प्राचीन	शके १७५३ शुभ कृन्नामसंवत्सरे आषाढशुक्ल चतुर्दश्यां मंद वासरे आर्या वर्तांतर्गत ब्रह्मावर्तैकदेशे उत्प लारण्येवारुणी क्षेत्रेएतत्पुस्तक समाप्तिमं गमत् ॥
३३·६ × १६·२ सें० मी०	१६ (३५-५०)	१३	५५	अपू०	प्राचीन सं०१८३७	इति श्री भगवदंमानुज मुनिविरचिते अष्टादशोध्याय: ॥१८॥ भाद्रमासे शुक्ल पक्षे तिथौ १५॥ बुद्धवासरे तद्दिनशंपूर्ण शमाप्त॥ संवद॥१८३७॥
२७·३ × ११·६ सें० मी०	१२७ (१,३-१२८)	७	२६	अपू०	प्राचीन सं०१८६३	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन सवादे भीष्मपर्वणि परममोच संन्यास योगोनाम अष्टादशोऽध्याय: ॥······ श्री सं० १८६३ ॥
२४·१ × १२·६ सें० मी०	२७ (१-२७)	१३	३८	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सुपनिषतत्सू ब्रह्म विद्याया योग शास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे मोक्ष सन्यास यागोनाम अष्टादशोऽध्याय: ॥१६॥सं०॥१६॥
२५·६ × १५·६ सें० मी०	११ (६-१६)	१४	३१	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनियत्सू ब्रह्म विद्याया योगसास्त्रे श्री कृष्णार्जुन सवादे कर्म सन्यास योगो नाम चतुर्थोध्याय ॥ + + + + (पृ० १५)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
९९	३६१८	भगवद्गीता (सटीक)			दे० का०	दे०
१००	३६४६	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१०१	३६८६	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१०२	३६८८	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१०३	३८६०	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१०४	३००९	भगवद्गीता (सटीक)			दे० का०	दे०
१०५	३०७३	भगवद्गीता			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२९७×१५५ सें० मी०	१३१ (१-१३१)	१२	३६	अपू०	प्राचीन	इति श्री पचीवलीभगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादेसन्यास योगोनामाष्टादशोध्याय १८ समाप्तिमंगमत् ॥ विक्रमादित्यराजस्यनागाभ्रनवभूस्मृत आषाढेऽ सितपक्षेतु तृतीया चद्रवासरे लिखित शिवदत्तेन मुन्नालालस्यआत्मज ।
११५×७६ सें० मी०	११८ (१-११८)	८	१८	पू०	प्राचीन	······श्री भद्गवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे मोक्ष सन्यास योगो नाम अष्टमदशोध्याय ।
१८८×९६ सें० मी०	५० (१-५०)	१०	३२	पू०	प्राचीन	···श्री मद्भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया योग शास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे मोक्षसन्यास योगोनाम अष्टादशोध्याय समाप्त शुभ भूयात ·····।
३११×१५२ सें० मी०	३९ (१-३९)	९	३७	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म० योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे क्षेत्र सन्यासयोगो नामाष्टादशोध्याय॥१८॥ समाप्त शुभमस्तु ॥
२३५×१०३ सें० मी०	१३ (९-२१)	७	२८	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपणिषत्सु ब्रह्म विद्या ।
३१३×१९३ सें० मी०	१९	१५	५२	अपू०	प्राचीन (जीर्ण)	इति श्री भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवाद योग शास्त्रे निर्णय सन्यास योगो नामऽष्टादशोध्याय ॥१८॥
२१८×८७ सें० मी० (भे०स०१३)	७१ (१-७१)	६	३०	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०६	८६९	भगवत्गीता (१ से १० अध्याय तक)			दे० का०	दे०
१०७	६१५	भगवत्गीता (१ से १८ अध्याय तक)			दे० का०	दे०
१०८	९४४	भगवत्गीता			दे० का०	दे०
१०९	९७३	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
११०	४८३८	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१११	४६२३	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
११२	४६१४	भगवद्गीता (अष्टादशाध्याय)			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२.८×१३.२ सें० मी०	५४ (१–५४)	६	२७	पू०	प्राचीन सं० १६३२	इति श्री भगवतगीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्याया योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे रत्न लालनियमलखि गीता मर कोट नगर ॥ नम श्रीकृष्ण य ॥ सं० १६३२ वैशाख······
१६.४×६.२ सें० मी०	१२७ (१–७८, ७८–१२६)	५	२१	पू०	प्राचीन सं० १८८२	इति श्री भगवतगीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्ण अर्जुन संवादे मोक्ष सन्यास योगो नामाष्टादशोध्याय ॥ १८॥ सं० १-८२ मुकाम उटोकमगडमध्ये ॥ पठनार्थ श्री महतरंगा गोरजी ॥ लिख्यत पं० श्री चौबेकलुराम
१६.७×७.७ सें० मी०	६ (१, ८, ३७, ८३, ८६–६०, ११८)	६	१८	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवतगीता सुपनिषत्सु ब्रह्मविद्याया योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे मोक्ष सन्यास नामाष्टादशोध्यायः॥
२२.४×१० सें० मी०	२५	६	३७	अपू०	प्राचीन सं० १७६१	इति श्री भगवदगीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे प माथ निर्णयो नाम अष्टादशोध्याय ॥ १८ ॥··· ·· संवत् १७६१ दशमी वद पूप समाप ··॥
१८.८×६.४ सें० मी०	८७ (१–८६, ८८)	८	२०	अपू०	सं० १६४४	···· शुभमवतु भूयात संवत् १६४४ शाक १८०६ भाद्र कृष्ण पंचम्यां भौमवासरे ॥
२३.७×११.३ सें० मी०	३१ (१३–६, १४ १६, २३, २७ ३३ ३४, ३६–४३, ४६–४८, ५०, ५१ ५४–५७, ५६–६१, ६३)	८	२८	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवदगीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे गुणत्रयविभाग योगोनाम सप्तदशोध्याय ॥ (पृ० ५७)
२२.६×१२ सें० मी०	७६ १–७६	८	३४	पू०	प्राचीन	इति भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे म थामय गो नाममष्टादशोध्याय संपूर्ण ॥ शुभमस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११३	४६१०	भगवद्गीता			मि० का०	दे०
११४	४८२६	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
११५	५०६६	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
११६	४६१८ / २	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
११७	५१३२	भगवद्गीता (१०-११ अ०).			दे० का०	दे०
११८	६८७६	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
११९	६५२० / १६	भगवद्गीता			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	१०
२१ ४ × ११·८ सें० मी०	४७ (१-८,१२-१६ १८-५१)	६	२२	अपू०	आधुनिक	
१६६ × १०२ सें० मी०	६४ (१-६४)	८	२३	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया याग शास्त्रे श्री कृष्णा·· ···
२२६ × १०५ सें० मी०	२६	७	३०	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया योग शास्त्रे श्री कृष्णार्जुन सवादे कर्म गुण विभागदर्शनोनाम सप्तदशोध्याय + + + ॥ (पृ० ५५)
९६ × ६७ सें० मी०	९५ (१-९४ ९६)	५	९	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन सवादे कर्म योगोनामतृतीयोध्याय ॥ + + + ॥ (पृ० ८१)
२३४ × ६४ सें० मी०	१२ (१-१२)	६	३१	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया यागशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन सवादे विश्व रूपदर्शनोनाम एकादशो ध्याय ।१॥ लिखित नारायण भट्ट ब्राह्मन ॥
२५५ × १५·४ सें० मी०	३० (१६-४५)	१४	२३	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन सवादे गुणत्रय विभागोनाम चतुर्दशो ध्याय ॥ (पृ० ४१)
६६ × ६५ सें० मी०	२० (१-२०)	१०	११	अपू०	प्राचीन	इति श्री मद्भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन सवादे विश्वरूपदर्शन योगो नामकादसोध्याय ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रागतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१२०	१७१७	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१२१	४४८८	भगवद्गीता (१–१८ अध्याय)			दे० का०	दे०
१२२	४४६३	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१२३	१०४६	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१२४	४२६२	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१२५	४३६७	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१२६	४४४० / १०	भगवद्गीता			दे० का०	दे०

पत्र या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? यदि अपूर्ण है तो उपलब्ध भाग का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ क	८ ख	८ ग	८ घ	९	१०	११
१६८×६१ सें० मी०	७ (५५-६१)	८	२०	अपू०	प्राचीन	
२१७×११ सें० मी०	७६ (१-७६)	७	२४	पू०	सं०१६१७	इति श्री भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे मोक्षसंन्यास योगोनामाष्टादशोध्यायः १८ ॥ संवत् १६१७ मार्गमासे शुभे शुक्लपक्षे तिथौ त्रयोदश्यां ११ शुक्रवारे लिखितं श्रीहरे रामेश्वर......
१६.३×६८ सें० मी०	११८ (२-५,८,१०-४०,४६,४९-६२,६७-६५,६८-१३२)	६	१६	अपू०	(कृमि भक्षित) सं०१६११	इति श्री भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे मोक्षसंन्यास योगोनाममष्टादशोध्याय ॥१८॥ फाल्गुनमासे कृष्णपक्षे षष्ठ्यां बुधवासरे ॥ भगवद्दासलिखितं भगवद्गीतापुस्तिका ॥ संवत १६०११ श्रीरामार्पणमस्तु ...
१५.३×१० सें० मी०	५७ (१-४५, ४७-५२,५४-५७,६१-६२,६५-६६)	१०	१८	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे मोक्षसंन्यास योगो नामाष्टदशो-ऽध्याय ॥ १८ ॥
२३७×१११ सें० मी०	४३	७	२२	अपू०	प्राचीन	ॐ तत्सदिति श्रीमद्भागवतगीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुनसंवादे... विभागयोगोनामसप्तदशोध्यायः ॥ (पत्रसंख्या ७६) + + +
३१६×१३८ सें० मी०	३० (१-३०)	१२	३८	अपू०	प्राचीन सं०१८७१	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे मोक्षसंन्यास योगोनामाष्टादशोध्यायः १८ श्री संवत १८७१ पौष शुक्ल पौर्णमास्याम शुभ ।
१२४×६१ सें० मी०	६६	६	१५	अपू०	प्राचीन सं०१८६८	श्री मद्भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे संन्यासयोगो नामाष्टादशोध्याय + + + संवत १८६८ मधनी नाम संवत्सरे शाखमध्ये द्वितिया प्रायाग दास लिपत + + + ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१२७	१३६८ / ५	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१२८	१२६७	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१२६	१६१०	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१३०	१८७०	भगवद्गीता (सुबोधिनी संस्कृत टीका सहित)			दे० का०	दे०
१३१	१८२६	भगवद्गीता (संस्कृत टीका सहित)			दे० का०	दे०
१३२	१५३२	भगवद्गीता (सटीक)			दे० का०	दे०
१३३	१९६६	भगवद्गीता			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१५·७×७·८ सें० मी०	१२६ (८–१३३)	६	१७	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवतगीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन सवादे मोक्ष सन्यासयोगो नामाष्टादशोध्याय ॥ १८ ॥ सपूर्णम् शुभ ॥
१४×८·५ सें० मी०	१४४ (१–१४४)	६	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शतसहस्र सघातायां वैसासिका भीष्मपर्वणि श्री भगवद्गीता सूपनिषत् ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन सवादे मोक्ष •• अष्टादशोध्याय ॥ १८ ॥
२६·५×१५·८ सें० मी०	१२२ (१–१२२)	४	२७	पू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शतसहस्रसहितायां वैयासिक्या भीष्मपर्वणि श्रीभगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन सवादे मोक्षसन्यास योगो नामअष्टादशोध्याय समाप्ता ॥ शुभमस्तु ॥
२६·३×१४·७ सें० मी०	७२ (५८–७८, ८१–८६,८८-१०८,११२)	१५	४०	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन सवादे……
२७·७×१४·५ सें० मी०	१३६ (१–१३६)	१४	४१	पू०	प्राचीन	सवत १८५८ भाद्रपदे मासे शुक्ले पक्षे तिथौ सप्तमी ७ चद्रवास रे लिखित मिद पुस्तक गीतायाः लक्ष्मण ब्राह्मणे ॥
३०×११ सें० मी०	३२	११	३४	अपू०	प्राचीन	
१६·३×१०·४ सें० मी०	६	८	१६	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१३४	२८८३	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१३५	२८४८	भगद्वगीता			दे० का०	दे०
१३६	२८३५/२	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१३७	२८१५	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१३८	३४४१	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१३९	१२५६	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१४०	१२१५	भगवद्गीता			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१५.३×८ सें० मी०	८१ (१–८१)	७	२५	पू०	प्राचीन सं०१८७४	इति श्री भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्र श्र कृष्णार्जुन सवादे मोक्ष सन्यास योगो नामाष्टा दशोध्य य ॥१८॥ भगवत्गीता सपूर्ण शुभमभूयात् ॥ सवत १८७४ क माल चत्र सुदि ८ भौमेक लिखा श्री वैद्य वसत दास ॥ सीताराम ॥ श्रीराम चद्रायनम ॥
२२.६×११ सें० मी०	१२१	६	२७	अपू०	प्राचीन	
१४.२×८.७ सें० मी०	१४१ (१३–१५३)	६	४२	अपू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शत सहस्र संहि ताया वैयासिक्या भीष्म पर्वणि श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे " " ॥
१०×७ सें० मी०	२२ (१०७ १२८)	६	१०	अपू०	प्राचीन	
२८.७×१०.३ सें० मी०	४० (१–४०)	५	२४	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवदगीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया योग शास्त्र श्री कृष्णार्जुन सवादेकमयोगोनाम चतुर्थोऽध्याय ॥ (पृ० ३४)
१७×६.३ सें० मी०	११९ (५–१२३)	६	१५	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवदगीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्र श्री कृष्णार्जुन सवादे परमार्थ विनिर्णय योगो नामा ऽष्टादशोध्याय ॥१८॥ वर्ष वैशाख वदि ३ शनिवाशरान्वितायां लिखित प० नारायण दास भिहनगुरिया ॥ पोथी श्री महाराज कुमार मानद सिरजू की ॥ श्री गोपाल जू ॥
१८.५×९ सें० मी०	१०७ (२–१०८)	६	२१	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१४१	११६३	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१४२	३१६३	भगवद्गीता (१–८ अध्याय)			दे० का०	दे०
१४३	३१७५	भगवद्गीता (सटीक)			दे० का०	दे०
१४४	३१७८	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१४५	३१८०	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१४६	३२८७	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१४७	२६३३ / ५	भगवद्गीता			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२१ × ११.५ सें० मी०	४०	८	२२	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन सवादे परमार्थ निर्णयोनामाष्टादशोऽध्यायः ॥१८॥ समाप्तम् ॥शुभमस्तु॥
२७ × १३.३ सें० मी०	२५ (१–२५)	१८	३८	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्याया योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन सवादे अष्टादशोध्याय ।
३० × १३ सें० मी०	११३ (४–११६)	१३	४३	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्याया योग शास्त्र श्री कृष्णार्जुन सवादे मोक्षसन्यास योगोनामाष्टादशोध्याय १८ नारायणाय × × ×
२०.६ × ८.६ सें० मी०	६६	५	२८	पू०	प्राचीन	श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सुब्रह्मविद्याया योग शास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन सवादे मोक्षसन्यास योगोनाम अष्टादशोध्या ॥
२१.६ × ९.१ सें० मी०	७३ (२–७४)	८	२२	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन सवादे मोक्षयोगोनाम अष्टादशोध्याय ॥१८॥
१२.२ × ६.२ सें० मी०	१२५	७	१२	अपू०	प्राचीन	
१५.७ × १०.६ सें० मी०	६७	७	२५	अपू०	प्राचीन	

क्रमाक और विषय	पुस्तकालय की आगतसख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१४८	३६७०	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१४६	२५८२ / ५	भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१५०	४४१७	भगवद्गीता गूढार्थ दीपिका	मधुसूदन सरस्वती		दे० का०	दे०
१५१	२१०७	भगवद्गीता गूढार्थ दीपिका	मधुसूदन सरस्वती		दे० का०	दे०
१५२	२१०६	भगवद्गीता गूढार्थ दीपिका	मधुसूदन सरस्वती		दे० का०	दे०
१५३	२१०५	भगवद्गीता दीपिका गूढार्थ	मधुसूदन सरस्वती		दे० का०	दे०
१५४	८३०	याज्ञवल्क्य गीता (१–१२ अध्याय)			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८ ब	स	द	९	१०	११
२१२×४८ सें० मी०	१०५ (३-१०७)	५	२४	अपू०	प्राचीन सं०१८६६	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे मोक्ष सन्यास योगोनाम अष्टादशोध्याय ।। संवत् १८६६ इदं पुस्तक केशवस्य हस्ताक्षर खट्ट अस्ति शुभ भूयात् ।।... ...
१६.१×११ सें० मी०	४ (१८-२१)	१०	१८	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे विभूति योगोनाम दशमोध्याय ।।
३१.५×१५.८ सें० मी०	२४३ (१-२४३)	१४	४५	पू०	प्राचीन सं०१८५५	इति श्री परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री विश्वेश्वर सरस्वती पूज्यपाद शिष्य श्री मधुसूदन सरस्वती विरचितायां श्री भगवद्गीता गूढार्थ दीपिकायामष्टादशोध्याय १८ समाप्त संवत १८५५ मिति जेष्ट मासे कृष्णपक्षे ११ एकादश्यां शुक्रवासरे × × ।।
२८.३×१२ सें० मी०	१२	१०	४४	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता गूढार्थ दीपिकायां दशमोध्याय ।।
२८.३×१२ सें० मी०	११	१०	४०	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योग शास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे गूढार्थ दीपिकायामेकादशोध्याय ११।।
२८.३×१२ सें० मी०	१३	११	५३	पू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता गूढार्थ दीपिकायां त्रयोदशोध्याय ।। श्री कृष्ण उवाच ।। ।। श्री गोपालाय नमः ।।
२७.७×१२ सें० मी०	१८ (१-१८)	११	४३	पू०	प्राचीन	इति श्री याज्ञवल्क्यगीतापनिषदष्णु द्वादशोध्याय ।। शुभमस्तु ।। श्रीकृष्णायनमः ।। ...

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१५५	३६७२	रामगीता			दे० का०	दे०
१५६	३६७५	रामगीता			दे० का०	दे०
१५७	४०१४ / ६	रामगीता	रामानुज		दे० का०	दे०
१५८	३६८७	रामगीता			दे० का०	दे०
१५६	२७८२	रामगीता			दे० का०	दे०
१६०	३३४८ / ४६	रामगीता			दे० का०	दे०
१६१	१४४४ / ५	रामगीता (पंचम सर्ग)			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६.३×८.३ सें० मी०	१२ (१–१२)	६	२६	पू०	सं०१८८२	इति श्री मदध्यात्मरामायने उत्तर कांडे रामगीता नाम पचमोध्याय ॥५॥ प्रथम सवन सुदि ॥२४॥ सवतु १८८२॥ मुका वदेउगड ॥
१३.८×९.६ सें० मी०	१६ (१–१६)	७	१२	पू०	प्राचीन	इति श्रीमदध्यात्म रामायणे उत्तरकाण्डे रामगीत नाम पचमोध्याय ॥५॥'''
१८.१×१६.१ सें० मी०	३	१५	८	पू०	प्राचीन	इति श्री रामनुज विरचत पटश्लोकी रामगीता सपूर्ण समाप्त ''
१९.३×७.५ सें० मी०	५ (१–५)	१०	३९	अपू०	प्राचीन	इति श्री मदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वर सवादे उत्तर काडे रामगीता नाम पचम सर्ग ॥
१५.८×१०.५ सें० मी०	८ (१–८)	११	२४	पू०	प्राचीन	इति श्री मदध्यात्मरामायणे उत्तरकाडे उमा महेश्वर सवादे रामगीता समाप्ता ॥
१२.५×८.२ सें० मी०	१९ (१–१९)	६	१७	पू०	प्राचीन	इति श्रीमदध्यात्मरामायणे उमामहेश्वर सवादे उत्तरकाडे श्रीरामगीता नाम पचम सर्ग ५ ॥
१८.७×१२.७ सें० मी०	७ (१–१७)	१५	१५	पू०	प्राचीन (सं०१९१७)	इति श्री अध्यात्म रामायण उमामहेश्वर सवादे उत्तरकाडे श्रीरामगीता पचमसग ५ बिहारि लालेन लिखत सं० १९१७ श्री० गु० गु० ॥
(सं० मु० ६५)						

क्रमाङ्क और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१६२	६८६०	रामगीता (सटीक)			दे० का०	दे०
१६३	७५१३	रामगीता			दे० का०	दे०
१६४	६६७६	रामगीता			दे० का०	दे०
१६५	३२५६	रामगीता			दे० का०	दे०
१६६	७३७२	रामगीता			दे० का०	दे०
१६७	७३२५	रामगीता सटीक			दे० का०	दे०
१६८	७५५२	रामगीता सटीक (रामगीता व्याख्या)			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८ ब	८ स	८ द	९	१०	११
२५.४×११.५ सें० मी०	१६ (१–१६)	१३	४१	पू०	प्राचीन (कृमि कृतित)	इति श्री मत्सवन राज विपद्धर ॥ रामगीता टिप्पन समाप्ता ।
१६.१×६.६ सें० मी०	२२ (१–२२)	१५	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री अध्यात्म रामायण उत्तरकांडे श्री रामगीता समाप्ता श्री रामार्पण मस्तु ॥
१८.२×११.७ सें० मी०	१४ (१–१४)	६	१६	अपू०	प्राचीन	
१४.४×७.३ सें० मी०	१८ १३, ४-१६	१५	१५	अपू०	प्राचीन	इति श्री मदध्यात्म रामायण उमा महेश्वर सवादे श्री रामगीता संपूर्ण ॥
३२×६.८ सें० मी०	६ (१–६)	६	३६	पू०	प्राचीन सं०१६३२	इति श्री मदध्यात्म रामायण उत्तर कांडे उमा महेश्वर सवादे श्री राम गीता समाप्तम सम्वत १६ गत ३२ के शाह्य पुस्तक लिखितम् × × ×
२६.६×११.३ सें० मी०	३१ (१–३१)	७	४०	पू०	प्राचीन	इति श्री मदध्यात्म रामायणे उमामहेश्वर संवादे उत्तरकांडे रामगीता कथन नाम पंचम सर्ग ॥ × × × इति टीकायां पंचम सर्ग ॥५॥
२४.६×११.२ सें० मी०	१४ (१,४–१६)	६	४६	अपू०	प्राचीन	"करिष्ये रामगीता व्याख्यान बालबुद्धये ॥१॥ (पत्रसंख्या १)

क्रमाव और विषय	पुस्तकालय की आगतसख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१६६	३८३०	वैष्णव गीता			दे० का०	दे०
१७०	३६४६	शिवगीता			दे० का०	दे०
१७१	४००२	शिवगीता			दे० का०	दे०
१७२	३३४६	शिवगीता			दे० का०	दे०
१७३	२१०१	श्रीभगवद्गीता गूढार्थ दीपिका		मधुसूदन सरस्वती	दे० का०	दे०
१७४	२१६०	श्रीभगवद्गीता			दे० का०	दे०
१७५	७१८२/५	श्रीभगवद्गीता			मि० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	म	द	६	१०	११
१७ ३ × ६ ६ सें० मी०	६	८	२५	अपू०	प्राचीन सं०१७५९	इति श्री वैष्णव गीतायां श्रीकृष्णार्जुन संवादे वैष्णव दीक्षा निर्देशयामो नाम चतुर्थोध्याय समाप्त ॥ शुभमस्तु ॥ संवत् १७५९ ॥
१५ २ × ७ ६ सें० मी०	११२ (१–११२)	७	२५	पू०	प्राचीन	इति श्री पद्मपुराणे उत्तर खंडे श्रीमद् शिव गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां श्री महादेव राघव संवादे मोक्षयोगोनाम षोडशोध्याय ॥
२३ × १५ सें० मी०	६	१६	१४	अपू०	प्राचीन सं०१६२२	इति श्री शिवगीता पंचदशोध्याय. × × × × सं० १६२२ ज्येष्ठे ॥
२३ ६ × ६ ७ सें० मी०	६ (१–६)	१२	४५	अपू०	प्राचीन	
२८ ३ × १२ सें० मी०	११	११	५८	पू०	प्राचीन	इति श्रीभगवद्गीता गूढार्थ दीपिकायां नवमोध्याय ॥
१६ ५ × ११ ५ सें० मी०	१०२	८	१८	पू०	सं०१६१४	इति श्रीभगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे मोक्ष योगेनामष्टादशोध्याय ॥ १८ ॥ संपूर्ण शुभमस्तु ॥ संवत् १६१४ के साल······
१६ ६ × ६ ३ सें० मी०	१२६ (१–१२६)	६	२०	पू०	प्राचीन	इति श्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे मोक्षसंन्यासयोगोनामाष्टादशोध्याय ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१६६	३८३०	वैष्णव गीता			दे० का०	दे०
१७०	३६४६	शिवगीता			दे० का०	दे०
१७१	४००२	शिवगीता			दे० का०	दे०
१७२	३३४६	शिवगीता			दे० का०	दे०
१७३	२१०१	श्रीभगवद्गीता गूढार्थ दीपिका		मधुसूदन सरस्वती	दे० का०	दे०
१७४	२१६०	श्रीभगवद्गीता			दे० का०	दे०
१७५	७१८२/५	श्रीभगवद्गीता			मि० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथपूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१७ २ × ९ ६ सें० मी०	६	८	२५	अपू०	प्राचीन सं०१७५४	इति श्री वैष्णव गीताया श्रीकृष्णार्जुन सवादे वैष्णव दाक्षा निर्देशयागो नाम चतुर्थोऽध्याय समाप्त ॥ शुभमस्तु ॥ सवत १७५४ ॥
१५ २ × ७ ६ सें० मी०	११२ (१-११२)	७	२५	पू०	प्राचीन	इति श्री पद्मपुराणे उत्तर खडे श्रीमद शिव गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्याया श्री महादेव राघव सवादे मोक्षयोगोनाम षोडशोध्याय ॥
२३ × १५ सें० मी०	६	१६	३४	अपू०	प्राचीन सं०१६२२	इति श्री शिवगीता पचदशोध्याय· × × × × सं० १६२२ ज्येष्ठे ॥
२३ ६ × ६ ७ सें० मी०	६ (१-६)	१२	४५	अपू०	प्राचीन	
२८ ३ × १२ सें० मी०	११	११	५८	पू०	प्राचीन	इति श्रीभगवद्गीता गूढार्थ दीपिकायां नवमोध्याय ॥
१६ ५ × ११ ५ सें० मी०	१०२	८	१८	पू०	सं०१६१४	इति श्रीभगवदगीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन सवाद मोक्ष योगेनामष्टादशोध्याय ॥ १८ ॥ सपूर्न शुभमस्तु ॥ सवत् १६१४ के साल······
१६ ६ × ६ ३ सें० मी०	१२६ (१-१२६)	६	२०	पू०	प्राचीन	इति श्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसवादे मोक्षसन्यासयोगोनामाष्टादशोध्याय ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१७६	५७	श्रीभगवद्गीता			दे० का०	दे०
१७७	१२८५/८	श्रीभगवद्गीता			दे० का०	दे०
१७८	१६१३	श्रीमद्भागवतगीता (संस्कृत सटीक)			दे० का०	दे०
१७९	४२८०	श्रीमद्भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१८०	३३४८/४६	श्रीमद्भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१८१	६३६	श्रीमद्भगवतगीता			दे० का०	दे०
१८२	११०	श्रीमद्भगवद्गीता	व्यासजी		दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसख्या और प्रति पक्ति म प्रक्षरसख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है ? प्रपूर्ण तो वर्तमान प्रश का विवरण	प्रवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८ ब	स	द	६	१०	११
२१८×११६ सें० मी०	१० (६–१५)	१३	३२	प्रपू०	प्राचीन	
१७५×६५ सें० मी०	६६ (१–६५)	७	१६	पू०	प्राचीन	इति श्रीभगवदगीता सुपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया योग शास्त्रे श्री कृष्णार्जुन सवादे मोक्ष सन्यास योगोनामष्टादशोध्याय ॥६॥ ॥सम॥
३३×१५ सें० मी०	२६	१२	४५	प्रपू०	प्राचीन	
२०×१०५ सें० मी०	४५ (३-२१, २५-३६, ४६-४८ ५६-५७, ५६-६५)	६	२७	प्रपू०	सं०१८४७	र्जुन सवादे मोक्ष सन्यास योगोनामाष्टादशोध्याय ॥१८॥ शुभ भूयात ॥ श्रीमद्‌भगवदगीता सपूर्णा॥ श्रीरामचद्रायनम सवत ॥१८६४॥ मिति प्रापाढ वदि ॥ लिखिते पन्नालाल भट्ट मथुरास्थेन ॥
१२५×८२ सें० मी०	१३८ (१-३६ (३४-३६)-१३५)	६	१७	पू०	सं०१८६६	ॐ तत्सदिति श्रीमन्महाभारते शतसाहस्र्य सहिताया वैयासिक्या भीष्म पर्वणि श्रीमदभगवदगीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्याया योगशास्त्र श्रीकृष्णार्ज्जुन सवादे सन्यास योगोनामाष्टादशोध्याय १८ सवत १८६६ के मिती चैत्र सुदि ४ लिप्यतेय श्री गोसाई दलई राम पठनाय वैष्णव श्रीनदराम श्रीरामजी
२०.६×१०६ सें० मी०	७०	८	२२	पू०	प्राचीन	श्री सवत् ॥१६॥ ॥६३। पौसवदि द्वितिया सानी वासर समाप्त......
१७×१०५ सें० मी०	१२६	७	१७	पू०	प्राचीन	ॐ तत्सदिति श्रीमदभगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्याया याग शास्त्रे श्री कृष्णार्जुन सवादे सन्यासयोगा नामाष्टादशाध्याय ॥ श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥

क्रमाङ्क और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१८३	६६१/५	श्रीमद्भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१८४	६७३२	श्रीमद्भगवद्गीता (सुबोधनी संस्कृतटीका)		श्रीधर स्वामी	दे० का०	दे०
१८५	६८२०	श्रीमद्भगवद्गीता (मराठी टीका सहित)			दे० का०	दे०
१८६	७०२४	श्रीमद्भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१८७	७१७६	श्रीमद्भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१८८	५४१२/५	श्रीमद्भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१८९	६०६६	श्रीमद्भगवद्गीता			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१२·६ × ७ १ सें० मी०	८१ (१२–१७, ३२–१०४, १०७–१०९)	६	१९	अपू०	प्राचीन	इति श्रीभगवद्गीता ॥
२८ ५ × १२·९ सें० मी०	११२ (१ ११२)	१४	३८	पू०	प्राचीन	इति श्रीभगवद्गीताटीकायां सुबोधिन्या श्रीधरस्वामिकृतायां मोक्षयोगो नाम अष्टादशोध्याय ॥………
२४ ४ × १४ ८ सें० मी०	६९ (२–७०)	१५	३२	अपू०	प्राचीन	इति श्री महाभारते शतसहस्र संहितायां वैयासिक्यां भीष्म पर्वणि श्रीमद्भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे मोक्ष सन्यास योगो नाम अष्टादशोध्याय १८ सवत् १८४० फाल्गुन कृष्ण १४ शुभमस्तु ॥
१५ १ × ११ २ सें० मी०	१९	१७	१६	अपू०	प्राचीन	इति श्री तत्सदिति श्री महाभारत शतसहस्रसंहितायां वैयासिक्यां शांति भीष्म पर्वणि श्रीमद्भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्म विद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे मोक्ष सन्यासयोगो नाम अष्टादशोऽध्याय ॥ × × ×
२५ ५ × १२ ५ सें० मी०	५२ (१–५२)	९	३२	पू०	प्राचीन सं० १९३५	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे मोक्ष सन्यासयोगोनाम अष्टादशाध्याय ॥१८। सवत् १९३५ जेष्ठकृष्ण १५………
१४ १ × ७ ६ सें० मी०	१३५ (३–१३७)	६	१६	अपू०	प्राचीन	इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे मोक्ष सन्यासयोगोनामाष्टादशोध्याय ॥ शुभमस्तु लेखक पाठकयो ॥
२१ × १० ७ सें० मी० (सं०पू०९६)	७८ (१–७८)	७	२६	पू०	सं० १८८६	हरि ॐ तत्सदिति श्री महाभारते शतसहस्रसंहितायां वैयासिक्यां भीष्म पर्वणि श्री मद्भगवद्गीता सुपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे मोक्ष स न्यास योगोनामष्टादशाध्याय ॥१८॥………सं० १८८६………

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१९०	७४७७/३	श्रीमद्भगवद्गीता			दे० का०	दे०
१६०	८११३/१०	षट्श्लोकी-भगीता			दे० का०	दे०
१६२	४६४५/५	सप्तश्लोकीगीता			दे० का०	दे०
१६३	४१४२	सप्तश्लोकीगीता			दे० का०	दे०
१६४	१२५२	सप्तश्लोकीगीता			दे० का०	दे०
१६५	३३१८	सप्तश्लोकीगीता			दे० का०	दे०
१६६	२३६/१२	सप्तश्लोकीगीता			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१२.६×८.१ सें० मी०	१४३ (१-१४३)	६	१६	पू०	प्राचीन	३। श्री। म।। मा।। तेश।।सा।।स।।हि।।या वैयासि वया।।प्मा।वणि।।ग।दशी।।नू।। नि।।त्सु।। ब्रह्म विद्यावा योग शास्त्रे श्री कृष्णार्जुन सवादे मो।।स।।सा।।गो।। मा।।दशो १०ध्याय ।।१८।। समाप्तम्।।
१६.५×१३ सें० मी०	२ (३८-३६)	८	१७	पू०	प्राचीन	इति श्री पद्मनोक्ते रामगीता सपूर्ण ॥
११.२×८.५ सें० मी०	४ (८-११)	५	११	पू०	प्राचीन	इति श्री सप्तश्लोकी गीता सपूर्ण समाप्त ॥ ·· ···
१३.५×८.३ सें० मी०	२ (१-३)	६	१३	अपू०	सं०१६४०	इति श्री सप्तश्लोकी गीता समाप्तम् ॥ शुभमस्तु सवत् १६४० के अषाढ १४ क० ॥
१०.३×६.१ सें० मी०	१६	४	१०	अपू०	प्राचीन सं०१८७५	इति श्री सप्तश्लोकी गीता संपूर्ण समाप्त ।। लिप्योपित डोमग्रेम सत १८७५ ।। का।। मीतोमाह सुधि ।।१०।।
१२.१×६.६ सें० मी०	४ (१-४)	४	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री सप्त
१६×१०.५ सें० मी०	१ (५७)	१२	१२	पू०	प्राचीन	इति सप्तश्लोकी गीता सपूर्णम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१९७	२५५२/५	सप्तश्लोकी गीता			दे० का०	दे०
१९८	४३६८	सप्तश्लोकी गीता			दे० का०	दे०
१९९	६०६८/२	सप्तश्लोकी गीता			दे० का०	दे०
२००	५७५६	सप्तश्लोकी गीता			दे० का०	दे०
२०१	५८६६/२	सप्तश्लोकी गीता			दे० का०	दे०
२०२	५६०८	सप्तश्लोकी गीता			दे० का०	दे०
२०३	७१७८/७	सप्तश्लोकी भगवद्गीता			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्त-मान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	म	द	६	१०	११
१६.१×११ सें० मी०	२ (१५-१६)	८	१६	पू०	प्राचीन	इति श्री कृष्णार्जुन सवादे सप्तश्लोकी गीता सपून ॥ सुभ मस्तु मगल ददातु ॥
१६.२×८.७ सें० मी०	१ (१-२)	७	२०	पू०	प्राचीन	इति श्री सप्तश्लोकीगीता सपूर्ण ॥
२२×१०.१ सें० मी०	१	८	३८	पू०	प्राचीन	इति सप्तश्लोकी गीता समाप्ता ।
२०×१०.७ सें० मी०	३ (१-३)	७	२४	पू०	प्राचीन सं० १८८४	इति श्री सप्तश्लोकी गीता समाप्त ॥ सवत् १८८४॥ पोस विद ७। हस्ताक्षर अमृतराव के होम
१४.३×१०.६ सें० मी०	१	८	१७	अपू०	प्राचीन	
१७.६×६.८ सें० मी०	२	६	२३	पू०	प्राचीन	इति श्री सप्तश्लोकी गीता समाप्ता॥ शुभमस्तु ॥
१६.६×१० सें० मी०	३ (१-३)	५	१५	पू०	प्राचीन	इति श्री सप्तश्लोक भगवद्‌गीता सपूर्णम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२०४	१६५२	सारगीता			दे० का०	दे०
ज्योतिष						
✓ १	६६३५	अंगप्रश्न			दे० का०	दे०
२	२४२	अंतर्दशा फल			दे० का०	दे०
३	१७५६	अक्षरचिंतामणि			दे० का०	दे०
४	४५६१	अक्षरचूडामणि			दे० का०	दे०
५	६८१८	अमृतकुंभ	नारायण		दे० का०	दे०
✓ ६	६६००	अर्घशाह			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ ग्र	ब	स	द	९	१०	११
१८ × १०.५ सें० मी०	३ (१–३)	८	३२	अपू०	प्राचीन	
१८.२ × १२.६ सें० मी०	२ (१–२)	१६	२७	पू०	प्राचीन	इत्यग प्रश्न ॥
२२.३ × १०.८ सें० मी०	८ (१–८)	९	२८	अपू०	प्राचीन	
२६ × १०.५ सें० मी०	११ (१–११)	९	३८	पू०	प्राचीन स०१८३४	इति श्री अक्षरचिंतामणि समाप्ता सवत् १८३४
२२.७ × ९.२ सें० मी०	६ (१–६)	७	२५	पू०	प्राचीन सं०१९३६	इत्याक्षर चुडामणि पुस्तक सम्पूर्ण सम्वत् १९३६ साके १८०१ समय आषाढ मासे कृष्न ३ शनी वासरे लिपित्वा गौरी शम्मणे ....
३२ × १० सें० मी०	४२ (१–४२)	७	४५	पू०	सं०१९३१	इति श्री ज्योति श्री रामसुत नारायण विरचिते अमृत कुमे ग्रहण लिखनानुक्रम समाप्त ॥ सवत १९३१ आशोज मासे शुक्ल प्रतिपदा मदवासरे लिखित मिद पुस्तक शंकर दत्तात्मज पुत्र नद लाल नैव ॥
२७.२ × ११.२ सें० मी०	२ (१–२)	७	२३	अपू०	प्राचीन सं०१८१५	इत्यर्घ काड सपूर्ण ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७	४६०२	अघदीपक (हिंदी टीका सहित)			दे० का०	दे०
८	३८०३	अघप्रदीप			दे० का०	दे०
९	२४६	अवजदकेवली			दे० का०	दे०
१०	७१८८	अष्टकवर्ग अरिष्टादि			दे० का०	दे०
११	६६०८	अष्टकवर्गजातक (प्रथम अध्याय)			दे० का०	दे०
१२	५२७५	अष्टग्रहयोग फल	नागेश्वर लाल पाठक		दे० का०	दे०
१३	२५७	अष्टवर्गाधिकार			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	ग्रंथ आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२६ ५×११२ सें० मी०	५३ (१–५३)	६	२६	पू०	सं०१६४२	इति वेतूदयफल संपूर्ण समाप्त भयात संवत १६४२ मासोत्तम मासे वैसाष मास श्यामपक्षे चतुर्थियाया शनिवासरे शुभमाप्तनिया लिखित पंडित राम सरूपजी यह पुस्तक ••
२३×१० ६ सें० मी०	१६ (१–१६)	१०	२५	अपू०	प्राचीन	इति अर्घप्रदीपे गुरुमिश्रफल ॥ (पत्रसंख्या-११) × × ×
२८ ६×११ ५ सें० मी०	५ (१–५)	८	३६	पू०	प्राचीन सं०१६११	इति श्री अवजद केवली सपूर्णम •• सं० १६११ मासो० •• आदित्य वासरे लिखिता मुकलम पुरामध्य लिखि विहारित राम राम कृष्ण रा०॥
२३×१० ६ सें० मी०	१० (१–१०)	६	२६	अपू०	प्राचीन	
२७ ५×११ ६ सें० मी०	४ (१–४)	६	४८	पू०	प्राचीन	इत्यष्टवग जातके प्रथमोध्याय समाप्त ॥
२१ ५×८ २ सं० मी०	७ (१–७)	६	३२	पू०	आधुनिक	इति अष्टग्रहयोग फल समाप्त ॥ श्री क्षत्र त्र्यव के श्वर सन्निधौ लिखीत नागश्वर तात पाठक गोपालनाना लिखीत ॥
२२ ५×१० सें० मी०	६ (१–६)	१३	३८	पू०	प्राचीन	इत्यष्टक वर्गाधिकार समाप्तम ॥श्री॥

(सं०सू०६७)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१४	७३६०	अष्टोत्तरीदशा (हिंदी टीका सहित)			दे० का०	दे०
१५	५१३२/८	ग्रहगग विधि			दे० का०	दे०
✓ १६	१५५७	अहि चक्र			दे० का०	दे०
१७	५२८९	अहिवल चक्र (सटीक)			दे० का०	दे०
✓ १८	५०५४/१५	आखेटक चक्र			दे० का०	दे०
१९	४७७४	आयाप्रश्न			दे० का०	दे०
२०	६६०५	आयुर्दायादि फल विचार (जैमिनि जातकोक्त)			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२१.१ × १४.६ सें० मी०	७६	२०	१८	अपू०	प्राचीन	
२१.६ × १४.६ सें० मी०	२ (१–२)	१६	२२	पू०	प्राचीन	इति महर्गण विधि ॥
२६.६ × ११.८ सें० मी०	४	६	३६	अपू०	प्राचीन	
२५.३ × ११.८ सें० मी०	५ (१–५)	१२	५१	पू०	प्राचीन सं०१९२१	इति नरपति जयचर्या स्वरोदये अहिबल चक्रम् समाप्तम ॥ ...... इति स्वरोदयविवृतौ अहिचक्र विवरणम ॥ सवत १९२१ भाद्र शुक्ल षष्ठ्या बुधवासरे लिखिमिदम्०
१६ × ७.८ सें० मी०	८ (१–८)	८	२४	पू०	प्राचीन	इति यामलीय सग्रहे आखेटक चक्र ॥
२१.८ × ९ सें० मी०	७ (१–७)	६	२५	पू०	प्राचीन सं०१८६०	इति श्री आया प्रश्न समाप्तम ॥ सम्वत् १८६० ॥ साके १७२५ ॥ समये चैत्र मासे शुक्ल पक्षे द्वादश्या रविवासरे विलेपित रघुवर रामेन आत्मा पठाय पुस्तक समाप्तम्॥ शुभमस्तु॥ सिद्धिमस्तु॥
२७.४ × ११.६	३ (१–३)	१५	६१	अपू०	प्राचीन	.........॥ अथ श्री मज्जैमिनि जातकानुसारेणायुर्दयादि फल विचार क्रीयते ॥ ...... (प्रारंभ)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२१	३६२६	आयप्रश्न			दे० का०	दे०
२२	५१८७	आयुप्रश्न			दे० का०	दे०
२३	३०८६/६	आर्जप्रश्न			दे० का०	दे०
२४	६६११	आर्यभट्टसिद्धांत	आर्यभट्ट		दे० का०	दे०
२५	५८६६	आत्रोव मनोरमा प्रश्न	गर्ग		दे० का०	दे०
२६	५५६५	इष्टकाल शोधन पूर्वार्द्ध (सटीक)			दे० का०	दे०
२७	५५६४	इष्टकालशोधन उत्तरार्द्ध (सटीक)			दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ में पंक्तिसंख्या	और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	म	द	६	१०	११
१८६×१०७ सें० मी०	६ (१–६)	८	२३	पू०	प्राचीन	इति श्री दव कृत प्रश्न समाप्त × × × × × ×॥
२५७×१२८ सें० मी०	? (–४)	१२	३६	अपू०	प्राचीन सं०१८८	इति विघ्नराज कृत आय पृच्छा ग्रंथ समाप्त सवत् १८८३ ॥ × × ×
१६७×१३१ सें० मी०	५	२२	१५	अपू०	प्राचीन	
२६२×१२ सें० मी०	२६ (१–२६)	११	३६	पू०	प्राचीन सं०१६५०	इति श्री मदार्यभट्टाचार्य भट विरचिते महासिद्धांत गोलाध्याये कुट्टकाधिकारो नामाष्टादश ॥ संपूर्ण ॥ संपूर्णोयमार्यभट सिद्धांत ॥ सवत् १६५० ॥
१७७×१२ सें० मी०	६ (१–६)	१०	३१	पू०	प्राचीन	इति श्री गर्ग विरचितालाभ मनोरमा प्रश्न विसमा समाप्तय ॥ (पृ० ३)
२६६×११६ सें० मी०	१० (१–१०)	१२	४३	पू०	प्राचीन सं०१६०८	इति श्री लग्नात् षटराशिमध्ये चंद्रे लग्नांत चंद्रसारणी। उदाहरण च समाप्त शुभमस्तु सवत् १६०८ माघ शुक्ल सोम लिखित छत्रपुर श्री ॥ पूर्वार्द्ध समाप्त।
२६८×११८ सें० मी०	७ (१–७)	१२	४६	पू०	प्राचीन सं०१६०८	इति लग्नात षटराशितोऽधिके चंद्रे सप्तमभावोनविधुसारण्युदाहरणे समाप्ते सं० १६०८ कार्तिक वदि १२ भौमे छत्रपुरलिपिते श्री ॥ उत्तरार्द्ध समाप्त ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२८	१३६०	इष्ट शोधन			दे० का०	दे०
२९	४२८१	उडुदशास्वल्पक्रम			दे० का०	दे०
३०	६८५१	उडुदाय प्रदीप			दे० का०	दे०
✓ ३१	२०७१	उत्पात लक्षण	यशोधर मिश्र		दे० का०	दे०
३२	६६२	ऋण-धन चक्र ?			दे० का०	दे०
✓ ३३	६५१	ऋतुमंजरी			दे० का०	दे०
३४	११८/२	कमलवधशकुन	विघ्नराज कृत		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९०	९०	९०
२३ × १०.५ सें० मी०	६	८	२६	पू०	प्राचीन	
२५.१ × ११.३ सें० मी०	६ (१–६)	११	२७	पू०	प्राचीन सं० १८१८	इति उड्डुदशास्त्र पत्रम श्री संवत १८१८ शाके १६८२ वैशाख कृष्ण गुरो लि० द्विवेदिन जगनाथस्य श्री ''
२४.५ × ११ सें० मी०	६ (१–६)	५	३६	पू०	प्राचीन सं०१९०१	इति पराशरीये उड्डुदाय प्रदीप समाप्तिमगमत ॥ संवत १९०१ श्रावण शु० १ गुरुवासरे ॥
३२ × ११ सें० मी०	८	९	४५	पू०	प्राचीन सं०१९१८	इति श्रीमत्कसारि मिश्रात्मज मिश्र यशोधर विरचिते दैवज्ञ चिंतामणौ उत्पात लक्षण समाप्तम शुभमस्तु संवत् १९१८ के आश्विनि शुक्ल १५ शुक्रे
१३.२ × ८ सें० मी०	५ (१–५)	८	१८	पू०	प्राचीन	
२१.९ × ९.२ सें० मी०	४	७	३१	पू०	प्राचीन सं०१८६०	इति श्रीतुंमजरी संपूर्ण स्वम्व १८६० साके १७२५
२८ × ९ सें० मी०	४	८	२६	पू०	प्राचीन	इति कमल वध शकुन समाप्त ॥ शुभमस्तु ॥ श्रीरस्तु ॥ नपत पाठयो ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगनसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३५	६६८७	करणकुतूहल	भास्कराचार्य		दे० का०	दे०
३६	६८१५	करणकुतूहल	भास्कराचार्य		दे० का०	दे०
३७	६४६४	*करणकुतूहल	भास्कराचार्य		दे० का०	दे०
३८	३६४१	करण कौतूहल टीका	विश्वनाथदैवज्ञ		दे० का०	दे०
३९	३१८६	करणप्रदीप	महादेव		दे० का०	दे०
४०	१६७२	करण फल			दे० का०	दे०
४१	३८३६	कर्मप्रकाश (कर्मप्रकाश विज्ञापन प्रकार)			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५×१०·५ सें० मी०	१३ (१–१३)	१०	२८	पू०	प्राचीन सं०१६६६	इति भास्वरीये करणे कुतूहले पर्वानयनोनाम दशमोध्याय. ॥सं०१६६६ वर्षे " "
२१८×१०७ सें० मी०	१६ (१–१६)	९	२६	पू०	सं०१६३०	इतिह भास्करोदिते ग्रहागमे कुतूहले ॥ विदग्धबुद्धिवल्लभे शशांक सूर्यपर्वग्रह ॥१०॥ सं० १६३०॥ शाके १७६५ मीनी वैशाख वदि १४ भृगौ ॥
२३×९·३ सें० मी०	१६ (१-७,९-१६, १८)	९	२६	अपू०	प्राचीन सं०१६६२	कर्ण कुतूहल समाप्त ॥सं० १६६२ वर्षे शाके १५२७ प्रवर्त्तमाने भाद्रपाद शुदि नवम्या रवौ लिखित··· ··· ···
२३८×१०१ सें० मी०	६०	१०	३१	अपू०	सं०१८४२	इति श्री दिवाकर दैवज्ञात्मज विश्वनाथ दैवज्ञ विरचिते ब्रह्मतुल्यस्योदाहरणे पाताधिकारस्योदाहरणम्॥श्रीविश्वनाथेन दिवाकरस्य सुतेन यत्नाद्रचिता समाप्ता गोलाभिधग्राम निवासिनेयमुदाहृति खेट कुतूहल्य ॥ सं० १८४२
२३८×१०·१ सें० मी०	६ (२-४, ६-८)	८	३१	अपू०	प्राचीन	
२०८×१०८ सें० मी०	३	८	१६	अपू०	प्राचीन	
२२६×१५२ सें० मी०	२ (१–२)	१४	३१	पू०	प्राचीन	इतिश्री सूर्यारुण संवादे ज्ञानभास्करे० कर्मप्रकाश विज्ञापन प्रकार मुरलीधरेण लिखित ॥
(सं०सू०६८)						

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४२	७५६०	कर्मपयाधिरा			दे० का०	दे०
४३	१०६१	कल्पलिनटीका			दे० का०	दे०
४४	४५६	कण्टावलि	रुद्र		दे० का०	दे०
४५	५१९८	काकभाषापिंड (सटीक)	गर्ग ऋषि		दे० का०	दे०
४६	६६०८	कालचक्र ज्ञानक			मि० का०	दे०
४७	६६४६	कालचक्रदशा टीका			मि० का०	दे०
४८	१७४६	कालज्ञानक			दे० का०	दे०

पत्ता या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूरा है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२'६ × १२ ६ सें० मी०	९ (३२–४०)	१५	१०	अपू०	प्राचीन	इति श्री कर्म प्रकाशिकाया जन्मा कालादिषेककाल ज्ञान नामचतुर्थाधिकार' • (पत्र संख्या ३२)
३० ४ × १४ ८ सें० मी०	१७ (१–१७)	१५	४७	पू०	प्राचीन सं०१८९०	समाप्तेय वृत्तिटीका इति श्री ॥ संवत् १८९० शा- १७५५ जेष्ठ मासे कृष्ण पक्ष अमावास्या रविदिन लिखत मिश्र मुरलाधर स्वय पठनार्थम् उमाशिवा जयति मंगलम् करः ॥
२६'१ × १२ ५ सें० मी०	३ (१–३)	१२	३९	पू०	प्राचीन	इति रुद्रकृतकष्टावलि संपूर्ण ॥१॥ कन्याघटक चैव मायन्त तामभाजने अश्वत्थे वटवृक्षे च भुक्ता चांद्रायण चरेत ॥१॥
२२ २ × १२ ५ सें० मी०	४ (१–४)	११	२१	पू०	प्राचीन सं०१८३४	इति श्री गर्ग ऋषि श्वरविरचिते कालान पर्यिछोपरिप्रस्त चतुर्विंशति प्राच्छा संपूर्णमगात सं० १८३४ वै० शु० ८ गु० ति० ' -
२५ × १० ६ सें० मी०	१९ (१–१९)	९	४२	पू०	आधुनिक	इति श्री इश्वर पार्वती सवादे काल-चक्र जातक समाप्तम् ॥
२५ १ × १० ५ सें० मी०	१० (१–१०)	९	४२	पू०	प्राचीन	इति चशेश्वरदत्त वाग्विभवेन श्राघरार्य पुत्रण श्री वलान्त्य सुन सूय नामधेय देशिकप्रियशिष्येण मन्त्र बारुयेन इश्वरोक्त कालचक्र जातकायुर्दाय विधान दशाविपाक चकिंचिद् व्याख्यात॥
२७ ८ × ११ ३ सें० मी०	५ (१–५)	८	३०	अपू०	प्राचीन सं० १९४४	इति कालजातक माघशुक्ला १२ बुधवार संवत् १९४४ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४९	५५८२	कालज्ञान			दे० का०	दे०
५०	४७७०	कालज्ञान			दे० का०	दे०
५१	४-६०	कालज्ञान			दे० का०	दे०
५२	४८८६	कालज्ञान			दे० का०	दे०
५३	३५३७	कालज्ञानाक्षरचिंतामणि शास्त्र	शिव		दे० का०	दे०
५४	४१७	कालमार्तंड ?	कृष्ण दैवज्ञ		दे० का०	दे०
५५	६६३३	कालसूत्र व्याख्यान			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२५.६ × १३.६ सें० मी०	२ (१–४)	१३	३२	अपू०	प्राचीन	
२१७ × ८.६ सें० मी०	१० (१–१०)	६	२६	पू०	प्राचीन सं० १८५६	संवत् १–५६ शाक १७२४ समय मार्ग मास शुक्लपक्षे पंचम्या भौमवासरे ॥ लिपिरघुवर रामेन काल ज्ञान समाप्तम् ॥ श्रीराम •••
२३ × १२ सें० मी०	६ (१–६)	८	२६	पू०	प्राचीन सं०१८५७	इति आयाः प्रश्न समाप्तम् ॥ संवत् १८५७ साके १७२२ ॥
२७.५ × १२.३ सें० मी०	७ (१–७)	८	४८	पू०	सं०१९३६	इति स्वरोदयशास्त्रसमाप्त चैत्रमासे कृष्ण पक्षे १३ दस्या बुधवासरे ॥ लिपीत्वा गौरीद्विजस्य प्रात्म पठनाय हेतवे संवत १९३६ शाकाब्द १८०१ ॥
२६.३ × १३.२ सें० मी०	१३ (३–१५)	११	२५	अपू०	प्राचीन सं०१८८६	इति श्री शिव विरचितायां कालज्ञानक्षर-चिंतामणि शास्त्र समाप्त संवत् १८८६ फागुन कृष्णे १ शुक्रे श्रीराम-चंद्राय नमोनम ॥
२४ × १० सें० मी०	३१ (१, २१–५०)	६	२८	अपू०	प्राचीन	
२८ × ११.६ सें० मी०	४ (२–५)	१०	५०	अपू०	प्राचीन	इति वास्तुसूत्र व्याख्याने तृतीयो-ध्याय ॥ •• (पत्रसंख्या ४)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
५६	२७९४	कुंडमंडपसिद्धि	विट्ठल दीक्षित		दे० का०	दे०
५७	१८८० / ९	कूपचक्रम			दे० का०	दे०
५८	११४३	कूपतडागचक्रम्			दे० का०	दे०
५९	७०५१	केरलप्रश्न	केशवप्रसाद		दे० का०	दे०
६०	७५५०	केरलप्रश्न			दे० का०	दे०
६१	४४६४	केरलीज्ञान			दे० का०	दे०
६२	१०३४	केशवपद्धति	केशव दैवज्ञ		दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसख्या और प्रतिपक्ति मे अक्षरसख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४ ३ × ८ ३ सें० मी०	९ (२–१०)	६	१६	अपू०	प्राचीन	इति श्रीमत् ज्योतिवित विट्ठल दीक्षित विरचिता कुडमडप सिद्दि ॥ ······
२०·२ × १३ ८ सें० मी०	३	१५	१२	अपू०	प्राचीन	
२५ × १० सें० मी०	२ (१–२)	८	२८	पू०	प्राचीन	इति ब्रह्मयामले तडाग चक्रम् ।
२१ २ × १२ २ सें० मी०	५ (१–५)	१६	१४	पू०	प्राचीन	इति श्री केशव प्रशाद विरचिते केरल प्रश्न समाप्त । सुभम् ॥ लिखत मनभामनप्रसाद पठनर्थ ग्रह वनखडेस्वरवासी पुजारी · ·· ······
२४ ३ × १०·५ सें० मी०	५ (१–५)	९	२४	अपू०	प्राचीन	
२५ ६ × ११·५ सें० मी०	४ (१–४)	१४	४४	पू०	प्राचीन	इति केरली ज्ञानम् ॥ पार्वती······॥
२५ ८ × १३·७ सें० मी०	८ (१–८)	७	३६	पू०	प्राचीन सं० १८८६	इति श्री केशव दैवज्ञविरच्चिते केशवीय पद्धति समाप्तम् ॥ सवत् १८८६ वैशाष वदि ८ चद्रे लिखितमिद मुरलीदत्त स्वय पठनार्थम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६३	४१२५	केशवपद्धति (सटीक)	केशव दैवज्ञ	विश्वनाथ दैवज्ञ	दे० का०	दे०
६४	४७१३	केशवी टीका			दे० का०	दे०
६५	१६८८	केशवी पद्धति (संस्कृत टीका सहित)		विश्वनाथ	दे० का०	दे०
६६	२७८५	केशवी पद्धति	केशव दैवज्ञ		दे० का०	दे०
✗ ६७	१२८६	कोटचक्र			दे० का०	दे०
६८	१३७२	कौतुक चिन्तामणि			दे० का०	दे०
६९	१८१६	खंडखाद्यगति			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२८१×१४२ सें० मी०	३४ (१–३१, ३७–३९)	१६	४३	अपू०	रचनाकाल शा १५४० लिपिकाल स०१८८९	गगनवेदशरेंदुमिते शके १५४० नभसि-शुक्र वुधेभगर्गे तिथौ गणपतेहि कृत मुखदसतावितितपारमगाढरमत्पुरे ॥ इति सपूर्ण समाप्तम् ॥ श्री शिवायनम सवत् १८८९ शके १७५४ माधव मासि सितानवम्या ९ भौमवासरे लिखित-मिद पुस्तक मूरलीदत्त स्वय पठनार्थं गौडान्वयेलेखक पठित शुभमिति ॥
३०५×१५५ सें० मी०	४५ (१,६-७-१० २२-२४-४२, ४४-४६ ४९–५५)	१३	४०	अपू०	स०१९१०	इति सपूर्ण समाप्नम् ॥ श्री शिवाय-नम ॥ सवत् १९१० । शाके१७७५ पौपमासे सिते पक्षे एकादश्य विधु वासरे लिखत मिद पुस्तक मिश्र देवी सहाय स्वात्म पठनार्थमिति ॥
२२४×१४३ सें० मी०	२०	२१	३३	पू०	प्राचीन	इति केशवाचार्य कृते केशवी पद्धति समाप्त ॥
१९७×८३ सें० मी०	१० (१–१०)	१०	२२	पू०	प्राचीन सं०१८२९	इति केशव दैवज्ञ विरचिता केशवपद्धति समाप्ता । सवत् १८२९ वरषे श्रावण वदी तृतीया ३ वार सनिश्चर पोथी लिखी देवी ब्राह्मण ॥
२३८×१११ सें० मी०	५ (१–५)	९	३०	अपू०	प्राचीन	
२०४×१० सें० मी०	८३ (२–१८, १८–८३)	९	२१	अपू०	प्राचीन स०१८०९	इति कौतुकचिंतामणि समाप्त ॥ श्रीरस्तु ॥ सवत १८०९ श्रावण कृष्ण ३० .. ..
२२५×१३५ सें० मी०	८ (१–८)	११	२८	पू०	प्राचीन स०१९३४	इति गडात शानि सपूर्ण ॥ सवत् १९३४ प्रथम ज्येष्टवदि ६ दिन रविवार लिखत मिदनारायण ॥१॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा सग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
✓ ७०	७२३०	गणक भूषण	समरसिंह		दे० का०	दे०
७१	६६४४	गणित लता	वल्लभ गणक		दे० का०	दे०
७२	२६२६	गर्गमनोरमा	गर्ग मुनि		दे० का०	दे०
७३	२७२६	गर्ग मनोरमा			दे० का०	दे०
७४	१५३६	गर्ग मनोरमा (टीका सहित)			दे० का०	दे०
७५	६६३४	गर्ग संहिता	गर्ग		दे० का०	दे०
७६	६६१२	गर्भाधान कालपत्र			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७ × ११.४ सें० मी०	२३ (१–२३)	१०	४०	अपू०	प्राचीन सं०१९१४	समर सिंहेन''' ''युग चन्द्र नद भू मिते प॰ सूर्य शनिवार युक् तिथिद्वि के करमेच ॥ लिखित मया गणक भूषण प्रश्न रत्नदिप × × × ×
३०.६ × १२.७ सें० मी०	६ (१–६)	११	५२	पू०	प्राचीन सं०१९१०	इति श्री बलभद्र गणक कृता गणित ला समाप्ता १ शि० उदीच्य पा० कृष्णलालेन सवत् १९१० मार्गशिर्ते द्वैरज तिथौ मन्दवासरे ॥
२७.५ × ११ सें० मी०	९	१०	४२	अपू०	प्राचीन	
२७ × ११ सें० मी०	४ (१–४)	१२	४३	पू०	प्राचीन	इति गर्ग मनोरमा भावशा समाप्ता। ''
२५ × ११.२ सें० मी०	५ (१–५)	११	३१	पू०	प्राचीन सं०१९१३	इति गर्ग मनोरमाया प्रश्न विद्याया गर्ग कृत टीका समाप्ता शुभ सवत् १९१३॥
२९.८ × १२.६ सें० मी०	५१ (१–५०, ५२)	७	४१	अपू०	प्राचीन	गार्गीये ज्योति शास्त्रे प्रथम०॥ '' (पत्र संख्या १८)
२१ × १२.४ सें० मी०	१७ (१–१७)	११	२२	पू०	प्राचीन सं०१९२८	इति श्रीकालचक्रोपरिकृतमुदाहरणं समाप्तम फाल्गुनेत सं० १९२८ मार्गशिर्ष शुक्लाष्टम्या भवतिका क्षेत्रे शिष्यार्थ कृत मुदाहृतिः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७७	४५४६	गुरुकांड (राशिग्रह)			दे० का०	दे०
७८	६६४१	गुलिकादि फल			दे० का०	दे०
७९	६८५०	गुलिकासाधन			दे० का०	दे०
८०	३७२८	गोलखंड (गोलाध्याय)			दे० का०	दे०
८१	६४५३	गोलाध्याय	लल्लाचार्य		दे० का०	दे०
८२	५६२०	गौरी जातक			दे० का०	दे०
८३	६७१८	गौरीजातक			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२१७×९ सें० मी०	८ (१–८)	६	३१	पू०	प्राचीन सं०१८५६	इति श्री गुरुकाण्ड समाप्तम् ॥ संवत् १८५६ माके १७२४ समयमार्ग मासे कृष्णपक्ष एकादश्यां रविवासरे विलेषि- रघवररामन आत्मपठार्थं पुस्तकि समाप्तम् ॥ शुभमस्तु ॥
२१२×११७ सें० मी०	५ (१–५)	१२	२६	पू०	प्राचीन	इति गुलिकादि फलम् ॥
२४·४×१०८ सें० मी०	१	१०	३६	पू०	प्राचीन	इति प्राणपद ॥
२१३×११ सें० मी०	२१ (१–२१)	११	३२	पू०	प्राचीन	
२७×१२५ सें० मी०	२२ (१–२२)	१०	३६	पू०	प्राचीन	आपूर्णेयं लल्लकृत गोलाध्याय ॥ गोविन्द ज्योतिर्वित्सूनोमधिवस्येद पुस्तकम् ग्रंथसंख्या ॥४५०॥
३४६×१३५ सें० मी०	१३ (२–१४)	६	६६	अपू०	प्राचीन	
२३·६×१०१ सें० मी०	३ (१–३)	१०	१	अपू०	प्राचीन	इति गौरी जातके शुभाशुभं + + +

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की प्रापतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
८४	४५६२	गौरी जातक			दे० का०	दे०
८५	५३६६	गौरीजातक कर्म पद्धति	माधव		दे० का०	दे०
८६	६१८७	ग्रहणफल			दे० का०	दे०
८७	१३०४	ग्रहणफल			दे० का०	दे०
८८	४४६६	ग्रहदशातदंशा			दे० का०	दे०
८९	६२५२	ग्रहदशाफल			दे० का०	दे०
९०	७०६३	ग्रह द्वादशभाव फल			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	१०
२७.६×११ सें० मी०	३ (१–३)	१०	३४	पू०	प्राचीन सं०१६०२	इति श्री गौरि यातक शुभाशुभ फल समाप्तम ॥ श्री शुभसम्वत्सरा १६०२ शाकाब्दा १७६७ समय चैत्र कृष्ण ११
२६×१४.३ सें० मी०	३ (१–३)	१८	५२	पू०	प्राचीन	इति श्री मिश्र कटपत्मिज माधव विरचिताया गौरि जातक कर्म पद्धितौ दाहाणादशातर्दशाफलाध्याय ॥
२४.४×१० सें० मी०	६ (१–६)	१३	४४	पू०	प्राचीन	इति श्री राहुप्रकरणम् ॥ सवत् १८५७ जेष्ठ कृष्णे ११
२६.६×१०.८ सें० मी०	३ (१–३)	१४	४०	पू०	प्राचीन	इति ग्रहण फल मिति ॥
२५×११ सें० मी०	५ (१–५)	१२	३४	पू०	प्राचीन सं०१७६३	.. ...सं० १७६३ श १६५८ माघ वदी १० भृगुवासरे लिखित........ .... ॥
२७×११.२ सें० मी०	४ (२–५)	८	३२	अपू०	प्राचीन	
२०.८×११ सें० मी०	७ (२–३,६–८,१०–११)	८	१६	अपू०	प्राचीन	नवग्रह पत्र स.पूर्ण ॥................

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगमसंख्या या संग्रहविभाग की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
६१	१७८२	ग्रहफल			दे० का०	दे०
६२	१८५६	ग्रहफलम्			दे० का०	दे०
६३	६३३८	ग्रहभावप्रकाश (हिंदी टीका)	कविरत्न	गोपाल	दे० का०	दे०
६४	६०८८	ग्रहभाव फल			दे० का०	दे०
६५	४३००	ग्रहलाघव	गणेशदैवज्ञ		दे० का०	दे०
६६	५३२८	ग्रहलाघव	गणेशदैवज्ञ		दे० का०	दे०
६७	५१५४	ग्रहलाघव	विश्वनाथ दैवज्ञ		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२१ × ११ सें० मी०	६ (१–६)	६	३०	अपू०	प्राचीन	
२२.२ × १०.२ सें० मी०	२७ (१–२७)	१०	२८	पू०	प्राचीन	इति विवाह ॥
२४ × १२.२ सें० मी०	१३ (१,३,५ १५)	१७	२६	अपू०	प्राचीन	
१६.५ × ८.४ सें० मी०	६ (३, ८–११)	६	१५	अपू०	प्राचीन	
२१ × १२ सें० मी०	१३	१०	२८	अपू०	प्राचीन	
२०.७ × ११ सें० मी०	८ (५–८,१४-१६, ३३)	७	२३	अपू०	प्राचीन	इति श्री गणेश दैवज्ञ विरचित ग्रह लाघवे चन्द्रमुख स्पष्टीकरणाधिकार + + + + + + ॥ (पृ० ७)
३३ × १३.८ सें० मी० (सं०म०७०)	२०	१३	५१	अपू०	प्राचीन	इति श्री दिवाकर दैवज्ञात्मज विश्व नाथ दैवज्ञ विरचितायां ग्रहलाघवस्य भौमादिस्पष्टीकरणं स्यात ॥

क्रमाङ्क और विषय	पुस्तकालय की ग्रागतसंख्या वा सग्रहविशेष का संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
९८	६६७१	ग्रहलाघव			दे० का०	दे०
९९	७२१६	ग्रहलाघव			दे० का०	दे०
१००	७०३०	ग्रहलाघव	गणेशदैवज्ञ		मि० का०	दे०
१०१	७०३१	ग्रहलाघव	विश्वनाथदैवज्ञ		दे० का०	दे०
१०२	७०६१	ग्रहलाघव	गणेशदैवज्ञ		दे० का०	दे०
१०३	५७७१	ग्रहलाघव			दे० का०	दे०
१०४	५७४३	ग्रहलाघव			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२० ८ × १० ५ सें० मी०	८ (२४–३१)	११	३०	अपू०	प्राचीन	
२५ २ × १० ५ सें० मी०	७	१०	२५	अपू० फुटकल पत्रे	प्राचीन सं० १८६०	इति श्री मत्सकलागमाचार्य वेशव वत्सपरिक्ता मज श्री गणेशदैवज्ञ विरचित ग्रहलाघव पचतारा स्पष्टीकरण समाप्त शुभमस्तु ॥ सवत् ८६४ माघे शुक्ले पक्षे चद्रवासरे " ... ..
२० ६ × १० ८ सें० मी०	६ (२–४, १७–१९)	८	२६	अपू०	आधुनिक	इति श्री सकलागमाचार्य वर्य श्री केशवाक सवत्सरात्मज श्री गणेश दैवज्ञ विरचिते ग्रहलाघव त्रिप्रश्नाधिकार श्चतुर्थ ॥ (पृ० १९)
२२ २ × १० ६ सें० मी०	६२ (२–२९, ३१–६३) पत्र ३१ दो	८	३३	अपू०	प्राचीन सं० १६६७	इति श्री दिवाकर दैवज्ञात्मज विश्वनाथ विरचिते ग्रहलाघव चद्र ग्रहणाधिकार स्याद हृति समाप्ता । सवत् १६६७ शाके १५ २ मार्गशीर्ष कृष्णे ३० × × (पृ० ६१)
२२ ६ × ११ ७ सें० मी०	८ (१–८)	१२	२६	अपू०	प्राचीन	इति श्री गणेशदैवज्ञ विरचिते ग्रहलाघवाख्ये चन्द्र शृगोन्नति द्वादश + +
२७ ४ × १० २ सें० मी०	२ (१–२)	८	३०	अपू०	प्राचीन	
२६ × ११ १ सें० मी०	६ (१–६)	८	२४	अपू०	प्राचीन	इति श्री ग्रहलाघवे सिद्धान्त रहस्ये गणेश दैवज्ञ विरचिते मध्यमाधिकार + + + + ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१०५	४२२३	ग्रहलाघव			दे० का०	दे०
१०६	१७४४	ग्रहलाघव			दे० का०	दे०
१०७	१७१०	ग्रहलाघव	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
१०८	११६०	ग्रहलाघव	विश्वना- दैवज्ञ		दे० का०	दे०
१०९	११६७	ग्रहलाघव	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
११०	११७४	ग्रहलाघव			दे० का०	दे०
१११	११८५	ग्रहलाघव	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठो का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
३२×१६.५ सें० मी०	३५ (१–३५)	१५	४८	पू०	सं०१६१२	इति श्री प्रहलाघवे ग्रहणाधिकार: समाप्त सवत १६१२ भाद्रपदमासे शुक्लपक्षे १३ चद्रवासरे लिखित पचोलीमहतावरापठनाथ ·····
२८×११.२ सें० मी०	२१ (१–२, १–१६)	७	२६	अपू०	प्राचीन	
१६.४×११.५ सें० मी०	७ (५–११)	१०	२१	अपू०	प्राचीन	
२३.५×१२ सें० मी०	११ (८–१५, १७–१६)	१५	३६	अपू०	प्राचीन	इति शिवाकर दैवज्ञात्मज विश्वनाथ दैवज्ञ विरचिताग्रह लाघवस्यमाधिकारस्यापाहुति समाप्ता। ···अनेन रहित ··
२३.७×११ सें० मी०	६ (२–१०)	८	२३	अपू०	प्राचीन	
१७.१×१२.५ सें० मी०	७ (३–६)	६	१८	अपू०	प्राचीन	
२२.५×१२ सें० मी०	१७ (१–१७)	६	२८	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११२	२६२८	ग्रहलाघव	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
११३	१६४०	ग्रहलाघव			दे० का०	दे०
११४	१६७२	ग्रहलाघव			दे० का०	दे०
११५	३६८०	ग्रहलाघव			दे० का०	दे०
११६	२३३०	ग्रहलाघव (सटीक)		गणेश दैवज्ञ	दे० का०	दे०
११७	४१२२	ग्रहलाघव	विश्वनाथ दैवज्ञ		दे० का०	दे०
११८	२४५५	ग्रहलाघव			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान ग्रंथ का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
८ ग्र	ब	म	द	९	१०	११
१७ × १० ५ सें० मी०	२६ (१–२६)	११	२४	पू०	प्राचीन	इति श्री सकलागमाचार्य केशव सावत्सरिकात्मज गणेश दैवज्ञ विरचिते सिद्धान्त रहस्ये ग्रहलाघव सपूर्णं ॥
२२ ८ × ९ ३ सें० मी०	११ (१–११)	६	२६	पू०	प्राचीन	इति श्री गणेश दैवज्ञ कृते ग्रहलाघव तारा ग्रहस्य करणम् ॥ ······ ···
२६ ७ × ११ १ सें० मी०	३७ (१–२४, २६–३८)	८	३३	अपू०	प्राचीन	
१९ × ९ ५ सें० मी०	३१ (१–३१)	१०	२८	पू०	सं० १९३७	इति श्री ग्रहलाघवग्रथ सपूर्णम् भवत् ॥ सवत् १९३७ शके १८०२ नदननाम सवत्सर × × × ॥
२४ ३ × १ सें० मी०	१६ (१–१६)	१०	३१	अपू०	प्राचीन	
२६ × १५ सें० मी०	७ (१, ४–१०)	१३	३४	अपू०	प्राचीन	इति श्री विश्वनाथ दैवज्ञ विरचिते ग्रहलाघवस्पष्ट सूर्य चद्र तिथ्यादि द्वितीय (पृ० १०)
२३ ८ × १२ १ सें० मी०	२० (१–२०)	११	३२	अपू०	प्राचीन	इति श्री केशव सावत्सरात्मज गणेश दैवज्ञ विरचिते ग्रहलाघवे सिद्धात रहस्ये ··· ··· ··समाप्त सप्तदश ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
११९	७५९७	ग्रहलाघव			दे० का०	दे०
१२०	४७४	ग्रहलाघव	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
१२१	७६६१	ग्रहलाघव	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
१२२	९९७	ग्रहलाघव	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
१२३	९६९	ग्रहलाघवम्	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
१२४	७७७६	ग्रहलाघव	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
१२५	६०८३	ग्रहलाघव (उत्तरार्द्ध)	विश्वनाथ दैवज्ञ		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२×१२८ सें० मी०	३२ (१–३२)	६	१६	पू०	प्राचीन सं०१८०७	मा० ६ गुरौ सं० १९४२ शके १८०७ ॥ (17-9-1885 = १७-९-१८८५)
२०×१० सें० मी०	६ (१४–१८, २१)	१०	३०	अपू०	प्राचीन	
२०.७×९.८ सें० मी०	६ (१३,१८–१९,२२-२४)	१०	२८	अपू०	प्राचीन	इति गणेशदैव० ग्रह० सिद्धा० पचागा समाप्त ॥
२७.२×११ सें० मी०	१३ (१–१३)	७	२०	अपू०	प्राचीन	
३०.५×१५ सें० मी०	१३	१३	४३	अपू०	प्राचीन	
२०.७×६.८ सें० मी०	८	६	३२	अपू०	प्राचीन	इति श्री गणेशदै० ग्रहना० सिद्धातरह० तिथि पत्रादेव ग्रहणद्वयशाध्यम् × × × × (पृ० १६)
२४×१०.२ सें० मी०	१५ (१–१५)	११	३२	अपू०	प्राचीन	इति श्री दिवाकरदैवज्ञात्मज विश्वनाथ दैवज्ञ विरचिता ग्रहलाघवस्य लग्नादि छाया यत्रभाग दिक्साधन नलिकावधाधिकारस्योदाहृति ॥ ·· ··· (पत्र स० १५)

(सं० सू० ७१)

क्रमाङ्क और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१२६	२४७५	ग्रहलाघव (उत्तरार्द्ध)			दे० का०	दे०
१२७	३०१०	ग्रहलाघव (उत्तरार्द्ध)		विश्वनाथ	दे० का०	दे०
१२८	४३१७	ग्रहलाघवटीका		विश्वनाथ	दे० का०	दे०
१२६	११६१	ग्रहलाघवटीका		नृसिंहदैवज्ञ	दे० का०	दे०
१३०	५७१६	ग्रहलाघव	गणेश दैवज्ञ	नृसिंहदैवज्ञ	दे० का०	दे०
१३१	५७१४	ग्रहलाघवटीका	गणेशदैवज्ञ	मल्लारिदैवज्ञ	दे० का०	दे०
१३२	१०८०	ग्रहलाघवटीका			मि० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५ २ × १० ४ सें० मी०	५५ (१-७,१०-३५, ३६-४१,४३-४७,५०-५३, ६६-७५)	८	३५	अपू०	प्राचीन	
२६ ५ × १५ ४ सें० मी०	३६ (१–३१, ३१–३५)	१३	२६	अपू०	प्राचीन	
३० ३ × १६ १ सें० मी०	३० (३४–६४)	१६	४१	अपू०	प्राचीन सं०१६०३	इति श्री ग्रहलाघवे करण सिद्धांत रहस्ये तद्विवणक दैवज्ञवर्य दिवाकरात्मज विश्व नाथ दैवज्ञ विरचिते सिद्धान्त रहस्योदाहरण समाप्ति × × संवत् १६०३ विक्रमात्समेमाघकृष्ण ······॥
२३ २ × १० ६ सें० मी०	८	८	२६	अपू० (खंडित)	प्राचीन	
२६ ५ × ११ ५ सें० मी०	३१ (१,२,४ ६, १५–४०)	८	४२	पू०	प्राचीन	श्रीमद्गुरुगणेशदैवज्ञेन ये ग्रंथा कृता स्ते तद्भ्रातृ पुत्रेण नृसिंह ज्योतिर्विदा स्व कृत ग्रहलाघव टीकाया ॥ (पत्र सं० १)
२७ १ × १३ ८ सें० मी०	५२	१४	४६	पू०	सं०१६१४	इति श्री मद्गणेश दैवज्ञकृत ग्रहलाघवस्य टीकाया मल्लारि दैवज्ञ विरचिताया मध्यम ग्रह साधनाधिकारः प्रथम ॥ (पृ० १२)
२८ ५ × ११ ५ सें० मी०	२८	११	३१	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१३३	१६८६	ग्रहलाघव (संस्कृतटीका)	गणेशदैवज्ञ	विश्वनाथदैवज्ञ	दे० का०	दे०
१३४	२३८५	ग्रहलाघव (संस्कृतटीका)	गणेश दैवज्ञ	नृसिंह ज्योतिर्विद	दे० का०	दे०
१३५	४७५२	ग्रहलाघवविवरण			दे० का०	दे०
१३६	६६४६	ग्रहलाघवव्याख्या	विश्वनाथ दैवज्ञ		दे० का०	दे०
१३७	५६०३	ग्रहलाघवसारणी			दे० मा०	दे०
१३८	६२६	ग्रहलाघवसारणी			दे० मा०	दे०
१३९	२६८९	ग्रहविचार			दे० मा०	दे०

पत्रों या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	ग्रंथ आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२२.२ × १४ सें० मी०	१० (१–७ ९, ३१)	१५	३०	अपू०	प्राचीन	इति श्री दैवज्ञात्मज विश्वनाथ कृते सिद्धान्त रहस्य . . .
२४.१ × १०.४ सें० मी०	५५ (१–५७)	११	३०	अपू०	प्राचीन	
२६.८ × ११.२ सें० मी०	३६ (१–३६)	१०	३४	अपू०	प्राचीन	
२५.३ × १०.७ सें० मी०	१० (१–१०)	१०	५३	पू०	सं० १६१४	इति श्री दिवाकर दैवज्ञात्म विश्वनाथ दैव विरचिताया ग्रहलाघवो दाहृतौ स्पष्टी करणं ॥ (पृ० ५)
३१.५ × १५ सें० मी०	१३ (१–१३)			पू०	प्राचीन	इति श्री ग्रहलाघवे शारणी समाप्त संवत १८०७ (?) चैत्र शुक्ला १२ लिखत मिश्र मुरलीधर
२६.६ × १३.२ सें० मी०	१५			अपू०	प्राचीन	
२३.४ × ६.३ सें० मी०	१३ (१ १२,१५)	१०	४१	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की क्रमांकसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१४०	६२०६	ग्रहस्पष्टीकरण (ग्रह फल)			दे० का०	दे०
१४१	१७९०	ग्रहाधिकार			दे० का०	दे०
✓ १४२	६१२८	चंद्र अवस्था			दे० का०	दे०
✓ १४३	८४५	चंद्रकुंडली			दे० का०	दे०
१४४	६२६५	चंद्रग्रहणार्थ श्लोक			दे० का०	दे०
१४५	६८०६	चंद्रोन्मीलन			मि० का०	दे०
१४६	३७५५	चंद्रोन्मीलन			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसख्या और प्रति पक्ति म अक्षरसख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	म	द	६	१०	११
२१×१२ ७ सें० मी०	१६	२२	१६	अपू०	प्राचीन	
३१×१५ १ सें० मी०	३ (१४-१६)	१३	४२	अपू०	प्राचीन सं०१८ ६	इति ह्यन्धीद्राल्पेशके ग्रहानयनाधिकार' इनि पचमाधिकार समाप्त श्री सवत १८६६ तत्र श्रावण कृष्णा १० चद्र वासरे दपुस्तक लिपत मिश्र हरनदस्वा त्म पठनाथ शुभ मगल ददाति श्रीरस्तु ॥
११×८८ सें० मी०	६	६	१८	अपू०	प्राचीन	अथ चद्र अवस्था लिख्यते ॥ (आदि)
१८४×१०५ सें० मी०	८	८	१६	अपू०	प्राचीन	
२६ ५×११ १ सें० मी०	७	१३	४६	अपू०	प्राचीन	
२५ १×१० ५ सें० मी०	४७ (१-४७)	६	३६	पू०	आधुनिक	इनि चद्रोमीलन समाप्तम ॥
२४ ८×१२ १ सें० मी०	१०	१०	३१	अपू०	प्राचीन	इति चद्रामीलने महाशास्त्रार्णव विनिगते मूल तत्राथ सबध प्रथम प्रकरण ॥ (पत्र सं० २)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१४७	१८३६	चंद्रोन्मीलन			दे० का०	दे०
१४८	६६१५	चंद्रोन्मीलनटीका			दे० का०	दे०
१४९	६६८५	चंद्रोन्मीलन दीपिका			दे० का०	दे०
✓ १५०	४२६७	* चक्ररत्नावली	वासुदेव		दे० का०	दे०
१५१	५१६२	चक्रावली			दे० का०	दे०
१५२	७६५४	चमत्कारचिंतामणि	दैवज्ञरामभट्ट		दे० का०	दे०
१५३	२७८८	चमत्कार चिंतामणि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३ ३ × ११ सें० मी०	१० (१०-१९)	१०	२६	अपू०	प्राचीन	
२८ ८ × १२ सें० मी०	१९ (१-१९)	१३	४५	पू०	प्राचीन	
३० ५ × १२ सें० मी०	१७ (१-१७)	१७	५६	पू०	प्राचीन	इति चन्द्रोन्मीलन टीकायां वाप्यादिषु जलनिर्णय सप्तविंशति पटल: ॥
२८ ५ × १२ ५ सें० मी०	४ (१-४)	१०	५३	पू०	सं०१७१९	इति श्री वासुदेव कृता चक्र रत्नावली समाप्ता ॥ संवत १६१९ समये ज्येष्ठ सुदि एकादश्यां रविवासरे लिपित जगजीवन ब्रह्मचारिणा ॥
२६ × ११ ४ सें० मी०	२ (१-२)	१७	५०	अपू०	प्राचीन	
१६ × १२ ४ सें० मी०	४० (२-४१)	१०	१०	अपू०	प्राचीन सं०१९०३	इति श्रीमद्दैवज्ञरामभट्टनारायण विरचिते चमत्कार चितामणौ ग्रहभावफलाध्याय आषाढ मासे कृष्णपक्षे तिथौ ११ भृगुवासर संवत १९०३ शाके १७६८
२५ २ × १० ३ सें० मी०	१४ (१-१४)	८	२७	पू०	प्राचीन सं०१९२५	इति चिमतकार चित्यामणि सपूर्ण सं० १९२५ मि० पौष वदि ५ ॥
(सं० मू० ७२)						

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१५४	८०१८	चमत्कार चिंतामणि	नारायणभट्ट		दे० का०	दे०
✓ १५५	५७६७	चमत्कार चिंतामणि	नारायणभट्ट		दे० का०	दे०
१५६	७८८१	चमत्कार चिंतामणि (सटीक)	नारायण भट्ट		दे० का०	दे०
✓ १५७	३६८२	चलगणित			दे० का०	दे०
१५८	२०६१	चिंतामणिटीका			दे० का०	दे०
१५९	२५३२/१७	चोरनामप्रश्न			दे० का०	दे०
१६०	१६७१	जन्मदीपक			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६ ३ × ११ ३ सें० मी०	१३ (१–१३)	८	३३	पू०	सं०१९०२	इति श्री चमत्कार चिंतामणि सम्पूर्णम श्री सवत १९०२ शाके १७६७ माघ मास शीत पक्ष षष्टम्या रविवासरे
२२ × १० ५ सें० मी०	११ (१–११)	११	२३	पू०	प्राचीन	इति श्री राज ऋषि (नारायण) रचित चमत्कार चिंतामणि नाम भावाध्याय ॥सपूर्ण॥
२७ ३ × ११ ४ सें० मी०	२० (१–२०)	११	३७	अपू०	प्राचीन	
१९ ८ × १० ७ सें० मी०	३ (१–३)	१०	२७	अपू०	प्राचीन सं०१८३४	
३२ × ६ सें० मी०	७४ (२–७५)	७	४७	अपू०	प्राचीन सं०१९३६	
११ ७ × ११ ५ सें० मी०	१ (१–२)	११	२६	पू०	प्राचीन	इति चौरनामप्रश्न ॥
३० × ११ ५ सें० मी०	१०० (१२ १४ ८० ८३ १०३)	६	४१	अपू०	सं०१९१८	इति श्री जन्म दीपक शास्त्रसार श्री हरि सुत सुतहकृष्ण विर विरचित सपूर्ण शुभमस्तु । सवत १९१८ के साल आषाढ सुदि ३

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१६१	६७४	जन्मसमुद्र विवृत्ति	नरचंद्रोपाध्याय		दे० का०	दे०
१६२	६७१	*जन्मसमुद्र विवृत्ति	नरचंद्रोपाध्याय		दे० का०	दे०
१६३	७३७	जन्मागपत्रावलि			दे० का०	दे०
१६४	८८६	जन्मजातक			दे० का०	दे०
१६५	४६२६	जातककर्म			मी०का०	दे०
१६६	११४४	जातककर्म			दे० का०	दे०
१६७	४४१	*जातककर्म पद्धति (केशवी टीका)		केशव दैवज्ञ	दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर-संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	ग्रंथ आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३२ १ × १६ ४ सें० मी०	६ (१–६)	१३	४८	अपू०	प्राचीन	इति तरच ।पाध्याय कृतायाँ जन्मसमुद्रविवृती वृत्ति शभ समवादि लक्षण प्रथम-प्रथम कल्लोल अथाता जन्म विधिनामा कल्लोलो व्याख्यायत
३२ ५ × १६ ४ सें० मी०	२४ (१ २४)	१३	५८	अपू०	प्राचीन सं०१८८१	इति श्री वाग़हट्टगच्छीया श्री सिंह सुनि शिष्यश्रावर श्रीनरचंद्रोपाध्याय कृतायां वृत्ति बद्राया सनाया जन्म समुद्र प्रश्न शतसरहारायां अष्टमकल्लोल नाभ सादि यागदीक्षा प्रयोग लक्षणो नामष्टम कल्लाल समाप्ताय ग्रंथ शुभ सवत् १८८१ ।
३२ ५ × १३ सें० मी०	१६ (२–१७)	८	३०	पू०	प्राचीन	इति सक्षप जन्म पभावलोकनम शुभ मस्तु मंगल ददातु लिप्यत देविसहाय विद्यार्थि पठनाय परपौत्र विष्णुदत्त का पौत्र मान सिंह का पुत्र वाहाद सिंह का सवत १६०५ मासातमास चत्र मासे कृष्णपक्ष शुभ तिथि एकादस्या ११ लिखहडी मध्ये राम ।
१४ ८ × ११ ८ सें० मी०	१० (१–१०)	६	१४	पू०	प्राचीन सं०१६१२	इति जन्मजातक संपूर्ण समाप्तम ॥ भूयात स० १६१२ लिखित्वा मीनेकु ।
२१ ६ × ८ ८ सें० मी०	१० (१–१०)	६	२४	पू०	प्राचीन सं०१८५९	इति श्रीजातकम समाप्तम ॥ सम्वत १८५६ शाक १७२४ शमयपौषमास कृष्णपक्ष त्रयोदश्या बुधवाशरे ॥
१६ × १२ ५ सें० मी०	२६ (१–१४) १६–२७)	८	१८	अपू०	प्राचीन	
२४ × १० सें० मी०	६६	११	३६	अपू०	प्राचीन	इति केशव पद्धति सोदाहरणा समाप्ता ॥ रचनाकाल—स०१५४० लिपिकाल । १८३६ सम्मित विक्रमस्य

क्रमाक और विषय	पुस्तकालय की आगतसख्या या सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१६८	११४५	जातकचद्रिका			दे० का०	दे०
१६९	७६०९	जातकपद्धति	केशव दैवज्ञ		दे० का०	दे०
१७०	१०९२	जातकपद्धति	श्रीपति		दे० का०	दे०
१७१	३१९७	जातकपद्धति			दे० का०	दे०
१७२	२४४३	जातकपद्धति	केशव दैवज्ञ		दे० का०	दे०
१७३	१४७४	जातकपद्धति	पाराशर		दे० का०	दे०
१७४	१७३१	जातकपद्धति	केशव दैवज्ञ		दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान ग्रंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	म	द	९	१०	११
१६ × १२ सें० मी०	१३	१०	१६	अपू०	प्राचीन	
२१.१ × ८.५ सें० मी०	६ (१–३ ६–८)	८	२६	अपू०	प्राचीन	इति श्री केशव दैवज्ञ विरचिते जातक पद्धती भावाध्याय ॥ (पत्र १–२)
३१ × १४.८ सें० मी०	८६ (१–८३, ८६–८८)	१६	४८	अपू०	प्राचीन	
२२.५ × १०.३ सें० मी०	११ (५–१५)	६	२६	अपू०	प्राचीन	
२३.४ × १०.३ सें० मी०	२७ (३–१५, १७–३०)	८	३४	अपू०	प्राचीन	
२१.७ × १०.६ सें० मी०	११ (१–११)	१०	३०	पू०	प्राचीन सं०१८६०	इति पाराशर कृत जातक पद्धति समाप्ता ॥ सवत १८६० चैतशुदि १२ चद्रवासरे लिखित ॥ .. .. सुद्यग्रहायु ॥
२०.३ × १० सें० मी०	६ (१–६)	११	३३	पू०	प्राचीन सं०१८३६	इति श्री केशव दैवज्ञ विरचिता जातक पद्धति समाप्ता ॥ सवत् १८३६ शाके १७०४ वैशाख मास शुक्ल पक्ष तिथौ ३ चद्र वासरे शुभमस्तु मगलददातु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रन्थनाम	ग्रन्थकार	टीकाकार	ग्रन्थ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१७५	३००	जातकपद्धति	केशव दैवज्ञ	नारायण	दे० का०	दे०
१७६	२०३०	जातकपद्धति	अनंत दैवज्ञ		दे० का०	दे०
१७७	५८६२	जातकपद्धति उदाहरण	कृष्ण दैवज्ञ		दे० का०	दे०
१७८	६२५१	जातकपद्धति व्याख्या			दे० का०	दे०
१७९	७०९७	जातकमंजरी	रघुनाथ		दे० का०	दे०
१८०	१०३३	जातकरत्नसार	वशिष्ठ		दे० का०	दे०
१८१	५७६४	जातक लग्नगुणप्रकरण			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रन्थ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ आवश्यक विवरण
८ ब	व	स	द	६	१०	११
२६×६६ सें० मी०	४६ (१–४६)	१३	५२	पू०	प्राचीन सं०१७४५	इति श्री बल्लालदैवज्ञात्मज गोविंद दैवज्ञसुत दैवज्ञ नारायण कृता सोदाहृतिर्वे केशवीय जातक पद्धति व्याख्या समाप्ता ॥ सवत् १७४५ शके १६११ समये भाद्र पद ""विश्वेश्वरभट्टेनेद पुस्तकम् लेखीति ॥ शुभ भूयाल्लेखक पाठकयो ॥
३४×१५२ सें० मी०	१८ (१–१५, १५–१७)	१३	४१	अपू०	प्राचीन	
२४२×१०३ सें० मी०	२५	१०	३६	अपू०	प्राचीन	इति श्री बल्लाल दैवज्ञात्मज कृष्ण दैवज्ञविरचिते श्रीपति भट्टीय जातक पद्धत्युदाहरणे दृष्टि गणितोदाहरणम्। (पृ० १८)
२२८×१०३ सें० मी०	२८ (१–२८)	६	३५	अपू०	प्राचीन	
२६×६५ सें० मी०	१२ (१–१२)	६	३५	पू०	प्राचीन सं०१८३६	श्री रघुनाथ विरचिते जातकमञ्जर्या जातक प्रकरण प्रथम ॥ (पत्र सं० ३) सवत १८३६ साकव १७०४ राम अषाढकृष्ण प्रतिपदा तिथौ बुधवासरे ॥ लिखित ठाकुर रामेण × × ×
२८८×१३५ सें० मी०	१० (१–१०)	६	३२	पू०	सं०१६०३	इति श्रीवशिष्ठ कृत जातक भाग्योदय-विचार बालक ज्ञानफलद दशमोध्याय १० मितिश्रावण शुदि ८ सं०१९०३॥
२०१×१०४ सें० मी०	४ (१–४)	११	२१	पू०	प्राचीन	इति जातक लग्न गुण प्रकरण ॥
(सं०सू०७३)						

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की ग्रागतसंख्या या संग्रह विशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१८२	६६३१	जातक विवरण			दे० का०	दे०
१८३	७०४१	जातकसार (सामुद्रिक)			दे० का०	दे०
१८४	६६५८	जातकसार			दे० का०	दे०
१८५	४०१२	जातकसारोद्धार			दे० का०	दे०
१८६	११६२	जातकाभरण	ढुंढिराज		दे० का०	दे०
१८७	३३६८	जातकाभरण	ढुंढिराज		दे० का०	दे०
१८८	२६८२	जातकाभरण			दे० का०	दे०

पत्र या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षर संख्या		पूर्ण है या अपूर्ण है? अपूर्ण है तो विवरण	प्राचीन और प्रतिलिपि	अन्य ज्ञातव्य विवरण
८ ख	व	ग	घ	ङ	१०	११
१६×६·३ सें० मी०	३ (१–३)	२८	६३	पू०	प्राचीन सं०१७२७	इति श्री शिवाम्बर विरचिते ज्ञान-तिलक. समाप्त सं० १७२७ फाल्गुन × × × × × ॥
२५·० × १० सें० मी०	१० (१–१०)	१२	४१	पू०	प्राचीन सं०१८८८	इति श्री ज्ञानसारे सामुद्रिकाशिते द्रव्यसार निर्णयानाम षष्ठोध्याय ॥ × × × × (पत्र सं० ८)
२५ × १०·७ सें० मी०	३ (१–३)	१३	४७	पू०	प्राचीन	इति श्री उमामहेश्वर संवादे ज्ञान-सारे संपूर्णम् ॥ शुभमस्तु ॥ ·····
२१·५ × ११·५ सें० मी०	८ (१–८)	१२	५०	पू०	प्राचीन	इति श्री द्रव्यामले उमामहेश्वर संवादे ज्ञान सारोद्धार संपूर्णम् ॥ (पृ० ३)
२३·७ × ११ सें० मी०	५०	१०	३१	अपू०	प्राचीन	
२३·८ × १०·६ सें० मी०	२०२	१०	३०	अपू०	सं०१८३६	इति श्री सर्वज्ञानश सारोज्ज्ञानश संग्रह समाप्त शुभमस्तु संवत् १८३६ प्र श्रावण शुक्ल ३ ॥
२८·३ × १३·८ सें० मी०	६	१३	४५	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१८६	२६८५	जातकाभरण			दे० का०	दे०
१६०	५०३७	जातकाभरण	ढुंढिराज		दे० का०	दे०
१६१	६०१३	जातकाभरण	ढुंढिराज		दे० का०	दे०
१६२	२४७७	जातकाभरण	ढुंढिराज		दे० का०	दे०
१६३	३०८	जातकाभरण	ढुंढिराज		दे० का०	दे०
१६४	२६२४	जातकाभरण	ढुंढिराज दैवज्ञ		दे० का०	दे०
१६५	४६६५	जातकाभरण	ढुंढिराज		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तियों और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रन्थ पूर्ण है या अपूर्ण ? वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य ज्ञातव्य विवरण
८ क	ख	ग	घ	९	१०	११
२८७×१०३ सें० मी०	६	८	२८	अपू०	प्राचीन	
२१६×११ सें० मी०	६ (१–६)	११	३८	अपू०	प्राचीन	
२१×११५ सें० मी०	२८ (१–२८)	६	३७	अपू०	प्राचीन	
२१.८×१०.७ सें० मी०	६६	६	२८	अपू०	प्राचीन	
३१५×१२५ सें० मी०	३३	१२	४३	अपू०	प्राचीन	इति जातकाभरणेऽष्टवर्गफला-ध्याय = ?
२४३×१०४ सें० मी०	२	८	२६	अपू०	प्राचीन	
३१३×१५५ सें० मी०	४४ (२–८, ११–१७, १९–४८)	१७	४७	अपू०	प्राचीन सं०१८९५	इति श्री दैवज्ञ ढुंढिराज विरचिते जातकाभरणे स्त्रीजातकाध्याय जातकाभरण संपूर्ण ॥ सं० १८९५ आषाढ कृष्ण १३ बुधवासरे लिखितमिद पुस्तक मिश्रलक्ष्मण तत्सुत मुरलिधर स्वय पठनार्थम् उमाशिवो-जयति ...

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
१९६	४७८४	जातकाभरण	ढुंढिराज		दे० का०	दे०
१९७	४७८	जातकाभरण (ग्रहभावफलानि)	ढुंढिराज		दे० का०	दे०
१९८	५०५६	जातकालंकार	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
१९९	६७७२	जातकालंकार	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२००	३७८४	जातकालंकार	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२०१	३०४६/६	जातकालंकार	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२०२	५६५४	जातकालंकार	गणेश गणक		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३.६ × ११.६ सें० मी०	५७ (२-१७, १९-२५, २७-२८, ३०-३१, ३५-३६, ४२, ४५-४७, ४९, ५१, ५३ ५६, ५८, ६३-६६, ६८ ७०, ७२, ८०-८३, ८६-८८, ९५, ९७)	८	२७	अपू०	प्राचीन	इति श्री दैवज्ञ ढुंढराज विरचिते जातिका भरणे हर्म्मपरनाध्याय ॥ (पत्रसं० ८०)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२०३	४३०३	जातकालकार	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२०४	१७३४	जातकालकार			दे० का०	दे०
२०५	४३६	जातकालकार	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२०६	२८२१	जातकालकार			दे० का०	दे०
२०७	२४०५	जातकालकार			दे० का०	दे०
२०८	६००४	जातकालकार	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२०९	३८८४	जातकालकार	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३२·५ × ११·६ सें० मी०	१० (१–१०)	७	३७	अपू०	प्राचीन	
२४ २ × १० ६ सें० मी०	७ (१०–१६)	१०	३७	अपू०	प्राचीन सं०१८७१	
३० × १२ ७ सें० मी०	१४ (५–१८)	१०	४०	अपू०	प्राचीन	
२४ × १० ५ सें० मी०	२१	७	३८	पू०	सं०१८८६	संवत १८८६ माघ वदि ६ ॥ श्री दुर्गायैनम ॥
२५ × १२ सें० मी०	११ (१–११)	१२	३७	पू०	प्राचीन सं०१८८३	इति श्री जातकालंकारे भावाध्यायः समाप्त भाद्रे मासिसिते पक्षेद्वादश्यां बुधवासरे संवत् १८८३ ॥
२१ ८ × ११ १ सें० मी०	५ (१, ६, १७–१९)	६	२३	अपू०	प्राचीन	
२६ × १३·५ सें० मी०	६ (१–६)	६	३२	पू०	प्राचीन	

(सं०मू०७४)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२१०	५११५	जातकालकार			दे० का०	दे०
२११	७०११	जातकालकार	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२१२	५४८०	जातकालकार	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२१३	६८१२	जातकालकार (टीका सहित)	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२१४	६८५४	जातकालकार (दशाध्याय)	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२१५	१०३७	जातकालकार (टीका सहित)	गणेश दैवज्ञ	हरिभानु शुक्ल	दे० का०	दे०
२१६	४१६७	जातकालकार (सटीक)	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४.४×१०.६ सें० मी०	९ (१–९)	९	३८	अपू०	प्राचीन	
२४.४×१०.८ सें० मी०	२० (१–२०)	८	३२	अपू०	प्राचीन	इति श्री गणेश दैवज्ञ विरचिते जातकालंकारे वशाध्याय सप्तम ॥ संवत् १८५० शक १७१५ श्री मनिरामिरावंतम ॥
३०.४×१४.२ सें० मी०	१० (१–१०)	८	४८	अपू०	प्राचीन	
२३.३×१०.६ सें० मी०	२८ (१–८, १०–२५, २७–३०)	८	३५	अपू०	प्राचीन	इति श्री जातकालंकारे टीकायां वशाध्याय समाप्तोयं ग्रंथ ॥
२१.५×९.९ सें० मी०	२१ (१–२१)	९	३३	पू०	प्राचीन	इति श्री गणेश दैवज्ञ विरचिते जातकालंकारे वशाध्याय ॥
३१×१४.२ सें० मी०	२५ (१–२५)	१४	५०	पू०	प्राचीन सं०१८९६	इति श्रीमच्चतुरनाथशर्मा हरिभानुभाविता जातकालंकारटीका सं०१८९६ शाके १७६१ फाल्गुण कृष्णा सप्तमि ७ चन्द्रवासरे इदपुस्तकं लिखित मुरलीधर स्वय पठनार्थम् उमागिरो जयति शिवापनमस्तु ॥
३४.५×१३.५ सें० मी०	१० (१–१०)	१२	५६	अपू०	प्राचीन	इति श्री जातकालंकारे संज्ञाध्यायः प्रथमः । (दशमाध्याय–३) × × ×

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२१७	७६६६	जातकालंकार सटीक	गणेश दैवज्ञ	हरिभानु शुक्ल	दे० का०	दे०
२१८	७४१२	जातकालंकार टीका	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२१९	३५३५	जातकालंकार टीका		हरिभानु	दे० का०	दे०
२२०	६९४३	जातकालंकार टीका	गणेश दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२२१	३८१५	जातकालंकार सूचीपत्र			दे० का०	दे०
२२२	६६०४	जैमिनि उपदेशसूत्र			दे० का०	दे०
२२१	२५६३	जैमिनि उपदेशसूत्र	जैमिनी		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	१०
३२.३ × १४.४ सें० मी०	२८ (१–२८)	११	४४	पू०	प्राचीन सं० १८८०	इति हरिभानु शुक्ल कृता जातकालंकार व्याख्या समाप्ता शुभमस्तु संवत् १८८० फाल्गुण कृष्णा १२ गुरौ थी ॥
२६.५ × १०.३ सें० मी०	२०	१५	४०	पू०	प्राचीन (कृमि कृ तित)	इति श्री जातकालंकारे टीकायां वंशाध्याय समाप्तोऽयं शुभमस्तु संवत् १८८७ शाके १७६२ पौष × × ॥
२६.२ × १२.६ सें० मी०	२७ (१–२७)	१३	५०	अपू०	प्राचीन सं० १८८३	इति श्री मच्छुक्लोपनामक हरिभानु-भाविता जातकालंकार टीका समाप्ता संवत १८८३ शाके १७४६ अश्विन मासे कृष्ण पक्षे तिथौ ११ बुधवासरे ॥
२६.४ × ११.२ सें० मी०	३४ (१–३४)	१०	४५	पू०	सं० १६०८	इति श्री गणेश दैवज्ञविरचिते जातक लंकारेवंशाध्याय समाप्त श्री श्र संवत १६०८ माघेमासी कृष्णप गुरवासरे लिखित ...... ॥
२७.७ × १४ सें० मी०	१० (१–१०)	१६	३४	पू०	प्राचीन	इति श्री ग्रथालंकार प्रकरण समाप्त शुभमस्तु मंगल ददातु ॥
२७.१ × ११.५ सें० मी०	१६ (१–१६)	६	२६	पू०	प्राचीन	इति जैमिन्युपदेश सूत्रे चतुर्थाध्याये चतुर्थ पाद ॥४॥ ...
२६.२ × १२.२ सें० मी०	११	१०	३६	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२२४	७६६७	जैमिनि सूत्र			दे० का०	दे०
२२५	६६१२	जैमिनि सूत्र (सटीक)		नीलकंठ दैवज्ञ	दे० का०	दे०
२२६	६६०६	जैमिनि सूत्र (सटीक)			दे० का०	दे०
२२७	३०२८	जैमिनि सूत्र वृत्ति		कृष्णानंद सरस्वती	दे० का०	दे०
२२८	४२५७	जैमिनि सूत्र व्याख्या		नीलकंठ (व्याख्याकार)	दे० का०	दे०
२२९	६५४४	ज्ञानदीपिका			दे० का०	दे०
२३०	६६०६	ज्ञान प्रदीप			दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठा का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१७.२ × ११.१ सें० मी०	२	१०	२०	अपू०	प्राचीन	इति जैमिनिसूत्रम्० ॥
२७.२ × ११ सें० मी०	३१ (१–३१)	१३	४३	पू०	प्राचीन	इति श्री नीलकंठ ज्योतिर्विद्विरचितायां जैमिनि सूत्र व्याख्यायां सुबोधिन्यां द्वितीयाध्यायस्य चतुर्थ पाद समाप्त ॥ श्री शाक रस सप्तभूपतिमिते नपाल खंडे वरे श्री श्रीमद्रणजिन्नृपान्वर वरे राज्य प्रकुर्वत्यमो ॥ रंगमी श्री जय शर्म सुरि तनुज श्री नीलकंठोद्विज शास्त्रे जैमिनिना कृते सुविवृति भूपाज्ञया व्यारोत् ॥
२७.७ × ११.८ सें० मी०	२४ (१–२४)	१७	४७	पू०	प्राचीन	इति जैमिनि सूत्रे तृतीयाऽध्यायस्य तृतीय पाद ॥३॥
२६.३ × १०.५ सें० मी०	८१ (६–८६)	६	४२	अपू०	प्राचीन	
३२ × १२ सें० मी०	१४ (१–१४)	१४	५६	अपू०	प्राचीन	इति श्री नीलकंठज्योतिर्विद्विरचितायां जैमिनिसूत्र व्याख्यायां सुबोधिन्यां प्रथमाध्यायस्य चतुर्थ पाद समाप्त ॥ × × ×
२१.२ × ७.६ सें० मी०	२१ (१–२१)	८	२४	पू०	प्राचीन	ज्ञान दीपिका समाप्ता ॥
२७.४ × ११.७ सें० मी०	२५ (१–२४) (एक विशिष्ट पत्र)	६	४०	पू०	प्राचीन सं० १९२६	इति श्री ज्ञान प्रदीप [illegible] कार्य सिद्धि [illegible] समाप्त ॥ सं० १९२६ [illegible] १७९४ [illegible] × × ×

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या सग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२३१	४७६८	ज्ञानप्रदीपक			दे० का०	दे०
२३२	४५३४/२	ज्ञानबोधिनी	नंदलाल		दे० का०	दे०
२३३	१६७७	ज्ञानभास्कर			दे० का०	दे०
२३४	६५४५	ज्ञानमंजरी	ऋषि शर्माचार्य		दे० का०	दे०
२३५	१२८६	ज्ञानमंजरी			दे० का०	दे०
२३६	६४३६	ज्ञानस्वरोदय			दे० का०	दे०
२३७	६७०	ज्योतिष सार जातक			दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठो का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२५×१० सें० मी०	२६ (१–२६)	८	३३	पू०	स०१७५४	इति ज्ञान प्रदिपके समाप्त ॥ … … … सवत् १७५४ समये कार्तिके …
३०×१२.२ सें० मी०	५६ (१–५६)	१०	५७	पू०	सं०१८१६	इति श्री मिश्रशिवरामसुतनदलाल विरचिताया ज्ञानबोधन्या सव सरनाम ॥ ज्ञानबोधनी समाप्ता शुभमस्तु श्री कृष्णार्पण मस्तु सवत् १८१६ मार्गवदि ३० खौवहलिखित्तमिद पुस्तक कालू चतुर्वेदिन राम ॥
३०.५×१२ सें० मी०	४८	१०	२८	पू०	स०१६१८	सवत् १६१८ के साल ''· १४ का ॥ लिखित लाल वृजं लाल ॥ '' ''· ·
२४.७×६.५ सें० मी०	२१ (१–२१)	१२	३५	पू०	प्राचीन	इति ऋषि शर्माचार्य विरचिताया ज्ञानमजयमिश्रर प्रश्न विद्या समाप्ता ॥१॥
२२.६×११ सें० मी०	३२ (२–३३)	८	२७	अपू०	प्राचीन	इति श्री ज्ञानमजरी समाप्ता ॥
२३.२×१२.३ सें० मी०	२२ (१–२२)	१०	३२	पू०	प्राचीन	इति श्री उमामहेश्वरसंवादे ज्ञान स्वरोदय समाप्तम ॥ मीति द्वितिय भाद्र कृष्ण ११ एकादश्य बुधवासर संवत् १९८४ बीशारी नाम संवत्सरे उदगयन धाम ऋतु सन्नि पुस्तक समाप्त मुकाम जावा ।
२५.२×१०.५ सें० मी०	४ (१,२,५,६)	६	१२	अपू०	प्राचीन	इति श्री ज्योतिषसार ज्ञानार समाप्त लिखित लक्ष्मी नाथ भट्ट गौड़स्य ॥
(स० पु० ७५)						

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसख्या या संग्रहविशेष की सख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२३८	७८८०	ज्योति प्रबोध	केशव		दे० का०	दे०
२३९	३५२१	ज्योतिर्विदाभरण			दे० का०	दे०
२४०	२९६३	ज्योतिष कल्पतरु			दे० का०	दे०
२४१	११९०	ज्योतिषकल्पतरु			दे० का०	दे०
२४२	३०११	ज्योतिषकल्पाग	चूडामणि		दे० का०	दे०
२४३	३०१६	ज्योतिषकल्पतरु			दे० का०	दे०
२४४	३०१७	ज्योतिषकल्पतरु			दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२७७×११३ सें० मी०	७ (१-७)	८	४३	पू०	प्राचीन	
३०८×१५८ सें० मी०	६	११	४६	अपू०	प्राचीन	
२४३×१२६ सें० मी०	४१	१०	३१	अपू०	प्राचीन	
२४×६७ सें० मी०	७७	८	३८	अपू०	प्राचीन	
२८१×११६ सें० मी०	८३ (१-८३)	६	३४	पू०	प्राचीन शाक१५५०	शाके शून्य शरेषु शीत किरणे १५५० वैशाषमासे " इति श्री कवि चूडामणि चक्रवर्ति विरचित ज्योतिषकल्पतरौ जातक स्कंधे द्वात्रिंशोध्याय ३२ शुभमस्तु ॥
२७६×११५ सें० मी०	२२५ (१-५५)	६	३१	पू०	प्राचीन सं०१८८२	इति श्री ज्योतिष कल्पतरौ जातक स्कंध विंशा यागिनीदशा कथन नाम पड्विंशतिमोध्याय श्री संवत १८८२ माघ मासे कृष्णपक्षे तिथौ १ भौमवासर लिखितमिदं पुस्तक छत्रपुर मध्ये " "॥
२५८×१३१ सें० मी०	१८ (१-१८)	१३	३६	अपू०	प्राचीन	इति श्री ज्योतिष कल्पतरौ मूल ग्रंथे तृतीयाध्याय ॥

क्रमाङ्क और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२४५	३४२२	ज्योतिष कल्पतरु	चूडामणि		दे० का०	दे०
२४६	७३२४	ज्योतिषकौमुदी (प्रश्नप्रकरण)	नीलकंठ		दे० का०	दे०
२४७	१२२६	ज्योतिषकौमुदी	नीलकंठ		दे० का०	दे०
२४८	२७५३	ज्योतिष ग्रंथ			दे० का०	दे०
२४९	१६६६	ज्योतिषचंद्रिका			दे० का०	दे०
२५०	१०१५	ज्योतिष जातक			दे० का०	दे०
२५१	३४८६	ज्योतिषतंत्र (ज्योतिष प्रश्न)	चिंतामणि		दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३७×१० सें० मी०	६२१	७	३७	अपू०	शाके १५६५	शाके पचाग वाणदी १५६५ वैशाखे गुरुवासरे ॥ पचम्या शुक्ल पक्षेतु श्री मद वृदावनान्तरे ॥ ··· ··· इति श्री कवि चूडामणि विरचिते ज्योतिषकल्पतरौमिश्र स्कधे उपसहारो नाम पचविंशा · समाप्तश्चाय स्कंध ॥श्री॥
२४४×१० ३ सें० मी०	३	८	३०	अपू०	प्राचीन सं०१८३६	इति श्री नीलकठविरचित ज्योतिष कौमुद्या प्रश्न प्रकरण ॥सं०१८३६ मिती वैशाख कृष्ण द्वितीया २ शनौ लिखित हरीराम दीक्षित × × × ॥
२४५×१० ६ सें० मी०	३७ (१–३७)	८	३३	पू०	सं०१८४७	इति श्री नीलकठरचित ज्योतिषकौमुद्या प्रश्नप्रकरण समाप्तम ॥ सवत १८४७॥ मिति आषाढ शुदि द्वितीया भौमवासर ॥श्री॥
२१२×८१ सें० मी०	५ (१–५)	७	२३	पू०	प्राचीन	इति ज्योतिष ॥ · ··· ···
२०×१० सें० मी०	६	८	२७	पू०	प्राचीन	इति श्री ज्योतिष चद्रिकाया पचाग- ज्यो प्रथम प्रकाश ॥ ॥श्री रस्तु॥
२५५×११ ६ सें० मी०	२३	६	२६	पू०	सं०१६८८	समत सम्वत १६८८ समैनामनीति जेठ सुकुला आष्ठम्या रविवासर ॥
२७६×१२ ५ सें० मी०	२० (१–२०)	१०	३६	अपू०	प्राचीन	इति श्री दैवज्ञ चूडामणि श्री मन्महाराज वदित पादाबुज सिद्ध जनाना-ददाधि सर्वविद्याकुशलशास्त्रपुकृतश्रम श्रामच्चितामणि पडितवर्यै विरचिताया ज्योति शास्त्रे प्रथम तन्त्र सपूर्णम ॥ (पृष्ठ सख्या–१३)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२५२	२५१४	ज्योतिष प्रश्न			दे० का०	दे०
२५३	९६५	ज्योतिष प्रश्न			दे० का०	दे०
२५४	२०६५	ज्योतिष यंत्र संग्रह			दे० का०	दे०
२५५	६८४८	ज्योतिष रत्नमाला	श्रीपति भट्ट		दे० का०	दे०
२५६	५०८१	ज्योतिष रत्नमाला	श्रीपति भट्ट		दे० का०	दे०
२५७	२८६७	ज्योतिष रत्नमाला	श्रीपतिभट्ट		दे० का०	दे०
२५८	४४३७	ज्योतिष रत्नमाला	श्रीपतिभट्ट		दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठा का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ म	८	स	द	९	१०	११
२५ ५ × ९ ५ सें० मी०	२०	१०	४१	अपू०	प्राचीन	
३० × १३ सें० मी०	४ (१–४)	११	३५	पू०	प्राचीन	
१३ ८ × ८ ७ सें० मी०	२५	११	१६	पू०	प्राचीन	
२४ ८ × १० ६ सें० मी०	२६ (१–२६)	११	५३	पू०	प्राचीन	इति श्री श्रीपति भट विरचिताया ज्योतिषरत्नमाला समाप्त "
२३ ४ × ११ ४ सें० मी०	६ (३ ६ १२ २०)	१३	३८	अपू०	आधुनिक	इति श्री श्रीपत भट विरचिताया ज्यातिरत्नमालाया महूर्त प्रकरण × × × (प० १०)
२३ ४ × ८ ३ सें० मी०	५२ (१–५२)	७	२८	पू०	प्राचीन स० १७७५	इति श्री पति भट्टविरचिताया ज्यातिष रत्नमालाया देवप्रतिष्ठा प्रकरण विशतिम समाप्त ॥ शुभ मस्तु ॥ समत १७७५ शाक ॥१६४०॥ समये पौष शुदि ७ सप्तमी गुरौ ह ॥ राम ॥ राम ॥
२६ × १० ४ सें० मी०	३५ (२ ८ १३ १८ २२ ३० ३० ४१ ४१ ४३ ४५ ४७ ४९ ५३ ५४ ५६)	५	३०	अपू०	प्राचीन	इति श्री श्रीपति विरचिताया ज्योतिष रत्नमालाया योग प्रकरण चतुर्थ × × (पृ० १४)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२५६	१३७१	ज्योतिष रत्नमाला	श्रीपति भट्ट		दे० का०	दे०
२६०	३१५०	ज्योतिष रत्नमाला	श्रीपति भट्ट		दे० का०	दे०
२६१	५३०८	ज्योतिष रत्नमाला	श्रीपति भट्ट		दे० का०	दे०
२६२	६५४६	ज्योतिष रत्नमाला	श्रीपति भट्ट		दे० का०	दे०
२६३	७३६	ज्योतिष रत्नमाला	श्रीपति भट्ट		दे० का०	दे०
२६४	४८१०	ज्योतिष रत्नमाला	श्रीपति भट्ट		दे० का०	दे०
२६५	४८३२	ज्योतिष रत्नमाला (लग्नप्रकरण)	श्रीपति भट्ट		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	म	द	९	१०	११
२४.५×१५ सें० मी०	२६ (२-२७)	१४	३८	अपू०	प्राचीन	
२४×१०.३ सें० मी०	२५ (१-२५)	१०	३६	अपू०	प्राचीन	
२३.६×११.५ सें० मी०	८ (२-७,८-१५, १६)	१३	४६	अपू०	प्राचीन	इति श्रीपति भट्ट विरचिताया ज्योतिष-शास्त्रमालाया लग्न प्रकर्ण ॥ (प० १६)
२६.८×१०.२ सें० मी०	३१ (१-३१)	६	३६	पू०	प्राचीन	इति श्री श्रीपति भट्ट विरचिताया ज्योतिपरत्नमालाया लग्न प्रकरण द्वादश ॥
२५.३×११.५ सें० मी०	६६ (२-६७)	७	२५	अपू०	प्राचीन	
२२×८.४ सें० मी०	४७ (२-४४ ५०-५२)	६	३३	अपू०	सं० १८२७	इति श्री श्रीपति भट्ट विरचिताया ज्योतिप रत्नमालाया सुर प्रतिष्ठा प्रकरण ॥ सवत १८२७ मार्ग सुदि १२ बुधेके पुस्तक लिखित मोद्वरामेण स्वपाठार्थं ।
२७.५×११.५ सें० मी० (ज्यो०सू०७६)	३६ (१-३६)	८	३२	पू०	प्राचीन	इति श्री श्रीपति भट्ट विरचिताया ज्योतिप रत्न मालाया लग्न प्रकर्णम् द्वादशम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२६६	६१३७	ज्योतिषसंग्रह			दे० का०	दे०
२६७	७०५३	ज्योतिषसंग्रह			दे० का०	दे०
२६८	१६२०	ज्योतिषसंग्राहिका			दे० का०	दे०
२६९	६१६३	ज्योतिषसार	नरचंद्र		दे० का०	दे०
२७०	४६०८	ज्योतिषसार			दे० का०	दे०
२७१	१७७४	ज्योतिषसार			दे० का०	दे०
२७२	४२७९	ज्योतिषसारसंग्रह (बालबोध)	मुंजादित्य		दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	ग्रन्थ की दशा और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
१६८×७८ सें० मी०	६	७	२०	अपू०	प्राचीन	
१७७×८६ सें० मी०	६१	८	१८	पू०	प्राचीन	
२१×१६ सें० मी०	३२	१६	१५	अपू०	कृमि तित	
२५२×१०३ सें० मी०	८	१६	४५	अपू०	प्राचीन	अर्हत जिन नत्वा नारचद्रएधीमता सार भुघ्रते किंचि द्यातिप क्षौर नोरध ॥१॥ स्वरस्वती प्रसादनय वक्षा द्वार तृप्यन्ते । वरिष्य नरचद्रोह । मुग्धाना वाध हेतव ॥२॥ (प्रारभ)
२३८×१६३ सें० मी०	७ (१–७)	१२	२२	अपू०	प्राचीन स०१६११	इति जावनोसारसास्त्र समाप्त सवत् १६११ पौषमुदाद्वताम गुरु वासर तादिन समाप्त सुभमस्तु मगल ददात ।
२४×१२४ सें० मी०	५ (२–६)	११	३८	अपू०	प्राचीन स०१८७६	इति श्री जातिकशार सास्त्र समाप्त सपूर्ण चैत्र शुक्ल पक्ष तिथौ ७ भृगु वासरे सवत १८७६ लिप्यत प आर छरिया जुगन परमाद सेवक कृष्ण के ॥
२३×६७ सें० मी०	१२ (२–७, १३, २१–२५)	८	३१	अपू०	प्राचीन स०१८५३	इति श्री मुजादित्येन विप्रेन ॥ विरचित जातिप सार सग्रहा बालबोधकावसारसग्रह सपूर्ण । सवत ॥१८॥५३॥ प्रभौनाम सवत्सरे ॥क्वार माश शुम्ये शुक्ल पक्ष त्रियादसी शुक्रवासर ... ...

क्रमाक और विषय	पुस्तकालय की ग्रागतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२७३	८७२६	ज्योतिष सारसंग्रह			दे० का०	दे०
२७४	१६३६	ज्योतिषादि संग्रह			दे० का०	दे०
२७५	७१३४	ताजकसार			दे० का०	दे०
२७६	६६२६	ताजिक (द्वादश ग्रहफल)			दे० का०	दे०
२७७	५५२५	ताजिक नीलकंठी	नीलकंठ		दे० का०	दे०
२७८	२०४५	ताजिक नीलकंठी	नीलकंठ दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२७९	५८८३	ताजिक नीलकंठी	नीलकंठ भट्ट		दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठा का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२३.७×११ सें० मी०	१७ (१–१७)	८	४५	अपू०	प्राचीन	इति ज्योतिष सार संग्रह नाम नक्षत्र गोचार गुरु रवि शुद्धिनाम द्वितीयास्तवक ॥२॥ (पत्र संख्या–७)
१७.५×१२ सें० मी०	२२	१६	१५	अपू०	प्राचीन	
२४.४×१०.१ सें० मी०	३१ (१–३१)	१०	३२	अपू०	प्राचीन	
१६×६.३ सें० मी०	१४ (१–१४)	६	२०	पू०	प्राचीन सं० १७५३	ईति राहुफल ईति ताजिक द्वादश भुवन पटान फल स्माप्त श्री शुभमस्तू यादृष्ट पुस्क दृष्टवा तादृष्ट लीपति मया × सवत् १७५३ मास सा० ॥
२४.८×१०.७ सें० मी०	४४ (१–४४)	८	३४	अपू०	प्राचीन	
३३.१५×२ सें० मी०	३	१३	४१	अपू०	प्राचीन	
२२.५×१०.५ सें० मी०	१० (१–२, ४–११)	६	४३	अपू०	प्राचीन	

प्रभाव और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२८०	६८१०	ताजिक नीलकंठी	नीलकंठ दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२८१	६६६२	ताजिक नीलकंठी	विश्वनाथ दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२८२	२७२०	ताजिक नीलकंठी	नीलकंठ		दे० का०	दे०
२८३	२७२८	ताजिक नीलकंठी	नीलकंठ भट्ट		दे० का०	दे०
२८४	१२८०	ताजिक नीलकंठी	नीलकंठ दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२८५	४६०	ताजिक नीलकंठी	नीलकंठ दैवज्ञ		दे का०	दे०
२८६	२४६३	ताजिक नीलकंठी			दे का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४२×१०६ सें० मी०	२८ (१–२८)	१०	३८	अपू०	प्राचीन	
३२९×१२५ सें० मी०	५६ (१–५६)	१०	४२	अपू०	प्राचीन	इति दैवज्ञ दैवज्ञात्मज विश्वनाथ दैवज्ञ विरचित नीलकंठ ज्योतिर्विकृत समातन्त्र षोडशयोगाध्यायस्य व्याख्योदाहृति समाप्ता ॥ (पृ ४६)
२३३×११६ सें० मी०	२५ (१–२५)	९	३४	पू०	प्राचीन	इति श्री नीलकंठाचार्य विरचिते नीलकंठीताजक संपूर्ण ॥ शुभमस्तु ॥
२४२×१२४ सें० मी०	२१ (१–२१)	११	३८	अपू०	प्राचीन	
३१५×१२ सें० मी०	६ (१–६)	९	४५	अपू०	प्राचीन	
२८६×१५२ सें० मी०	२६ (१–२६)	१३	३४	पू०	सं०१९०९	इति श्री नीलकंठ विरचितताजक समाप्त ॥ शुभमस्तु मंगल ददातु संवत १९०९ शाके १७७४ पौष कृष्ण अष्टम्यां चन्द्रवासरे लिखित मिश्र शिवदयाल श्री ॥
२४५×६८ सें० मी०	३१ (३४७६ २६३१३३)	८	२६	अपू०	प्राचीन	

क्रमाक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२८७	३३०६	ताजिक नीलकंठी			दे० का०	दे०
२८८	४१२४	ताजिक नीलकंठी	नीलकंठ भट्ट		दे० का०	दे०
२८९	१७४१	ताजिक नीलकंठी	नीलकंठ दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२९०	५२४५	ताजिक नीलकंठी (वर्षतंत्र)	नीलकंठ		दे० का०	दे०
२९१	६५४८	ताजिक नीलकंठी (वर्षतंत्र)	नीलकंठ दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२९२	४८९	ताजिक नीलकंठी	नीलकंठ दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२९३	७०१३	ताजिक नीलकंठी (संज्ञातंत्र)	नीलकंठ		दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पङ्क्तिसंख्या और प्रतिपङ्क्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२३.६ × ११.२ सें० मी०	१८ (१–१८)	१३	३५	पू०	प्राचीन सं०१७७८	शवे नदाभ्रगणेंदुमित आश्विन मासके। शुल्केष्टम्या…… …सवत् १७७८ शाके १६४३ कार्तिक शुक्ल पचमी रवि वासरे समाप्त पुस्तक ॥ लाजक नील कठी लिखित… … …… …॥
२६ × १३ सें० मी०	३७ (३–३७, ३९–४२)	८	२६	अपू०	प्राचीन	
२५.३ × ११ सें० मी०	७० (१-२२, २५-२६,३०-३२,३५ ५०, ५९-६२,६९-७२,७६,७९-८८,९२-९९)	५	२८	अपू०	प्राचीन	
२७ × १३.९ सें० मी०	२५ (१–२५)	११	३०	पू०	रचनाकाल–शाके–१५०६ लिपिकाल–संवत्–१८६६	शावे नदाभ्रवाणेंदु ॥१५०९॥ मिति अश्विन मासिवे शुक्लेष्टम्यामनुग्रय नीलकठ वधाकरोत ॥ इति श्री काशी निवासि नालकठ विरचित वध तन्त्र द्वितीय समाप्त ॥ श्री स० १८६६॥ तत्रवर्षे महामांगल्यप्रदे मासोत्तमे मासे फाल्गुनमास शुक्ले पक्षे शुभ तिथौ एकादश्या ११ शुक्रवासरा .. …
२४.७ × १०.५ सें० मी०	२८ (१–२८)	९	३०	पू०	प्राचीन	शके नदा बाणदूमित आश्विन मासके शुक्लोष्टम्या वध तत्र नीलकंटबुधो ऽकरोत ॥५॥ शुभभवतु लीखीत वास देव ह्राम ॥
३० × ११.५ सें० मी०	२७	११	५०	पू०	सं०१८३८	इति वध तत्र सपूर्ण ॥स० १८३७ शाके ७०२ मासोत्तमेमास अस्वन मासे। शुक्ल पक्ष। पुन्य तिथौ दसम्यायां ।१०। रव वासरे। लिषत जोत गराय पुत्र राम प्रसादवा। नाग बाण। शुभ। शुभ श्रीरामजी सदा सहाय। सरस्वति नम ॥शुभ॥
२४.९ × ११.१ सें० मी० (मं०स०७७)	१८ (१–१८)	९	३०	पू०	प्राचीन सं०१८८२	इति श्री नीलकण्ठया सज्ञातत्र समाप्तं + + स० १८८२ समाप्त + ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
२९४	४६६	ताजिक (संज्ञा तंत्र) (सटीक)		समरसिंह	दे० का०	दे०
२९५	६५४७	ताजिक नीलकंठी (संज्ञा तंत्र)	नीलकंठ दैवज्ञ		दे० का०	दे०
२९६	१४६	* ताजिक नीलकंठी (संज्ञातंत्र प्रकाशिका टीका) उत्तरार्ध	नीलकंठ दैवज्ञ	विश्वनाथ	दे० का०	दे०
२९७	२६४	ताजिक नीलकंठी	नीलकंठ दैवज्ञ	दिवाकर दैवज्ञ	दे० का०	दे०
२९८	२६८१	ताजिक नीलकंठी (संस्कृतटीका)	नीलकंठ दैवज्ञ	विश्वनाथ दैवज्ञ	दे० का०	दे०
२९९	५८०	ताजिक नीलकंठी (संस्कृतटीका)			दे० का०	दे०
३००	२६९	ताजिकनीलकंठी (सं० टीका) शिशुबोधिनी	नीलकंठ दैवज्ञ	माधव	दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३२.५ × १४.५ सें० मी०	१३ (२–१४)	१४	४४	अपू०	सं०१६०७	"'समरसिंह कृत ताजिक तंत्रे स्फुट प्रकटार्थमुक्तमस्ति" (पृ० ६) इति हर्षस्थान विचारयेत् लीख्यत राम गोपाल चुलदचं कापड्यावासमध्य सं० १६०७ पौ० कृ० १३ ॥
२५ × १०.४ सें० मी०	२३ (१–२३)	७	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री दैवज्ञानंतसुत नीलकंठी विरचित संज्ञा तंत्र समाप्त ॥ ददं पुस्तकं दिनि तमाण वेश्वर ज्योतिर्विदो
२४.५ × १०.१ सें० मी०	७४	१२	३१	पू०	प्राचीन शक सं० १५५१	प्रकारिविश्वनाथेन सज्ञातंत्र प्रकाशिका ॥ टीकाटीकाकृता सूरिसज्जालज्जानुबंधनम् ॥१॥ चन्द्रवाण शरचन्द्र १५५१ सम्मिते हायनेनृपतिशलिवाहन। मार्गशीर्षसित पञ्चमी तिथौ विश्वनाथ विदुषा समापिता ॥२॥ गोदावरीतटे भाति गोलग्रामोऽति सुन्दर ॥
३१.७ × १२.७ सें० मी०	२२ (१–२२)	११	४१	पू०	प्राचीन सं०१६१६	इति श्री दिवाकर दैवज्ञ विरचिते श्री नीलकंठ ज्योतिर्वित् कृत सज्ञातंत्रे पचाशत्सहम सहित समाप्तम् तीयाध्याय संवत् १६१६ मार्गशिर शुक्ला ३ चंद्र वासरे लिपि कृत आनदि रामात्मज विहारिणा मोरध्वाघ्य वासिना शुभम् ॥
२७.२ × १५.६ सें० मी०	१३	१६	४१	अपू०	प्राचीन	इति श्री दिवाकर दैवज्ञात्मज विश्वनाथ दैवज्ञ विरचित नीलकंठ ज्योतिर्विद्कृत सज्ञातंत्रे सहमाध्यायस्य व्याख्योदाहृति समाप्ता ॥
२७ × ११.७ सें० मी०	१२ (१–१२)	१३	४०	अपू०	प्राचीन	
३१.७ × १२.८ सें० मी०	३३ (१–३३)	१३	४५	अपू०	प्राचीन	

क्रमाक और विषय	पुस्तकालय की अनुक्रमसंख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३०१	२२८	ताजिक नीलकठी (१-२ तत्रम्)	नीलकठ दैवज्ञ		दे० का०	दे०
३०२	२७१०	ताजिक भाव विचार			दे० का०	दे०
३०३	१०६	ताजिक भूषण	गणेश गणक		दे० का०	दे०
३०४	६६	ताजिक भूषण	गणेश गणक		दे० का०	दे०
३०५	५२३७	ताजिकसार	हरिभट्ट		दे० का०	दे०
३०६	७८६	ताजिकसार			दे० का०	दे०
३०७	७५७	ताजिकसार			दे० का०	दे०

पत्रो या पृष्ठो का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	ग्रन्थ गतावश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७ × ११ सें० मी०	२६ (१–१२, १–१७)	१२	४३	पू०	प्राचीन	इति नीलकण्ठ्या द्वितीतंत्र समाप्त लिखित हरिराम दीक्षितमराडले करेण स्वार्थ ॥ शुभभूयाल्लेखक पाठकानां॥
२५.४ × ११.६ सें० मी०	२३ (१–२३)	८	३५	पू०	प्राचीन सं०१८२६ श०१६९१	... "संवत् १८२६ शाके १६९१ वैशाख सुदि १ ॥
२५ × ९.१ सें० मी०	५४ (१–५४)	७	२६	पू०	प्राचीन सं०१७५५ श०१६२०	इति श्री मद्दैवज्ञ ढुंढिराजात्मज गणेश दैवज्ञविरचितेता जिक भूषणे भोजन चिन्ताध्वंस ॥ समाप्तो य ग्रंथ ॥ समाप्त । शुभमस्तु ॥ संवत् १७५५ शके १६२० प्रथम ज्येष्ठ वदि १३ गुरुवासरे मुकुंदपुर नगरे श्रीमहाराजा अवधूतसिंह देवस्य पुस्तक लिखित मिद। श्रीमिश्रन्त हनुमनेन ॥
२६.८ × १४ सें० मी०	१७ (१–१७)	१५	४४	पू०	प्राची० सं०१८८६	इति श्री मद्दैवज्ञ ढुंढिराजात्मज गणेशगणक विरचिते ताजिक भूषणे भोजन चिंता विचाराध्याय ॥ समाप्तोयं ग्रंथ उमाशिवोजयति भ्रातसत् संवत् १८६६ चैत्र शुक्ला १३ चन्द्रदिने लिखितमिदं पुस्तकं मिश्र मुरलिधर स्वयं पठनार्थम् श्री ॥
२६.७ × ११.१ सें० मी०	३५ (१–३५)	६	३७	पू०	सं०१७७८	इति श्री हरिभट्ट विरच्यते ताजिकसारे दिनप्रकरण समाप्त संवत् १७७८ ज्येष्ट मासे शुक्ल पक्षे १ प्रतपदाम्ये ताजिक सार ....
३४.४ × १२.८ सें० मी०	१६ (७, ६–२०)	६	६२	अपू०	प्राचीन	
२६ × १०.३ सें० मी०	८ (२,६,११, १५-१७,३२, ३४)	१०	३४	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३०८	४२७२	ताजिकसार	हरिहर भट्ट		दे० का०	दे०
३०९	७५६८	ताजिकसार			दे० का०	दे०
३१०	७६२६	ताजिकसार	हरिभट्ट		दे० का०	दे०
३११	१०५५/२	तिथि ज्ञानम्	काशीनाथ		दे० का०	दे०
३१२	५६००	तिथितत्व दर्शन (तिथि निर्णय)	शिवगोविंद पंडित		दे० का०	दे०
३१३	५१११	तिथिनिर्णय			दे० का०	दे०
३१४	२५३२/१७	तिथिनिर्णय			मि० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथपूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२४×१० सें० मी०	४ (१–४)	६	३७	अपू०	प्राचीन	
२०.५×९ सें० मी०	४६ (१–४६)	६	२५	अपू०	प्राचीन	इति श्रीताजक सारे मिश्रभावाध्याय ... .. (पत्र सख्या ४६)
१९.७×११.८ सें० मी०	२७ (१–२७)	१५	२६	पू०	प्राचीन सं०१८४१	इति श्री हरिभट्ट विरचित ताजिकसार सपूर्णम् स० १८४१ शाके १७०६ मिति आषाढ कृष्णामाया गुरु वासरे
२०.३×१०.८ सें० मी०	४ (१–४)	६	२५	अपू०	प्राचीन	
३०.७×१२.३ सें० मी०	११ (१–११)	९	३७	पू०	प्राचीन सं०१९१६	इति श्री मद्रामचद्र चरणारविंद मजिमकरद मधुपेन शिवगोविंद पडितेन विरचित तिथितत्व दर्शन नाम तिथि निर्णय समाप्त शुभमस्तु शुभमूयात् स० १९१६ के साल अश्विन वदि ..
२२×१० सें० मी०	४ (४–६,९)	८	२१	अपू०	प्राचीन	
१३.७×११.५ सें० मी०	२३	९	२४	पू०	प्राचीन सं०१९०२	सं०१९०२ के साल मिति चैत्रवदि ३०॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३१५	२३१	तिथिपत्र			दे० का०	दे०
३१६	२५३२ / १७	तिथि प्रकाश			दे० का०	दे०
३१७	७६४६	तिथिप्रकाश निर्णय	गगाधर		दे० का०	दे०
३१८	७३५०	तिथिराशि शुभाशुभ विचार			दे० का०	दे०
३१६	२४७	* त्रिविक्रमशतम्	त्रिविक्रमाचार्य		दे० का०	दे०
३२०	६६६४	त्रिशत् श्लोकी टीका	राम		दे० का०	दे०
३२१	७८१४	दर्पणिल	वराह मिहिर		दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठा का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसख्या और प्रति पक्ति मे अक्षरसख्या		क्या ग्रथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१६ × ९ ५ सें० मी०	५२	१६	२७	अपू०	प्राचीन (जीर्ण)	
१३·७ × ११ ५ सें० मी०	१०	१२	२३	पू०	प्राचीन	इति श्री तिथि प्रकाश समाप्त शुभमस्तु ॥
६ १ × ८ ९ सें० मी०	५ (१–५)	८	३२	पू०	प्राचीन स० १८७४	इति श्री द्विवेद गगाधरकृतौ तिथिप्रकाश निर्णय समाप्त शुभमस्तु ॥ स० १८७४ चैत सुदि ३ गुरौक पुस्तक लिखित × × ×
२२ ६ × १० ४ सें० मी०	५	९	२५	अपू०	प्राचीन	
२६ ८ × १० ७ सें० मी०	५ (१–५)	१२	३९	पू०	प्राचीन स१८३७	इति श्री त्रिविक्रमाचार्य विरचित त्रिविक्रमशत सपूर्ण ॥ स० १८३७ ॥ शाक ॥ १७०२ ॥
२६ १ × ११ ३ सें० मी०	१४ (१–१४)	८	४३	पू०	प्राचीन स० १९१७	इति मित विक्रम वर्षेण्या कृष्णक्ने मजरी निवद्धा क न वालुकाया वशे गोरक्ष पुस शिति सुरजनुपा रामेश कृत ॥ स० १९१७ माघे मास ॥
२४ ६ × १० ६ सें० मी०	१० (१-८-१०-११)	९	२७	अपू०	प्राचीन	इति दर्गागल समाप्त ॥ श्री ॥

(सं० पु० ७८)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३२२	४४११	दशाचक्र			दे० का०	दे०
३२३	६६५०	दशाचिंतामणि			दे० का०	दे०
३२४	७६८८	दशाचिंतामणि			दे० का०	दे०
३२५	४८३५	दशाफल			दे० का०	दे०
३२६	२५३२/१७	दिवामुहूर्त			दे० का०	दे०
३२७	२६२२	दैवज्ञचिंतामणि			दे० का०	दे०
३२८	४०१२	दैवज्ञ जीवन	श्रीलक्ष्मण त्रिपाठी		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रतिपृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	१०
२६ ७ × ११ ४ सें० मी०	५ (२–६)	६	४२	अपू०	प्राचीन	
२४ ३ × १० ४ सें० मी०	१३ (१–१३)	६	२८	पू०	प्राचीन	इति दशाचिंतामणि समाप्त ॥
२७ ३ × ११ ४ सें० मी०	१६ (१–१६)	७	३४	पू०	प्राचीन	
२३ ५ × ६ सें० मी०	१२ (१–१२)	७	३२	अपू०	प्राचीन	
१३ ७ × ११ ५ सें० मी०	१३½	६	२३	पू०	सं०१६२४	अथ शुभ सं० १६२४ के शाके १७८६ कार्तिक वदि १५ समाप्ति दिन लिपि तेद पुस्तक श्री पंडित गंगारामेपु
३२ × १२ ८ सें० मी०	६ (१–५, ७)	७	३४	अपू०	प्राचीन	
३७ × १५ १ सें० मी०	३३	१७	२८	अपू०	प्राचीन (जीर्ण)	इति श्री द्विज दिनकरात्मजत्रिपाठी श्री लक्ष्मण वृहत्सावतराय विरचितास्त्रिगुण संहिता ··· (पुष्पिका)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३२९	७५३३ / ३	दीपज्ञान			दे० का०	दे०
३३०	६२४२	द्वादशराशिपत्र			दे० का०	दे०
३३१	७५०५	द्वादशराशिफल प्रश्नावली			दे० का०	दे०
३३२	५३३२ / ८	द्विघटिका मुहूर्त			दे० का०	दे०
३३३	४०८५	द्विघटिका मुहूर्त			दे० का०	दे०
३३४	२५३२ / १७	द्विघटिका मुहूर्त			दे० का०	दे०
३३५	७३७६	धीकोट (यवनादिज्ञानाधिकार)	श्रीपति		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	१०	१०	१०
१७२×१०४ सें० मी०	२	८	१६	पू०	प्राचीन	इति दीपज्ञान ॥
२०५×११ सें० मी०	७ (१–७)	१३	३२	पू०	प्राचीन सं०१६१५	इति श्री राशी मण्डल द्वादश राशी फल ॥ समत १६१५ शाके ७७८० भादा शुक्ल त्रयोदशी ··
२१८×१२ सें० मी०	८ (१–)	६	२७	पू०	प्राचीन सं०१८५८	इति द्वादश रासिफल लिख्यते ॥ शुभमस्तु शिद्धिरस्तु संवत १८५८ फालगुन वदि ··
२१६×१५६ सें० मी०	३	१३	२३	पू०	प्राचीन	इति शिवशिवा विरचित दुघटीया मूहूर्त मपूर्ण ॥ श्री ॥
२३×७८ सें० मी०	१६ (१–१६)	४	३७	पू०	प्राचीन सं०१८५६	इति श्री ज्योति शास्त्रसारे पार्वती शिव संवादे शिव प्राक्त द्विघतिकाशमाप्त ॥ संवत १८५६ शाके १७२१ ·· · ॥
१३७×१५५ सें० मी०	१६ (१–१६)	१४	२८	पू०	सं०१६२४	इति श्री सिव कृतद्विघटिकामुहूर्त संपूर्णं शुभमस्तु ॥ संवत् १६२४······
२१८×११० सें० मी०	५	६	२४	अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३३६	२४८१	नक्षत्र कष्टावली			दे० का०	दे०
३३७	६८०८	नक्षत्र चूडामणि			दे० का०	दे०
३३८	७०१२	नक्षत्र विधान			दे० का०	दे०
३३९	१०४१	नक्षत्रायुर्दशाफलम्			दे० का०	दे०
३४०	५८६१	नरपतिजयचर्या	नरपति		दे० का०	दे०
३४१	२५८४	नरपतिजयचर्या	नरपति		दे० का०	दे०
३४२	६८७१	नरपतिजयचर्या	नरपति		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
१६.२×८.३ सें० मी०	४ (१–४)	१०	२६	पू०	प्राचीन	इति नक्षत्र चष्टावलि संपूर्णा ॥
२३.६×१०.३ सें० मी०	३२ (१–३२)	६	३३	पू०	प्राचीन	॥ इति श ॥
२२.८×६.६ सें० मी०	५ (१–५)	६	३६	पू०	प्राचीन	इति नक्षत्र विधान संपूर्ण ॥ × ×
२६.२×१०.८ सें० मी०	११ (१–११)	८	२८	पू०	प्राचीन सं० १८१२	इति श्री मभि श्रब्दग्यतिमजमा(ध) व रचितेनक्षत्रायुद्गशा श्रमविभागा-नयानफल समाप्तम ॥
२४.१×१०.२ सें० मी०	१३ (१–१३)	१२	४१	अपू०	प्राचीन	इति नरपति जयचर्यायां स्वरोदये षड्ङ्गे सप्ताध्याये शास्त्र सग्रहो नाम प्रथमाध्याय ॥ (पृ० ४)
३२.१×१२.२ स० मी०	६१ (१०–५६, ५६–८३, १३१–१४१)	१३	४७	अपू०	प्राचीन सं० १८७०	इति श्री नरपति कवि विरचितायां नरपति जयचर्या ग्रंथ सपूर्ण ॥ सं० १८७० ।
२७.६×१३.६ सें० मी०	२२७ (१–२२७)	१०	३३	पू०	प्राचीन	इति श्री कवि नरपति विरचितेयां यात्राप्रकरणनिमित्तशकुनानिगमाध्यानि · × × ×

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३४३	६६०१	नरपतिजयचर्या	नरपति		दे० का०	दे०
३४४	३७५०	नरपतिजयचर्या			दे० का०	दे०
३४५	७३४०	नरपतिजयचर्या-स्वरोदय	नरपति		दे० का०	दे०
३४६	१६२१	नरपतिजयचर्या-स्वरोदय			दे० का०	दे०
३४७	५०५४/१५	नवार तिथिनक्षत्रयोग			दे० का०	दे०
३४८	६६२१	नष्टजन्म पटल			दे० का०	दे०
३४९	६१८	नष्टजन्माध्याय			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२६.६ × ११.२ सें० मी०	६४	६	३५	अपू०	प्राचीन	इति नर प० रज्जुवद्धे चक्र ॥
३३ × १२.५ सें० मी०	३० (५-३०,१२७, १२६,१३१, १३२)	१३	४४	अपू०	प्राचीन	
३१.७ × १३.३ सें० मी०	६५ (१-६५)	१२	५२	पू०	प्राचीन सं०१८६५	इति श्री नरपति जयचर्य्याया स्वरोदये तात्कालिक पचाग समाप्तम् ॥······ शाके १७३० । सं० १८६५ ·· ···
२५ × १२ सें० मी०	२३	१२	४२	अपू०	प्राचीन	
१६ × ७.८ सें० मी०	८	६	१८	अपू०	प्राचीन	
२०.७ × ६.३ सें० मी०	२ (१-२)	१०	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री रुद्र संहितायां हर पार्वती सवादेनष्टजन्म पटलाध्याय समाप्त ॥ श्री शिवार्पण मस्तु ॥
२३.६ × १०.५ सें० मी०	१० (१-१०)	१४	३८	अपू०	प्राचीन	
(म०मू०७६)						

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३५०	६६१७	नष्टजातक			दे० का०	दे०
३५१	७७६८	नष्टजातक			दे० का०	दे०
३५२	२८०३	नष्टजातक			दे० का०	दे०
३५३	६६२६	नष्टजातक प्रश्न			मि० का०	दे०
३५४	२२७६	नारचंद्रटिप्पन	श्रीसागरचंद्र सूरि		दे० का०	दे०
३५५	२६७६/२	नारायण प्रश्न			दे० का०	दे०
३५६	६६१०	निषेककालशुद्धि			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७·३ × ११·२ सें० मी०	३ (१–३)	६	३५	पू०	प्राचीन	इति प्रश्न मार्गे नष्ट प्रकाराध्यायस्समाप्तिमगमत् ॥ ··· ···
२०·३ × १६ सें० मी०	३ (१–३)	१७	२५	अपू०	प्राचीन	
२७ ३ × ११·६ सें० मी०	२ (१–२)	८	२६	पू०	प्राचीन	इति नष्टजातकाध्याय॰ ॥
१६ ८ × ६·५ सें० मी०	४	११	३५	पू०	प्राचीन	इति प्रश्नमार्गेनष्टप्रकाराध्याय ॥
२४ १ × १२ ५ सें० मी०	३२ (१–३२)	६	२६	पू०	प्राचीन स०१८०७	इति नारचन्द्रटिप्पनके श्रीसागरचन्द्र सूरि कृते प्रथम प्रकीर्णक संवत् १८०७ वर्षे श्रावणवदि तृतीया-३ बुधवासरे लिखित व्यास जय शंकरेण ॥
१७ ८ × १२ ५ सें० मी०	१५½	१२	२४	अपू०	प्राचीन	
२७ ६ × ११·६ सें० मी०	६	१३	४४	पू०	प्राचीन स०१६२६	स० १६२६ आषाढ व १३ बुधे विनायक वेतालस्याय लेखः ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३५७	१५०५	नीलकंठी	राम दैवज्ञ		दे० का०	दे०
३५८	२५३२/१७	नीलकंठी	नीलकंठ दैवज्ञ		दे० का०	दे०
३५९	६६६३	नीलकंठी (उत्तरार्द्ध)	नीलकंठ	विश्वनाथ दैवज्ञ	दे० का०	दे०
३६०	२६१७	नीलकंठी (उत्तरार्द्ध)	नीलकंठ	विश्वनाथ दैवज्ञ	दे० का०	दे०
३६१	६८७७	नीलकंठी (टीकासहित)	नीलकंठ		दे० का०	दे०
३६२	७३३४	नीलकंठी (सज्ञातक)	नीलकंठ		दे० का०	दे०
३६३	७४७	नृयान			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसख्या और प्रतिपंक्ति मे अक्षरसख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२१ ६ × १५·३ सें० मी०	४० (१-४०)	१२	३७	पू०	प्राचीन स०१६१७	इति श्री दैवज्ञानतशुत दैवज्ञ राम विरचित वर्षफल ···मासफले च दिनफले नीलकठ नाम ग्रथ सपूर्ण ॥ समाप्त शुभमगल दधात ॥ सवत् १६१७। मिति असुन वदि ॥३॥ शुके···
१३ ७ × १५ ५ सें० मी०	१२	१५	२६	पू०	प्राचीन	इति नीलकठा तत्रे प्रश्न समाप्त ॥
३१ × ११ ६ सें० मी०	२१	६	४४	अपू०	प्राचीन जीर्ण	इति श्री दिवाकर दैवज्ञात्मविजा विश्वनाथ दैवज्ञ विरचिते नीलकठज्योतिर्वित्कृत सज्ञा तत्रे सहमाध्यायस्य व्याख्योदाहृति समाप्ति सपूर्ण ॥
२३ ७ × १२ ३ सें० मी०	३१ (२२-५२)	१०	३८	अपू०	स०१८६६	इति श्री दिवाकर दैवज्ञात्मविजा विश्वनाथ दैवज्ञ विरचिते नीलकठज्योतिर्विन्त कृत सज्ञा तत्रे सहमाध्यायस्य व्याख्योदाहृति समाप्ति सपूर्ण ॥सवत् १८६६ शाके १७३४॥
२४ ३ × १० २ सें० मी०	२९ (१-२९)	१०	३६	अपू०	प्राचीन	
२७ १ × ११·४ सें० मी०	१२ (१-१२)	११	३८	पू०	प्राचीन सं०१६१२	इति श्री नीलकठ कृत सज्ञाविवेके सहमानिव्यदधात् ॥ प्रथमतत्र समाप्त । × × × ॥
२५ १ × १० ६ सें० मी०	६ (१-६)	११	२६	पू०	प्राचीन स०१६०७	इति श्री नुयान पुस्तक समाप्त श्रावन मासे कृष्णपक्षे कृष्ण चतुर्दस्यबुधवासरे सवत् १६०७ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसख्या या सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३६४	४६८७	पचपक्षी			दे० का०	दे०
३६५	५०९६	पचपक्षी			दे० का०	दे०
३६६	४०३२	पचपक्षी			मि० का०	दे०
३६७	३००७,	पचपक्षी प्रश्न			दे० का०	दे०
३६८	६७३६	पचपक्षी प्रश्न			दे० का०	दे०
३६९	५३३२/८	पचम भाव विचार			दे० का०	दे०
३७०	२८६४	पचशरा	परमेश्वर उपाध्याय		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	११
२८.५×१२.५ सें० मी०	६ (१–६)	११	४४	पू०	सं०१६०६	इति श्री शिवोक्त पचपक्षि समाप्तम् । शुभ सम्वत १६०६ ॥ शाके १७७४ ··· ··· ···
२०×७.६ सें० मी०	२५ (१–६,१–७,१–६)	६	३३	अपू०	प्राचीन	अथ पचपक्षिणा सख्या विधीयते ॥ (प्रारम्भ) ··· ··· ···
२०×७.७ सें० मी०	१३ (१–१३)	६	३६	पू०	स०१६२५	इति पचपक्षी समाप्ता ॥ सवत १६२५ मार्गशीर्षवद्य शुक्रवार हर्डीकरोपनाक राम चद्रेण लिखित स्वा० ॥
२४×१५ सें० मी०	२	१०	२८	पू०	प्राचीन	इति पचपक्षी प्रश्न सपूर्णं ॥
३३.२×१०.२ सें० मी०	३ (१–३)	१२	५३	पू०	प्राचीन	इति रत्नाकर खडे स्कन्दागस्त्य सवादे पचपक्षी प्रश्न॰ समाप्त॰ ॥ लिखितमिद विनायक वेतालेन ॥
२१.६×१४.६ सें० मी०	२	११	२८	पू०	प्राचीन	अथ पचम भाव विचार + + (प्रारभ)
२४.५×१३.५ सें० मी०	२ (१–२)	६	२३	पू०	प्राचीन	इति श्री सना कुला वतशपरमसुरयोपाध्याय कृते पचशरा ग्रथे आयुर्दायो द्वितीयोध्याय समाप्त ० जयशिव ०: जयराम जानकी ० जयगौरी शकर

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३७१	७३७८	पचस्वरनिर्णय (सुबोधिनी टीका)	गंगाप्रसाददैवज्ञ	प्रजापतिदास	दे० का०	दे०
३७२	२६६७	पचस्वरनिर्णय	प्रजापतिदास		दे० का०	दे०
३७३	४७१४	पचस्वरा	प्रजापतिदास		दे० का०	दे०
३७४	६८५३	पचस्वरा			दे० का०	दे०
३७५	६६२०	पचस्वरा	प्रजापतिदास		दे० का०	दे०
३७६	६६१२	पचस्वराजातक (सटीक)	प्रजापतिदास		दे० का०	•
३७७	६८१७	पचस्वरानिर्णय	प्रजापतिदास		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या	और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या	क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२९·८ × ११·२ सें० मी०	२६ (१–२६)	९	३५	पू०	प्राचीन	इति श्री मद्दैवज्ञनियोपनामक अक्षर मणिसुत गंगाप्रसा विरचिताया पचस्वर निर्णयेसप्तमोऽध्यायः ॥७॥ पौषेमासे कृष्णपक्षे × × × × × ॥
२७ × ११·१ सें० मी०	५ (१–५)	१०	३६	पू०	प्राचीन	
३४·४ × १७·५ सें० मी०	७ (१–७)	१५	५२	पू०	प्राचीन	इति प्रजापतिदास कृत पंचस्वरा समाप्तं ॥
२४·२ × १०·७ सें० मी०	१० (१–१०)	६	३०	पू०	प्राचीन	
२७·३ × ११·५ सें० मी०	१३ (१–१३)	९	४३	पू०	प्राचीन	इति प्रजापतिदास विरचिते पंच स्वरायां सप्तमोध्याय ॥७॥
२६·२ × ११·४ सें० मी०	१७ (१–१७)	११	३४	पू०	प्राचीन	इति पच स्वराजातके वालारिष्टम्॥१॥ (पत्र-सख्या ५) इति श्री गौड त्र(प)दाचार्य वि० पचस्वर टिपण समाप्तम् ॥ (पत्र-सख्या १६)
३२·५ × ९·८ सें० मी०	१० (१–१०)	११	५५	पू०	स०१९४९	इति प्रजापतिदास कृतः पंचस्वरा निर्णय. समाप्तम् ॥ सम्वत् १९४९ ॥ शाके १८१४ तिथिम् पंचदशमि गुरु वासरानिताया ॥

(सं० मू० ८०)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा मग्रहविशेप की सख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३७८	४०३१	पंचांग वर्णन			मि० का०	दे०
३७९	२६२७	पक्षिपंचक			दे० का०	दे०
३८०	७३९६	पद्मकोश			दे० का०	दे०
३८१	७४६	पद्मकोश			दे० का०	दे०
३८२	४२५६	पद्मकोश			दे० का०	दे०
३८३	१८१२	पद्मकोश			दे० का०	दे०
३८४	१०६७	पद्मकोश	गोवर्द्धन ज्योतिश		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२०×७७ सें० मी०	८ (१–८)	७	३६	पू०	प्राचीन	इति पारिजात रत्नाकरे पचागवर्णनोनाम प्रथमाध्याय ॥
२७३×१०८ सें० मी०	५ (१–५)	८	४३	अपू०	प्राचीन	
१८२×१०६ सें० मी०	२६	७	१६	अपू०	प्राचीन	
२६·१×११ सें० मी०	१६ (१–१६)	७	२६	पू०	प्राचीन सं०१६०६	इति पद्मकाश भाव फलम् समाप्तम् ॥ स०१६०६·· ··· स्वस्ती श्री रघुवर त्रिपाठी तस्य आत्मज दाताराम त्रिपाठी तस्य पुन्य भार्जीया रा लाचन रामेन ······मडपमेधे ॥
२३×१० सें० मी०	१२ (१–१२)	८	३५	पू०	प्राचीन सं०१६११	इति श्री ताजकीय पदमकोश व्यग्रय समाप्तोयम् वैशाख शुक्ला ४ चद्रवासरे स० १६११ ॥
२५१×१०६ सें० मी०	६ (१–६)	६	३१	अपू०	प्राचीन	
२७६×१०७ सें० मी०	११	८	३४	पू०	प्राचीन सं०१८८६	इति पदमकोस स० १८८६ महासोत्मासे चैत्रशुक्ला ७ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३८५	३५८	पदमकोश			दे० का०	दे०
३८६	१६३८	पदमकोश जातक			दे० का०	दे०
३८७	५६६	पदमकोश वर्षफल			दे० का०	दे०
३८८	४६०६	पद्यपचाशिका			दे० का०	दे०
३८९	१५१४	पद्यपचाशिका			दे० का०	दे०
३९०	२८२३	पद्यपचाशिका	श्रीपति		दे० का०	दे०
३९१	३६४२	पद्यपचाशिका			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठा का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ मे पक्तिसख्या	प्रार प्रतिपक्ति मे अक्षरसख्या	क्या ग्रथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१७.५×१३.२ सें० मी०	१२	२०	२०	पू०	प्राचीन स०१९ ४	इति राहुफल इति ताजकीय पदम व शाव्यग्रथ समाप्तोयम मीग शिर कृष्णा - बुधवासर सवत १९३४ शुभम् लिखित बनवारि लाल स्वय पठनाथ ।
२०.८×१०.८ स० मी०	२५	८	२६	अपू०	प्राचीन स०१९५१	
२४.६×१०.३ सें० मी०	६ (१-६)	८	४१	पू०	प्राचीन स०१९३५	इति श्री पदमकोश वर्षफल नवग्रहादि फल सपूर्णम ॥ सवत् १९३५ वैशाख कृष्ण प्रतिपदा १ वार बृहस्पतवार मधाद्यावधलग्नके १ ॥
२३.५×११ सें० मी०	१० (१-१०)	८	३४	पू०	प्राचीन स०१९०८	काश स्या गौड विप्र हररस कवि व शवक सज्जनाना कुर्वे सिद्धात सार मुन मनुजनत पद्य पचासकीय २ पाद्वि पचाकास पुन समापति ॥ सवतु १९०८ ॥ (पत्र सख्या-१)
२३.८×१०.७ सें० मी०	७	६	३२	अपू०	प्राचीन	
२४×१०.६ सें० मी०	१४ (१-१४)	६	२८	पू०	प्राचीन सं०१८६६	इति श्री कविद्रक विभूषण पडित श्रीपति विरचितायां पद्यपचासिकीय ॥ समाप्त सुभमस्तु ॥ सवत १८६६ ॥ साके १७३१ श्रीरामायनम । श्रीराम चन्द्र नम श्रीगणेशायनम ॥
२५.५×१३ सें० मी०	१० (१-१०)	६	२५	पू०	प्राचीन	इति श्री पदम पचाशिका समाप्ता ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३६२	३६८९	पद्यपचाशिका	श्री पति		दे० का०	दे०
३६३	६८०७	पद्यपचाशिका			दे० का०	दे०
३६४	२१३०	पद्यप्रदीप जातक	श्रीपति	हीरालाल	दे० का०	दे०
३६५	६८६	पल्लिशरट विचार			दे० का०	दे०
३६६	२८११	पल्लीपतन			दे० का०	दे०
३६७	१४६८	पल्लीपतन			दे० का०	दे०
३६८	२५३२/१७	पल्लीपतन			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्ति संख्या और प्रति पंक्ति में अक्षर संख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१०	१०
२३×१२ सें० मी०	४	१७	३६	अपू०	सं०१८७७	इति श्री कवीन्द्रकुलमूपरणपंडित श्रीपति रचितायां पद्यपंचाशवाय समाप्तम् ॥ संवत् १८७७ भाद्रपद कृष्णपक्षे ५ रवि लिष्यत यस्य छोटेलाल ऽस्थित मिरपुरे गंगानिकटे विध्यक्षेत्रे
२४.१×१०.५ सें० मी०	१० (१–१०)	७	३१	अपू०	प्राचीन	
३२.६×१२.३ सें० मी०	२० (१–२०)	१०	४२	पू०	प्राचीन	इति श्री कवींद्र कुलकलशपंडित श्रीपति विरचिते पद्यप्रदीपाख्यजातकं समाप्तम्
२२.६×११.७ सें० मी०	३ (१–३)	१०	२६	पू०	प्राचीन सं०१९०८	इति श्री पलि पत शपट प्ररोहण विचार शुभ सं०१९०८ शाके १७७३ अश्विनमासे शुक्ल पक्षे नवम्यां भृगु वासेर लिखतरामदिहनि ब्रेण अपमार्थम् पुस्तकि मिदम् ।
२७.१×११.१ सें० मी०	२ (१–२)	६	४१	पू०	प्राचीन	इति परिक्षा पल्ली पतन पराशन शान्ति विधि प्रहरमण तिथिवार नक्षत्र लग्न मृत्यु ... ... ॥
१६.७×६.३ सें० मी०	३ (२–३–४)	११	२६	अपू०	प्राचीन सं०१८३७	इति पल्ली पतन समाप्तम् ॥ मिश्र नौबत राय पठनार्थं सं० १८३७ मार्गशिर शु०२ लिखतं रूपजी लिखवर्रा॥
११.७×११.२ सें० मी०	१०	११	२४	पू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
३९९	७२५१ / २	पल्लीपतनविचार			दे० का०	दे०
४००	६६७३	पल्लीपतनविचार (दुःस्वप्नदर्शन)			दे० का०	दे०
४०१	१७३२	पल्लीशरट विधान	कमलाकरभट्ट		दे० का०	दे०
४०२	१८६० / ४ (घ)	पल्लीशरटविधानम्			दे० का०	दे०
४०३	६६५१	पल्लीसरटयोर्विधान	गर्ग उपाध्याय		दे० का०	दे०
४०४	६६१६	पवनविजय			दे० का०	दे०
४०५	६२०४	पवनविजयस्वरोदय			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
१७ ६ × ८ १ सें० मी०	६ (१–६)	७	१९	पू०	प्राचीन स० १९३८	इति श्री पल्लीविचारोध्याय समाप्तम् ॥ स० १९३८॥ फाल्गुण मासेसित पक्षे पष्टम्या गुरुवासरे ॥ × × × ×
२० ५ × १५ १ सें० मी०	१ पत्रा	२६	२७	पू०	प्राचीन	इति श्रीसूतवचनात् पल्लीपतनविचार समाप्त ॥
२५ ८ × १० ७ सें० मी०	१३ (१–१३)	१०	३७	पू०	प्राचीन	इति श्रीब्रम्हवैवर्ते महापुराणेनारायण-नारद सवादे श्रीकृष्णखडेभगवन्नदसवादे दु स्वप्नदर्शनकथन नाम द्वाशीतितमो-ध्याय ॥ शुभमस्तु ॥
१२ ३ × ८ ८ सें० मी०	६ (१–६)	८	१३	अपू०		इति पल्ली शरट विधान समाप्तम् शुभमस्तु ॥
२१ ७ × १० १ सें० मी०	२ (१–२)	११	४८	पू०	प्राचीन	इति गर्गोपाध्याय विरचित पल्ली सरट्यो विधान समाप्त ॥
१४ ३ × ८ २ सें० मी०	७ (१–७)	११	२२	पू०	प्राचीन स० १७७५	इति श्री पवन विजय नाम प्रथमसमाप्त शुभमूयात् ॥ स० १७७५ कार्तिक शुक्ला सप्तमी ७ रवौ लिखत मनसा रामगौड ब्राह्मन जसेमर नगरमध्ये शुभ भूयात् ॥
२२ १ × १८ ४ सें० मी०	११ (१–११)	६	२४	पू०	प्राचीन स० १८९९	इति ॐ तत्सदिति शिव उमासवादो-क्तो नव प्रकरणान्वित पवन विजय नाम स्वरोदय समाप्तम् ॥ स० १८९९ माघ मास कृष्णपक्षे ‥ ‥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लि
१	२	३	४	५	६	७
४०६	६३०४	पवनविजय स्वरोदय			दे० का०	दे०
४०७	६६५६	पातसाधन विवृति	विश्वनाथ		दे० का०	दे०
४०८	३०१८	पाराशर जातक			दे० का०	दे०
४०९	७०४७	पाराशर होरा सुश्लोकी-शतक			दे० का०	दे०
४१०	५६६३	पाराशरीय जातक (सटीक)			दे० का०	दे०
४११	५६७२	पाराशरीय जातक			दे० का०	दे०
४१२	३१८७	पाराशरीय जातक (सटीक)			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२२ २ × १३ ६ सें० मी०	२४ (१–२४)	६	१८	पू०	प्राचीन सं०१८६६	ॐ तत्सदिति उमामाहेश्वर संवादे नव प्रकरणान्वित पवनविजय नाम स्वरोदय समाप्तम् संपूर्णं संवत् १८६६ मासाना मासे माघ शुक्ला ५ शनौ लिखित .. ..
२६ ६ × ११ ५ सें० मी०	८ (१-६, ६-७)	१५	४४	पू०	प्राचीन	इति श्री दिवाकर दैवज्ञात्मज विश्वनाथ विरचिता पातसाधन विवृति समाप्ता ॥
२७ ३ × ११ ५ सें० मी	१५ (१–१५)	७	३१	पू०	प्राचीन सं०१९०७	इति पाराशरि जातक सं० १९०७ शाके १७७२ ज्येष्ठ शुक्ल पक्षे ३ गुरुवासरे ...
२७ ८ × १० ६ सें० मी०	६ (१–३, ५-६, ८)	७	३०	अपू०	प्राचीन	
३१ ३ × १४ ८ सें० मी०	६ (२–७)	१४	४५	अपू०	प्राचीन सं०१८११	
२५ ६ × १० ४ सें० मी०	२ (१–२)	६	३६	अपू०	प्राचीन सं०१९००	इति पाराशरीये जातके उडुदायप्रदीपाख्येदशातदशाध्याय समाप्त ॥ ४ ॥ समाप्तोय ग्रंथ ॥ श्री रस्तु सं० १९०० शाके १७६५ × × ॥
२५ ६ × १२ ५ सें० मी०	६ (१–६)	११	४३	पू०	प्राचीन	इति पाराशरी जातकस्य टीका या संपूर्णम् ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४१३	६६१८	पाराशरी होरा			दे० का०	दे०
४१४	६२८५	पाशकेवली			दे० का०	दे०
४१५	३७५८	पाशकेवली	गौतम		दे० का०	दे०
४१६	२८६७	पाशकेवली	गर्गाचार्य		दे० का०	दे०
४१७	७०८५	पाशकेवली			दे० का०	दे०
४१८	६६७६	पीयूषधारा (मुहूर्तचिंतामणिटीका, गोचर प्रकरण)	गोविंद दैवज्ञ		दे० का०	दे०
४१९	६६७९	पीयूषधारा (मुहूर्त चिंतामणि टीका, तिथि, वार, नक्षत्रप्रकरण)	गोविंद दैवज्ञ		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७'५×११'५ सें० मी०	९ (१–९)	९	३०	पू०	प्राचीन	इति पराशरीये केरलमारे कारक प्रकरण ॥ ' ···
२६'२×१२'८ सें० मी०	७	१४	३३	अपू०	प्राचीन सं०१७६२	इति पाशकेवली समाप्ता ॥ मुहूर्त शुभ वेलाया पाशन वार म छुभ × × × × × सवत् १७६२ पौष शुक्ल प्रतिपाद तोर्थराजे लिखिता ॥
१६×१२ सें० मी०	१० (१–७, ७–९)	६	१६	पू०	प्राचीन सं०१६१७	इति श्री गौत्तम कृता पाशाकेवली समाप्ता ॥ सवत् १६१७ मिश्र सेठ मल्ल जी तस्यात्मज छजुरामेण लिपिकृता पाशाकेवली विष्णो प्रसादा-त्शुभमस्तु श्रीकृष्णायनम ॥
२३'८×११ सें० मी०	५ (४–६, ८–९)	१०	२८	अपू०	प्राचीन सं०१८३६	इति गर्गाचार्य विरचित पाशाकेवली समाप्त ॥ शुभमस्तु समाप्त ॥ सवत् १८३६ फाल्गुणे मासि शुक्ले प्रति-पदाया भौमवासरे शुभ ॥
१४'६×१०'३ सें० मी०	१६ (१–१६)	११	१८	पू०	प्राचीन	पासाकेवली समापिता ॥ श्री शुभं भुया ॥
२५'८×१२'२ सें० मी०	४४ (१–४४)	७	३३	पू०	सं०१८८८	इति श्री दैवज्ञानतसुत दैवज्ञ राम विर-चिते मुहूर्त चिन्तामणौ गोचर प्रकरण ··· ···गोविंदेन विनिर्मिते नवनिधौ पीयूषधाराभिधे व्याख्याते खलु गोचर प्रकरणे सपूर्णता ' ··· ···· सवत् १८८८········ ॥
२५'६×१२'३ सें० मी०	१६२ (१–१६०) पत्र २६ एव ५३ दो,दो	७	३२	पू०	सं०१८८८	इति श्री विद्वद्दैवज्ञ मुकुटालकारनीलकठ ज्योतिर्वित्पुत्रगोविदज्योतिर्विद्विरचिताया मुहूर्त चिंतामणि टीकाया पीयूषधारा-भिधाया सविचार तिथिवारनक्षत्र प्रक-रण समाप्ति सं० १८८८ ।

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४२०	६६७५	पीयुषधारा (मुहूर्तचिंता मणिटीका राज्याभिषेक प्रकरण)	गोविंद दैवज्ञ		दे० का०	दे०
४२१	६६७८	पीयूषधारा (मुहूर्तचिंता मणि टीका, विवाह प्रकरण)	गोविंद दैवज्ञ		दे० का०	दे०
४२२	६६६६	पीयूषधारा (मुहूर्तचिंतामणि टीका, शुभाशुभप्रकरण)	गोविंद दैवज्ञ		दे० का०	दे०
४२३	६६७७	पीयूषधारा (मुहूर्तचिंतामणि टीका, सक्रांतिप्रकरण)	गोविंद दैवज्ञ		दे० का०	दे०
४२४	६६६७	पीयूषधारा (मुहूर्तचिंतामणि टीका, संस्कारप्रकरण)	गोविंद दैवज्ञ		दे० का०	दे०
४२५	६८७२	पैतामहसिद्धांत			दे० का०	दे०
४२६	२७३६	प्रपंच निर्णय			दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२५·७ × १२·१ सें० मी०	२५ (१–२५)	७	३५	पू०	स०१८८८	···मुकुटालंकार नीलकंठ ज्योतिर्वित्पुत्र-गोविंद ज्योतिर्विद्विरचितायां मुहूर्त चिंतामणि टीकायां पीयूषधाराभिधायां राजाभिषेक प्रकरण समाप्तिमगमत्··· स० १८८८ ··· ··· ··· ॥
२६ × १२·१ सें० मी०	१७६ (१–१७६)	७	३६	पू०	स०१८८८	इति श्री विद्वद्दैवज्ञ मुकुटालंकारनीलकंठ ज्योतिर्वित्पुत्रगोविंद ज्योतिर्विद्विरचितायां मुहूर्त्त चिंतामणि टीकायां पीयूषधाराभिधायां विवाह प्रकरण समाप्तिमगात्॥ स० १८८८ ॥
२५·८ × १२·२ सें० मी०	१०० (१७-११६)	७	३०	अपू०	स०१८८८	इति श्री विद्वद्दैवज्ञमुकुटालंकार नीलकंठ ज्योतिर्वित्पुत्र गोविंदज्योतिर्विद्विरचितायां मुहूर्त्तचिंतामणिटीकायां पीयूषधाराभिधायां शुभाशुभ प्रकरणं समाप्तं गमात ॥ स० १८८८ ॥
२६ × १२·२ सें० मी०	४२ (१–४२)	७	३३	पू०	प्राचीन	इति श्रीदैवज्ञ मुकुटालंकार नीलकंठ ज्योतिर्वित्पुत्र गोविंद ज्योतिर्विरचितायां मुहूर्त चिंतामणि टीकायां पीयूषधाराभिधायां संक्रांति प्रकरण समाप्ति।
२५·७ × १२·१ सें० मी०	१३६ (१–१३६)	७	३३	पू०	स०१८८८	इति श्री विद्वद्दैवज्ञ मुकुटालंकार नीलकंठ ज्योतिर्वित्पुत्रगोविंद ज्योतिर्विद्विरचितायां मुहूर्त्त चिंतामणौ टीकायां पीयूषधाराभिधायां सपरिकर संस्कारण समाप्ति मगमत् सं० १८८८ आश्विन ६।
२७·८ × १३·६ सें० मी०	१२ (१–१२)	११	४०	पू०	प्राचीन सं०१८८७	इति श्री विष्णुधर्मोत्तर पैतामह सिद्धांत समाप्त शाके[illegible] १५६३ × × संवत् १८८७ फाल्गुन कृष्ण १० चंद्रवासरे समाप्तं इद पुस्तक पठन् जी श्री महाराज जी की निगाह दये राम सार पन्डित सवाई राय श्री निवास जी री जयपुरी मांये + +
२७ × ११·३ सें० मी०	१४	१०	३७	पू०	सं०१९१०	इति प्रथम निर्णय, शुभ भूयात् संवत् १९१० ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४२७	१६६	प्रश्न ग्रंथ			दे० का०	दे०
४२८	३००८	प्रश्न ग्रंथ (हिंदी टीका)			दे० का०	दे०
४२९	४२१९	प्रश्नग्रंथ			दे० का०	दे०
४३०	४३४२	प्रश्नचंडेश्वर			दे० का०	दे०
४३१	२५३२/१७	प्रश्नचिंतामणि			दे० का०	दे०
४३२	५८२८	प्रश्नज्ञान			दे० का०	दे०
४३३	१०५५/३	प्रश्न ज्ञानम्	काशीनाथ		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२०.२×६.५ सें० मी०	५ (३–७)	७	२५	अपू०	प्राचीन	
१५.१×६ सें० मी०	४ (१–४)	८	१८	अपू०	प्राचीन	
२१.६×१०.६ सें० मी०	५ (१–५)	१२	२८	पू०	प्राचीन	अथ प्रश्नग्रंथ लिख्यते (प्रारंभ) शुभमस्तु सम्पूर्णम् । ... ... (अंत)
३०.५×१४ सें० मी०	१८ (१–१८)	१६	५४	अपू०	सं० १८६४	इति श्री चक्रेश्वर ब्रह्मविद्यायांगमागमीध्यायो एकादश × × उमाशंकराय नम सम्वत १८६४ ... पृ० (१८)
१३.७×११.५ सें० मी०	२½	१८	३२	पू०	प्राचीन	इति प्रश्नचिंतामनि समाप्त ॥
२४.२×१०.३ सें० मी०	२ (३–४)	६	३१	अपू०	प्राचीन	
२०.३×१०.८ सें० मी०	७ (१–७)	६	२६	अपू०	प्राचीन	

(सं० सू० ८२)

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४३४	४४७६	प्रश्नतत्व	नीलकंठ		दे० का०	दे०
४३५	६८४४	प्रश्नदीप			दे० का०	दे०
४३६	१७५३	प्रश्नदीपक	काशीनाथ		दे० का०	दे०
४३७	३६२०	प्रश्नपारिजात			दे० का०	दे०
४३८	३००० / ३	प्रश्नप्रकरण			दे० का०	दे०
४३९	१८३	*प्रश्नप्रकाश			दे० का०	दे०
४४०	४०८०	प्रश्नप्रदीप	काशीनाथ		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३०.३×१५.५ सें० मी०	१८ (२-३, ७-२२)	१५	४७	अपू०	प्राचीन सं०१९०४	इति श्री नीलकंठ विरचित ज्योतिषि कौमुद्या प्रश्नतंत्र प्रकरण समाप्ताय ... सं० १९०४ शाके १७६९ चैत्र कृष्णाशंरादश्यां भृगुदिने ..
२१.५×१०.१ सें० मी०	१	११	४२	अपू०	प्राचीन	
२७×१०.२ सें० मी०	१३ (१–१३)	६	३७	पू०	प्राचीन सं०१८७०	इति श्री काशीनाथ कृतो प्रश्नदीपक समाप्त ॥ अथ शुभ सवतसरे श्री नृपति विक्रमादित्यराजे संवत् १८७० वर्षे माहामागलमास पौषमास शुक्र पछे शुभतिथौ दशमाय(दशम्या) शनिश्चर वारे मिश्र तनसुख स्वात्म पठनाय ॥ शुभ भवतु ॥
२३.८×११.२ सें० मी०	२ (१–२)	१०	३५	अपू०	प्राचीन	
१७.२×११.८ सें० मी०	१६३	१६	२४	अपू०	प्राचीन	
२१×८.६ सें० मी०	१२	=	२६	पू०	प्राचीन	इति श्री ज्योतिष शास्त्र सारे प्रश्न शास्त्र प्रश्न प्रकरणम समाप्त ॥
२१.२×८.७ सें० मी०	१३ (१, ३–१४)	६	२८	पू०	प्राचीन सं०१७६४	इति काशीनाथ विरचित प्रश्न प्रदीप समाप्त शुभमस्तु ग्रंथ ग्रन्थ ॥ संवत् १७६४ शाके १६२९ के कार्तिक सुदि २ भौम वार लिखित त्रिपाठी प्राणनाथ स्वात्मार्थ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की सख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४४१	७३६४	प्रश्नप्रदीप			दे० का०	दे०
४४२	७४६४	प्रश्नप्रदीप			दे० का०	दे०
४४३	३३११	प्रश्नप्रदीप	काशीनाथ		दे० का०	दे०
४४४	२८४६	प्रश्नप्रदीप	काशीनाथ		दे० का०	दे०
४४५	११३२	प्रश्नप्रदीप जातक (सटीक)	प० श्रीपति	हीरालाल	दे० का०	दे०
४४६	१०७६	प्रश्नप्रदीपिका	काशीनाथ भट्ट		दे० का०	दे०
४४७	५४३	*प्रश्नभैरव	गंगाधर दैवज्ञ		दे० का०	

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ मे पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति मे अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
११×७'४ सें० मी०	१२	१०	१८	अपू०	प्राचीन	
२४२×११२ सें० मी०	८ (३३–३७, ३९–४१)	६	३०	अपू०	प्राचीन	
२२५×१२७ सें० मी०	८ (१–८)	१६	३४	पू०	प्राचीन सं०१८४५	इति काशीनाथ कृतो प्रश्नप्रदीपक समाप्त शुभमस्तु मंगल ददातु संवत् १८४५ पौषशुक्ल ८ ॥
२३३×१०५ सें० मी०	१७	७	२८	पू०	सं०१९१८	इति श्री काशीनाथ विरचिते प्रश्न-प्रदीपोयं समाप्त ॥ सं० १९१८ ॥
३३३×१२८ सें० मी०	२०	६	४६	पू०	प्राचीन	इति श्री कवीन्द्रकुलकमल पंडित श्रीपति विरचिते प्रश्न प्रदीपाख्य जातक समाप्तम् ।
२०५×१० सें० मी०	१६	८	३२	पू०	सं०१९१४	इति श्री सर्व विद्या विशारद काशी-नाथ कृतो प्रश्न प्रदीपिक समाप्त ॥ संवत १९१४ शाके १७७९ वैशाख कृष्ण चतुर्दश्यां १४ बृहस्पत वासरे । शुभमस्तु श्री राम लिखितं मिश्र देवी-सहाय ॥ श्री रस्तु ॥ शुभ मस्तु ॥
२४६×१२६ सें० मी०	२१	११	३८	अपू०	सं०१८२०	इति श्री भैरव दैवज्ञात्मज गंगाधर दैवज्ञ विरचित प्रश्नभैरव समाप्त सं० १८२० ज्येष्ठ १४ पूर्णिमा भृगु समाप्तम् लिखितं भैरव राम आत्म-पठनार्थ ॥ श्रीमस्तु ॥

क्रमाक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा सग्रहविशेष की सख्या	ग्रथनाम	ग्रथकार	टीकाकार	ग्रथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४४८	५०१४	प्रश्नमनोरमा	गर्गाचार्य		दे० का०	दे०
४४९	१४२१	प्रश्नमनोरमा	गर्गाचार्य		दे० का०	दे०
४५०	११२२	प्रश्नमनोरमा	गर्गाचार्य		दे० का०	दे०
४५१	६६१८	प्रश्नमनोरमा	गर्गाचार्य		दे० का०	दे०
४५२	७३०७	प्रश्नमहोदधि (सटीक)			दे० का०	दे०
४५३	६६४७	प्रश्नरत्न	मदराम		दे० का०	दे०
४५४	३२७२	प्रश्नरत्न	मदराम		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ ग्र	८	स	द	६	१०	११
२६·१×१०·६ सें० मी०	४ (१–४)	१०	३१	पू०	प्राचीन	इति गर्गाचार्य विरचिता प्रश्नमनोरमा समाप्ता ॥ लिखिते सेवाराम स्वबोधार्थ ॥ राम शुभमूयात् ॥
२४·४×१३·७ सें० मी०	६ (१–६)	१४	३८	पू०	सं०१८८५	संवत् १८८५ सरोहृदतिभूवत्सरेभक्त-ज्येष्टमिशनीमुरलिदत्तेन लेष्यम भारद्वाज कुले शुभे ॥ लक्ष्मण सुताभव.।-शुभंभूयात् ॥
२०·२×१०·१ सें० मी०	७ (१–७)	१०	२६	पू०	प्राचीन	इति गर्गाचार्य विरचिता श्लोक प्रश्न-मनोरमा प्रश्न विद्या समाप्ता ॥ ... ... लेषिता पुस्तकी सु दरमनोरमप......॥
१६·६×८·१ सें० मी०	२	६	२६	अपू०	प्राचीन	इति प्रश्न मनोरमा समाप्ता ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥
२३·१×११·४ सें० मी०	८ (१–८)	१३	३५	अपू०	प्राचीन	
२६·७×११·५ सें० मी०	६ (१–६)	१६	६२	पू०	सं०१६३१	इति प्रश्नरत्न संपूर्ण ॥ संवत् १६३१ भाद्रपद शुक्ल १४ शुक्रवारे लिखित ॥
३३·५×१३ सें० मी०	१४ (१–१४)	१०	४५	पू०	सं०१६०१	इति श्री मिश्र नंदराम कृत केरलि शास्त्रे प्रश्नरत्न नाम ग्रंथ समाप्तम् संवत् १६०१ मिति जेष्ठ शुक्ला नवम्यां रवियामरान्वितायां समाप्तोय लिपितं वासुदेव समंण अरीपग्रामे ॥ शुभं भूयात् ॥ श्री ॥ श्री ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
७५५	८१४	प्रश्नरत्नटिप्पणी			दे० का०	दे०
४५६	१८६७	प्रश्नरहस्य	विघ्नराज		दे० का०	दे०
४५७	७२७३	प्रश्नविचार	देवल		दे० का०	दे०
४५८	१३८६	प्रश्नविनिश्चय			दे० का०	दे०
४५९	१४७१	प्रश्नविनोद			दे० का०	दे०
४६०	१४५५	प्रश्नवैष्णव	नारायणदास		दे० का०	दे०
४६१	१६६०	प्रश्नवैष्णव			दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७ ६×१२ २ सें० मी०	४४ (१–४४)	११	३४	पू०	प्राचीन सं०१८६५	इति श्री स्वकृत प्रश्न रत्नस्य टिप्पणी सपूर्ण ॥ सवत १८६५ आश्विन कृष्ण १० गुरुदिने महापुन्य क्षत्र कनखलेय लिपि कृत पठनार्थस्य शुभ ॥
२४×६ ५ सें० मी०	५	६	३०	पू०	सं०१९२१	इति श्री विघ्नराज निर्मित प्रश्नरहस्य समाप्त । इद पुस्तक लिखित गौरीदत्तेन शिव दियाल आत्मज शुभ मस्तु सिद्धि रस्तु शुभ सवत् १९२१ चैत्र शुक्ल पक्ष अष्टम्या ८ रविवासरे ·····
२५ ८×१२ ७ सें० मी०	३ (१–३)	११	३७	पू०	प्राचीन	इति देवल कृत प्रश्न सपूर्णमस्तु ॥ शुभमस्तु ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की क्रमान्तसंख्या वा संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४६२	३४०१	प्रश्नवैष्णव	नारायण दास		दे० का०	दे०
४६३	६६१४	प्रश्नसंग्रह			दे० का०	दे०
४६४	२६७८	प्रश्नसंग्रह	शिव		दे० का०	दे०
४६५	३७४६	प्रश्नसंग्रह			दे० का०	दे०
४६६	६१५०	प्रश्नसंग्रह			दे० का०	दे०
४६७	७००१	प्रश्नसार	गोविन्द दैवज्ञ		दे० का०	दे०
४६८	६८५६	प्रश्नसार	हयग्रीव		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है ? अपूर्ण तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
३३·८ × १५·७ सें० मी०	३१ (१–३१)	१३	५३	पू०	सं०१७५५	इति ब्रह्मदासपुत्र श्रीनारायणदास सिंह विरचितं प्रश्न वैष्णव शास्त्रे पंचदशोध्याय. १५ श्री सवत् १८७४ भाद्रपद-मासे शुक्लपक्षे तिथौ ४ रववासरे शुभमस्तु मंगलदाति लिपितं मिदं पश्री दुवगिरधारा ····
२१·३ × ८·७ सें० मी०	८ (१–८)	११	३०	पू०	प्राचीन शाके १७५३	इति प्रश्न संग्रह. समाप्ता ॥ श्रीराम चंद्रार्पणमस्तु ॥ शके १७५३ खर-संवत्सरे गुजरोपनामक रामचंद्रेण लिखितं ॥ श्री गजानन ॥
३१·२ × १४ सें० मी०	६ (१–६)	१३	४०	पू०	प्राचीन	इति श्री शिव विरचित प्रश्नसंग्रह समाप्त ॥ शुभमस्तु मंगल ददातु···· ······
१६ × १३·५ सें० मी०	६ (१–६)	६	१६	पू०	सं०१६००	इति प्रश्नसारः॥ संवत् ॥ १६०० चैत वदिमावास्या ॥
२२·५ × १०·३ सें० मी०	४ (१–४)	६	२८	अपू०	प्राचीन	श्री गणेश नमस्कृत्य श्रीगुरु गिरिजापति दैवज्ञान हितार्थाय क्रियते प्रश्न संग्रहं ···· —(आदि)
२०·६ × १६·५ सें० मी०	४ (१–४)	१८	३०	पू०	प्राचीन	इति श्री मत्पूज्य स्तव निवासित माचाय वशाद्भव विष्णु दैवज्ञात्मज गोविंद दैवज्ञ विरचितं प्रश्नसार संपूर्णः ॥
२१·४ × १२·५ सें० मी०	१२ (१–१२)			पू०	प्राचीन सं०१६०५	हयग्रीव विरचित प्रश्नसारः समाप्तिमगमत् ॥ सं० १६०५ ॥

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४६९	४६०१	प्रश्नसार	गणेश		मि० का०	दे०
४७०	५०७६	प्रश्नसार	जीवज्योति		दे० का०	दे०
४७१	२३६४	प्रश्नसार	गोविंद दैवज्ञ		दे० का०	दे०
४७२	२६०३	प्रश्नसार	गोविंद दैवज्ञ		दे० का०	दे०
४७३	१२९४	प्रश्नस्वरोदय			दे० का०	दे०
४७४	१८२० / २	प्रश्नावली			दे० का०	दे०
४७५	८४६	प्रश्नावली	जडभरत		दे० का०	दे०

पत्रा या पृष्ठो का आकार	पत्रसख्या	प्रति पृष्ठ म पवित्सख्या और प्रतिपक्ति मे अक्षरसख्या		क्या ग्रथपूर्ण है ? अपूर्ण है तो वत मान अश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	६	१	११
१६ ८×६ सें० मी०	७ (१–७)	७	२८	पू०	स०१६२	इति श्री रुद्रयामल गणेश निर्मित प्रश्नसार ग्रथ समाप्तम् १६२७ द्वितिय वैशाख शुक्ला १५ ॥
२३ ५×११ सें० मी०	३ (६–८)	७	२३	अपू०	प्राचीन	इति याज्ञिक नरहरि सुत जीव ज्योति विरचित प्रश्नसार समाप्त ॥× ×
२२ ५×६ ५ सें० मी०	६ (१, ३–७)	१०	२८	अपू०	स०१६३	इति प्रश्नसार समाप्तम् ॥ स० १६३६ पूसवदि ४ षा ॥
२६ ५×११४ सें० मी०	६	६	३०	अपू०	स०१६१३	इति श्री विष्णु दैवनात्मज गोविंद दैवन विरचित प्रश्नसार समाप्त ॥ श्रीकृष्णार्पणम ॥ सवत १६१३ शाक १७७४ मागनम माघ प्रथाइ माम शुभे कृष्णपक्ष तिथौ १४ चतुर्दश्या भौमवासर • ••
१६×६ २ सें० मी०	६ (३–११)	८	१६	अपू०	प्राचीन	इति साधारण प्रश्नस्वरोदय लिखित गापीदूव • ••
१८×१३ २ सें० मी०	१०	८	१३	पू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की आगतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४७६	६६५८	प्राणपद-साधन प्रकार			दे० का०	दे०
४७७	२६३०	फलविचार			दे० का०	दे०
४७८	७०७३	फारसी काव्याधिकार	हीरानन्द		दे० का०	दे०
४७९	६५४२	वालबुद्धि प्रकाशिका	गोविंदाचार्य		दे० का०	दे०
४८०	७०३७	वालबुद्धि-प्रकाशिनी	गोविंदाचार्य		दे० का०	दे०
४८१	६८६८	वालबुद्धि-प्रकाशिनी	गोविंदाचार्य		दे० का०	दे०
४८२	३०१४	वालबोध	मुंजादित्य		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रति पंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	ब	स	द	९	१०	११
२७.५×१२ सें० मी०	४ (१-४)	१२	३२	पू०	प्राचीन	
२४×१२.१ सें० मी०	२२			अपू०	प्राचीन	

क्रमांक और विषय	पुस्तकालय की ग्रागतसंख्या या संग्रहविशेष की संख्या	ग्रंथनाम	ग्रंथकार	टीकाकार	ग्रंथ किस वस्तु पर लिखा है	लिपि
१	२	३	४	५	६	७
४८३	११८८	बालबोध	मुंजादित्यविप्र		दे० का०	दे०
४८४	६८११	बालबोध	मुंजादित्य		दे० का०	दे०
४८५	२३३८	बालबोध	मुंजादित्य		दे० का०	दे०
४८६	२७३६	बालबोध व्याख्या	मुंजादित्य		दे० का०	दे०
४८७	७०४३/४	बालबोध (सारसंग्रह)	मुंजादित्य		दे० का०	दे०
४८८	७४७८/२	बालबोध सारसंग्रह	मुंजादित्य		दे० का०	दे०
४८९	४२२	बालबोधक (सारसंग्रह)	मुंजादित्य		दे० का०	दे०

पत्रों या पृष्ठों का आकार	पत्रसंख्या	प्रति पृष्ठ में पंक्तिसंख्या और प्रतिपंक्ति में अक्षरसंख्या		क्या ग्रंथ पूर्ण है? अपूर्ण है तो वर्तमान अंश का विवरण	अवस्था और प्राचीनता	अन्य आवश्यक विवरण
८ अ	८ब	स	द	९	१०	११
२८×१३·३ सें० मी०	१७ (३–१७, १९–२०)	११	२८	अपू०	सं०१८४७	इति श्री मु जादित्यविप्रविरचित बालबोध ग्र समाप्तम् सुभमस्तु सवत् १८४७ साके १७१२ आषाढ वदि ६ शुभमस्तु राम ॥
३३×१०.६ सें० मी०	१७ (१–१३, १६–१९)	१०	३४	अपू०	सं०१८६६	इति श्री मुञ्जा दित्येन विरचिते ज्योतिष शास्त्र बालबोधाख्या सार सग्रह समाप्तम् ॥ १८६६ शुभभूयात् ॥
२४.५×११ सें० मी०	१४ (१–११, १३–१५)	६	३४	अपू०	सं०१७४४	इति श्री मुजादित्येनविरचितं ज्योतिष शास्त्र बालबोधाख्या सारसग्रह समाप्त सवत् १७४४ ज्येष्ठ सुदि भोमे···
२१.५×१९ सें० मी०	१२	१३	१३	पू०	सं०१८१४	इति श्री मु जादित्येन विरचित ज्योतिष शास्त्र बालबोध ख्याख्या समाप्त ॥ शुभमस्तु ॥ श्री रस्तु । सवत् १८१४ पोष वदि ३० ॥
१४.७×१२.३ सें० मी०	१६	११	१५	अपू०	प्राचीन	